सिद्धार्थ नाम सम्वत्सरः। ईदृगराश्यादि गतेऽर्के १०।२१।५८।४८ रौद्र नाम सम्वत्सरस्य प्रवेशः। वर्ष दिनसंख्या ३५५। मेषाऽर्के अयनांशाः ०।२२।५३।२४। दृश्यायनांशाः ०।२४।१३।२५ (ता.३० मार्च सन् २०२५ से १९ मार्च सन् २०२६) ईस्वी सन् २०२५-२०२६

विवाहे पञ्चशलाकचक्रम्

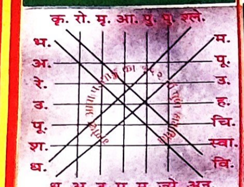

वधूप्रवेशने दाने
वरणे पाणिपीडने ।
वेधः पञ्चशलाकाख्यो
ऽन्यत्रसप्तशलाककः ॥

जगल्लग्नम्

१०।८।१७

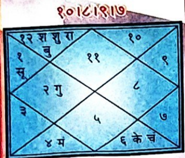

जगल्लग्न का फल

मेष-लाभसुख	तु-पुत्रप्राप्ति
वृ-धनमानलाभ	वृ-मित्रसुख
मि-धर्मधनलाभ	ध-कुटुंबवृद्धि
क-मृत्युसमकष्ट	म-धनलाभ
सिं-स्त्रीसुख	कुं-देहसुख
कं-शत्रुपराजय	मी-दुःखदारिद्र्य

राजा-रवि फल

अग्निकाण्ड व चोरी की अधिकता, जनहानि, वर्षा-अन्न-फल कम हो।

राजा-रविः

ध्यान से देखकर खरीदें, बीच में लगा निशान ही "श्रीः चिह्न" का है।

गणेश आपा पञ्चाङ्ग का १५२ वाँ पुष्प समर्पित

काशी के प्रसिध्द श्री ६ पण्डित गणेश आपाजी का पंचाङ्ग

मन्त्री-रवि फल

धन व व्यापार की अधिकता, वर्षा अच्छी, राष्ट्रनायकों का क्रूर व्यवहार।

मंत्री-रविः

आर्द्राप्रवेशलग्नम्

२।२१।२७।४२

आर्द्रा प्रवेश का फल

(वर्षा एवं खेती का अनुमान)

ता.२२ जून का आर्द्रा प्रवेश चण्डा नाड़ी में है, स्वामी शनि है। १/२/३ चरण निर्जल व मात्र चतुर्थ चरण सजल है। ता.२२,३० जून व ता.२ से ५ जुलाई को वर्षा योग है। आर्द्रा प्रवेश भरणी नक्षत्र, कृष्णपक्ष व दिन में होने से वर्षा कम। द्वादशी तिथि, रविवार, सुकर्मा योग, कौलव करण से शुभ तो है पर पशुओं को कष्ट होगा।

विवाहादन्यत्र सप्तशलाकाचक्रम्

लग्नं हस्ती नृपश्चन्द्रः
सौम्यपापश्च भृत्यकाः ।
नृपे नष्टे कथं युद्धं
कथं हि फलमादिशेत्॥

गतकलिः ५१२६। बंगला सन् १४३१ मेषाऽर्कतः१४३२। हिजरी सन् १४४६-१४४७। फसली सन् १४३२-१४३३। ईस्वी सन् २०२५-२०२६। श्रीसम्वत् २०८२। श्रीशकः१९४७। वर्षविश्वा १२ (मध्यमफलकारकः)।

आर्द्रादि दशतारके वर्षायोगाः

ता.२२ जून से आर्द्रा में- ता.२२,३० जून व ता.२ से ५ जुलाई तक वर्षा।
ता.६ जुलाई से पुनर्वसु में - ता.९ व ता.१६ से ता.१९ जुलाई तक वर्षा।
ता.२० जुलाई से पुष्य में - तारीख २० से तारीख २९ जुलाई तक वर्षा।
ता.२ अगस्त से आश्लेषा में - तारीख ३ से ता.१२ अगस्त तक वर्षा।
ता.१६ अगस्त से मघा में- ता.२०,ता.२६ से ता.३० अग. तक वर्षा।
ता.३० अगस्त से पू.फा.में- तारीख ४ से तारीख १३ सितम्बर तक वर्षा।
ता.१३ सितं से उ.फा. में-ता.१४ से ता.१६ व ता.१९ से २६ सितं. वर्षा।
ता.२७ सितम्बर से हस्त में - तारीख २७ से ३० सितम्बर व ता.१ से ३ अक्टूबर व ता.८ से १० अक्टूबर तक वर्षा।
ता.१० अक्टूबर से चित्रा में- तारीख १७ से तारीख २३ अक्टू. तक वर्षा।
ता.२४ अक्टूबर से स्वाती में-ता.२४ से ता.३० अक्टूबर व ता.३ से तारीख ५ नवम्बर तक वर्षा योग है।

श्री सम्वत् २०८२ वर्षे समयशुद्धिः

गुरुः	ता.१३ जून २०२५ (आषा.कृ.२ शुक्रे) पश्चिमास्तः। ता.८ जुलाई २०२५ (आषा.शु.१३ भौमे) पूर्वोदयः।
शुक्रः	ता.१२ दिसम्बर २०२५ (पौ.कृ.८ शुक्रे) पूर्वास्तः। ता.३१ जनवरी २०२६ (माघ शु.१४ शनौ)पश्चिमोदयः।
राहुः	वर्षारम्भे मीने (ता.९ मई कुम्भे)।
केतुः	वर्षारम्भे कन्यायां (ता.९ मई सिंहे)।

भौमादि ग्रहाणाम्

वक्र-मार्ग-उदयास्तादि निर्णयः
(३० मार्च २०२५ से १९ मार्च २०२६)

भौमः:- वर्षारम्भे कर्के, ता.७ नवम्बर पश्चिमास्त, वर्षान्ते कुम्भे। **बुधः**:- वर्षारम्भे मीने, वक्री, अस्त। ता.५ अप्रैल पूर्वोदयः, ता.७ अप्रैल मार्गी, ता.१६ मई पूर्वास्तः, ता.८ जून पश्चिमोदयः, ता.१८ जुलाई वक्री, ता.१९ जुलाई पश्चिमास्तः, ता.९ अगस्त पूर्वोदयः, ता.१० अगस्त मार्गी, ता.३ सितम्बर पूर्वास्तः, ता.५ अक्टूबर पश्चिमोदयः, ता.९ नवम्बर वक्री, ता.१२ नवम्बर पश्चिमास्तः, ता.२६ नवम्बर पूर्वोदयः, ता.२९ नवम्बर मार्गी, ता.२ जनवरी २०२६ पूर्वास्तः ता.५ फरवरी पश्चिमोदयः, ता.२५ फरवरी वक्री, ता.१ मार्च पश्चिमास्तः,ता.१६ मार्च पूर्वोदयः★

श्रीभैरवान्तिकनिवासिगणेशपौत्र-श्रीबालकृष्णतनयस्तिथिपत्रमेतत् । सम्यग्विचार्यगणितादियथाप्रयत्नंप्रख्यापयत्यखिलसज्जनरञ्जनाय ॥

नेत्र वसु नख सम्मिते वैक्रमाब्दीये

*** श्रीकाशीस्थधर्मसभासदासम्मतम् ***

मुनि वेद ग्रह इन्दु सम्मिते शालिवाहन गते शाके

श्रीसम्वत् २०८२ *** श्रीराजराजेश्वरीनामकं ॥श्रीः॥ चिह्नम् *** **श्रीशकः १९४७**

श्रीपण्डिताग्रगण्य स्वर्गनिवासिश्रीवलदेवमिश्रस्यशिष्यः कै. श्री पं० गणेशआपाम्हसकर पौत्रेण श्री बालकृष्णशास्त्रि म्हसकर

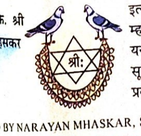

इत्युपनामधेयेन प्रवर्तितं, तत्पुत्रेण नारायण बालकृष्ण शास्त्रि म्हसकरेण विनिर्मितं काश्यां ज्योतिष प्रकाश प्रेस नाम्नि यन्त्रालये मुद्रितं तथा "श्री राजराजेश्वरी पुस्तकालय, डी.३२ सूर्याग्रीन, बनारस क्लब रोड, कचहरी, वाराणस्यां" प्रकाशितञ्च ।

सिद्धार्थ नाम सम्वत्सरः

(EDITED AND PUBLISHED BY NARAYAN MHASKAR, Sub Editor- ADITYA MHASKAR)
PROP. SHRI RAJ RAJESHWARI PUSTAKALAYA, D32,Surya Green,Club Road, Kachahri, VARANASI-221002 (FOR 2025-2026)
पञ्चाङ्ग मिलने का पता-श्रीराजराजेश्वरी पुस्तकालय, डी-३२ सूर्याग्रीन, बनारस क्लब रोड, कचहरी, वाराणसी-२
प्रसिद्ध ज्योतिषी श्री पं० गणेश आपाजी का यही पञ्चाङ्ग है । मोबाइल (सोमवार से शनिवार :- समय दोपहर ११ से ४) 9935500172

भारत के वर्षप्रवेश लग्न के विचार से-वर्षप्रवेश सिंह लग्न में होने से पश्चिम में फल व धातु महंगे, उत्तर-पूर्वी राज्यों में वर्षा अधिक, सुख समृद्धि, मध्यप्रदेश में राज विद्रोह रहे। दक्षिण में बाढ़ का भय पर धान्य अच्छा होगा। पूर्वी राज्यों में उपज कम होगी। द्रव्येश बुध है, शेयर बाजार व इन्टरनेट से धनलाभ। पराक्रमेश शुक्र है अतःजल के क्षेत्र में साहसिक कदम उठाये जायेंगे। सुखेश मंगल है, चिकित्सा के नये खोज से जनता में सुख। कष्टेश शनि होने से लम्बी अवधि की बीमारियों में वृद्धि। मारकेश गुरु से कोर्ट कचहरी से जनता त्रस्त। भाग्येश मंगल होने से शस्त्र से लाभ व शत्रुओं पर विजय। कर्मेश शुक्र होने से कलाकारों के कार्य से सौन्दर्य प्रसाधनों के व्यापार में सफलता। आयेश बुध होने से व्यापार जगत व खेलकूद में सफलता। व्ययेश चन्द्रमा होने से औषधी निर्माण व दवाइयों के नवीनीकरण व क्रय में खर्च।

वृषाऽर्क प्रवेशलग्न के विचार से- मकर लग्न सजल है व स्वामी शनि है। तृतीय व चतुर्थ चरण सजल हैं। द्वितीय चरण निर्जल है। स्थिति अच्छे स्वरुप की है। भदई, कुंआरी, अगहनी फसलें ७०% से ८०% तक सुरक्षित होंगी।

मिथुनाऽर्क प्रवेश लग्न के विचार से-मिथुन लग्न है जो निर्जल है व स्वामी बुध है व स्वराशि व लग्न में उपस्थिति है। द्वितीय व तृतीय चरण भी निर्जल हैं। मात्र चतुर्थ चरण सजल है पर चतुर्थेश भी केन्द्र में होने से स्थिति मध्यम स्वरुप की है। भदई, कुंआरी, अगहनी फसलें ४५% से ५०% तक सुरक्षित होंगी।

वृश्चिकाऽर्क प्रवेश लग्न के विचार से- कुम्भ लग्न है जो सजल है, स्वामी शनि है। द्वितीय व तृतीय चरण निर्जल हैं। चतुर्थ चरण सजल है। स्थिति मध्यम स्वरुप की है। जेठी (चना, जौ, गेहूं, तिलहन) की फसल ५५% से ६०% तक होगी परन्तु संकट से पूरी तरह से सुरक्षित नहीं रहेंगी।

★ वर्षान्ते कुम्भे। **गुरुः**-वर्षारंभे वृषे, ता.१५ मई मिथुने, ता.१३ जून पश्चिमास्तः, ता.८ जूलाई पूर्वोदयः, ता.२१ अक्टूबर कर्के, ता.१२ नवम्बर वक्री, ता.४ दिसम्बर मिथुने, ता.११ मार्च २०२६ मार्गी, वर्षान्ते मिथुने। **शुक्रः**-वर्षारम्भे मीने-वक्री, ता.१२ अप्रैल मार्गी, ता.१२ दिसम्बर पूर्वास्तः, ता.३१ जनवरी २०२६ पश्चिमोदयः,वर्षान्ते मीने। **शनिः**- वर्षारम्भे कुम्भे-अस्तः, ता.१ अप्रैल मीने, ता.६ अप्रैल पूर्वोदयः, ता.१२ जुलाई वक्री, ता.२६ नवम्बर मार्गी, ता.१३ मार्च २०२६ पश्चिमास्तः,वर्षान्ते मीने। **राहुः**-वर्षारंभे मीने, ता.९ मई कुम्भे, वर्षान्ते कुम्भे। **केतुः**-वर्षारंभे कन्यायां, ता.९ मई सिंहे, वर्षान्ते सिंहे।

मूल्यः 85 रु

वर्षा-विचार सम्वत् २०८२

आर्द्रा (ता.२२ जून प्रातः ६/१८ पर)-स्त्री-पु.-चं.-चं. योग, चण्डानाड़ी, स्वामी शनि, मूषक वाहन, श्वान उपवाहन। आर्द्रा का केवल चतुर्थ चरण सजल है, शेष सभी चरण निर्जल हैं। अतः ता.२२,३० जून व ता.२ से ५जुलाई तक वर्षा होगी।

पुनर्वसु (ता.६ जुलाई प्रातः५/५४ पर)-स्त्री-नपु-चं.-सूर्य योग, चण्डानाड़ी, स्वामी शनि, अश्व वाहन, वाराह उपवाहन। पुनर्वसु का केवल चतुर्थ चरण सजल है, शेष सभी चरण निर्जल हैं। अतः ता.९ व ता.१६ से १९ जुलाई तक वर्षा होगी।

पुष्य (ता.२० जुलाई प्रातः ५/२८ पर)- स्त्री-पु.-चं.-चं. योग, चण्डानाड़ी, स्वामी शनि,मयूर वाहन, वाराह उपवाहन। पुष्य का केवल चतुर्थ चरण निर्जल है, शेष सभी चरण सजल हैं। अतः ता.२० से ता.२९ जुलाई तक वर्षा होगी।

आश्लेषा (ता.२ अगस्त देररात ४/२२ पर)-स्त्री-नपु-चं.-सू. योग, चण्डानाड़ी, स्वामी शनि, खर वाहन, घोटक उपवाहन। आश्लेषा का केवल चतुर्थ चरण निर्जल है, शेष सभी चरण सजल हैं। अतः ता.३ से ता.१२ अगस्त तक वर्षा होगी।

मघा (ता.१६ अगस्त देररात २/३ पर)-स्त्री-पु.-चं.-चं. योग, चण्डानाड़ी, स्वामी शनि, मण्डूक वाहन, घोटक उपवाहन। मघा का केवल चतुर्थ चरण सजल है, शेष सभी चरण निर्जल हैं। अतः २० अगस्त व ता.२६ से ता.३० अगस्त तक वर्षा होगी।

पूर्वाफाल्गुनी (ता.३० अगस्त रात १०/१ पर)-स्त्री-नपु-सू-सू योग, चण्डानाड़ी, स्वामी शनि, मूहिषी वाहन, मेष उपवाहन। पू.फा. का केवल प्रथम चरण निर्जल है, शेष सभी चरण सजल हैं। अतः ता.४ से १३ सितम्बर तक वर्षा होगी।

उत्तराफाल्गुनी (ता.१३ सितम्बर दिन ३/५४ पर)-स्त्री-पु.-सू-सू योग, वायुनाड़ी, स्वामी सूर्य, जम्बूक वाहन, मेष उपवाहन। उत्तराफाल्गुनी का द्वितीय निर्जल है, प्रथम, तृतीय व चतुर्थ चरण सजल हैं। अतः ता.१४ से १६ सितं. व ता.१९ से २६ सितं. तक वर्षा होगी।

हस्त (ता.२७ सितम्बर प्रातः ७/२४ पर)-स्त्री-नपु-सू.-सू. योग, चण्डानाड़ी, स्वामी शनि, मयूर वाहन, वृषभ उपवाहन। हस्त का तृतीय चरण निर्जल है शेष सभी चरण सजल हैं। अतः ता.२७ से ता.३० सितम्बर ता.१ से ता.३ व ता.८ से ता.१० अक्टूबर तक वर्षा होगी।

चित्रा (ता.१० अक्टूबर रात ८/२३ पर)-स्त्री-पु.-सू.-चं. योग, चण्डानाड़ी, स्वामी शनि, खर वाहन, श्वान उपवाहन। चित्रा का प्रथम व द्वितीय चरण निर्जल है। शेष चरण सजल हैं। अतः ता.१७ से २३ अक्टूबर तक वर्षा होगी।

स्वाती (ता.२४ अक्टूबर प्रातः ६/५३ पर)-स्त्री-नपु-सू.-सू. योग, चण्डानाड़ी, स्वामी शनि, मण्डूक वाहन, वाराह उपवाहन। स्वाती का तृतीय चरण निर्जल है, शेष सभी चरण सजल हैं। अतः ता.२४ से ३० अक्टूबर से व ३ से ५ नवम्बर तक वर्षा होगी।

श्रीसंवत् २०८२ में मेषादिराशि तथा लग्नवालों का संक्षिप्त फल

(ता.३० मार्च सन् २०२५ से ता.१९ मार्च सन् २०२६ तक)

मेषराशि तथा लग्नको (*चू चे चो ला ली लू ले लो अ*): **शनि विचार**- सम्वत्सरारम्भ में शनि कुम्भ में हैं, स्वर्णपाद का ११वाँ शनि लाभप्रद है। ता.१ अप्रैल को शनि मीन में जायेंगे व सम्वत्सर के अन्त तक उसी में रहेंगे, जिससे साढ़े साती का कष्ट प्रारम्भ हो जायेगा। शनि के कष्ट निवारणार्थ शनि का दान, जप, नीलम धारण, सुन्दरकाण्ड का पाठ एवं शनिवार को शनि भगवान को तेल चढ़ाना चाहिये। स्वर्णपाद का १२वाँ शनि विदेशयात्रा में अत्यधिक खर्च कराये। **राहु-केतु विचार**- सम्वत्सरारम्भ में राहु मीन में व केतु कन्या में हैं, १२वाँ राहु व छठा केतु रजतपाद से है, शरीर रोगग्रस्त रहेगा परन्तु केतु का पाद शुभ होने से परेशानियां कम होंगी। ता.९ मई को राहु कुम्भ में व केतु सिंह में जायेंगे व सम्वत्सर के अन्त तक उसी में रहेंगे। स्वर्णपाद का ११वाँ राहु व ५वाँ केतु परिवार को कष्ट दे पर आपको धनप्राप्ति भी कराये। **गुरु विचार**-संवत्सरारंभ में गुरु वृष में है। स्वर्णपाद का दूसरा गुरु विशेष धनलाभ कराये व आपको स्वस्थ रखे। ता.१५ मई को गुरु मिथुन में जायेंगे, लौहपाद का ३रा गुरु है, अपने हाथ व कंधो का विशेष ध्यान रखें। व्यापार में भी परीश्रम करना होगा। ता.२१ अक्टूबर को गुरु कर्क में जायेंगे। स्वर्णपाद का ४था गुरु है जो विशेष कष्टप्रद है, कष्ट निवारणार्थ गुरु का दान, जप, गुरुस्तोत्र का पाठ, मणि (पोखराज) धारण करना लाभप्रद है। जमीन-जायदाद के लेनदेन में व वाहन से कष्ट दे। ता.४ दिसम्बर को पुनः वक्री होकर गुरु मिथुन में जायेंगे व सम्वत्सर के अन्त तक उसी में रहेंगे। रजतपाद का ३रा गुरु है, अपने हाथ व कंधो का विशेष ध्यान रखें। **अप्रैल** में धन-संपत्ति में कर्मी, मानसम्मान में कमी, वाहन से कष्ट, गलत आर्थिक निर्णयों से कष्ट, पुराने निवेश अच्छा फल देंगे। **मई** में सिर या चेहरे में कष्ट, परिवार में आर्थिक कष्ट, वाहन से कष्ट, रोगभय व वाणी के दुरुपयोग से विशेष कष्ट, पुराने निवेश अच्छा फल देंगे। **जून** में परिवार में भय का वातावरण, व्यापार में आर्थिक लाभ, शेयरमार्केट में सट्टेबाजी से दूर रहें, वाणी के सदुपयोग से लाभ परन्तु यात्रा में भय, स्वास्थ्य में सुधार। **जुलाई** में व्यापार में आर्थिक लाभ परन्तु वाद-विवाद में अपमान, शेयरमार्केट में सट्टेबाजी से दूर रहें, जमीन-जायदाद से धनलाभ, मित्र व परिवार के सहयोग से धनप्राप्ति। **अगस्त** में जमीन के लेनदेन में कष्ट परन्तु धनलाभ, संतान को प्रतियोगिताओं में असफलता, जहां से सोचा न था वहां से धनप्राप्ति, यात्रा में सुख, माता का स्नेह प्राप्त होगा। **सितम्बर** में सन्तान को कष्ट पर शत्रुओं पर विजय, स्त्री को नाभी के आसपास कष्ट, संतान को शिक्षा के क्षेत्र में अनिश्चय की स्थिति, नया कर्ज लेने से बचें। **अक्टूबर** में चिन्ता में कमी, स्त्री को नाभी के आस्पास विशेष कष्ट, भाग्य साथ देगा परन्तु नया कर्ज न लें। **नवम्बर** में मुकदमें में धन का व्यय व अपमान, मान-सम्मानमें कर्मी, जहां से सोचा भी न था वहां से धन प्राप्ति। **दिसम्बर** में वाद-विवाद से पीड़ा, विदेश यात्रा में कष्ट परन्तु धनलाभ, जांघ में कष्ट, जहां से सोचा भी न था वहां से धन प्राप्ति। **जनवरी २०२६** में रुके हुये कार्य पूर्ण होंगे, विदेश यात्रा में विशेष कष्ट, सरकार के निर्णय आपके हित में, महत्वाकांक्षी योजनाओं से धनप्राप्ति, घुटने में कष्ट। **फरवरी** में कार्य पूरा होने के साथ अच्छा धनलाभ, सरकार के निर्णय आपके हित में, खाते-बही, दलाली के कार्यों में लाभ। **मार्च** में योजनाओं से धनलाभ, आँख व पैर में कष्ट, धातु के व्यापार में लाभ, खाते-बही, दलाली के कार्यों में लाभ, खर्चों में कमी।

वृषराशि तथा लग्नको (*ई ऊ ए ओ वा वी वू वे वो*): **शनि विचार**-सम्वत्सरारम्भ में शनि कुम्भ में हैं, रजतपाद का १०वाँ शनि नये सम्पर्क से लाभ कराये। ता.१ अप्रैल को शनि मीन में जायेंगे व सम्वत्सर के अन्त तक उसी में रहेंगे। लौहपाद का ११वाँ शनि धनप्राप्ति कराये। **राहु-केतु विचार**-सम्वत्सरारम्भ में राहु मीन में व केतु कन्या में रहेंगे। ११वाँ राहु व ५वां केतु लौहपाद से है, राहु नौकरी-व्यापार में उन्नति कराये परन्तु केतु परिवार में कलह कराये, लौहपाद होने से विशेषकष्टप्रद होता है। ता.९ मई को राहु कुम्भ में व केतु सिंह में जायेंगे व सम्वत्सर के अन्त तक उसी में रहेंगे। रजतपाद का १०वाँ राहु व ४था केतु वाद-विवाद बढ़ाये पर आपको आकस्मिक लाभ भी दिलाये। **गुरु विचार**-संवत्सरारंभ में गुरु वृष में है। ताम्रपाद का पहला गुरु मानसिक कष्ट व असफलता दे। ता.१५ मई को गुरु मिथुन में जायेंगे। ताम्रपाद का २रा गुरु विशेष धनलाभ कराये व आपको स्वस्थ रखे। ता.२१ अक्टूबर को गुरु कर्क में जायेंगे रजतपाद का ३रा गुरु है, अपने हाथ व कंधो का विशेष ध्यान रखें। ता.४ दिसम्बर को पुनः वक्री होकर गुरु मिथुन में जायेंगे व सम्वत्सर के अन्त तक उसी में रहेंगे स्वर्णपाद का २रा गुरु विशेष धनलाभ कराये व आपको स्वस्थ रखे। **अप्रैल** में योजनाओं से धनलाभ, आँख व पैर में कष्ट, यात्रा से धनप्राप्ति, मित्र से अच्छे संबंध, कला के माध्यम से धन का आगमन व बचत भी। **मई** में धन-संपत्ति में कर्मी, मानसम्मान में कमी, यात्रा से धनप्राप्ति, रोगभय, गलत आर्थिक निर्णय से कष्ट, कला के माध्यम से धन का आगमन व बचत भी। **जून** में सिर या चेहरे में कष्ट, परिवार में आर्थिक भय, वाहन से कष्ट, मान-सम्मान में कमी, व्यापार में लाभ, खर्चों में कमी। **जुलाई** में परिवार में भय पर व्यापार में आर्थिक लाभ, वाहन से कष्ट, यात्रा में भय, स्वास्थ्य में सुधार। **अगस्त** में व्यापार में आर्थिक लाभ पर वादविवाद में अपमान, शेयरमार्केट में सट्टेबाजी से दूर रहें, यात्रा में भय परन्तु व्यापार में लाभ, वाहन से सुख व शिक्षा के क्षेत्र में अनिश्चय की स्थिति, जलीय वस्तुओं से लाभ। **सितम्बर** में जमीन के लेनदेन में कष्ट व संतान को प्रतियोगिताओं में असफलता, जहां से सोचा न था वहां से धनप्राप्ति, वाहन से सुख व व्यापार में लाभ, पुत्र-प्राप्ति के योग। **अक्टूबर** में सन्तान को कष्ट, शत्रुओं पर विजय, जहां से सोचा न था वहां से धनप्राप्ति, नये स्थान पर कष्ट, जमीन-जायदाद से लाभ, प्रतियोगिताओं के अच्छे परिणाम। **नवम्बर** में चिन्ता में कमी, स्त्री को नाभी के आसपास कष्ट, मुकदमें में अशुभ समाचार, ध्यान दें-शत्रु आप पर नजर रखे हुये हैं। **दिसम्बर** में मुकदमें में धन का व्यय व अपमान, अपमानित होने का खतरा, स्त्री को रोग, धन आने के नए रास्ते खुलेंगे। **जनवरी २०२६** में वाद-विवाद से पीड़ा, विदेश यात्रा से बचें, जांघ में कष्ट, धन आने के नए रास्ते खुलेंगे, पिता का स्नेह प्राप्त हो। **फरवरी** में रुके हुये कार्य पूर्ण होंगे, विदेश यात्रा में कष्ट, जांघ में कष्ट, सरकार के निर्णय आपके हित में, नौकरी के स्थान पर वाद-विवाद। **मार्च** में कार्य पूरा होने के साथ अच्छा धनलाभ, सरकार के निर्णय आपके हित में, नौकरी में सुखद वातावरण, आपका पैसा बचत योजनाओं में लगेगा।

मिथुनराशि तथा लग्नको (*का की कू घ (ङ = ग) छ के को हा*): **शनि विचार**-सम्वत्सरारम्भ में शनि कुम्भ में हैं, लौहपाद का ९वां शनि अशुभफलों को नियन्त्रित रखेगा। ता.१ अप्रैल को शनि मीन में जायेंगे व सम्वत्सर के अन्त तक उसी में रहेंगे, स्वर्णपाद का १०वाँ शनि आपको अनैतिक विचार दे। **राहु-केतु विचार**-सम्वत्सरारम्भ में राहु मीन में व केतु कन्या में रहेंगे, १०वाँ राहु व ४था केतु ताम्रपाद से है। राहु अचानक धनलाभ कराये परन्तु केतु के कारण वाद-विवाद हो, पाद शुभ होने से कष्ट कम होंगे। ता.९ मई को राहु कुम्भ में व केतु सिंह में जायेंगे व सम्वत्सर के अन्त तक उसी में रहेंगे, लौहपाद का ९वाँ राहु व ३रा केतु है अतः कर्ज लेने से बचें। केतु पुरानी समस्याओं में थोड़ी राहत दे। **गुरु विचार**- संवत्सरारंभ में गुरु वृष में है जो मिथुन राशि के लिये विशेष कष्टप्रद है, कष्ट निवारणार्थ गुरु का दान, जप, गुरुस्तोत्र का पाठ, मणि (पोखराज) धारण करना लाभप्रद है। रजतपाद का १२वाँ गुरु घरेलू कष्ट व आँख व पैर के इलाज मे व्यर्थ के खर्च कराये। ता.१५ मई को गुरु मिथुन में जायेंगे, स्वर्णपाद का १ला गुरु मानसिक कष्ट व असफलता दे। ता.२१ अक्टूबर को गुरु कर्क में जायेंगे, लौहपाद का २रा गुरु विशेष धनलाभ कराये व आपको स्वस्थ रखे। ता.४ दिसम्बर को पुनः वक्री होकर गुरु मिथुन में जायेंगे व सम्वत्सर के अन्त तक उसी में रहेंगे। लौहपाद का १ला गुरु मानसिक कष्ट व असफलता दे। **अप्रैल** में कार्य पूरा होने के साथ अच्छा धनलाभ, परिवार को आर्थिक कष्ट, व्यापार में सुखद समय, कार्यक्षेत्र में दुःखद वातावरण। **मई** में योजनाओं से धनलाभ, आँख व पैर में कष्ट, परिवार को आर्थिक कष्ट, गलत आर्थिक निर्णय से कष्ट, मित्र से अच्छे संबंध, कार्यक्षेत्र में दुःखद वातावरण। **जून** में धन-संपत्ति में कमी व मानसम्मान को खतरा, यात्रा से धनप्राप्ति, वाणी के दुरुपयोग से गहरा संकट, महत्वाकांक्षी योजनाऐं सफल होंगी। **जुलाई** में सिर या चेहरे में कष्ट व परिवार में आर्थिक भय, यात्रा से धनप्राप्ति, वाणी के दुरुपयोग से गहरा संकट, जल संबंधी व्यापार में लाभ। **अगस्त** में परिवार में भय, व्यापार में आर्थिक लाभ, वाहन से कष्ट, वाणी के दुरुपयोग से गहरा संकट, छोटे भाई से सुखद संबंध, स्वास्थ्य में सुधार। **सितम्बर** में व्यापार में आर्थिक लाभ परन्तु वादविवाद में अपमान, शेयरमार्केट में सट्टेबाजी से दूर रहें, यात्रा में भय परन्तु व्यापार में लाभ। **अक्टूबर** में जमीन के लेनदेन में कष्ट, संतान को प्रतियोगिताओं में असफलता, शेयरमार्केट में सट्टेबाजी से दूर रहें, यात्रा में वाहन सुख, शिक्षा के क्षेत्र में धनोपार्जन। **नवम्बर** में सन्तान को कष्ट, शत्रुओं पर विजय, जहां से सोचा न था वहां से धनप्राप्ति, नये स्थान पर कष्ट, संतान को प्रतियोगिताओं में असफलता। **दिसम्बर** में चिन्ता में कमी, स्त्री को नाभी के आसपास विशेष कष्ट, कर्ज लेने से बचें, मुकदमें में बुरा समाचार। **जनवरी २०२६** में मुकदमें मे धन का व्यय व अपमान, मान-सम्मान में कर्मी, त्वचा रोग, धन आगमन के नए स्त्रोत मिलेंगे। **फरवरी** में वाद-विवाद से पीड़ा, विदेश यात्रा से विशेष बचें, अपमानित होने का खतरा, पिता से उपहार। **मार्च** में रुके हुये कार्य तो पूर्ण होंगे पर विदेश यात्रा में कष्ट, जांघ में कष्ट, नौकरी में वाद-विवाद।

कर्कराशि तथा लग्नको (*ही हू हे हो डा (ड=ण) डी डू डे डो*): **शनि विचार**-सम्वत्सरारम्भ में शनि कुम्भ में हैं, जिससे १ अप्रैल तक ढैय्या का प्रभाव रहेगा, ताम्रपाद का ८वाँ शनि शरीर को रोगग्रस्त करे परन्तु ताम्रपाद होने से कष्ट कुछ कम होंगे। शनि के कष्ट निवारणार्थ शनि का दान, जप, नीलम धारण, सुन्दरकाण्ड का पाठ एवं शनिवार को शनि भगवान को तेल चढ़ाना चाहिये। ता.१ अप्रैल को शनि मीन में जायेंगे व सम्वत्सर के अन्त तक उसी में रहेंगे। ताम्रपाद का ९वाँ शनि है, आलस्य एवं लापरवाही से बचें। **राहु-केतु विचार**-सम्वत्सरारम्भ में राहु मीन में व केतु कन्या में रहेंगे, ९वाँ राहु व ३रा केतु रजतपाद से है अतः कर्ज लेने से बचें। केतु पुरानी समस्याओं से मुक्त करे, रजतपाद शुभ होने से शुभ फल दे। ता.९ मई को राहु कुम्भ में व केतु सिंह में जायेंगे व सम्वतसर के अन्त तक उसी में रहेंगे। ताम्रपाद का ८वाँ राहु व २रा केतु है अतः स्वास्थ्य का ध्यान रखें व दुर्घटनाओं के प्रति सजग रहें। केतु इसमें आपको सहयोग देगा व पाद शुभ होने से समस्याएं नियन्त्रित रहेंगी। **गुरु विचार**-संवत्सरारंभ में गुरु वृष में है। लौहपाद का ११वां गुरु आपकी महत्वाकांक्षी योजनाओं को कष्टपूर्वक पूरा करे। ता.१५ मई को गुरु मिथुन में जायेंगे, रजतपाद का १२वां गुरु है जो विशेष कष्टप्रद है, आपको घरेलू कष्ट व आँख व पैर के इलाज में व्यर्थ के खर्च कराये। कष्ट निवारणार्थ गुरु का दान, जप, गुरुस्तोत्र का पाठ, मणि (पोखराज) धारण करना लाभप्रद है। ता.२१ अक्टूबर को गुरु कर्क में जायेंगे, ताम्रपाद का १ला गुरु मानसिक कष्ट व असफलता दे। ता.४ दिसम्बर को पुनः वक्री होकर गुरु मिथुन में जायेंगे व सम्वत्सर के अन्त तक उसी में रहेंगे। स्वर्णपाद का १२वां गुरु है जो विशेष कष्टप्रद है, घरेलू कष्ट विशेष दे व आँख व पैर के इलाज में व्यर्थ के खर्च कराये। **अप्रैल** में रुके हुये कार्य पूर्ण होंगे, विदेश यात्रा में कष्ट, वन या पर्वतीय क्षेत्र में जाने से शारीरिक कष्ट, त्वचा के रोग, वस्त्र इत्यादि उपहार में मिलेंगे। **मई** में कार्य पूरा होने के साथ अच्छा धनलाभ, वन या पर्वतीय क्षेत्र में जाने से शारीरिक कष्ट, नौकरी व व्यापार में सुखद समय, वस्त्र इत्यादि उपहार में मिलेंगे। **जून** में योजनाओं से धनलाभ, आँख व पैर में कष्ट, परिवार को आर्थिक कष्ट, व्यर्थ के खर्चों से कष्ट, मानसम्मान में कमी, कार्यस्थल व सरकार के निर्णय से कष्ट। **जुलाई** में धन-संपत्ति में कमी व मानसम्मान को कष्ट, परिवार को आर्थिक कष्ट परन्तु आपकी स्वयं की इच्छायें पूर्ण होंगी। **अगस्त** में सिर या चेहरे में कष्ट व परिवार में आर्थिक भय, यात्रा से धनप्राप्ति, शरीर रोगग्रस्त, जल संबंधी व्यापार से लाभ, कर्ज में कमी। **सितम्बर** में परिवार में भय परन्तु व्यापार में आर्थिक लाभ, वाहन से कष्ट, रोगभय, छोटे भाई से संबंध खराब होंगे। **अक्टूबर** में व्यापार में आर्थिक लाभ पर वादविवाद में अपमान, वाहन से कष्ट, वाणी के उत्तम उपयोग से लोग प्रभावित व धन लाभ, कॉसमेटिक व्यापार में लाभ, भाई से अच्छे संबंध। **नवम्बर** में जमीन के लेनदेन में कष्ट, शेयरमार्केट में सट्टेबाजी से दूर रहें, सन्तान की शिक्षा के क्षेत्र में असफलता व अनिश्चय की स्थिति परन्तु आपको शिक्षा के क्षेत्र से धनलाभ। **दिसम्बर** में सन्तान को कष्ट, शत्रुओं पर विजय, जहां से सोचा न था वहां से धनप्राप्ति, शिक्षा के क्षेत्र में असफलता व अनिश्चय की स्थिति, कर्ज से चिन्ता व रोग। **जनवरी २०२६** में चिन्ता में कमी, स्त्री को नाभी के आसपास कष्ट, पार्टनर को कष्ट, नये स्थान पर कष्टप्रद समय, कर्ज न लें। **फरवरी** में मुकदमें में धन का व्यय व अपमान, स्त्री को नाभी के आसपास कष्ट, भाग्य आपका साथ देगा, लोग आपकी ओर आकर्षित होंगे, धनप्राप्ति के नए योग। **मार्च** में वाद-विवाद से पीड़ा, विदेश यात्रा से बचें, अपमानित होने का खतरा, भाग्य आपका साथ देगा, लोग आपकी ओर आकर्षित होंगे, धनप्राप्ति व उपहार के योग।

सिंहराशि तथा लग्नको (*मा मी मू मे मो टा टी टू टे*): **शनि विचार**-सम्वत्सरारम्भ में शनि कुम्भ में हैं, रजतपाद का ७वाँ शनि आर्थिक कष्ट दे। ता.१ अप्रैल को शनि मीन में जायेंगे व सम्वत्सर के अन्त तक उसी में रहेंगे, जिससे ढैय्या का प्रभाव रहेगा। शनि के कष्ट निवारणार्थ शनि का दान, जप, नीलम धारण, सुन्दरकाण्ड का पाठ एवं शनिवार को शनि भगवान को तेल चढ़ाना चाहिये। रजतपाद का ८वाँ शनि शोध कार्य में आपकी मदद करे। **राहु-केतु विचार**-सम्वत्सरारम्भ में राहु मीन में व केतु कन्या में रहेंगे, ८वाँ राहु व २रा केतु स्वर्णपाद से है अतः स्वास्थ्य का ध्यान रखें व दुर्घटनाओं के प्रति सजग रहें। केतु इसमें आपको सहयोग देगा परन्तु पाद अशुभ होने से सावधान रहना अच्छा रहेगा। ता.९ मई को राहु कुम्भ में व केतु सिंह में जायेंगे व सम्वत्सर के अन्त तक उसी में रहेंगे। रजतपाद का ७वाँ राहु व १ला केतु है यह केतु विशेष कष्टप्रद है जो दाम्पत्य जीवन में कष्ट देगा, शान्ति हेतु केतु का दान, जप, मणि (लाजावर्त) धारण करें। **गुरु विचार**-संवत्सरारंभ में गुरु वृष में है। ताम्रपाद का १०वां गुरु है, नौकरी व व्यापार में स्थिति असंतोषजनक रहेगी। ता.१५ मई को गुरु मिथुन में जायेंगे। लौहपाद का ११वां गुरु आपकी महत्वाकांक्षी योजनाओं को कष्टपूर्वक पूरा करे। ता.२१ अक्टूबर को गुरु कर्क में जायेंगे, रजतपाद का १२वां गुरु है जो विशेष कष्टप्रद है, आपको घरेलू कष्ट व आँख व पैर के इलाज मे व्यर्थ के खर्च कराये। कष्ट निवारणार्थ गुरु का दान, जप, गुरुस्तोत्र का पाठ, मणि (पोखराज) धारण करना लाभप्रद है। ता.४ दिसम्बर को पुनः वक्री होकर गुरु मिथुन में जायेंगे व सम्वत्सर के अन्त तक उसी में रहेंगे, ताम्रपाद का ११वां गुरु आपकी महत्वाकांक्षी योजनाओं को पूरा करे। **अप्रैल** में वाद-विवाद से पीड़ा, विदेश यात्रा से बचें, धातु के व्यापार में नुकसान, विचित्र एवं नए स्त्रोतों से धन आयेगा। **मई** में रुके हुये कार्य तो पूर्ण होंगे परन्तु विदेश यात्रा में कष्ट, धातु के व्यापार में नुकसान, व्यापार में सुखद समय परन्तु त्वचा के रोग, नए स्त्रोतों से धन आयेगा। **जून** में कार्य पूरा होने के साथ अच्छा धनलाभ, वन या पर्वतीय क्षेत्र में जाने से शारीरिक कष्ट, वाणी के उत्तम उपयोग से लोग प्रभावित होंगे परन्तु व्यर्थ के खर्चे भी होंगे, भाग्य अच्छा साथ देगा। **जुलाई** में योजनाओं से धनलाभ, आँख व पैर में कष्ट, वन या पर्वतीय क्षेत्र में जाने से शारीरिक कष्ट, गलत आर्थिक निर्णय से कष्ट, कॉसमेटिक व्यापार में नुकसान। **अगस्त** में धन-संपत्ति में कमी व मानसम्मान को कष्ट, परिवार को आर्थिक कष्ट, कला के उत्तम प्रस्तुति से लोग प्रभावित। **सितम्बर** में सिर या चेहरे में कष्ट व परिवार में आर्थिक भय, यात्रा से धनप्राप्ति, मान-सम्मान को खतरा। **अक्टूबर** में परिवार में भय, व्यापार में आर्थिक लाभ, यात्रा में भय पर अच्छा लाभ, कला प्रदर्शन से प्रसिद्धी, परिवार के सहयोग से धनलाभ। **नवम्बर** में व्यापार में आर्थिक लाभ पर वादविवाद में अपमान, वाहन से कष्ट, माता से सुख, समाज में सम्मान, छोटे भाई से अच्छे संबंध। **दिसम्बर** में जमीन के लेनदेन में कष्ट परन्तु धनलाभ, संतान को प्रतियोगिताओं में असफलता, शेयरमार्केट में सट्टेबाजी से दूर रहें, वाहन से सुख। **जनवरी २०२६** में संन्तान को कष्ट, शत्रुओं पर विजय, जहां से सोचा न था वहां से धनप्राप्ति, नया कर्ज न लें, सन्तान को विद्या के क्षेत्र में कठिन समय। **फरवरी** में चिन्ता में कमी, स्त्री को नाभी के आसपास कष्ट, जहां से सोचा न था वहां से धनप्राप्ति, मुकदमें में अशुभ समाचार। **मार्च** में मुकदमें में धन का व्यय व अपमान, स्त्री को नाभी के आसपास कष्ट, नए एवं विचित्र स्त्रोत से धनलाभ।

कन्याराशि तथा लग्नको (*टो पा पी पू ष (ण = ड) ठ पे पो*): **शनि विचार**-सम्वत्सरारम्भ में शनि कुम्भ में हैं, स्वर्णपाद का ६ठा शनि उद्योग में वृद्धि कराये। ता.१ अप्रैल को शनि मीन में जायेंगे व सम्वत्सर के अन्त तक उसी में रहेंगे। लौहपाद का ७वाँ शनि स्त्री को रोग दें। **राहु-केतु विचार**-सम्वत्सरारम्भ में राहु मीन में व केतु कन्या में रहेंगे, यह केतु विशेष कष्टप्रद है, ७वाँ राहु व १ला केतु लौहपाद से है जो विशेष कष्टप्रद है। शान्ति हेतु केतु का दान, जप, मणि (लाजावर्त) धारण करें। दाम्पत्य जीवन में कष्ट। ता.९ मई को राहु कुम्भ में व केतु सिंह में जायेंगे व सम्वत्सर के अन्त तक उसी में रहेंगे, स्वर्णपाद का छठा राहु व १२वाँ केतु है, सामान्य रुप से समय सुखप्रद एवं संतोषजनक रहेगा, किसी ना किसी कारण से यात्रा होगी, स्वर्णपाद होने से रोगादि से कष्ट। **गुरु विचार**-संवत्सरारंभ में गुरु वृष में है। स्वर्णपाद का ९वाँ गुरु धनलाभ कराये व विदेश में यात्रा के अवसर दे। ता.१५ मई को गुरु मिथुन में जायेंगे, ताम्रपाद का १०वां गुरु नौकरी व व्यापार में स्थिति असंतोषजनक बनाये। ता.२१ अक्टूबर को गुरु कर्क में जायेंगे, स्वर्णपाद का ११वां गुरु आपकी महत्वाकांक्षी योजनाओं को पूरा करे। ता.४ दिसम्बर को पुनः वक्री होकर गुरु मिथुन में जायेंगे व सम्वत्सर के अन्त तक उसी में रहेंगे, रजतपाद का

विषय सूची	पृष्ठ संख्या
लुप्त सम्वत्सर ज्ञान	2
वर्तमान सम्वत्सर फल प्रयागराज कुम्भ विवरण	2
वर्षा विचार, राशिफल	3-4
लग्न सारिणी से इष्ट काल का लग्न निकालने की विधि ग्रहण विवरण, सोना-चांदी तेजी-मन्दी, गुरु, शनि, राहु-केतु की ग्रह स्थिति, गुरुपुष्य व रविपुष्य योग,	5
कुण्डली निर्माण मे सहयोगी गणना सूत्र	5
सर्वार्थसिद्धि, रवियोग इत्यादि अनेक महत्वपूर्ण योग	6
विवाह मुहूर्त	7
उपनयन, वधुप्रवेश इत्यादि अनेक उपयोगी मुहूर्त	8
चरसारिणी	9
अक्षांश-देशान्तर सारिणी	10
गणनागुणैक्य चक्र, शिशु जन्म के समय पाद विचार	12
होड़ाचक्र, मंगली दोष व परिहार	13
लग्न सारिणी	14
प्रत्येक राशि के लिये शुभ व अशुभ दिन	15
मूल नक्षत्रों के शुभ-अशुभ फल, विवाह मंडप निर्माण में पंचक विचार, सभी संक्रान्तियों का फल,	16
गोचर ग्रह (शोभन, पूज्य व निन्द्य)	42
अग्निवास (वह्निवास) चक्र शिववास चक्र	43
भद्रावास चक्र	44
व्रत-पर्व की सूची	46

४ १०वां गुरु नौकरी व व्यापार में स्थिति असंतोषजनक बनाये। **अप्रैल** में मुकदमें मे धननाश व अपमान, धातु के व्यापार में लाभ, स्त्री को त्वचा रोग, दाम्पत्य जीवन में संघर्ष। **मई** में वाद-विवाद से पीड़ा, विदेश यात्रा से बचें, धातु के व्यापार में लाभ, त्वचा के रोग परन्तु विचित्र स्थानों से धनलाभ, दाम्पत्य जीवन में संघर्ष। **जून** में रुके हुये कार्य पूर्ण होंगे, विदेश यात्रा में कष्ट, धातु के व्यापार में नुकसान, मित्र से सुख, काम की जगह पर सुखद वातावरण, नए स्रोत से धन आयेगा। **जुलाई** में कार्य पूरा होने के साथ अच्छा धनलाभ, धातु के व्यापार में नुकसान, व्यापार में सुखद समय, उपहार मिलने की संभावना। **अगस्त** में योजनाओं से धनलाभ, आँख व पैर में कष्ट, वन या पर्वतीय क्षेत्र में जाने से शारीरिक कष्ट, व्यापार में सुखद समय परन्तु सावधानी से कार्य करें अथवा कलह संभव है। **सितम्बर** में धन-संपत्ति में कमी व मानसम्मान को कष्ट, परिवार को आर्थिक कष्ट, योजनाओं में सफलता, पुराने निवेश के अच्छे परिणाम। **अक्टूबर** में सिर या चेहरे में कष्ट, परिवार में आर्थिक भय, पैतृक सम्पत्ति प्राप्त करने में परिजनों से विवाद, स्वास्थ्य में सुधार, कर्ज में कमीं। **नवम्बर** में परिवार में भय, व्यापार में आर्थिक लाभ, यात्रा से धनप्राप्ति, बुद्धि के उपयोग से धनोपार्जन। **दिसम्बर** में व्यापार में आर्थिक लाभ पर वादविवाद में अपमान, वाहन से कष्ट, यात्रा में कष्ट परन्तु धनलाभ, छोटे भाई से सुख। **जनवरी २०२६** में जमीन के लेनदेन में कष्ट, संतान को प्रतियोगिताओं में असफलता, शेयरमार्केट में सट्टेबाजी से दूर रहें, वाहन-मकान व जमीन-जायदाद का सुख व लाभ। **फरवरी** में सन्तान को कष्ट, शत्रुओं पर विजय, शेयरमार्केट में सट्टेबाजी से दूर रहें, नए स्थान पर कष्ट, कर्ज न लें। **मार्च** में चिन्ता से मुक्ति, जहां से सोचा न था वहां से धनप्राप्ति, नए स्थान पर कष्ट, मुकदमें में बुरा समाचार।

तुलाराशि तथा लग्नको (*रा री रू रे रो ता ती तू ते*): **शनि विचार**-सम्वत्सरारम्भ में शनि कुम्भ में हैं, लौहपाद का ५वाँ शनि पारिवारिक सुख दे। ता.१ अप्रैल को शनि मीन में जायेंगे व सम्वत्सर के अन्त तक उसी में रहेंगे। ताम्रपाद का छठा शनि कर्ज में राहत दिलाये। **राहु-केतु विचार**-सम्वत्सरारम्भ में राहु मीन में व केतु कन्या में रहेंगे, छठा राहु व १२वां केतु स्वर्णपाद से है, सामान्य रूप से समय सुखप्रद एवं संतोषजनक है, किसी ना किसी कारण से यात्रा होगी, स्वर्णपाद होने से रोगादि से कष्ट। ता.९ मई को राहु कुम्भ में व केतु सिंह में जायेंगे व सम्वत्सर के अन्त तक उसी में रहेंगे, लौहपाद का ५वाँ राहु व ११वाँ केतु व्यापार में विस्तार कराये, वाहन-सुख दे परन्तु संतान-सुख में कमी। **गुरु विचार**- संवत्सरारंभ में गुरु वृष में है। जो तुला राशि के लिये विशेष कष्टप्रद हैं, कष्ट निवारणार्थ गुरु का दान, जप, गुरुस्तोत्र का पाठ, मणि (पोखराज) धारण करना लाभप्रद है। रजतपाद का ८वाँ गुरु आपको अपमानित कराये व बचत में कमी लाये। ता.१५ मई को गुरु मिथुन में जायेंगे, रजतपाद का ९वां गुरु धनलाभ कराये व विदेश में यात्रा के अवसर दे। ता.२१ अक्टूबर को गुरु कर्क में जायेंगे, लौहपाद का १०वां गुरु नौकरी व व्यापार में स्थिति असंतोषजनक करे। ता.४ दिसम्बर को पुनः वक्री होकर गुरु मिथुन में जायेंगे व सम्वत्सर के अन्त तक उसी में रहेंगे। लौहपाद का ९वां गुरु धनलाभ कराये व विदेश में यात्रा के अवसर दे। **अप्रैल** में चिन्ता में कमी, स्त्री को नाभी के आसपास कष्ट, सरकार के निर्णय आपके हित में, नये स्थान पर कष्ट, भोगविलास से नए शत्रु। **मई** में मुकदमें में धननाश व अपमान, सरकार के निर्णय आपके हित में, जहां से सोचा भी न था वहां से धनप्राप्ति, स्त्री को कष्ट, भोगविलास से नए शत्रु। **जून** में वाद-विवाद से पीड़ा व विदेश यात्रा से कष्ट, धातु के व्यापार में लाभ, शरीर रोगग्रस्त, सत्ता के निर्णय आपके पक्ष में, स्त्री को नाभि के आसपास रोग। **जुलाई** में रुके हुये कार्य तो पूर्ण होंगे परन्तु विदेश यात्रा में कष्ट, धातु के व्यापार में लाभ, व्यापार में सुखद समय, निवेश का अच्छा आर्थिक फल मिलेगा। **अगस्त** में कार्य पूरा होने के साथ अच्छा धनलाभ, धातु के व्यापार में नुकसान, व्यापार में सुखद समय, उपहार मिलेंगे पर कार्यस्थल में वाद-विवाद। **सितम्बर** में योजनाओं से धनलाभ, आँख व पैर में कष्ट, वन या पर्वतीय क्षेत्र में जाने से शारीरिक कष्ट, आपकी वाणी से कार्यक्षेत्र में आपका सम्मान होगा व लोग आपसे खुश होंगे। **अक्टूबर** में धन-संपत्ति में कमी व मानसम्मान को कष्ट, वन या पर्वतीय क्षेत्र में जाने से शारीरिक कष्ट, शरीर को रोगमय, जलीय व्यापार से लाभ, मित्र का व्यापार में सहयोग। **नवम्बर** में सिर या चेहरे में कष्ट व परिवार में आर्थिक भय, भाई से संबंध खराब, वाणी के दुरुपयोग से विशेष कष्ट, स्वास्थ्य में सुधार। **दिसम्बर** में परिवार में भय पर व्यापार में आर्थिक लाभ, यात्रा से धनप्राप्ति, वाणी के दुरुपयोग से विशेष कष्ट, पारिवारिक कार्यों में सफलता, यात्रा से सुख। **जनवरी २०२६** में व्यापार में आर्थिक लाभ परन्तु वादविवाद में अपमान, वाहन से कष्ट, जमीन-जायदाद के लेनदेन से लाभ, यात्रा में भय। **फरवरी** में जमीन के लेनदेन में कष्ट, संतान को प्रतियोगिताओं में असफलता, वाहन से कष्ट, माता से सुख। **मार्च** में चिन्ता में कमी, स्त्री को नाभी के आसपास कष्ट, शेयरमार्केट में सट्टेबाजी से दूर रहें, संतान को प्रतियोगिताओं में असफलता, ध्यान रहे शत्रुओं की नजर आप पर है।

वृश्चिकराशि तथा लग्नको (*तो ना नी नू ने नो या यी यू*): **शनि विचार**-सम्वत्सरारम्भ में शनि कुम्भ में हैं, जिससे १ अप्रैल तक ढ़ैय्या का प्रभाव रहेगा। स्वर्णपाद का ४था शनि कुछ शत्रुवृद्धि कराये। शनि के कष्ट निवारणार्थ शनि का दान, जप, नीलम धारण, सुन्दरकाण्ड का पाठ एवं शनिवार को शनि भगवान को तेल चढ़ाना चाहिये। ता.१ अप्रैल को शनि मीन में जायेंगे व सम्वत्सर के अन्त तक उसी में रहेंगे। स्वर्णपाद का ५वाँ शनि सन्तान को कष्टप्रद। **राहु-केतु विचार**-सम्वत्सरारम्भ में राहु मीन में व केतु कन्या में रहेंगे, ५वां राहु व ११वां केतु ताम्रपाद से है अतः व्यापार का विस्तार, वाहन-सुख मिलेगा परन्तु संतान-सुख में कमी, ताम्रपाद शुभ है अतः यह कष्टों को कम करेगा। ता.९ मई को राहु कुम्भ में व केतु सिंह में जायेंगे व सम्वत्सर के अन्त तक उसी में रहेंगे, स्वर्णपाद का ४था राहु व १०वाँ केतु होने से समय कष्टप्रद है, कार्य में आलस्य व अपनों से दूरी होगी। भगवत् आराधना से कुछ राहत मिलेगी। **गुरु विचार**-संवत्सरारंभ में गुरु वृष में है। लौहपाद का ७वाँ गुरु पार्टनर के सहयोग से धनवृद्धि कराये पर स्त्री को नाभी के आसपास पीड़ा दे। ता.१५ मई को गुरु मिथुन में जायेंगे, स्वर्णपाद का ८वां गुरु है जो विशेष कष्टप्रद है, आपको अपमानित कराये व बचत में कमी लाये। कष्ट निवारणार्थ गुरु का दान, जप, गुरुस्तोत्र का पाठ, मणि (पोखराज) धारण करना लाभप्रद है। ता.२१ अक्टूबर को गुरु कर्क में जायेंगे। स्वर्णपाद का ९वां गुरु धनलाभ कराये व विदेश में यात्रा के अवसर दे। ता.४ दिसम्बर को पुनः वक्री होकर गुरु मिथुन में जायेंगे व सम्वत्सर के अन्त तक उसी में रहेंगे, ताम्रपाद का ८वां गुरु है, जो विशेष कष्टप्रद है, आपको मान-सम्मान में व बचत में कमी लाये। **अप्रैल** में सन्तान को कष्ट, शत्रुओं पर विजय, जांघ में कष्ट, संतान के विद्या के क्षेत्र में अनिश्चय की स्थिति, सन्तान प्राप्ति के योग। **मई** में चिन्ता में कमी, स्त्री को नाभी के आसपास कष्ट, जांघ में कष्ट, भरोसेमंद लोगों से विश्वासघात, त्वचा संबंधी रोग, सन्तान प्राप्ति के योग। **जून** में मुकदमें में धननाश व अपमान, सरकार के निर्णय आपके हित में, विदेशयात्रा में कष्ट परन्तु जहां से सोचा भी न था वहाँ से धनलाभ, नौकरी के स्थान पर नए शत्रु उत्पन्न। **जुलाई** में वाद-विवाद से पीड़ा, विदेश यात्रा से बचें, सरकार के निर्णय आपके हित में, त्वचा के रोग, स्त्री से सामंजस्य में कमी। **अगस्त** में रुके हुये कार्य तो पूर्ण होंगे परन्तु विदेश यात्रा में कष्ट, धातु के व्यापार में लाभ, त्वचा के रोग, अनेक स्रोतों से धनप्राप्ति होगी। **सितम्बर** में कार्य पूरा होने के साथ अच्छा धनलाभ, धातु के व्यापार में नुकसान, अनेक स्रोतों से धनप्राप्ति होगी। **अक्टूबर** में योजनाओं से धनलाभ, आँख व पैर में कष्ट, धातु के व्यापार में नुकसान, व्यर्थ के खर्चे। **नवम्बर** में धन-संपत्ति में कमी व मानसम्मान को कष्ट, वन या पर्वतीय क्षेत्र में जाने से शारीरिक कष्ट, खाते-बही, दलाली के कार्यों में लाभ, योजनाओं से धनलाभ। **दिसम्बर** में सिर या चेहरे में कष्ट व परिवार में आर्थिक भय, मानसम्मान को कष्ट, व्यापार में अच्छा लाभ, लेखनकार्य से यश प्राप्ति, वाहन से सुख, स्वास्थ्य में सुधार। **जनवरी** २०२६ में परिवार में भय परन्तु व्यापार में आर्थिक लाभ, यात्रा से सुख व धनप्राप्ति, लिये गये गलत निर्णयों व वाणी से वाद विवाद उत्पन्न हों। **फरवरी** में व्यापार में आर्थिक लाभ परन्तु वादविवाद में अपमान, यात्रा से धनप्राप्ति, माता से सुख व धनलाभ, भाग्योन्नति, जमीन-जायदाद से धनलाभ। **मार्च** में जमीन के लेनदेन में कष्ट, संतान को प्रतियोगिताओं में असफलता, वाहन से कष्ट, माता से सुख व धनलाभ, संतान प्राप्ति से सुखद वातावरण।

धनुराशि तथा लग्नको (*ये यो भा भी भू धा फा ढा भे*): **शनि विचार**-सम्वत्सरारम्भ में शनि कुम्भ में हैं, ताम्रपाद का ३रा शनि विद्यार्थियों के लिये सफलता लाये। ता.१ अप्रैल को शनि मीन में जायेंगे व सम्वत्सर के अन्त तक उसी में रहेंगे, जिससे ढ़ैय्या का प्रभाव रहेगा। शनि के कष्ट निवारणार्थ शनि का दान, जप, नीलम धारण, सुन्दरकाण्ड का पाठ एवं शनिवार को शनि भगवान को तेल चढ़ाना चाहिये। **राहु-केतु विचार**-सम्वत्सरारम्भ में राहु मीन में व केतु कन्या में रहेंगे, ४था राहु व १०वां केतु रजतपाद से है, कष्टप्रद समय है, कार्य में आलस्य व अपनों से दूरी होगी। भगवत् आराधना से कुछ राहत मिलेगी। ता.९ मई को राहु कुम्भ में व केतु सिंह में जायेंगे व सम्वत्सर के अन्त तक उसी में रहेंगे, ताम्रपाद का ३रा राहु व ९वाँ केतु होने से निर्णय लेने का उत्साह रहेगा परन्तु केतु के कारण निर्णय लेने में सावधानी बरतें। **गुरु विचार**- संवत्सरारंभ में गुरु वृष में है। ताम्रपाद का छठा गुरु रोग व कर्ज की चिन्ता बढ़ाये। ता.१५ मई को गुरु मिथुन में जायेंगे, लौहपाद का ७वां गुरु पार्टनर के सहयोग से धनवृद्धि कराये परन्तु स्त्री को नाभी के आसपास पीड़ा दे। ता.२१ अक्टूबर को गुरु कर्क में जायेंगे, ताम्रपाद का ८वां गुरु है जो विशेष कष्टप्रद है, यह आपको अपमानित कराये व बचत में कमी लाये। कष्ट निवारणार्थ गुरु का दान, जप, गुरुस्तोत्र का पाठ, मणि (पोखराज) धारण करना लाभप्रद है। ता.४ दिसम्बर को पुनः वक्री होकर गुरु मिथुन में जायेंगे व सम्वत्सर के अन्त तक उसी में रहेंगे। स्वर्णपाद का ७वां गुरु पार्टनर के सहयोग से धनवृद्धि कराये परन्तु स्त्री को नाभी के आसपास पीड़ा दे। **अप्रैल** में जमीन के लेनदेन में कष्ट परन्तु धनलाभ, संतान को प्रतियोगिताओं में असफलता, मान-सम्मान में कमी, संगीत व वादन के क्षेत्र में धनलाभ। **मई** में सन्तान को कष्ट, शत्रुओं पर विजय, अपमानित होने का खतरा, विद्यार्थियों को कष्टप्रद समय व असफलता, संगीत व वादन के क्षेत्र में धनलाभ। **जून** में चिन्ता में कमी, स्त्री को नाभी के आसपास कष्ट, दाम्पत्य सुख में कमी पर जहां से सोचा भी न था वहां से धनलाभ, संतान से मधुर संबंध। **जुलाई** में मुकदमें में धननाश व अपमान, जांघ में कष्ट, जहां से सोचा भी न था वहां से धनलाभ। **अगस्त** में वाद-विवाद से पीड़ा, विदेश यात्रा से बचें, सरकार के निर्णय आपके हित में, जहां से सोचा भी न था वहां से धनलाभ, दाम्पत्य सुख में कमी। **सितम्बर** में रुके हुये कार्य तो पूर्ण होंगे परन्तु विदेश यात्रा में कष्ट, धातु के व्यापार में लाभ, निवेश में अच्छा लाभ। **अक्टूबर** में कार्य पूरा होने के साथ अच्छा धनलाभ, धातु के व्यापार में लाभ, मित्र से अच्छे संबंध, अनेक स्रोतों से धनप्राप्ति, विदेश यात्रा में उपहार, सत्ता के निर्णयों से कष्ट। **नवम्बर** में योजनाओं से धनलाभ, आँख व पैर में कष्ट, धातु के व्यापार में नुकसान, व्यर्थ के खर्चे, योजनाओं व निवेश से धनलाभ, स्वास्थ्य में अच्छा लाभ। **दिसम्बर** में धन-संपत्ति में कमी व मानसम्मान को कष्ट, वन या पर्वतीय क्षेत्र में जाने से शारीरिक कष्ट, व्यर्थ के खर्चे, योजनाओं में सफलता। **जनवरी २०२६** में सिर या चेहरे में कष्ट, परिवार में आर्थिक भय, भोग-विलास की प्रवृत्ति, वाणी के दुरुपयोग से कष्ट, स्वास्थ्य में सुधार। **फरवरी** में परिवार व यात्रा में भय परन्तु व्यापार में आर्थिक लाभ, छोटे भाई से अच्छे संबंध। **मार्च** में व्यापार में आर्थिक लाभ पर वादविवाद में अपमान, यात्रा से धनप्राप्ति, माता से सुख व धनलाभ, वाहन से सुख, जमीन-जायदाद के लेनदेन में लाभ।

मकरराशि तथा लग्नको (*भो जा जी खी खू खे खो गा (ज्ञ) गी*): **शनि विचार**- सम्वत्सरारम्भ में शनि कुम्भ में हैं, जिससे ता.१ अप्रैल तक साढ़े साती का कष्ट रहेगा। शनि के कष्ट निवारणार्थ शनि का दान, जप, नीलम धारण, सुन्दरकाण्ड का पाठ एवं शनिवार को शनि भगवान को तेल चढ़ाना चाहिये। रजतपाद का २रा शनि धन की हानि करे। ता.१ अप्रैल को शनि मीन में जायेंगे व सम्वत्सर के अन्त तक उसी में रहेंगे। लौहपाद का ३रा शनि यात्रा में धनलाभ कराये। **राहु-केतु विचार**-सम्वत्सरारम्भ में राहु मीन में व केतु कन्या में रहेंगे, ३रा राहु व ९वां केतु लौहपाद से है, निर्णय लेने का उत्साह रहेगा परन्तु केतु व लौहपाद के कारण निर्णय लेने में सावधानी बरतें। ता.९ मई को राहु कुम्भ में व केतु सिंह में जायेंगे व सम्वत्सर के अन्त तक उसी में रहेंगे। रजतपाद का २रा राहु व ८वाँ केतु शरीर में गर्मी की अधिकता बढ़ाये, रिश्तेदारों से मनमुटाव करे। **गुरु विचार**-संवत्सरारंभ में गुरु वृष में है। रजतपाद का ५वाँ गुरु सन्तान को प्रतियोगिताओं में सफलता दे व आपका भाग्योदय करे। ता.१५ मई को गुरु मिथुन में जायेंगे। स्वर्णपाद का छठा गुरु रोग दे व कर्ज की चिन्ता से कष्ट। ता.२१ अक्टूबर को गुरु कर्क में जायेंगे। रजतपाद का ७वां गुरु पार्टनर के सहयोग से धनवृद्धि कराये परन्तु स्त्री को नाभी के आसपास पीड़ा दे। ता.४ दिसम्बर को पुनः वक्री होकर गुरु मिथुन में जायेंगे व सम्वत्सर के अन्त तक उसी में रहेंगे। रजतपाद का छठा गुरु रोग दे व कर्ज की चिन्ता से कष्ट। **अप्रैल** में व्यापार में आर्थिक लाभ परन्तु वादविवाद में अपमान, स्त्री को नाभी के आसपास कष्ट, यात्रा में भय परन्तु लाभ, जलीय यात्रा में सुख। **मई** में जमीन के लेनदेन में कष्ट व संतान को प्रतियोगिताओं में असफलता, स्त्री को नाभी के आसपास कष्ट, वाणी के उत्तम उपयोग से लोग प्रभावित, स्त्री के सहयोग से आर्थिक लाभ। **जून** में सन्तान को कष्ट, शत्रुओं पर विजय, अपमानित होने का खतरा, नए स्थान पर स्त्री को कष्ट, माता या जमीन-जायदाद से धन प्राप्ति। **जुलाई** में चिन्ता में कमी, स्त्री को नाभी के आसपास कष्ट, अपमानित होने का खतरा, दाम्पत्य सुख में कमी, शेयरमार्केट से लाभ। **अगस्त** में मुकदमें में धननाश व अपमान, जांघ में कष्ट, दाम्पत्य सुख में कमी, कमर में पीड़ा। **सितम्बर** में वाद-विवाद से पीड़ा, विदेश यात्रा से बचें, सरकार के निर्णय आपके हित में, जहां से सोचा न था वहां से धनप्राप्ति, शरीर में पीड़ा, मुकदमें में बुरा समाचार। **अक्टूबर** में रुके हुये कार्य तो पूर्ण होंगे परन्तु विदेश यात्रा में कष्ट, सरकार के निर्णय आपके हित में, व्यापार में अच्छा लाभ, कार्यों में सफलता, धन आने के नए रास्ते खुलेंगे, पिता से उपहार। **नवम्बर** में कार्य पूरा होने के साथ अच्छा धनलाभ, धातु के व्यापार में लाभ, सभी कार्यों में सफलता, सरकार से कष्ट। **दिसम्बर** में योजनाओं से धनलाभ, आँख व पैर में कष्ट, धातु के व्यापार में नुकसान, वाणी के उत्तम उपयोग से लोग प्रभावित, खाते-बही, दलाली के कार्यों में लाभ, निवेश से धनलाभ। **जनवरी २०२६** में धन-संपत्ति में कमी व मानसम्मान को कष्ट, वन या पर्वतीय क्षेत्र में जाने से शारीरिक कष्ट, चोरी का भय, नेत्र रोग, नए स्रोत से धनलाभ, लेखनकार्य से यश प्राप्ति। **फरवरी** में सिर या चेहरे में कष्ट व परिवार में आर्थिक भय, वन या पर्वतीय क्षेत्र में जाने से शारीरिक कष्ट, पैतृक सम्पत्ति प्राप्त करने में परिजनों से विवाद, बुद्धि के उचित उपयोग से धनलाभ। **मार्च** में परिवार में भय परन्तु व्यापार में आर्थिक लाभ, पैतृक सम्पत्ति प्राप्त करने में परिजनों से विवाद, कला के क्षेत्र में सफलता, यात्रा से सुख।

कुम्भराशि तथा लग्नको (*गू गे गो सा सी सू से सो दा*): **शनि विचार**- सम्वत्सरारम्भ में शनि कुम्भ में हैं, पूरे सम्वत्सर ही साढ़े साती का कष्ट रहेगा। लौहपाद का १ला शनि कानूनी वाद-विवाद बढ़ाये। शनि के कष्ट निवारणार्थ शनि का दान, जप, नीलम धारण, सुन्दरकाण्ड का पाठ एवं शनिवार को शनि भगवान को तेल चढ़ाना चाहिये। ता.१ अप्रैल को शनि मीन में जायेंगे व सम्वत्सर के अन्त तक उसी में रहेंगे। ताम्रपाद का २रा शनि परिवार को आर्थिक कष्ट दे। **राहु-केतु विचार**-सम्वत्सरारम्भ में राहु मीन में व केतु कन्या में रहेंगे, २रा राहु व ८वां केतु ताम्रपाद से है, शरीर में गर्मी की अधिकता, रिश्तेदारों से मनमुटाव रहेगा परन्तु शुभ ताम्रपाद आपकी सहायता भी करेगा। ता.९ मई को राहु कुम्भ में व केतु सिंह में जायेंगे व सम्वत्सर के अन्त तक उसी में रहेंगे। लौहपाद का १ला राहु व ७वाँ केतु है जो कुम्भ राशि के लिये विशेष कष्टप्रद है, मानसिक उलझन देगा, संतान को कष्ट, लोग विरोध करने का प्रयत्न करेंगे, लौहपाद भी कष्टकारक है। शान्ति हेतु राहु का दान, जप, मणि (लाजावर्त) धारण करें। **गुरु विचार**-संवत्सरारंभ में गुरु वृष में है। जो कुम्भ राशि के लिये विशेष कष्टप्रद है, कष्ट निवारणार्थ गुरु का दान, जप, गुरुस्तोत्र का पाठ, मणि (पोखराज) धारण करना लाभप्रद है। स्वर्णपाद का ४था गुरु जमीन-जायदाद के लेनदेन में कष्ट दे, वाहन से कष्ट दे। ता.१५ मई को गुरु मिथुन में जायेंगे। ताम्रपाद का ५वां गुरु सन्तान को प्रतियोगिताओं मे सफलता दे व आपका भाग्योदय करे। ता.२१ अक्टूबर को गुरु कर्क में जायेंगे, लौहपाद का छठा गुरु रोग दे व कर्ज की चिन्ता कराये। ता.४ दिसम्बर को पुनः वक्री होकर गुरु मिथुन में जायेंगे व सम्वत्सर के अन्त तक उसी में रहेंगे। लौहपाद का ५वां गुरु सन्तान को प्रतियोगिताओं में सफलता दे व आपका भाग्योदय करे। **अप्रैल** में परिवार में भय परन्तु व्यापार में आर्थिक लाभ, जहां से सोचा न था वहां से धनप्राप्ति, वाणी के दुरुपयोग से विशेष कष्ट। **मई** में व्यापार में आर्थिक लाभ परन्तु वादविवाद में अपमान, जहां से सोचा न था वहां से धनप्राप्ति, जमीन-जायदाद के लेनदेन से लाभ, यात्रा में भय, लेखनकार्य से यश प्राप्ति, संगीत व वादन के क्षेत्र में ख्याति। **जून** में जमीन के लेनदेन में कष्ट, संतान को प्रतियोगिताओं में असफलता, स्त्री को नाभी के आसपास कष्ट, वाहन से सुख, यात्रा में आनन्द। **जुलाई** में सन्तान को कष्ट, शत्रुओं पर विजय, स्त्री को नाभी के आसपास कष्ट, नये स्थान पर कष्ट, वाहन एवं सेवकों से सुख, सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में रुचि। **अगस्त** में चिन्ता में कमी, स्त्री को नाभी के आसपास कष्ट, अपमानित होने का खतरा, नये स्थान पर कष्ट, शेयर मार्केट से लाभ, बुरी संगत से बचें व नया कर्ज न लें। **सितम्बर** में मुकदमें में धननाश व अपमान, जांघ में कष्ट, आर्थिक सहायता के नए रास्ते खुलेंगे, स्त्री को रोग, ध्यान दें शत्रु आप पर नजर रखें हैं। **अक्टूबर** में वाद-विवाद से पीड़ा, विदेश यात्रा से बचें, जांघ में कष्ट, स्त्री को कष्ट, कार्यों में सफलता, धन के नए रास्ते खुलेंगे। **नवम्बर** में रुके हुये कार्य तो पूर्ण होंगे परन्तु विदेश यात्रा में कष्ट, सरकार के निर्णय आपके हित में, अनेक स्रोतों से धनप्राप्ति, विदेश यात्रा में उपहार। **दिसम्बर** में कार्य पूरा होने के साथ अच्छा धनलाभ, धातु के व्यापार में लाभ, व्यापार में अच्छा लाभ, सत्ता के निर्णय आपके पक्ष में, योजनाओं से धनप्राप्ति, नौकरी के स्थान पर विवाद। **जनवरी २०२६** में योजनाओं से धनलाभ, आँख व पैर में कष्ट, धातु के व्यापार में नुकसान, खाते-बही, दलाली के कार्यों में लाभ परन्तु व्यर्थ के खर्चे भी होंगे, स्त्री-पक्ष से धनलाभ। **फरवरी** में धन-संपत्ति में कमी व मानसम्मान को कष्ट, धातु के व्यापार में नुकसान, आपकी गलत वाणी से मान-सम्मान को कष्ट, लेखनकार्य से यश प्राप्ति। **मार्च** में सिर या चेहरे में कष्ट व परिवार में आर्थिक भय, वन या पर्वतीय क्षेत्र में शारीरिक कष्ट, पैतृक सम्पत्ति प्राप्त करने में परिजनों से विवाद, बुद्धि की चतुराई से धन आगमन।

मीनराशि तथा लग्नको (*दी दू थ झ (ञ = ज) दे दो चा ची*): **शनि विचार**-सम्वत्सरारम्भ में शनि कुम्भ में हैं, पूरे सम्वत्सर ही मीन पर साढ़े साती का कष्ट रहेगा, ताम्रपाद का १२वाँ शनि आपको आर्थिक कष्ट दे। शनि के कष्ट निवारणार्थ शनि का दान, जप, नीलम धारण, सुन्दरकाण्ड का पाठ एवं शनिवार को शनि भगवान को तेल चढ़ाना चाहिये। ता.१ अप्रैल को शनि मीन में जायेंगे व सम्वत्सर के अन्त तक उसी में रहेंगे रजतपाद का १ला शनि मान-सम्मान में कमी लाये। **राहु-केतु विचार**-सम्वत्सरारम्भ में राहु मीन में व केतु कन्या में रहेंगे, १ला राहु व ७वां केतु स्वर्णपाद से है, जो विशेष कष्टप्रद है। मानसिक उलझन विशेष रहेगी व संतान को कष्ट रहेगा व लोग विरोध करने का प्रयत्न करेंगे, स्वर्णपाद भी कष्टकारक है। शान्ति हेतु राहु का दान, जप, मणि (लाजावर्त) धारण करें। ता.९ मई को राहु कुम्भ में व केतु सिंह में जायेंगे व सम्वत्सर के अन्त तक उसी में रहेंगे। ताम्रपाद का १२वां राहु व छठा केतु होने से शरीर रोगग्रस्त रहेगा परन्तु पाद शुभ होने से परेशानियां कम होंगी। **गुरु विचार**-संवत्सरारंभ में गुरु वृष में है। लौहपाद का तीसरा गुरु है, अपने हाथ व कंधो का विशेष ध्यान रखें। व्यापार में भी परीश्रम करना होगा। ता.१५ मई को गुरु मिथुन में जायेंगे जो विशेष कष्टप्रद है, रजतपाद का ४था गुरु है, जमीन-जायदाद के लेनदेन मे कष्ट, वाहन से कष्ट। कष्ट निवारणार्थ गुरु का दान, जप, गुरुस्तोत्र का पाठ, मणि (पोखराज) धारण करना लाभप्रद है। ता.२१ अक्टूबर को गुरु कर्क में जायेंगे, ताम्रपाद का ५वां गुरु सन्तान को प्रतियोगिताओं में सफलता दे व आपका भाग्योदय करे। ता.४ दिसम्बर को पुनः वक्री होकर गुरु मिथुन में जायेंगे व सम्वत्सर के अन्त तक उसी में रहेंगे ताम्रपाद का ४था गुरु है जो विशेष कष्टप्रद है, जमीन-जायदाद के लेनदेन में कष्ट, वाहन से कष्ट। **अप्रैल** में सिर या चेहरे में कष्ट व परिवार में आर्थिक भय, शेयरमार्केट में सट्टेबाजी से दूर रहें, शरीर रोगभय से त्रस्त, मान-सम्मान में वृद्धि। **मई** में परिवार में भय परन्तु व्यापार में आर्थिक लाभ, शेयरमार्केट में सट्टेबाजी से दूर रहें, दुस्साहस से कष्ट पर योजनाओं से धनलाभ, मान-सम्मान में वृद्धि। **जून** में व्यापार में आर्थिक लाभ परन्तु वादविवाद में अपमान, जहां से सोचा न था वहां से धनप्राप्ति, यात्रा में भय परन्तु आर्थिक लाभ, परिवार के सहयोग से धनप्राप्ति। **जुलाई** में जमीन के लेनदेन में कष्ट व संतान को प्रतियोगिताओं में असफलता, जहां से सोचा न था वहां से धनप्राप्ति, छोटे भाई से सुखद संबंध। **अगस्त** में सन्तान को कष्ट, शत्रुओं पर विजय, स्त्री को नाभी के आसपास कष्ट, संतान को विद्या के क्षेत्र में अनिश्चय की स्थिति का सामना, वाहन से सुख, शेयर मार्केट से लाभ। **सितम्बर** में चिन्ता में कमी, स्त्री को नाभी के आसपास कष्ट, अपमानित होने का खतरा, दाम्पत्य सुख में कमी, आर्थिक हानि, स्थान-परिवर्तन से कष्ट, संतान को प्रतियोगिताओं में सफलता, मुकदमें में बुरा समाचार। **अक्टूबर** में मुकदमें में धन का व्यय व अपमान, अपमानित होने का खतरा, आपकी कुशल वाणी से नये कार्य क्षेत्र में धनलाभ, नया कर्ज लेने से बचें। **नवम्बर** में वाद-विवाद से पीड़ा, विदेश यात्रा से बचें, जांघ में कष्ट, अनेक स्रोतों से धनप्राप्ति। **दिसम्बर** में रुके हुये कार्य तो पूर्ण होंगे परन्तु विदेश यात्रा में कष्ट, सरकार के निर्णय आपके हित में, पिता से धनप्राप्ति, वाद-विवाद से परेशानी। **जनवरी २०२६** में कार्य पूरा होने के साथ साथ अच्छा धनलाभ, धातु के व्यापार में लाभ, व्यापार में अच्छा लाभ, वाणी के उत्तम उपयोग से लोग प्रभावित, सभी कार्यों में सफलता, सत्तापक्ष से कष्ट। **फरवरी** में योजनाओं से धनलाभ, आँख व पैर में कष्ट व इलाज में अत्यधिक खर्चे, धातु के व्यापार में लाभ, भौतिक सुख-सुविधाओं में वृद्धि। **मार्च** में धन-संपत्ति में कमी व मानसम्मान को कष्ट, धातु के व्यापार में नुकसान, आँख व पैर के इलाज में खर्च, उच्च पद की प्राप्ति होती है। इति ॥

सूचना- लग्न एवं राशि के आधार से किया हुआ भविष्यफल आने वाले समय का संकेत होता है। पूरा विवरण जानने के लिये व्यक्ति को अपनी जन्म कुंडली बनवाना आवश्यक है।

सोना-चाँदी- रुई की तेजी-मंदी (३० ...

अप्रैल-तेजी-ता.५,२६। मन्दी-ता.१,३,३०। मई-तेजी- ... जुलाई- ...
तेजी- ता.१,११,२७,२९,३०। मन्दी-ता.५,१४,२५। सितंबर- ...
अगस्त-तेजी- ता.५,१६,२१,२६। मन्दी-ता.११,३०। ...
अक्टूबर-तेजी-ता.२,६,९,२३ (विशेष),२४। मन्दी-ता. ...
मन्दी-ता.७,१०,११। दिसंबर-तेजी-ता.२(विशेष),६,२२,२८ ...
जनवरी २०२६-तेजी-ता.४-५(विशेष),१२,१७,२३। मन्दी- ...
ता.११,१८,२४। मार्च-तेजी- ता.१,१७(विशेष),११। मन्दी- ...
तेजी-मन्दी की होड, बाजार अस्थिर- अप्रैल-ता. ...
सितम्बर-४,७। अक्टूबर-२१। नवम्बर-१२,२६। जनवरी (२०२६)- ...
मन्दी के बाद तेजी- ता.१२ अगस्त, ता.८ जनवरी २०२६। ...
२०२६। बाजार अस्थिर फिर भी तेजी- ता.७ अप्रैल, ता.१० ...
लम्बे अन्तराल के संकेत-ता.१२ अप्रैल से २५ अप्रैल ...
तेजी। ता.१० अगस्त से २१ सितम्बर तेजी। ता.८ से २० अक्टूबर ...

लग्नसारिणी से इष्ट काल क...

माना हमें किसी दिन के इष्टकाल १० घटी १७ पल का ... गणेश आपा पंचांग में देखा। अब त्रैराशिक करके सूर्योद... इष्टकाल जोड़कर १/३/४०/५ आया। १ अर्थात वृष के ... दिया है और वहीं ४ अंश पर ७/३७/८ दिया है। त्रैराशि... फल ७/३८/२० आयेगा। इसमें इष्टकाल १०/१७ जोड़ा ... में खोजा तो पाया की ३ राशि १ अंश का (सारिणी ... ५४/२४) है अतः यह ३ राशि १ अंश व ३ राशि २ ... अर्थात कर्क लग्न का १ अंश ४३ कला ५१ विकला ...

अयाष्टोत्तरीमतेनायव्ययचक्रम् १०८

राशयः	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	...
आयः	२	११	१४	८	११	१४	११	२	५	...
व्ययः	१४	५	२	२	११	२	५	१४	५	...

आयेश्वयम् ... व्ययेश्वर ...
तेन विन्ध्यदीर्घ ... [illegible]

अयोभयलाभव्ययचक्रादिकेभ्यो ... फलमादिशेत्। लाभं १ सौख्यं २ ... केषाञ्चित मतेन वर्णस्य पूर्वं ...

सोना-चाँदी- रुई की तेजी-मंदी (३० मार्च २०२५ से १९ मार्च २०२६ तक)

अप्रैल-*तेजी*-ता.५,२६। *मन्दी*-ता.१,३,३०। **मई**-*तेजी*-ता.३,७,१५,२२,२३,२६,३१। *मन्दी*-ता.२४,२८। **जून**-*तेजी*- ता.१,१९,२७,२९,३०। *मन्दी*-ता.५,१४,२५। **जुलाई**-*तेजी* -ता.१६,१८,२५,२६,२८। *मन्दी*-ता.२२,२३,२७। **अगस्त**-*तेजी*- ता.५,१६,२१,२६। *मन्दी*-ता.१९,३०। **सितंबर**-*तेजी*-ता.८,१४,२२,२४। *मन्दी*-ता.१२,१५,१६,१९। **अक्टूबर**-*तेजी*-ता.२,६,९,२३ (विशेष),२४। *मन्दी*-ता.११,१३,१९,२६। **नवंबर**- *तेजी* -ता.२(विशेष),९,२०,२१,२३। *मन्दी*-ता.७,१०,१९। **दिसंबर**-*तेजी*-ता.२(विशेष),६,१२,१८,२०(विशेष),२७,२९। *मन्दी*-ता.७ (विशेष),१९।

जनवरी २०२६-*तेजी*-ता.४-५(विशेष),१२,१७,२३। *मन्दी*-ता.१६। **फरवरी**-*तेजी*-ता.३,५,१६,१९,२१,२५। *मन्दी*-ता.११,१८,२४। **मार्च**-*तेजी*- ता.१,१७(विशेष),१९। *मन्दी*-ता.१३।

तेजी-मन्दी की होड, बाजार अस्थिर- अप्रैल-ता.२५। मई-९,१७। जून-ता.२२। जुलाई-१९। अगस्त-ता.२०। सितम्बर-४,७। अक्टूबर-२१। नवम्बर-१२,२६। जनवरी (२०२६)-ता.३,१८,३१। फरवरी-ता.२७। मार्च-ता.३,१४,२८,२९।

मन्दी के बाद तेजी- ता.१२ अगस्त, ता.८ जनवरी २०२६। **तेजी के बाद मन्दी**- ता.१३,२५ नवम्बर। ता.२८ जनवरी २०२६। **बाजार अस्थिर फिर भी तेजी**- ता.७ अप्रैल, ता.१० अगस्त, ता.२९ नवम्बर।

लम्बे अन्तराल के संकेत-ता.१२ अप्रैल से २५ अप्रैल हलचल। ता.१२ से २४ जून तेजी। ता.९ से २१ जुलाई अस्थिर तेजी। ता.१० अगस्त से २१ सितम्बर तेजी। ता.८ से २० अक्टूबर तेजी। ता.११ नवम्बर से ता.१० दिसम्बर तेजी।

लग्नसारिणी से इष्ट काल का लग्न निकालने की विधि

माना हमें किसी दिन के इष्टकाल १० घटी १७ पल का लग्न निकालना है। उस दिन का मिश्रमानकालिक सूर्यस्पष्ट गणेश आपा पंचांग में देखा। अब त्रैराशिक करके सूर्योदय का स्पष्ट निकाला। माना यह १/३/२९/४८ आया। इसमें इष्टकाल जोड़कर १/३/४०/५ आया। १ अर्थात वृष के खाने में ३ अंश पर लग्न सारिणी (पृष्ठ १४ पर) में ७/२८/४२ दिया है और वहीं ४ अंश पर ७/३७/८ दिया है। त्रैराशिक करके १ राशि ३ अंश ४० कला और ५ विकला पर इसका फल ७/३४/२० आयेगा। इसमें इष्टकाल १०/१७ जोड़ा तो १७/५१/२० आयेगा। अब उलटा १७/५१/२० को लग्न सारिणी में खोजा तो पाया को ३ राशि १ अंश का (सारिणी फल १७/४३/०) है और ३ राशि २ अंश का (सारिणी फल १७/५४/२४) है अतः यह ३ राशि १ अंश व ३ राशि २ अंश के बीच में आता है। त्रैराशिक करके यह ३/१/४३/५१ आया। अर्थात कर्क लग्न का १ अंश ४३ कला ५१ विकला यही इष्टकाल १० घटी १७ पल का लग्न हुआ।

अथाष्टोत्तरीमतेनायव्ययचक्रम् १०८

राशयः	मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	घ	म	कुं	मी
आयः	२	११	१४	८	११	१४	११	२	५	८	८	५
व्ययः	१४	५	२	२	११	२	५	१४	५	१४	१४	५

आयैक्यम् ९९ व्ययैक्यञ्च ९३
तेनविन्ध्यदक्षिणवासिनां सुखसमृद्धिकारकम्।

अथ विंशोत्तरीमतेनायव्ययचक्रम् १२०

राशयः	मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	घ	म	कुं	मी
आयः	१४	८	१४	८	११	१४	८	१४	११	५	५	११
व्ययः	११	५	२	१४	११	२	५	११	२	५	५	२

विंशोत्तरीमतेनायैक्यम् १२३ व्ययैक्यमपि ७५
तेनविन्ध्योत्तरवासिनां सुखसमृद्धिकारकम्।

अथोभयलाभव्ययचक्राद्विशेषे विचारः- लाभव्ययौ समीकृत्वा एकहीनं तु कारयेत। अष्टभिस्तु हरेद्भागं शेषांके फलमादिशेत्। लाभं १ सौख्यं २ क्लेशं ३ रोगं ४ लोकापवादनं ५ सम्मानं ६ विजयं ७ हानिः ८ कथितं पूर्वसूरिभिः। केषाञ्चित मतेन वर्षस्य पूर्वार्द्धे अष्टोत्तरीमतेन विंशोत्तरीमतेन वर्षस्योत्तरार्द्धे लाभालाभ विचारौ कार्या।

ग्रहण विवरण सम्वत् २०८२ (२०२५-२०२६)

इस सम्वत्सर में भारत में कोई भी सूर्यग्रहण दिखायी नहीं देगा। सूर्यग्रहण जो विश्व में अन्यत्र दिखायी देगें परन्तु भारत में नहीं दिखायी देगा उनका विवरण नीचे दिया गया है।

१) ता. २१ सितम्बर २०२५ का सूर्यग्रहण (केवल दक्षिण प्रशान्त महासागर, न्यूजीलैण्ड में दिखायी देगा)।

२) ता.१७ फरवरी २०२६ का सूर्यग्रहण (केवल दक्षिण अफ्रीका के दक्षिणी भाग में दिखायी देगा)।

ये दोनो सूर्यग्रहण भारत में कहीं भी दिखायी नहीं देंगे अतः इनकी कोई धार्मिक मान्यता नहीं होगी, न तो इनका कोई सूतक व वेध होगा, न कोई स्नान या पर्वकाल होगा। इनका किसी भी राशि पर कोई प्रभाव नहीं होगा। आप अपनी सामान्य दिनचर्या करें। टी.वी., मोबाइल, इण्टरनेट इत्यादि पर देखकर कृपया भ्रमित न हों।

चन्द्रग्रहण विवरण- (इस सम्वत में दो चन्द्रग्रहण हैं)

१) भाद्रपदशुक्ल १५ रविवार सम्वत् २०८२ (ता.७ सितम्बर २०२५) का खग्रास चन्द्रग्रहण सम्पूर्ण भारत में दिखायी देगा। पूर्वाभाद्रपदा नंक्षत्र व कुंभ राशि पर लगने वाला यह चन्द्रग्रहण अग्निमण्डल में लग रहा है। इसके फलस्वरूप नेत्र रोगों का प्रसार, अग्निकाण्ड की घटनाएं, दूध-घी की कमी, अर्थव्यवस्था की कमजोरी, चोरी-डकैती की घटनाएं, वर्षा में कमी एवं भुखमरी होती है। **कुम्भ** राशि में लगने वाले इस चन्द्रग्रहण के कारण पश्चिमी देश पीड़ित हों, तस्करी की घटनाओं में तेजी, हाथी, ग्वाला व प्रजा को दुःख दे। **रविवार** को ग्रहण होने से वर्ष मध्यम रहे, धान्य संग्रह उचित, देशों में परस्पर युद्ध, अनाज व वर्षा में कमी, घी-तेल महंगे हों। **पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र** में ग्रहण का होना कष्टप्रद होता है।

राशियों पर इनका प्रभाव- मेष को लाभ। वृष को सुख। मिथुन को माननाश। कर्क को मृत्युसमकष्ट। सिंह को स्त्री-कष्ट। कन्या को सुख। तुला को चिन्ता। वृश्चिक को व्यथा। धनु को लाभ। मकर को हानि। कुम्भ को घात। मीन को व्यय।

इस चन्द्रग्रहण का स्पर्श रात ९/५७, खग्रास प्रारम्भ रात ११/१, ग्रहण मध्य रात ११/४२, खग्रास समाप्ति देररात १२/२४ एवं मोक्ष देररात १/२७ पर होगा। ग्रासमान १६ अंगुल २५ व्यंगुल है। **इसके सूतक का प्रारम्भ दिन १२/५७ से हो जायेगा।** रात ९/५७ से ग्रहण का प्रारम्भ हो जायेगा और चन्द्रमा थोड़ा-थोड़ा ढ़कना प्रारम्भ होगा और खग्रास ग्रहण होने से रात ११/१ पर पूरा ढ़क जायेगा। देररात १२/२४ तक पूरा चन्द्रमा ग्रहण के कारण ढ़का ही रहेगा। देररात १२/२४ के बाद धीरे-धीरे चन्द्रमा दिखना शुरु होगा और देररात १/२७ पर पूरा चन्द्रमा दिखायी देने लगेगा।

२) फाल्गुनशुक्ल १५ मंगलवार सम्वत् २०८२ (ता.३ मार्च २०२६) **का चन्द्रग्रहण** (१३ अंगुल व १२ व्यंगुल) का खग्रास है और टोक्यो (जापान), सिड़नी (आस्ट्रेलिया), होनोलुलु (अमेरिका) में यह पूरा खग्रास ग्रहण दिखायी देगा परन्तु **भारत में यह खण्ड चन्द्रग्रहण ग्रस्तोदित स्वरूप का होगा** (ध्यान दें कि पश्चिमी भारत में जैसे गुजरात में जिन स्थानों पर चन्द्रोदय सायं ६/४८ या उसके बाद होगा वहां यह चन्द्रग्रहण नहीं दिखायी देगा)। पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र व सिंह राशि पर लगने वाला यह खण्ड चन्द्रग्रहण अग्निमण्डल में लग रहा है। इसके फलस्वरूप नेत्र रोगों का प्रसार, अग्निकाण्ड की घटनाएं, दूध-घी की कमी, अर्थव्यवस्था की कमजोरी, चोरी-डकैती की घटनाएं, वर्षा में कमी एवं भुखमरी होती है। **सिंह** राशि में ग्रहण होने से वनवासी दुःखी, राजा और साहुकारों का धनक्षय। **मंगलवार** को ग्रहण से अग्निभय, राष्ट्रों में युद्ध, सूत-कपास महंगे बिकें। **फाल्गुन मास** मे ग्रहण होने से जनता दुखी। **पू.फा.** नक्षत्र में ग्रहण होने से चने और अन्य दालों के व्यापार से लाभ।

राशियों पर इनका प्रभावः मेष को चिन्ता। वृष को व्यथा। मिथुन को लाभ। कर्क को हानि। सिंह को घात। कन्या को व्यय। तुला को लाभ। वृश्चिक को सुख। धनु को मान-सम्मान में कमी। मकर को अत्यन्त पीड़ा। कुम्भ को स्त्री-कष्ट। मीन को सौख्य।

ग्रहण लगे हुये चन्द्रमा का काशी में सायं ६/० बजे उदय होगा (अन्य स्थानों पर अलग अलग समय में चन्द्रोदय होगा)। सायं ६/४८ पर ग्रहण समाप्त हो जायेगा अर्थात मोक्ष हो जायेगा। **इस चन्द्रग्रहण का सूतक सूर्योदय से ही प्रारम्भ हो जायेगा।**

चन्द्रग्रहण में क्या करें-ग्रहण के स्पर्श के समय स्नान, मध्यकाल में होम-देवपूजन व श्राद्ध, मोक्ष के समय दान व पुनः स्नान, यही क्रम से कार्य करें। स्नान का पानी ठंडा हो व कुएं, झरना, तालाब, नदी या संभव हो तो समुद्र जल श्रेष्ठ है। ग्रहण का स्नान सवस्त्र करें स्नान करते समय किसी मन्त्र का उच्चारण ना करें, सौभाग्यवती स्त्रियां शिर को छोड़कर स्नान करें। रोगी या बीमार लोग गरम पानी से स्नान कर सकते हैं। पुत्र वाले गृहस्थ को ग्रहण और संक्रान्ति आदि में उपवास नहीं करना चाहिये। ग्रहण में देव व पितृ तर्पण करना चाहिये। ग्रहण में गोदान, भूमिदान, सुवर्णदान और धान्य के दान का महाफल होता है। ग्रहण से पहले का बनाया हुआ अन्न ग्रहण के बाद खाने योग्य नहीं रहता।

उपछाया ग्रहण क्या है और इसकी कोई धार्मिक मान्यता व सूतक क्यों नहीं होती है-

जैसा की आपको ज्ञात है कि पूर्ण चन्द्रग्रहण में पृथ्वी पूर्ण रूप से सूर्य के प्रकाश को चंद्रमा पर आने से रोक देती है अर्थात् चंद्रमा और सूर्य के बीच पृथ्वी आकर चंद्रमा को पूर्ण रूप से ढ़क देती है। इसे पूर्ण चंद्रग्रहण कहते हैं। आंशिक (खण्ड) चंद्रग्रहण में पृथ्वी चंद्रमा से अधिक दूरी पर स्थित रहने से पृथ्वी सूर्य के प्रकाश को चंद्रमा पर पड़ने से पूर्ण रूप से नहीं रोक पाती है। इस स्थिति में चंद्रमा के कुछ ही भाग पर पृथ्वी की छाया पडती है जिससे चन्द्रमा का कुछ भाग कटा हुआ दिखता है व कुछ भाग स्पष्ट दिखायी देता है। इन दोनों ही परिस्थितियों में लगे हुये ग्रहण को धार्मिक दृष्टिकोण से मान्यता प्राप्त है और इसमें सूतक काल, स्नान व दान का महत्व है।

अब तीसरी स्थिति की ओर चलते हैं जिसे हम उपछाया ग्रहण कहते हैं। इसमें पृथ्वी के बाहरी भाग की छाया मात्र ही चंद्रमा पर पड़ती है और इसका प्रभाव यह होता है कि चंद्रमा की सतह पर हल्का सा धुंधलापन दिखायी देता है या चंद्रमा मटमैला नजर आता है (चंद्रमा का कोई भी भाग कटा नहीं रहता)। पूर्व में इस प्रकार की घटना का उल्लेख सामान्यतः किया ही नही जाता था क्योंकि इसे ग्रहण की श्रेणी में रखा ही नहीं जाता था परन्तु टी.वी. इत्यादि में इसका समाचार आने से लोगों में कोई भ्रम उत्पन्न ना हो इसलिए पंचांग मे इसका उल्लेख उपछाया चन्द्रग्रहण के रूप में करना आवश्यक हो गया है। परन्तु ध्यान रहे कि इसकी कोई धार्मिक मान्यता नहीं होती, ना तो इसका कोई सूतक होता है, ना कोई पर्व काल होता है, ना स्नान-दान होता है, ना किसी राशि पर इसका कोई प्रभाव होता है। अतः जनता को अपनी सामान्य दिनचर्या करनी चाहिये।

सम्वत् २०८२ में गुरु-शनि-राहु-केतु की स्थिति तथा रविपुष्य, गुरुपुष्यादि योग-

गुरु- गुरु संवत्सरारम्भ में वृष राशि पर हैं, जो मिथुन, तुला, कुम्भ राशिवालों को कष्टप्रद होते हैं। ता.१५ मई २०२५ **को गुरु मिथुन** में जायेंगे, मिथुन के गुरु कर्क, वृश्चिक, मीन राशिवालों को कष्टप्रद होते हैं। ता.२१ **अक्टूबर २०२५** को **गुरु कर्क** में जायेंगे, कर्क के गुरु सिंह, धनु, मेष राशिवालों को कष्टप्रद होते हैं। ता.१२ नवम्बर २०२५ को गुरु वक्री होंगे। ता.४ **दिसम्बर २०२५** को वक्री अवस्था में गुरु पुनः **मिथुन** में जायेंगे व सम्वत्सर के अन्त तक उसी में रहेंगे। मिथुन के गुरु कर्क, वृश्चिक, मीन राशिवालों को कष्टप्रद होते हैं। ता.११ मार्च २०२६ को गुरु मार्गी हो जायेंगे। गुरु के कष्ट निवारणार्थ गुरु का दान, जप, गुरुस्तोत्र का पाठ, मणि (पोखराज) धारण करना लाभप्रद होता है।

शनि- संवत्सरारंभ में शनि **कुम्भ** में हैं। कुम्भ के शनि से कर्क व वृश्चिक को ढैय्या तथा मकर (पैर पर उतरती हुई), कुम्भ (मध्य में हृदय पर) और मीन (सिर पर चढ़ती हुयी) राशि को साढ़ेसाती रहेगी। ता.१ अप्रैल २०२५ को शनि मीन में जायेंगे व सम्वत्सर के अन्त तक उसी में रहेंगे। मीन के शनि से सिंह व धनु को ढैय्या तथा कुम्भ (पैर पर उतरती हुई), मीन (मध्य में हृदय पर) और मेष (सिर पर चढ़ती हुयी) राशि को साढ़ेसाती रहेगी। ता.१२ जुलाई को शनि वक्री हो जायेंगे। ता.२६ नवम्बर २०२५ को शनि मार्गी हो जायेंगे। शनि के कष्ट निवारणार्थ शनि का दान, जप, नीलम धारण, सुन्दरकाण्ड का पाठ एवं शनिवार को शनि भगवान को तेल चढ़ाना चाहिये।

राहु-केतु- सम्वत्सरारंभ में राहु मीन में व केतु कन्या में रहेंगे। ता.९ अप्रैल २०२५ को राहु कुम्भ में व केतु सिंह में जायेंगे व सम्वत्सर के अन्त तक उसी में रहेंगे। ये जिस राशि में रहते हैं उनको कष्ट देते हैं। शान्ति हेतु राहु-केतु का दान, जप, मणि (लाजावर्त) धारण करें।

गुरु-पुष्य योग-ता.२४ जुलाई दिन ४/२० बाद। ता.२१ अगस्त रात ११/४८ तक। ता.१८ सितम्बर दिन ७/२७ तक। इस योग में अध्ययन, योग साधना का आरंभ करें। रत्न धारण व सोने की खरीददारी करें तो लाभ होगा।

रवि-पुष्य योग- ता.६ अप्रैल दिन ९/४४ बाद। ता.४ मई सायं ५/३६ तक। ता.४ जनवरी २०२६ दिन ४/१० बाद। ता.१ फरवरी रात ११/३८ तक। ता.१ मार्च दिन ७/४३ तक। इस योग में विवाह के लिये खरीददारी, यांत्रिक उपकरण एवं वाहनों की खरीद व सोना खरीदना अत्यंत शुभ होता है।

ता.७ दिन ८/५५ से रात ९/५९ तक।
ता.१३ रात ८/४९ तक।
ता.१५ दिन १/४६ से रात ११/५२ तक।
ता.२२ दिन ९/४३ से दे.रा.४/६ तक।
ता.२७ दिन ८/५८ तक।
ता.२८ प्रातः ७/२७ से दे.रा. ३/२० तक।

जनवरी (२०२६)
ता.१ रात ७/४७ तक।
ता.३ सायं ५/१७ से
ता.४ दिन १/२४ तक।
ता.५ दिन ३/२९ बाद।
ता.१० दिन १२/२४ तक।
ता.११ रात ९/११ से
ता.१२ दिन ३/२७ तक।
ता.२४ रात १०/५३ से
ता.२५ दिन ११/४३ तक।
ता.२६ सायं ६/४१ बाद।

फरवरी
ता.१ रात ११/३८ से
ता.२ रात ११/१८ तक।
ता.५ दे.रा.२/५० बाद।
ता.७ दे.रा.५/१३ से
ता.९ प्रातः ६/४२ तक।
ता.१४ सायं ५/४५ से
ता.१५ दिन ४/३७ तक।
ता.१९ रात ९/४० बाद।
ता.२१ दिन २/१ से रात ८/१ तक।
ता.२३ दिन ९/४४ से सायं ४/५८ तक।

मार्च
ता.१ दिन ७/४३ से सायं ६/२४ तक।
ता.५ सायं ५/४५ बाद।
ता.७ रात ८/४ से
ता.८ दिन २/३ तक।
ता.९ रात ११/२५ बाद।
ता.१४ प्रातः ६/१२ से दे.रा. २/५८ तक।
ता.१६ दिन ८/३ से दे.रा. ५/१९ तक।

।। श्री गणेशाय नमः ।।
श्री सम्वत् २०८२
शकः १९४७
(ता.३० मार्च २०२५ ई० से १९ मार्च २०२६ ई० तक)
रेखासहिताः

।। विवाह मुहूर्ताः ।।

वर्षारंभ चैत्र शु.१ रविवार (ता.३० मार्च २०२५) से वै.कृ.१ सोमवार (ता.१४ अप्रैल २०२५) तक मीन संक्रान्ति (खरमास) व मेष संक्रान्ति दिनद्वय दोष होने से अशुद्ध काल है। इसके बाद ज्येष्ठ शुक्ल १४ भौमवार (ता.१० जून २०२५) सायं ६/७ तक शुद्ध काल है। इसके बाद गुर्वस्त दोष व चातुर्मास्य दोष के कारण मार्गशार्षकृष्ण १२ रविवार (ता.१६ नवम्बर २०२५) तक अशुद्ध काल है। इसके बाद पौष कृष्ण ५ मंगलवार (ता.९ दिसम्बर २०२५) देररात ६/२२ तक शुद्ध काल है। इसके बाद शुक्रास्त, धनु संक्रान्ति (खरमास) व करिदिन दोष के कारण फाल्गुनकृष्ण २ मंगलवार (ता.३ फरवरी २०२६) सायं ५/५३ तक अशुद्ध काल है। इसके बाद चैत्रकृष्ण १० शुक्रवार (ता.१३ मार्च २०२६) तक शुद्ध काल है। मीन संक्रान्ति (खरमास) के कारण सम्वत्सरान्त तक अशुद्ध काल है।

संकेताक्षरों का अर्थ

रे.=रेखा, ल.=लता, यु.=युति, इ.=इष्ट, दा.=दान, दि.ल.= दिवालग्न, रा.ल. =रात्रि लग्न, आ. =आवश्यके, ग्र.ब.वि. = ग्रहबलविंशा, चिं = चिन्त्यम्। पा.दो.=पातदोषः, र.=रवि, सू.=सूर्य, चं.= चन्द्र, व्या.=व्याप्ति, मृ.बा.= मृत्युबाण, जा. =जामित्र, वे.=वेध, द.ति.= दग्धातिथि। इत्यादि

।। वैशाखकृष्णपक्षे ।।

ति.३ बुधे (ता.१६ अप्रैल २०२५) अनुराधाभे भद्राव्यतीपातोत्तरं रे.८ पातदोषः, एकार्गलः। रा.ल. १० इ.५ ग्र.ब.वि.१३ शु.भौ.दा.। रा.ल.११ (तुला-धनु-मीन) नवमांशे इ.५ ग्र.ब.वि.१२ भौ.दा.।

ति.५ शुक्रे (ता.१८ अप्रैल २०२५) मूलभे रे.७ गु.जा., एकार्गलः, उपग्रहः। दि.ल.२ इ.६ ग्र.ब.वि.११।। चं.गु.दा.। रे.६ द.ति., गु.जा., एकार्गलः, उपग्रहः। रा.ल.७ इ.५ ग्र.ब.वि. १४ गु.दा.। रा.ल.११ (श्रेष्ठ) इ.७ ग्र.ब.वि.१८।। सत्।

ति.७ रवौ (ता.२० अप्रैल २०२५) उत्तराषाढ़ाभे। रे.८ शु.ल.,गु.वे.। दि.ल.२ (मिथुन नवमांशे) इ.६ ग्र.ब.वि.११।। सत्। सायं शुभतमा गोधूलिः। रा.ल.८ इ.५ ग्र.ब.वि.१४ गु.दा.। रा.ल.११ इ.५ ग्र.ब.वि.१२ भौ.चं.दा.।

ति.८ सोमे (ता.२१ अप्रैल २०२५) उत्तराषाढ़ाभे। रे.८ शु.ल.,गु.वे.। दि.ल.२ (मीन नवमांशे) इ.६ ग्र.ब.वि.११।। सत्।

ति.१३ शनौ (ता.२६ अप्रैल २०२५) रेवतीभे वैधृति विष्टेःपरं रे.८ पा.दो., के.वे.। रा.ल.१० इ.५ ग्र.ब.वि.१३ शु.भौ.दा.। रा.ल.११ इ.६ ग्र.ब.वि.१७ भौ.दा.।

।।वैशाखशुक्लपक्षे ।।

ति.२ भौमे (ता.२९ अप्रैल २०२५) रोहिणीभे रे.१०। रा.ल.११ इ.६ ग्र.ब.वि.१७ भौ.दा.।

ति.३ बुधे (ता.३० अप्रैल २०२५) रोहिणीभे रे.१०। सायं शुभतमा गोधूलिः। मृगभे विष्टेःप्राक् रे.९ श.ल.। रा.ल.११ इ.६ ग्र.ब.वि.१७ भौ.दा.।

ति.८ सोमे (ता.५ मई २०२५) मघाभे रे.८ भौ.गु.ल., स्थूल क्रा.सा.। सायं गोधूलिः। रा.ल.११ इ.५ ग्र.ब.वि.११।। भौ.चं.दा.।

ति.९ भौमे (ता.६ मई २०२५) मघाभे रे.८ भौ.गु.ल., स्थूल क्रा.सा.। दि.ल.२ इ.७ ग्र.ब.वि.१६।। सत्। सायं गोधूलिः। आवश्यके रा.ल.७ शु.सू.गु.दा. चिं.।

ति.१० बुधे (ता.७ मई २०२५) उफाभे विष्टेः प्राक्। रे.६ के.यु., रा.जा., एकार्गलः, स्थूल क्रा.सां.। रा.ल.११ (तुला-धनु-मीन नवमांशे) इ.५ ग्र.ब.वि.१२ भौ.चं. दा.।

ति.११ गुरौ (ता.८ मई २०२५) उफाभे विष्टेः परं रे.७ के.यु., रा.जा., एकार्गलः। रा.ल.८ इ.५ ग्र.ब.वि.१४ गु.दा.।

।।ज्येष्ठकृष्णपक्षे ।।

ति.१ भौमे (ता.१३ मई २०२५) अनुराधाभे मृत्युबाणात्परं (मृ.बा.रात्रौ ११/१० यावत्) रे.७ सू.जा., मृ.बा., एकार्गलः। रा.ल.१० (मीन-मिथुन नवमांशे) इ.५ ग्र.ब.वि. १३ शु.भौ.दा.।

ति.५ शनौ (ता.१७ मई २०२५) उषाभे रे.८ गु.वे., उपग्रहः। दि.ल.७ इ.५ ग्र.व.वि.१४।। शु.बु.दा.।

।।ज्येष्ठशुक्लपक्षे ।।

ति.९ बुधे (ता.४ जून २०२५) उफाभे मृत्युभाणात्परं (मृ.बा.रात्रौ ७/५२ यावत्) रे.६ के.यु., रा.जा., मृ.बा., एकार्गलः। आवश्यके रा.ल.१० इ.५ ग्र.ब.वि.१० भौ.दा.।

ति.१० गुरौ (ता.५ जून २०२५) उफाभे रे.७ के.यु., रा.जा., एकार्गलः-हस्तभे रे.८ श.वे., श.जा.। उफा/हस्तभे व्यतीपातात्प्राक् आवश्यके दि.ल.३ बु.दा.चिं.।

ति.११ शनौ (ता.७ जून २०२५) स्वातीभे रे.८ सू.ल., शु.जा.। आवश्यके रा.ल.९ गु.बु.दा.चिं.। रा.ल.१० इ.५ ग्र.ब.वि. भौ.दा.।

ति.१२ रवौ (ता.८ जून २०२५) स्वातीभे रे.७ सू.ल., शु.जा., एकार्गलः। दि.ल.३ इ.५ ग्र.ब.वि.१० सत्। रे.८ शु.जा., एकार्गलः। आवश्यके दि.ल.४ बु.दा.चिं.।

ति.१३ सोमे (ता.९ जून २०२५) अनुराधाभे रे.१०। रा.ल.१० इ.६ ग्र.ब.वि.१५ भौ.दा.।

ति.१४ भौमे (ता.१० जून २०२५) अनुराधाभे विष्टेः प्राक्। रे.१०। दि.ल.३ इ.५ ग्र.ब.वि.१० चं.दा.।

।।मार्गशीर्षशुक्लपक्षे ।।

ति.२ शनौ (ता.२२ नवम्बर २०२५) मूलभे रे.८ के.ल., गु.वे.। आवश्यके रा.ल.३ भौ.चं.बु.दा. चिं.। रा.ल.६ इ.७ ग्र.ब.वि.१८।। श.दा.। रा.ल.७ इ.६ ग्र.ब.वि.१५ सत्।

ति.३ रवौ (ता.२३ नवम्बर २०२५) मूलभे रे.८ के.ल., गु.वे.। दि.ल.१० इ.६ ग्र.व.वि.१२ गु.चं.दा.।

ति.४ सोमे (ता.२४ नवम्बर २०२५) उषाभे रे.९ गु.जा.। रा.ल.३ (मीन-मिथुन नवमांशे) इ.५ ग्र.ब.वि.१२ भौ.चं.दा.। रा.ल.६ इ.६ ग्र.ब.वि.१३।। श.दा.। रा.ल.७ इ.६ ग्र.ब.वि.१५ सत्।

ति.५ भौमे (ता.२५ नवम्बर २०२५) उषाभे रे.९ गु.जा.। आवश्यके दि.ल.९ गु.दा.चिं.। रा.ल.३ (तुला-धनु-मीन नवमांशे) इ.५ ग्र.ब.वि.१२ भौ.चं.दा.।

ति.९ शनौ (ता.२९ नवम्बर २०२५) उभाभे रे.८ एकार्गलः, द.ति.। रा.ल.६ इ.५ ग्र.ब.वि.११।। शु.श.दा.। रा.ल.७ इ.५ ग्र.ब.वि.१० चं.दा.।

ति.१० रवौ (ता.३० नवम्बर २०२५) उभाभे रे.८ एकार्गलः, द.ति.। दि.ल.१० इ.६ ग्र.ब.वि.१५ बु.गु.दा.। उभा/रेवतीभे रे.८ एकार्गलः, द.ति.। भद्रा-व्यतीपातात्प्राक् आवश्यके रा.ल.३ शु.भौ.दा.चिं.।

ति.१४ गुरौ (ता.४ दिसम्बर २०२५) रोहिणीभे विष्टेःपरं रे.८ शु.जा., उपग्रहः। आवश्यके रा.ल.३ शु.भौ.दा.चिं.। आवश्यके रा.ल.४ गु.दा.चिं.। रा.ल.६ इ.५ ग्र.ब.वि.११।। शु.श.दा.। रा.ल.७ इ.५ ग्र.ब.वि.१० चं.दा.।

।। पौषकृष्णपक्षे ।।

ति.२ शनौ (ता.६ दिसम्बर २०२५) मृगभे मृत्युबाणात्परं मृ.बा. दिवा ८/१२ यावत्)। रे.६ श.रा.ल., पातदोष, सू.जा., मृ.बा.। दि.ल.१० (मीन नवमांशे) इ.६ ग्र.ब.वि.१३ चं.बु.दा.।

।। फाल्गुनकृष्णपक्षे ।।

ति.४ गुरौ (ता.५ फरवरी २०२६) उफाभे रे.८ गु.ल.,उपग्रहः। दि.ल.३ इ.५ ग्र.ब.वि.१५ भौ.शु.दा.। रा.ल.७ इ.५ ग्र.ब.वि.१० चं.दा.।

ति.७ रवौ (ता.८ फरवरी २०२६) स्वातीभे विष्टेः परां। रे.७ चं.ज., पा.दो., बु.रा.वे.। आवश्यके रा.ल.८ गु.चं.दा.चिं.।

ति.८ भौमे (ता.१० फरवरी २०२६) अनुराधाभे मृत्युबाणात्प्राक् (मृ.बा. रा.शे.४/३१ उपरि) रे.८ उपग्रहः, मृ.बा.। दि.ल.३ इ.५ ग्र.ब.वि.१२ चं.भौ.दा.। रा.ल.७ इ.६ ग्र.ब.वि.१५ सत्।

ति.११ शुक्रे (ता.१३ फरवरी २०२६) मूलभे मृत्युबाणात्प्राक् (मृ.बा. रा.शे.३/४३ उपरि) रे.७ के.ल., मृ.बा., गु.वे.। दि.ल.१ इ.५ ग्र.ब.वि.१२ श.दा.।

।। फाल्गुनशुक्लपक्षे ।।

ति.२ गुरौ (ता.१९ फरवरी २०२६) उभाभे रे.९ शनियुतिः। आवश्यके रा.ल.९ गु.शु.दा.चिं.।

ति.३ शुक्रे (ता.२० फरवरी २०२६) उभाभे रे.९ शनियुतिः। दि.ल.१ इ.५ ग्र.ब.वि.१२ भौ.श.चं.दा.। आवश्यके दि.ल.२ बु.दा.चिं.।

ति.७ भौमे (ता.२४ फरवरी २०२६) रोहिणीभे भद्रा वैधृतेः परं रे.८ पा.दो.,उपग्रहः। रा.ल.१० इ.५ ग्र.ब.वि.१० सत्।

ति.९ बुधे (ता.२५ फरवरी २०२६) रोहिणीभे रे.८ पा.दो.,उपग्रहः। दि.ल.१ इ.७ ग्र.ब.वि.१८।। श.दा.। मृगभे रे.८ रा.ल., एकार्गलः। रा.ल.७ इ.५ ग्र.ब.वि.१० च.दा.। रा.ल.१० इ.५ ग्र.ब.वि.१० सत्।

ति.१० गुरौ मृगभे (ता.२६ फरवरी २०२६) रे.८ रा.ल.,एकार्गलः। दि.ल.१ इ.७ ग्र.ब.वि.१८।। श.दा.। आवश्यके दि.ल.२ (मीन नवमांशे) बु.दा.चिं.।

।। चैत्रकृष्णपक्षे ।।

ति.६ सोमे (ता.९ मार्च २०२६) अनुराधाभे विष्टेःप्राक्। रे.८ चं.ल., पा.दो.। रा.ल.६ इ.५ ग्र.ब.वि.१४।। बु.शु.श.दा.। रा.ल.७ इ.५ ग्र.ब.वि.१३ शु.दा.।

ति.८ बुधे (ता.११ मार्च २०२६) मूलभे रे.७ के.ल., गु.वे., उपग्रहः। रा.ल.७ (धनु-मीन नवमांशे) इ.५ ग्र.ब.वि.१३ शु.दा.।

ति.९ गुरौ (ता.१२ मार्च २०२६) मूलभे व्यतिपातात्प्राक्। रे.६ के.ल., गु.वे., उपग्रहः, मृ.बा.(मृत्युबाण रा.शे. १२/४२ उपरि)। दि.ल.१ (मिथुन नवमांशे) इ.५ ग्र.ब.वि.११।। शु.श.दा.।

।। इति ।।

।। अशुद्ध विवाह मुहूर्ताः ।।

अशुद्ध विवाह नक्षत्रों की समीक्षा

सूचना - नीचे दिये गये सभी विवाह नक्षत्र विवाह के योग्य नहीं है। केवल दोषों की जानकारी के लिये दिये गये हैं। -सम्पादक

वैशाखकृष्णपक्षे

ति.१ सोमे स्वातीभे संक्रान्तिजन्य दोषः। ति.२ भौमे अनुराधाभे भद्राव्यतिपात व्याप्तिश्च:। ति.४ गुरौ मूलभे शुभलग्राभावः। ति.६ शनौ मूलभे शुभलग्राभावः। ति.१२ शुक्रे उभाभे वैधृते प्राक् मृत्युबाण व्याप्तिः (मृत्युबाणः दि.९/२५ यावत्)।

वैशाखक्लपक्षे

ति.४ गुरौ मृगभे विष्टेः परं पंचेष्टिलग्राभावः। ति.११ गुरौ हस्तभे शनिविद्धं। ति.१२ शुक्रे हस्तभे शनिविद्धं। ति.१३ शनौ स्वातीभे व्यतिपात व्याप्तिः। ति.१४ रवौ स्वातीभे भद्राव्यतिपात व्याप्तिश्च। ति.१५ सोमे स्वातीभे भद्रा व्याप्तिः।

ज्येष्ठकृष्ण पक्षे

ति.२ बुधे अनुराधाभे संक्रान्ति दिवसः। ति.३ गुरौ मूलभे विष्टेःप्राक् शुभलग्नप्रभावः, विष्टेः परं पंचेष्टिलग्राभावः। ति.४ शुक्रे मूलभे पंचेष्टिलग्राभावः। ति.६ रवौ उषाभे पंचेष्टिलग्राभावः। ति.१० गुरौ/११ शुक्रे उभाभे शनियुक्तं। ति.११ शुक्रे रेवतीभे शनिभोग्यं केतुविद्धंच। ति.१२ शनौ रेवतीभे शनिभोग्यं केतुविद्धंच। ति.३० भौमे रोहिणीभे सूर्ययुक्तं।

ज्येष्ठशुक्लपक्षे

ति.१ बुधे मृगभे सूर्यभोग्यं। ति.६ रवौ/७ सोमे मघाभे भौमभोग्यं। ति.८ भौमे उफाभे शुभलग्राभावः। ति.११ शुक्रे हस्तभे व्यतिपात व्याप्तिः।

मार्गशीर्षकृष्णपक्षे

ति.१३ भौमे स्वातीभे विष्टेःपरं राहुवेधः। ति.१४ बुधे स्वातीभे राहुवेधः। ति.३० गुरौ अनुराधाभे अमावास्या दिवसः भौमभुक्तं सूर्य युक्तं च।

मार्गशीर्षशुक्लपक्षे

ति.१ शुक्रे अनुराधाभे भौमभुक्तं सूर्य युक्तं च। ति.११ सोमे रेवतीभे व्यतिपात व्याप्तिः।

पौषकृष्णपक्षे

ति.१ शुक्रे रोहिणी/मृगभे मृत्युबाण व्याप्तिः।

फाल्गुनकृष्णपक्षे

ति.१सोमे/२ भौमे मघाभे सूर्य विद्धं भौम विद्धंच। ति.३ बुधे उफाभं विष्टेः परं पंचेष्टिलग्राभावः। ति.४ गुरौ हस्तभं शनिविद्धं। ति.६ शनौ स्वातीभे विष्टेः प्राक् पंचेष्टिलग्राभावः। ति.७ सोमे स्वातीभे शुभलग्राभावः। ति.९ बुधे अनुराधाभे पंचेष्टिलग्राभावः। ति.१० गुरौ मूलभे संक्रान्ति दिवसः। ति.१२ शनौ उषाभे भौम भुक्तं। ति.१३ रवौ उषाभे भौमभुक्तं

फाल्गुनशुक्लपक्षे

ति.३ शुक्रे रेवतीभे पंचेष्टिलग्राभावः। ति.४ शनौ रेवतीभे विष्टेःपरं पंचेष्टिलग्राभावः। ति.१४ सोमे मघाभे करिदिनम्। ति.१५ सोमे मघाभे ग्रस्तोदित चन्द्रग्रहण दिवसः।

चैत्रकृष्णपक्षे

ति.१ बुधे उफाभे चन्द्रग्रहण दोषः। ति.२ गुरौ उफा/हस्तभे चन्द्रग्रहण दोषः। ति.३ शुक्रे हस्तभे चन्द्रग्रहण दोषः। ति.४ शनौ स्वातीभं भौमविद्धं। ति.५ रवौ स्वातीभं भौमविद्धं। ति.७ भौमे अनुराधाभे विष्टेः परं शुभलग्राभावः। ति.१० शुक्रे उषाभे भद्रा व्याप्तिः।

।। इतिः ।।

इसे अवश्य पढ़ें

इन मुहूर्तों का व्यवहार में उपयोग करने के पहले कुछ बातों की जानकारी अत्यन्त आवश्यक है। इससे आप (पंडित) जो मुहूर्त (यजमान को) बतायेंगे वह धर्मशास्त्र की दृष्टि से शुद्ध होगा व आप दोनों का कल्याण होगा।

एक वास्तविक उदाहरण लेकर कुछ बातें समझते हैं। विवाह मुहूर्त में चैत्र कृष्ण पक्ष के अन्तर्गत एक मुहूर्त दिया है जो इस प्रकार है-

ति.६ सोमे (ता.९ मार्च २०२६) अनुराधाभे विष्टेःप्राक्। रे.८ चं.ल., पा.दो.। रा.ल.६ इ.५ ग्र.ब.वि.१४।। बु.शु.श.दा.। रा.ल.७ इ.५ ग्र.ब.वि.१३ शु.दा.। इसका विवरण इस प्रकार हुआ-

क) चैत्र कृष्ण की षष्ठी तिथि व वार सोमवार व तारीख ९ मार्च २०२६ के अनुराधा नक्षत्र का विचार करना है, इस तिथि के पंचांग को देखने पर नक्षत्र के नीचे विशाखा लिखा है जो सायं ४/१७ तक है अतः हमें सायं ४/१७ के बाद लगने वाली अनुराधा का विचार करना है कि विवाह की दृष्टि से इसके गुण-अवगुण क्या हैं।

ख) रे.८ अर्थात् अनुराधा की रेखा चन्द्र लत्ता और पात दोष के कारण ८ आ रही है।

ग) अब इसमें पहला लग्न रा.ल.६ (अर्थात रात का लग्न और ६ मतलब कन्या लग्न हुआ) इसका समय का विचार करने के लिये चैत्रकृष्ण ६ (पृष्ठ संख्या ४० पर) को दैनिकहोरा लग्न सारिणी में देखने से पता चलता है कि कन्या लग्न रात ६/२४ से रात ८/३८ तक है और इ.५ का तात्पर्य ५ ग्रहों का शुभ प्रभाव इस कन्या लग्न को मिल रहा है। बु.शु.श.दा. का तात्पर्य इस लग्न का विचार कराते समय बुध-शुक्र व शनि ग्रह शुभ नही है अतः इनकी शान्ति करनी होगी। इसी तरह आगे के रा.ल.७ अर्थात तुला लग्न का विचार है।

विवाह में विचारणीय दस दोष-

१) लत्ता दोष-जिस ग्रह द्वारा विवाह नक्षत्र लत्ता से दूषित होता है उसका संकेत दिया जाता है। जैसे सू.ल. अर्थात सूर्य लत्ता, चं.ल. अर्थात चन्द्र लत्ता इत्यादि। २) पात दोष यह दोष सूर्य के कारण लगता है जिसे पा.दो. लिखते हैं। ३) युति दोष-विवाह नक्षत्र पर कोई ग्रह हो तो युति दोष होता है जैसे सूर्य होने पर सू.यु. अर्थात् सूर्य युति, भौ.यु. अर्थात् भौम युति। ४) वेध दोष-विवाह के लिये पंचशलाका चक्र से वेध दोष देखा जाता है। जिस ग्रह का वेध हो उसका उल्लेख जैसे सू.वे. अर्थात् सूर्य वेध इत्यादि किया जाता है। ५) जामित्र दोष-विवाह नक्षत्र पर जिस ग्रह का जामित्र दोष हो उसे जैसे सू.जा. अर्थात् सूर्य जामित्र इत्यादि इस प्रकार दिखाया जाता है। ६) मृत्युबाण दोष-जब सूर्य किसी राशि के १ से २ अंश तक या १० से ११ अंश तक या १९ से २० अंश तक या २८ से २९ अंश तक होता है, उस (शेष पृष्ठ ८ पर)।

उपनयन (जनेऊ) मुहूर्ताः

चैत्रशुक्ल १० सोमे पुष्यभे ल.२ इ.८ के.दा.।
चैत्रशुक्ल ११ भौमे आश्लेषाभे (सामगानां) ल.२ इ.८ के.दा.।
वैशाखकृष्ण १ उपरि २ सोमे स्वातीभे ल.२(वृष-मिथुन नवमांशे) इ.७ के.दा.।
वैशाखकृष्ण ५ शुक्रे मूलभे ल.२ इ.६ चं.के.दा.।
वैशाखशुक्ल १० बुधे पूफाभे ल.२ इ.५ के.बु.दा.।
फाल्गुनकृष्ण ३ बुधे पूफाभे आवश्यके ल.१ के.चं.दा.चिं.।
फाल्गुनशुक्ल २ गुरौ पूभाभे ल.१ इ.६ के.दा.। आवश्यके ल.२ सत् चिं.।
फाल्गुनशुक्ल १० गुरौ मृगभे ल.१ इ.७ के.दा.। मृग/आर्द्राभे आवश्यके ल.२ सत् चिं.।
फाल्गुनशुक्ल ११ शुक्रे आर्द्रा/पुनर्वसुभे विष्टेः प्राक् ल.१ इ.७ के.दा.।

चौल (मुण्डन) मुहूर्ताः

ज्येष्ठकृष्ण ३ गुरौ ज्येष्ठाभे आवश्यके दि.ल.३ मिथुने स्थितेःगुरु श.चं.दा.चिं.।
फाल्गुनशुक्ल १० गुरौ मृगभे आवश्यके ल.२ चिं.।
फाल्गुनशुक्ल ११ शुक्रे पुनर्वसुभे विष्टेःप्राक् आव. ल.२ चिं.।

वधुप्रवेश- द्विरागमनमुहूर्ताः

(पश्चिम/दक्षिण दिशि)

वैशाखकृष्ण १ सोमे स्वातीभे दि.ल.२ इ.६ सत्।
वैशाखकृष्ण ५ शुक्रे मूलभे दि.ल.३ इ.६ चं.दा.।
वैशाखकृष्ण ८ सोमे उषा/श्रवणभे दि.ल.२ इ.६ सत्।
वैशाखकृष्ण १२ शुक्रे उभाभे वैधृतेः प्राक् दि.ल.२ इ.७ सत्।
मार्गशीर्षकृष्ण १२ सोमे चित्राभे रा.ल.३ इ.५ सत्। रा.ल.६ इ.६ सत्।
मार्गशीर्षशुक्ल ४ उपरि ५ सोमे उषाभे रा.ल.३ इ.६ सत्।
मार्गशीर्षशुक्ल ६ बुधे श्रवणभे (द्वि.ग.) रा.ल.३ इ.५ सत्।
मार्गशीर्षशुक्ल ११ उपरि १२ सोमे अश्विनीभे व्यतिपातोत्तरं रा.ल.६ इ.६ सत्। (द्वि.ग.) रा.ल.७ इ.५ सत्।
मार्गशीर्षशुक्ल १५ गुरौ रोहिणीभे विष्टेःपरं रा.ल.३ इ.५ शु.दा.। रा.ल.६ इ.६ सत्। (द्वि.ग.) रा.ल.७ इ.५ चं.दा.।

(पूर्व/उत्तर दिशि)

फाल्गुनकृष्ण ११ शुक्रे मूलभे आवश्यके दि.ल.२ चं.दा.चिं.। आवश्यके दि.ल.३ भौ.दा.चिं.।
फाल्गुनशुक्ल २ उपरि ३ गुरौ उभाभे (द्वि.ग.) रा.ल.७ इ.६ सत्।
फाल्गुनशुक्ल ३ शुक्रे उभाभे दि.ल.२ इ.५ सत्। आवश्यके दि.ल.३ भौ.दा.चिं.।
फाल्गुनशुक्ल ४ उपरि ५ शनौ रेवतीभे (व.प्र.) आवश्यके दि.ल.३ भौ.दा.चिं.।
फाल्गुन शुक्ल १० गुरौ मृगभे आवश्यके दि.ल.२ चिं.।
फाल्गुनशुक्ल ११ शुक्रे पुनर्वसुभे विष्टेःप्राक् (द्वि.ग.) दि.ल.२ चिं.। विष्टेः परं (द्वि.ग.) रा.ल.७ इ.५ सत्।
फाल्गुनशुक्ल १२ शनौ पुष्यभे (व.प्र.) दि.ल.२ इ.५ सत्। आवश्यके दि.ल.३ चिं.।
रा.ल.६ इ.५ सत्।

कूपखनन मुहूर्ताः

(कुआँ खोदना/पंप लगाना)

(कूपचक्र-भूचक्रशुद्धि-सहित)

वै.कृ.१सोमे स्वातीभे दि.ल.२ इ.७ सत्।
वै.कृ.५ शुक्रे मूलभे दि.ल.२ इ.६ चं.दा.। रा.ल.१० इ.५ सत्। रा.ल.११ इ.६ के.दा.।
वै.कृ.८ सोमे उषा./श्रवणभे दि.ल.२ इ.६ सत्।
वै.कृ.१० उपरि ११ बुधे शतभिषाभे रा.ल.१० इ.५ सत्।
वै.कृ. १२ शुक्रे उभाभे वैधृतेः प्राक् दि.ल.२ इ.७ सत्।
वैशाखशुक्ल ३ बुधे मृगभे रा.ल.१० इ.६ सत्। रा.ल.११ इ.५ के.दा.।
वैशाखशुक्ल १० बुधे उफाभे रा.ल.१० इ.५ चं.दा.। रा.ल.११ इ.५ के.दा.।
फाल्गुनकृष्ण ११ शुक्रे मूलभे आवश्यके दि.ल.२ चं.दा.चिं.।
फाल्गुनशुक्ल ३ शुक्रे उभाभे दि.ल.२ इ.५ सत्।

जलाशयारामदेव सुरप्रतिष्ठा मुहूर्ताः

वैशाखकृष्ण १ सोमे स्वातीभे दि.ल.२ इ.७ सत्।
वैशाखकृष्ण ५ शुक्रे मूलभे दि.ल.२ इ.६ चं.दा.।
वैशाखकृष्ण ७ रवौ उषाभे (वृष-मिथुन-सिंह) नवमांशे दि.ल.२ इ.६ चं.दा.।
वैशाखकृष्ण ८ सोमे उषा/श्रवणभे ल.२ इ.६ सत्।
वैशाखकृष्ण १२ शुक्रे उभाभे वैधृतेः प्राक् दि.ल.२ इ.७ सत्।
वैशाखशुक्ल ५ शुक्रे आर्द्राभे ल.२ इ.६ सत्।
वैशाखशुक्ल १३ शनौ चित्राभे ल.२ इ.५ सत्।
ज्येष्ठकृष्ण ३ गुरौ ज्येष्ठाभे आवश्यके ल.३ सत्।
ज्येष्ठकृष्ण ६ रवौ उषाभे आवश्यके ल.३ चं.दा.।
ज्येष्ठकृष्ण १३ रवौ अश्विनीभे आवश्यके ल.३ बु.दा.।
ज्येष्ठशुक्ल ३ गुरौ आर्द्राभे अतिकालःआवश्यके ल.६ सत्।
ज्येष्ठशुक्ल ११ उपरि १२ शनौ चित्राभे (कुम्भ-मीन-वृष-मिथुन) नवमांशे ल.३ इ.५ सत्।
ज्येष्ठशुक्ल १२ रवौ स्वातीभे ल.३ इ.५ सत्।
फाल्गुनकृष्ण ६ शनौ चित्राभे अतिकाले आवश्यके ल.२ चिं।
फाल्गुनकृष्ण ९ उपरि १० बुधे ज्येष्ठाभे अतिकाले आवश्यके ल.२ चिं।
फाल्गुनकृष्ण ११ शुक्रे मूलभे आवश्यके ल.२ चं.दा.चिं.।
फाल्गुनशुक्ल ३ शुक्रे उभाभे ल.२ इ.५ सत्।
फाल्गुनशुक्ल ५ रवौ अश्विनीभे आवश्यके ल.२ चिं.।
फाल्गुनशुक्ल १० गुरौ मृग/आर्द्राभे आवश्यके ल.२ चिं.।
फाल्गुनशुक्ल १२ शनौ पुष्यभे ल.२ इ.५ सत्।

गृहारम्भ मुहूर्ताः

(वृषचक्र-भूचक्र शुद्धि सहित)

वैशाखशुक्ल ११ उपरि १२ गुरौ उफाभे शिलान्यासेच आवश्यके रा.ल.८ चिं.।
वैशाखशुक्ल १३ शनौ चित्राभे आवश्यके दि.ल.२ सू.बु.दा.चिं.।आवश्यके दि.ल.३ गु.दा.चिं.।
ज्येष्ठशुक्ल ११ शनौ चित्राभे विष्टेःपरं दि.ल.३ इ.५ सू.दा.। स्वातीभे आवश्यके रा.ल.९ चिं.।
मार्गशीर्षकृष्ण २ शुक्रे रोहिणीभे (शिलान्यासेच) आवश्यके रा.ल.२ सत्। आवश्यके रा.ल.३ चं.दा.।
मार्गशीर्षशुक्ल १४ उपरि १५ गुरौ रोहिणीभे (शिलान्यासेच) विष्टेःपरं रा.ल.३ इ.५ चं.दा.।
फाल्गुनशुक्ल १०गुरौ मृगभे आवश्यके दि.ल.२ चिं.।
फाल्गुनशुक्ल १२ शनौ पुष्यभे (शिलान्यासेच) दि.ल.२ इ.५ सत्।

अथ गृहप्रवेश मुहूर्ताः

(कुम्भचक्र शुद्धि सहित)

(नए व पुराने दोनों प्रकार के मकानों के लिये)

वैशाखकृष्ण १२ शुक्रे उभाभे रोगबाणात्प्राक् (रोगबाण दिवा ९/२५ उ.)दि.ल.२ इ.७ सत्।
वैशाखशुक्ल ११ उपरि १२ गुरौ उफाभे आवश्यके रा.ल.८ चिं.।
वैशाखशुक्ल १३ शनौ चित्राभे दि.ल.२ इ.५ सत्। आवश्यके दि.ल.३ चिं.।
ज्येष्ठशुक्ल ११ उपरि १२ शनौ चित्राभे आवश्यके दि.ल.३ (मीन-वृष-मिथुन) नवमांशे चिं.।
फाल्गुनशुक्ल १० गुरौ मृगभे आवश्यके दि.ल.२ (मीन-वृष) नवमांशे चिं.।

अथ गृहप्रवेश मुहूर्ताः

(कुम्भचक्र शुद्धि सहित)

(केवल पुराने मकानों के लिये) (पुराने खरीदे व उनका नव निर्माण किये घरों में प्रवेश गुरुशुक्रादि अस्त में भी होता है।)

वैशाखकृष्ण १० बुधे शतभिषाभे विष्टेःपरं आवश्यके रा.ल.८ चिं.।
माघशुक्ल १० बुधे रोहिणीभे विष्टेःप्राक् दि.ल.२ इ.५ नाऽत्र (४) शुद्धि के.दा.। आवश्यके रा.ल.६ चिं.।
फाल्गुनशुक्ल १२ शनौ पुष्यभे दि.ल.२ इ.५ नाऽत्र (४) शुद्धि के.दा.। आवश्यके ल.३ चिं.। रा.ल.६ इ.५ सत्।

विपणि (दुकान या प्रतिष्ठान खोलने का) मुहूर्ताः

वै.कृ.७ रवौ उषाभे दि.ल.२ इ.६ चं.सू.दा.। रा.ल.८ इ.५ सत्।
वै.कृ.८ सोमे उषाभे दि.ल.२ इ.६ सू.दा.।
वै.कृ.१२ शुक्रे उभाभे वैधृति प्राक् दि.ल.२ इ.७ सू.दा.।
वैशाखशुक्ल ११ गुरौ उफाभे विष्टेःपरं आवश्यके रा.ल.८ चिं.।
वैशाखशुक्ल १३ शनौ चित्राभे दि.ल.२ इ.६ सू.दा.। आवश्यके दि.ल.३ चिं.।
ज्येष्ठकृष्ण ५ शनौ उषाभे आवश्यके दि.ल.७ सू.दा. चिन्त्यम्।
ज्येष्ठकृष्ण ६ रवौ उषाभे आवश्यके दि.ल.३ चिं.।
ज्येष्ठकृष्ण १२ शनौ अश्विनीभे आवश्यके दि.ल.६ चिं.।
ज्येष्ठकृष्ण १३ रवौ अश्विनीभे आवश्यके दि.ल.३ चिं.।
ज्येष्ठशुक्ल ११ शुक्रे चित्राभे व्यतिपातोत्तरं विष्टेःप्राक् दि.ल.७ इ.५ सू.दा.।
ज्येष्ठशुक्ल ११ उपरि १२ शनौ चित्राभे दि.ल.३ इ.५ सत्।
श्रावणकृष्ण ७ गुरौ रेवतीभे विष्टेःपरं दि.ल.६ इ.५ के.म.दा.।
श्रावणकृष्ण ११ सोमे रोहिणीभे दि.ल.६ इ.५ के.भौ.दा.।
भाद्रपदकृष्ण ४ उपरि ५ बुधे रेवतीभे दि.ल.७ इ.६ भौ.दा.। रा.ल.१ इ.५ सत्।
भाद्रपदकृष्ण ५ गुरौ रेवती/अश्विनीभे दि.ल.७ इ.५ भौ.दा.।
कार्तिककृष्ण १२ शनौ उफाभे रा.ल.२ इ.५ सत्। रा.ल.३ इ.५ सत्।
कार्तिककृष्ण १३ रवौ उफाभे दि.ल.९ इ.५ सत्।
कार्तिकशुक्ल १२ रवौ उभाभे दि.ल.१० इ.५ के.दा.। आवश्यके रा.ल.२ चिं.। आवश्यके रा.ल.३ चिं.।
कार्तिकशुक्ल १३ सोमे उभा/रेवतीभे दि.ल.१० इ.५ के.दा.। रेवतीभे आवश्यके रा.ल.२ चिं.। आवश्यके रा.ल.३ चिं.।
मार्गशीर्षकृष्ण २ शुक्रे रोहिणीभे विष्टेःप्राक् आवश्यके दि.ल.१० के.दा.चिं.। आवश्यके रा.ल.२ चिं.। आवश्यके रा.ल.३ चिं.। आवश्यके रा.ल.४ रा.दा.चिं.।
मार्गशीर्षकृष्ण ११ शनौ उफाभे वैधृतिः परं दि.ल.१० के.दा.चिं.। आवश्यके रा.ल.३ चिं.। आवश्यके रा.ल.४ रा.दा.चिं.।
मार्गशीर्षकृष्ण १२ सोमे चित्राभे दि.ल.१० इ.५ के.दा.। रा.ल.३ इ.५ सत्।
मार्गशीर्षशुक्ल ४ उपरि ५ सोमे उषाभे रा.ल.३ इ.६ सत्। आवश्यके रा.ल.४ रा.दा.चिं.।
मार्गशीर्षशुक्ल १० रवौ उभाभे दि.ल.१० इ.६ के.दा.। उभा/रेवतीभे रा.ल.३ इ.५ सत्।
मार्गशीर्षशुक्ल १५ गुरौ रोहिणीभे विष्टेःपरं रा.ल.३ इ.५ चं.दा.।
पौषकृष्ण १ शुक्रे रोहिणीभे दि.ल.१० इ.५ सत्। मृगभे रा.ल.३ इ.५ चं.दा.।
पौषकृष्ण २ शनौ मृगभे दि.ल.१० इ.६ के.दा.।
फाल्गुनकृष्ण ६ शनौ चित्राभे दि.ल.१ इ.५ सत्आवश्यके दि.ल.२ चिं.।
फाल्गुनकृष्ण ९ उपरि १० बुधे अनुराधाभे आवश्यके दि.ल.१ चं.दा. चिं.।
फाल्गुनशुक्ल २ गुरौ उभाभे रा.ल.७ इ.६ सत्।
फाल्गुनशुक्ल ३ शुक्रे उभाभे दि.ल.१ इ.५ सत्।
फाल्गुनशुक्ल ४ उपरि ५ शनौ रेवतीभे आवश्यके दि.ल.३ भौ.दा.चिं.। अश्विनीभे रा.ल.७ इ.५ सत्।
फाल्गुनशुक्ल ५ रवौ अश्विनीभे आवश्यके दि.ल.२ चं.दा. चिं.। दि.ल.३ इ.५ भौ.दा.।
फाल्गुनशुक्ल १० गुरौ मृगभे आवश्यके दि.ल.२ चिं.।
फाल्गुनशुक्ल १२ शनौ पुष्यभे दि.ल.१ इ.६ सत्। दि.ल.२ इ.५ सत्। आवश्यके दि.ल.३ चिं.। रा.ल.६ इ.५ के.दा.। रा.ल.७ इ.५ सत्।

हलप्रवहण बीजोप्ति मुहूर्ताः

ह.च.शु=हलचक्रशुद्धिः,
बी.च.शु=बीजचक्रशुद्धिः

वैशाखकृष्ण १ सोमे स्वातीभे (बी.च.शु.) दि.ल.२ इ.७ सत्।
वैशाख कृष्ण ५ शुक्रे मूलभे (बी.च.शु.) दि.ल.२ इ.६ नाऽत्र (८) शुद्धिः चं.दा.।
वैशाखकृष्ण १२ शुक्रे उभाभे (ह.च.शु.) दि.ल.२ इ.७ सत्।
श्रावणकृष्ण ७ गुरौ रेवतीभे (ह.च.शु.) दि.ल.६ इ.५ के.भौ.दा.।
श्रावणकृष्ण ११ सोमे रोहिणीभे (ह.च.शु.) दि.ल.६ इ.५ के.भौ.दा.।
श्रावणकृष्ण १२ भौमे मृगभे (ह.च.शु.) दि.ल.६ इ.५ के.भौ.दा.।
आश्विनशुक्ल १० गुरौ श्रवणभे (ह.च.शु.) आवश्यके दि.ल.८ नाऽत्र (८) शुद्धिः गु.दा.। नाऽत्र (१२) शुद्धिः भौ.दा.। दि.ल.९ इ.५ सत्।
कार्तिकशुक्ल १० शुक्रे धनिष्ठाभे (ह.च.शु.) आवश्यके ल.९ नाऽत्र (८) शुद्धिः गु.दा.। नाऽत्र (१२) शुद्धिः भौ.दा.।
फाल्गुनकृष्ण ११ शुक्रे मूलभे आवश्यके दि.ल.२ नाऽत्र (८) शुद्धिः चं.दा. चिं.। आवश्यके दि.ल.३ नाऽत्र (८) शुद्धिः भौ.दा. चिं.।
फाल्गुनशुक्ल १० गुरौ मृगभे आवश्यके दि.ल.२ चिं.।
फाल्गुनशुक्ल ११ शुक्रे पुनर्वसुभे विष्टेः प्राक् (ह.च.शु.) आवश्यके दि.ल.२ चिं.।

।। इति विविध मुहूर्ताः।।

(पृष्ठ ७ का शेष)-

काल में मृत्युबाण व्याप्त होता है। ७) एकार्गल दोष-सूर्य नक्षत्र के कारण एकार्गल दोष उत्पन्न होता है। ८) उपग्रह दोष भी सूर्य नक्षत्र की विशिष्ट परिस्थिति से उत्पन्न होता है। ९) क्रान्ति साम्य (क्रा.सा.) सूर्य और चन्द्र की राशियों से यह दोष होता है। १०) दग्धा तिथि (द.ति.) सूर्य के विशिष्ट संक्रान्ति पर तिथियां दग्ध हो जाती है। ये १० दोष हैं।

प्रत्येक नक्षत्र एवं तिथि के लिये इन दोषों का विचार किया जाता है। अगर इन दस दोषों में से १ दोष पाया जाता है तो रे.९ अर्थात् रेखा का मान (१०-१=९) लिखा जाता है। जैसे उदाहरण में १ दोष (क्रान्तिसाम्य) होने से रे.९ लिखा है।

आगे उदाहरण में लिखा है-रा.ल.६ अर्थात् रात्रि लग्न ६। (दिन में लग्न होने पर दि.ल. लिखते हैं)। यहां ६ अर्थात् ६वीं राशि अर्थात् कन्या राशि का लग्न लेना है। अब चैत्र कृष्ण पक्ष में ६ सोमवार को दैनिक होरालग्न सारिणी में कन्या लग्न का समय रात ६/२४ से रात ८/३८ दिया गया है। यह मुहूर्त का समय हुआ।

अब आगे उदाहरण में लिखा है, इ.५ अर्थात् इष्ट ५। हमारे ९ ग्रह (सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, केतु) में से ५ ग्रह इस नक्षत्र के लिये शुभ स्थिति में हैं। कम से कम ५ ग्रहों का शुभ होना अनिवार्य होता है। लोकाचार में इ.४ होने पर भी अतिआवश्यक परिस्थिति में विवाह के लिये मुहूर्त लिया जाता है।

आगे उदाहरण में ग्र.ब.वि.१४।। दिया है अर्थात् ग्रह बल विश्व १४।। है। इसकी अधिकतम संख्या २० होती है। यहां ग्रहों की गणना के अनुसार इस उदाहरण में यह १४।। आयी है। यह कम से कम १० होना आवश्यक है। लोकाचार में ९ होने पर भी अतिआवश्यक परिस्थिति में विवाह के लिये मुहूर्त ले लिया जाता है।

आगे उदाहण में दिया है- बु.शु.श.दा. अर्थात् बुध, शुक्र व शनि की शान्ति हेतु दान देना आवश्यक है। इस उदाहरण में ग्रहों की स्थिति वश यह ग्रह शुभ नहीं हैं अतः परिहार स्वरूप उनका दान करना अतिआवश्यक है।

अब अलग हेडिंग से दिये हुये अशुद्ध विवाह मुहूर्त की चर्चा करते हैं। इसमें नक्षत्र या दिन पर लगे हुये दोष का विवरण होता है।

भौमभुक्तम् अर्थात् यह नक्षत्र भौम (मंगल) द्वारा भुक्त होने से लेने योग्य नहीं है। इसी प्रकार क्रूर ग्रहों (सूर्य, भौम, शनि, राहु, केतु) द्वारा वेध, युक्त या भोग्य होने पर भी वे नक्षत्र अशुद्ध हो जाते हैं और सूर्यविद्ध, सूर्ययुक्त या सूर्यभोग्य इत्यादि रूप से दिखाये जाते हैं। नक्षत्र दूषित होने के बाद एक बार चन्द्रमा द्वारा भोग लिये जाने से वे नक्षत्र दोषमुक्त हो जाते हैं।

भद्रा (चाहे कहीं भी स्थित हो)- वैधृति- व्यतिपात-मृत्युबाण- जिस अवधि में लगा रहता है वह अवधि विवाह के योग्य नहीं होती। अतः इस अवधि का सदैव निषेध कर मुहूर्त के समय का विचार होता है।

इसके व्यतिरिक्त सूर्य संक्रान्ति दिवस, उदित अमावास्या, ग्रहणादि दोष, करिदिन दोष, अधिकमास, क्षयमास, विश्वघस्रपक्ष, खरमास, चातुर्मास्य, गुरु व शुक्र के बालत्व, वार्धक्य व अस्त इत्यादि में विवाह नहीं होते।

केवल विवाह नक्षत्र देख कर बिना दोषों का विचार किये उस दिन विवाह सम्पन्न करा देना पंडित व यजमान दोनो के लिये ही कल्याणकारी नही है।

शुभं भवति - सम्पादक

स्त्रीमाद्यरजोदर्शनेश्रेष्ठमासपक्षतिथ्यादीनांबोधकचक्रम्

तत्र श्रेष्ठ पक्षमासाः –वैशाखे फाल्गुने माघे मार्गाख्ये श्रावणाश्विने एषु सितेपक्षे चोत्तमः। अथ श्वेतवस्त्रंश्रेष्ठम्। नान्यद्वरम्।। तिथयः – १।२।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषुसत्। परन्तुतत्र कृष्णपञ्चम्यांदशमी–यावन्मध्यमम्।। तदुपरिदुर्भगत्वमिति।। वाराः – चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र एषां वारे प्रशस्तम्।। शुभनक्षत्राणि: –हस्त, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, अश्विनी, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपदा, रोहिणी, स्वाती एतद्भेषु शुभम्।। मूल, पुनर्वसु, विशाखा, कृत्तिका, मघा एकुभध्वं परेष्वसत्।। शुभलग्नानिः– दिवादुर्योगभद्रादिरहिते–श्रेष्ठोयं न रात्रौ।। शुभलग्नानि:– २।३।४।६।७।९।१२ एतद्भस्यांगेषु स्वामि शुभदृष्टे सत्युत्तमः तत्रविवाहवत्ग्रहसंस्थाविचार्या।।

अथाद्यरजोदर्शनेनिषिद्धसमयान्याह

अष्टम्यां द्वादशी षष्ठी रिक्तादर्शेषसंक्रमे। भद्रा निद्रा व्यतीपाते ग्रहणे रुजि वैधृतौ।।१।। परतातगृहे मार्गे कुदेशे कृष्णवाससि। प्राग्रजोदर्शने नेष्टं शांत्यातु शुभदं भवेत्।।२।। प्रागुक्ता विलयं यान्ति रजोदर्शनसम्भवः।।

अथ ऋतुमत्याः स्नानस्यमुहूर्तविचारः

हस्त, स्वाती, अश्विनी, मृगशिरा, अनुराधा, धनिष्ठा, रोहिणी, उफा, उषा, उभा, ज्येष्ठा एषु भेषु।। शुभतिथौ।। सद्वारे सततौस्नायादृतुमतीनारी इति। अथास्याः शुद्धिः। भर्तुस्पृस्याचतुर्थेह्नि दैवेपित्र्ये च पञ्चमे इति।।

अथास्याशान्तिः कल्पोक्ताः

घृतदूर्वातिलाक्षतेरष्टोत्तरशतं जुहुयादिति।। स्वर्णगोभूदानं च। विस्तरस्तु निबन्धे।।

अथ गर्भिणीप्रश्नः

तिथिभयामवधूशुभदाक्षरं मुनियुतं त्रिगुणं मुनिभाजितम्। सकल-शास्त्र विचार विचक्षणैर्विषमपुत्र समे खलु कन्यका।। अन्यच्च-विषमस्थितेऽर्कपुत्रे सुतस्यजन्मान्यथाङ्गनायाच्च। लम्बाकस्यनारी समस्थितेऽतोन्यथावामम्।।

अथागंतुकप्रश्नः

तिथिप्रहरसंयुक्ता तारकावारमिश्रिता। सप्तभिस्तुहरेद्भागं शेषं तु फलमादिशेत्।। एक शेषे तथा स्थाने द्वितीये पथिवर्तते। तृतीये चार्धमार्गे तु चतुर्थे ग्राममादिशेत्।। पञ्चमे पुनरावृत्तिः षष्ठे व्याधियुतं वदेत्। शून्यं ज्ञेयं सप्तमे वै एतत्प्रश्नस्य लक्षणम्।। इति ।।

गर्भादत्रमासानामधिपाः

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मासाः।
शुक्र	भौम	गुरु	सूर्य	चंद्र	शनि	बुध	गर्भ.लप.	चंद्र	सूर्य	पतयः।

गर्भसंस्कारे विशेषमाह

स्त्रीणांविधोर्वलमुशन्तिविवाहगर्भसंस्कारयोरितरकर्मसुभर्तुरेव इति।

अथ गर्भाधानमुहूर्त्तस्यविचारः

तत्र त्रिविधंगंडांतं।। जन्मतारा।। मूल, भरणी, अश्विनी, रेवती।। ग्रहणदिनम्।। व्यतीपात वैधृति श्राद्धदिनं दिवापरिघाद्यर्द्ध उत्पातहतभं जन्मराशितो षष्ठाष्टमभं पापग्रहस्यभवनम्।। भद्रापर्वदिनं ४।६।८।९।१४ तिथिषु संध्यायाम्।। सूर्य, मङ्गल, शनिवासराणि।। रजोदर्शनाच्चतुर्थरात्रिश्च न शुभा। उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपदा, मृगशिरा, हस्त, अनुराधा, रोहिणी, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा एषुभेषु लग्नात् १।४।५।७।९।१० शुभैः।। लग्नात् ३।६।११ पापैश्चोत्तमः।। सूर्य, मङ्गल, गुरु इष्टेलग्ने विषमराशिनवांशकेचन्द्रे शुभम्।। युग्म ६।८।१०। १२।१४।१६ रात्रीचोत्तमंगर्भाधानम्। चित्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्विनी एतद्भेषु मध्यमं स्मादिति।।

पुंसवनसीमन्तयोर्मुहूर्त्तस्यात्रबोधकचक्रम्

तत्र गर्भाते द्वितीये तृतीये वा मासि पुंसवनकर्मविधेयम्।। चतुर्थे वा षष्ठेष्टमेमासि।। मासाधिपतौसबलेसति सीमन्तोन्नयनं प्रशस्तम्। तत्र शुक्रेज्ययोर्मूढत्वदोषो न विचारणीय कालातिक्रमत्वात्।। सद्वारा –सूर्य, मङ्गल, गुरु एषांवारे मतान्तरेण जेन्दुशुक्राणांवारे ताराशुद्धौ सत्यां पुंसवन–सीमंतसंस्कारौभवतः।। सद्भानि –मृगशिरा, पुष्य, मूल, अनुराधा, अश्विनी, स्वाती, पूषा, श्रवण, पुनर्वसु, हस्त, रेवती, रोहिणी, शतभिषा एतद्भेषु जन्मभिन्ना सीमन्तोन्नयनं पुंसवनञ्च प्रशस्तम्।। सत्तिथयः –१।२।३।५।७।१०।११।१३ एतत्तिथौ सिते। तिथि १० यावत्कृष्णेचोत्तमः। परन्तुपूर्वाह्णे एव कार्यः।। सांगलग्नशुद्धिः – संस्कारद्वयं पुम्भस्यांशे पुम्भांशे च श्रेष्ठः। तत्र लग्नात् १।४।५।७।९।१० एषु शुभैः।। ३।६।११ एषु पापैश्चोत्तमः।। चन्द्रे १।६।८।१२ वर्जिते श्रेष्ठः। ४।८।१२ पापेकोप्यसत्।।

अथ सूतिकायाः सूतीगृहप्रवेशमुहूर्त्तस्य विचारः

शतभिषा, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, स्वाती, पुनर्वसु, हस्त, धनिष्ठा, अनुराधा, चित्रा, रेवती, अश्विनी, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपदा, श्रवण एषुभेषु।। शुभवासरे।। सतिथौ रिक्ताषष्ठ्यष्टमीवर्जिते।। शुभाङ्गे।। लग्नतः केन्द्रे शुभेषु।। ३।६।११ पापेषु शुभांशे सत्युत्तमम्।।

अथ जातकर्मानन्तरकृत्यम्

जन्मलग्नविरीक्ष्य तत्तस्य ग्रहदोषपरिहाराय ग्रहदानं जपादिकं कृत्वा जातकस्य मूलोत्पन्नस्य मुखमालोक्यस्नायादिति।।

सूतिकापथ्यम्

अन्नप्राशनोक्तभेतिथौच दुर्योगादिरहिते श्रेष्ठम्।।

अथ सूतिकाक्वाथमुहूर्त्तज्ञानम्

भैषज्यगदितवारनक्षत्रे दुर्योगवर्जिते सूतिकायाः क्वाथग्रहणं प्रशस्तम्।।

स्तनपानमुहूर्त्तस्यविचारः

अश्विनी, रोहिणी, पुनर्वसु, पुष्य, उ.फा., हस्त, चित्रा, अनुराधा, मूल, उ.षा., श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, उ.भा., रेवती एषु भेषु शुभवासरे शुभतिथौ स्थिराङ्गे स्तनपानं प्रशस्तंस्यादिति।।

जातकर्ममुहूर्त्तस्यात्र विचारः

श्रुत्वाजातंपितापुत्रंसचैलंस्नानमाचरेत्।। एतद्रात्रावपिकर्तव्यम्।। श्राद्धादिकेस्नातव्यम्।। तत्कालाऽभावेसूतकान्तेपिकर्तव्यम्।।

अथ सूतिकास्नानमुहूर्त्तस्यविचारः

रेवती, उ.फा., उ.षा., उ.भा., रोहिणी, मृगशिरा, हस्त, स्वाती, अश्विनी, अनुराधा एषुभेषु। १।२।३।५।७।१०।११।१३।१५ एतत्तिथौ।। रवीज्यकुजएषांवासरे सूतिकास्नानंप्रशस्तम्।। प्रोक्तात् अन्यभतिथिवारेषु असत्। पञ्चमशुद्धलग्ने शुभग्रह युते दोषवर्जिते श्रेष्ठोयमिति।।

अथ दोलारोहणमुहूर्त्तस्यात्रविचारः

तत्र जन्माहात् १०।१२।१६।१८।३२ एषु दिवसेषु। शुभवासरे।। मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनु., हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभि., उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्र., रोहिणी एषुभेषु। रिक्तामारहिततिथौ चरांगे। शुभ-युग्लग्ने। लग्नात् १।४।५।६।७।९।१०।११ शुभैः। ३।६।११ पापैश्चोत्तमः।।

दोलारोहणे दोलाचक्रम् (रविभाच्चन्द्रभम्)

५ नक्षत्र नैरुज्यं, ५ नक्षत्र मरणं, ५ नक्षत्र कृशता, ५ नक्षत्र व्याधिः, ७ नक्षत्र सौख्यम्।।

अथ जलपूजनमुहूर्त्तविचारः

तत्र सूतिकायामासपूर्तौसत्यांशुक्रेज्ययोरस्ते चैत्रपौषयोर्मासि तथाधिक-मासे जलं न पूजयेत्।। श्रवण, पुष्य, पुनर्वसु, मृगशिरा, हस्त, मूल, अनुराधा एषु भेषु विरिक्ते तिथौ।। चंद्र, बुध, गुरु एषां वारेशुभम्।

अथ भूम्युपवेशनमुहूर्त्तविचारः

तत्रादौ पृथ्वीवराहश्चाभिपूज्य भौमबले पञ्चमेमासि कार्य्यम्।। उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपदा, रोहिणी, मृगशिरा, ज्येष्ठा, अनुराधा, अश्विनी, हस्त, पुष्य, अभिजित एतद्भेषु रिक्तामारहिततिथौ स्थिरभस्यांगे।। शुभवासरे च।। बालकस्य कटिस्थले कटिसूत्रं बध्वा पृथिव्यामुपवेशयेत्।। तत्र मन्त्रः।। रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे।। आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रियेति।। अथात्रैवबालाग्रे इमानि स्थापयेत्।। वस्त्रम्।। शस्त्रम्।। पुस्तकम्।। लेखनीम्।। स्वर्णम्।। रौप्यम्।। एषु यद्बालोगृह्णाति तैराजीवी तस्यवृत्तिः प्रतिष्ठा च भवेत्।।

अथ निष्क्रमणमुहूर्त्तस्यात्रविचारः

जन्मतश्चतुर्थेमासि यात्रोक्तसमयेऽर्कमितेह्नि वा सत्।

अथ नामकरणमुहूर्त्तस्यात्रविचारः

सूतकान्ते नामकर्म कर्तव्यं स्वकुलोचितम्।। व्यासः।। नामधेयं दशम्यान्तु केचिदिच्छंति सूरयः। द्वादश्यामाहुरन्वेतु मासेपूर्णे तथा परे।। अष्टादशेहनि तथा वदंत्येके मनीषिणः।। सारसंग्रहे।। एकादशेऽह्निविप्राणां क्षत्रियाणां त्रयोदशे। वैश्यानां षोडशे नाम मासान्ते शूद्रजन्मनः।। बृहस्पतिः।। द्वादशेदिवसे वापि जन्मतो दिवसे शुभे।। षोडशे विंशतो चैव द्वाविंशे वर्णतः क्रमात्।।

भानि–मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपदा, रोहिणी, हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित, स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा एषुभेषु शुभः।। वाराः –चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र एषां वारे नामकर्म हितम्।। तिथयः – १।२।३।५।७।१०।११।१३ एतत्तिथौ–भद्रादिरहिते सत्युत्तमः।। शुभलग्नः –२।५।८।११ एतद्भस्यांगेऽष्टम-शुद्धौशुभलग्नेशुभांशे चोत्तमः।। लग्नशुद्धिः –लग्नात् १।४।५।७।९।१० शुभैर्लग्नात् ३।६।११ पापैश्चोत्तमः। लग्नात् ८।१२ सर्वे न शुभाः। चन्द्रताराबले पितृपुत्रयोः दिवा पूर्वाह्ने एवं कर्तव्यः। मध्याह्ने मध्यमं तदग्रे न सत्।। व्यतीपात संक्रान्त्यमावैधृत्तिग्रहणाह श्राद्धाहपक्षच्छिद्र-रिक्तापूर्णाशकुनीकिंस्तुघ्नविष्टिकरणादीन्वर्जयित्वोक्ततिथ्यादौ नामकर्म हितम्।। अथ विहितकालातिक्रमे सत्यां गुरुशुक्रयोस्तादिदोष रहिते सौम्यायने कार्यः।। नान्यथेति।।

अथ चैत्रादि १२ मासानामत्रनामानि

चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आश्वि.	का.	मार्ग.	पौ.	मा.	फा.	मासाः
वैकुण्ठ	जनार्दन	उपेन्द्र	यज्ञपुरुष	वासुदेव	त्रिविक्रम	योगीश	पुण्डरीकाक्ष	कृष्ण	अनन्त	अच्युत	चक्रधारी	नामानि

अथ प्रथमादिमासेषु बालकानां दन्तजननफलबोधकचक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	मासाः
स्वयंनाशः	कनिष्ठभ्रातृनाशः	भगिनीनाशः	मातृनाशः	ज्येष्ठभ्रातृनाशः	सुभोगम्	तातात्सुख	हृष्टता	लक्ष्मी	सौख्यम्	सौख्यम्	धनसम्पत्तिः	फलानि

अथ जनोः सदशनावोर्ध्वं स्वपित्रादिहा।। तदर्थंशांतिर्विधेया इति।

अथान्नप्राशनमुहूर्त्तस्यज्ञानायचक्रमिदम्

तत्र बालानां षष्ठमासादारभ्य सममासेषु। कन्यकानां पंचममासादारभ्य विषममासेषु कार्यम्। सद्भानि –रोहिणी, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपदा, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, हस्त, पुष्य, अश्विनी, अभिजित, पुनर्वसु, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा एषुभेषुशुभः।। तिथयः –१।३।५।७।१०।१३।१५ एषु सत्। अन्येऽशुभः। वाराः –चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र एषां वारे श्रेष्ठः। नान्येऽह्नि। सदंगानि। २।३।४।५।६।७।९।१०।११ एषु जन्माङ्गभयोर्मृत्युंभस्याङ्गं तदंशकञ्च हित्वा शस्तः।। नान्यलग्ने। अस्याङ्गशुद्धिश्चात्राह –लग्नात् १।२।३।४।५।७।९ एषु शुभैः, ३।६।११ एषु पापैः, १० शुद्धे १।६।८।१२ रहिते चन्द्रे चोत्तमः।।

अथ खट्वारोहणमुहूर्त्तस्यात्रविचारः

जन्माहात् १०।१२।१६।३२ एषु दिवसेषु।। मृदु, ध्रुव, क्षिप्र, एषुभेषु ।। शुभाहे ।। रिक्तामारहिततिथौ प्राकशीर्षे बालं विन्यसेत्।।

अथ कर्णवेधस्यमुहूर्त्तज्ञानायचक्रमिदम्

तत्र जन्माहात् १२।१६ दिने।। ततः ६।७।८ मासि।। ततः विषमः वर्षे कर्णवेधः शुभः। चैत्रपौषावमाहजन्ममासचातुर्मास्य रिक्ता अमा।। समवर्ष जन्मतारा एतान् हित्वा प्रशस्तः कर्णवेधः इति। सत्तिथयः – १।२।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५। एतत्तिथौ सिते।। कृष्णे च तिथि १० यावदुत्तमः।। वाराः –चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र एषांवारे भद्रादिरहितेसत्युत्तमः।। सद्भानि –पुनर्वसु, अश्विनी, हस्त, पुष्य, अभिजित, मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, रेवती, श्रवण, धनिष्ठा एतद्भेषु चन्द्रबलेसति प्रशस्तः। शुभलग्न –२।३।४।६।७।९।१२ एतद्भस्य लग्नेष्वंशेषु च सत्। लग्नशुद्धिश्च –लग्नादष्टमभवनैसंशुद्धे।। लग्नात् १।३।४।५।७।९।१०।११ एषु शुभैः तथा ३।६।११ एषु पापैश्चोत्तमः।। लग्नस्थे गुरौ कर्णवेधः शुभावहः।।

अथ चौलमुहूर्त्तस्यबोधकार्थमिदंचक्रम्

तत्र वर्षत्रयाद्विषमवर्षेजन्मतः विचैत्रोदगयनेभानौचोत्तमः।। मनुना प्रथम वर्षेऽपिसदुक्तंचौलम्।। सद्भानि –ज्येष्ठा, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, हस्त, अश्विनी, पुष्य, स्वाती, अभिजित, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, एषुचन्द्रतारानुकूलेसति शुभः। वाराः –चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र एतद्वारेषु भद्रादिदोषरहिते श्रेष्ठम्। सत्तिथयः –२।३।५।७।१०।११।१३ एतत्तिथौ सत्। परन्तुपर्वोनाहे।। शुभलग्न –२।३।४।६।७।९।१२ एतद्भस्यलग्नांशे-श्रेष्ठोयम्।।

अथ जन्मांगभयोर्मृत्युभस्यलग्नांशयोर्विनोक्तांगांशेश्रेष्ठम्

लग्नशुद्धिः -लग्नात् १।२।४।५।७।९।१० शुभैः ३।६।११ पापैश्चैतद्-गृहोपगतैस्तथा ६।८।१२ विवर्जितेन्दौशुक्रवर्जिताष्टमभवने संशुद्धे चोत्तमः। चन्द्रस्यात्रवाराङ्गकृष्णपक्षे अनिष्टमिति।

अथ शिशोस्ताम्बूलभक्षणस्यात्रमुहूर्त्तविचारः

उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपदा, रोहिणी, मृगशिरा, चित्रा, रेवती, अनुराधा, हस्त, अश्विनी, पुष्य, ज्येष्ठा, मूल, श्रवण, स्वाती, धनिष्ठा, पुनर्वसु, अभिजित एषुभेषु।। सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र एषां वारे।। एतत् २।३।६।९।१०।११।१२ भस्याङ्गेचोत्तमः। तत्र लग्नात् १।४।५।७।९।१० एषु शुभैः।। ३।६।११ एषु पापैश्चोत्तमः। सार्द्धमासद्वयसमये अन्नप्राशने वा कार्यमिति।

अथ क्षेमार्थ शान्तिमुहूर्त्तस्यात्रविचारः

तत्र।। हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित, रेवती, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपदा, रोहिणी, स्वाती, श्रवण, शतभिषा, पुनर्वसु, अनुराधा, मघा एषुभेषु।। शुभानां वारे।। सत्तिथौ चोत्तमाः परन्तु सितेज्ययोरस्तादिदोषरहिते आवश्यके अस्तादावपि ४ विधौ १० रवौ १ जीवे ८।१२ पापरहिते चोत्तमाः।

अथाङ्गस्य विभागेन पल्लीपतनफलमिदम्

शिरसि–राज्यलाभः। ललाटे-बन्धुदर्शनम्। भ्रूमध्ये–राज्यसम्मानः। उत्तरोष्ठे–धननाशः। अधरोष्ठे-धनैश्वर्यलाभः। नासाग्रे–व्याधिपीडनम्। दक्षिणकर्णे–आयुर्वृद्धिः। वामकर्णे-बहुलाभः। नेत्रयोः–धनप्राप्तिः। दक्षिणभुजे–नृपतुल्यता। वामभुजे-राजभीतिः। कण्ठे–शत्रुनाशः। स्तनद्वये–दौर्भाग्यम्। उदरे-भूषणलाभः। पृष्ठदेशे–बुद्धिनाशः। जानुद्वये–शुभागमः। जङ्घयोः-शुभावहः। हस्तद्वये-वस्त्र लाभः। स्कन्धयोः–विजयी भवेत्। नाभौ-बहुधनप्राप्तिः। कटिभागे–अश्वलाभः। दक्षिण मणिबन्धे–मनस्तापः धननाशः। वाम मणिबन्धे–कीर्तिनाशः, वातादिवृद्धिः। हृदये-धान्यलाभः। मुखे–मिष्ठान्नभोजनम्। गुल्फयोः– बन्धनभीतिः। केशान्ते-मरणम्। दक्षिणपादे–गमनम्। वामपादे–बन्धुविनाशः। पादमध्ये-स्त्रीनाशः। पादान्ते–मरणं भवेत्।

अथ विशेषपल्लीपतनफलम्

पादयोर्जघने जान्वोर्गुदे गुह्ये च मृत्युदा। अन्यत्र शुभदा प्रोक्ता सचैलं स्नानमाचरेत्।।१।। पल्याः प्रपतने चैव शरटस्याधिरोहणे।। यत्रोक्तं हि मनुष्यस्य शुभाऽशुभफलं किल।।२।। स्त्रीणां तु तद्वैपरित्याद्बोध्यं बुद्धिमतां सदा।। इति।।

पल्लीपतनेप्रशस्तवारतिथ्यर्क्षाणि

सद्वाराः –चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्रः। तिथयः –१।२।३।५।६।१०। ११।१२।१३। शुभभानि –पुष्य. अश्वि. रो. मृ. उफा. पुन. ह. चि. स्वा. ऽनु. ध. शत. रे. एषुशुभम्।। दक्षिणाङ्गेऽखिलेपुंसां वामांगे तु मृगीदृशाम्।। शुभम् –जन्मर्क्षेमृत्युयोगेऽह्निदग्धेविष्ट्यादिदूषिते।।

पल्लीपतनस्यानिष्टफलवारणार्थमन्त्र दानजपावाह

तिलमाषादिदानञ्चस्नात्वादेयंद्विजन्मने।। पिनाकिनं नमस्कृत्यं जपेन्मन्त्रषडक्षरम्।।१।। शतंसहस्रमथवा सर्वदोष निवर्हणम्। शिवालयेप्रदद्याद्वैदीपं दोषोपशान्तये।।२।। अशुभध्वस्त्यैमृत्युञ्जयजप स्वर्ण गोदानं कार्य्यमितिशुभम्।

अथ शुभछिक्का

भोजने।। शयने।। दाने।। आसने।। वामे।। पृष्ठे।। युद्धे।। औषधसेवने।। अध्ययने।। बीजवापेएषु सत्।

अथ शनेश्चरणविचारः

जन्माङ्गरुद्रेषु १।६।११ सुवर्णपादं, द्विपञ्चनन्दैः २।५।९ रजतञ्च पादम्। त्रिसप्तदिक् ३।७।१० ताम्रपादं वदन्ति, वेदाष्ट सार्केष्विह ४।८।१२ लौहपादम्।। तत्फलं च। लोहे धनविनाशस्यात्सर्वसौख्यं च काञ्चने। ताम्रे च समता ज्ञेया सौभाग्यं रजतं भवेत्।।

जपमन्त्रः –नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छाया-मार्तण्डसम्भूतं तन्नमामिशनैश्चरम्।।

दानमन्त्रः –शनैश्चरप्रीतिकरं दानं पीडानिवारकम्। सर्वापत्ति विनाशाय द्विजाग्र्याय ददाम्यहम्।।

अथ सर्पविषौषधिकथनम्

श्वेतापराजितामूलं देवदालीयमूलकम्। वारिणापेषितं नस्यं कालदंष्टेपिजीवति। गोमूत्रैर्नरमूत्रैर्वा पुराणेनघृतेनवा। हरिद्रापानमात्रेण विषंहन्ति चराचरम्।।

अथ औषधसेवनेदिनम्

दर्शेवापिशुभं विद्यादगुह्यरोगप्रशान्तये। क्षिप्रोग्रचरनक्षत्रेमेष-कर्कटकोदये। पापग्रहदिनेस्वांशौचित्रांस्यात्योर्हरिस्थितौ।। नन्दायास्थिर-लग्ने वा कंटके शुभसम्पदि। सर्वव्याधिविनाशाय विदध्यादौषधंबुधः।।

अथापस्मारे

श्रवणेचाह्निदैवत्वे तुरगेगुरुवारुणे। जयायां वातशान्त्यर्थं भेषजेस्नापयेच्चतम्। उग्रयोगेषुकर्तव्यं भैषज्यं दीर्घरोगिणाम्।।

अथ रोगमुक्तस्नानम्

चरेविलग्ने रविभौमवासरे रिक्तातिथौचन्द्रबलेविहीने। केन्द्रत्रिकोणायगताश्चपापाः स्नानं नराणां निरुजत्वकारि।। वैधृतिव्यतिपातेचभद्रायांसूर्यसंक्रमे। रोगमुक्तो नरः स्नायात्कुवारर्क्षतिथिष्वपि।।

अथ –मसूरंनिम्बपत्राभ्यांखादेन्मेषगतेरवौ। अब्दमेकं न भीतिः स्याद्विपार्तस्य न संशयः।।

अथ प्रश्नाद्बाधा-जीवनंमरण ज्ञानम्

तिथिवारं च नक्षत्रं लग्नं यामं च संयुतम्। वसु(८)भिश्च हरेद्भागं शेषं बाधानियोजयेत्।हया(७)ग्नि(३)देवबाधाचपितरौनेत्र(२)दन्तिनः(८)। षट्(६)चतुर्थे(४)भूतबाधा।ग्रहाणामेक(१)पञ्चके(५)।भक्ताद्द्वादश(१२) शेषेण जीवनं मरणं फलम्। राम(३)बाण(५)रसा(६)ष्टौ(८)च नन्द(९)रुद्रा(११)श्चजीवति।एक(१)पक्ष(२)युगः(४)सप्त(७)दश(१०) भानु(१२)र्नजीवति।। अर्थात् प्रश्नकर्ता के समय की तिथि (शुक्ल पक्ष १ से १५ व कृष्ण पक्ष १६ से ३०), वार (रविवार १ से शनिवार ७), नक्षत्र (अश्विनी १ से रेवती २७), लग्न (मेष १ से मीन १२), याम (दिन का ४ प्रहर अर्थात ३ घण्टे का १ प्रहरमान) इनका योग करे। योग में ८ का भाग दे। शेष अंक से बाधा का निर्णय करे। ७ या ३ बचे तो देवबाधा, २ या ० बचे तो पितृबाधा, ६ या ४ बचे तो भूतबाधा, १ या ५ बचे तो ग्रहबाधा जाने। पुनश्च योग में १२ का भाग दे। यदि शेष अंक ३,५,६,८,९,११ बचे तो जीवित जाने और ०,१,२,४,७,१० बचे तो जीवित नहीं है ऐसा जानना चाहिये।

अथ गणनागुणैक्यबोधकचक्रम्

अथ गुणैक्यज्ञान प्रकार:—ऊर्ध्वाधरस्थान्यपि भानि पुंसां पार्श्वद्वयस्थानि तथा वधूनाम्। संपातकोष्ठे ह्युभयोर्गुणैक्यं सर्वंशुभंतत्स्मृतितो १८ऽधिकं यत्।।

उदाहरणम्—गणपतिसरस्वत्योर्गणना विचारे शतपदचक्रानुसारेणगणपतिऋक्षंधनिष्ठा सरस्वती ऋक्षं शततारका, उभयो:सम्पातकोष्ठे गुणैक्यं २५ अर्हांदूर्ध्वं गुणैक्यं शुभम्।।इति।।

नाड्यादि दोषे विशेष:- राश्यैक्ये चेद्भिन्नमृक्षं द्वयो:स्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव। नाडीदोषो नो गणानां च दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदं शुभं स्यात्।। इत्यादिविचार: ।।

वर/कन्या (मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ, मीन — नक्षत्र चरण अनुसार)
[illegible]

गणनागुणैक्यबोधकचक्र देखने की विधि:—इस चक्र का उपयोग वर और वधू के कितने गुण मिलते हैं, यह जानने के लिये किया जाता है। वर के नक्षत्र चरण सहित बेड़ी पंक्ति में दिये गये हैं और कन्या के खड़ी पंक्ति में। मान लीजिये की वर का नक्षत्र विशाखा के पहले चरण में है और वधू का नक्षत्र धनिष्ठा के दूसरे चरण में है। अत: ऊपर से विशाखा ३ का कॉलम और वधू में धनिष्ठा २ की पंक्ति देखने से ३० गुण लिखे गये हैं अत: स्पष्ट हुआ कि इस परिस्थिति में वर वधू के ३० गुण मिलते हैं। अधिकतम गुण ३६ होते हैं। ध्यान दें कि १८ या इससे अधिक गुण शुभ माने जाते हैं। इसमें वर एवं वधू के जन्म नक्षत्र व उसके चरण को लेना चाहिये। नाड़ी दोष के परिहार- १) यदि वर वधू की राशि एक हो परन्तु नक्षत्र भिन्न हों। २) दोनो के नक्षत्र एक हो और राशियां भिन्न हों। ३) नक्षत्र एक हो पर चरण भिन्न हों। परन्तु ध्यान दे कि यदि दोनों के नक्षत्र एक ही चरण में हों तो इसका कोई परिहार नही है। अत: नाड़ी दोष निश्चित है, अवश्य है। नाड़ी दोष का विचार चारो वर्णों में किया जाना चाहिये।

अथ पिण्डानयनेसुगमरीति:

अष्टघ्नेष्टायमृक्षैरधिकमनग्निकं यद्गजैरङ्कचन्द्रैर्निघ्नं भै: शेषितं तत् गजगुणितमथो-सायमेवंहिपिण्डम्।। इति।

वास्तुभूमिशुभाशुभज्ञानप्रकार:

सायंकाले हस्तपरिमितायामविस्तृतिप्रमाणं गर्तं विधाय तज्जलपूर्णं कृत्वा प्रात: काले पुनर्विलोक्य तत्सजलं शुभम्। निर्जलं मध्यमम्।। निर्जलं स्फुटितं असदिति।।

पिण्डत: आयाद्यानयनप्रकार:

पिण्डेक्रमात् ९।९।६।८।३।८।८।४।८ नव स्थान स्थापिते एतैर्गुणिते, एतै ८।७।९।१२।८।२७।१५।२७।१२० विभक्ते शेशंक्रमात् आय: १ वार: २ अंशकं ३ द्रव्यं ४ ऋणं ५ ऋक्षं ६ तिथि: ७ योग: ८ आयुश्च ९ भवति। बहुऋणमल्पद्रव्यगृहमसत्। गृहगृहेशनक्षत्रैक्यञ्च न सत्। इति सर्वमादौविचार्यम्।। आय: ध्वजादय:। वारोऽर्कादि:। अंशको मेषादि नवमांशा:। अंशकशब्देन केचन जन्मादितारा गणयन्ति। तदनुचितं, तस्मादन्यथामयानोक्तेरन्यत् प्रसिद्धम्।

अथायानां नामानि उपयोगस्थानकथनञ्च

ध्वज:	धूम्र:	हरि:	श्वान:	वृष:	गर्दभ:	हस्ती	काक:

(वापीकूपतडागादौवृषोदेयोविचक्षणै: आसने योजयेत्सिंहं शयने काककुञ्जरौ।।१।। वृषं भोजनपात्रेषुदद्याच्छालादिषु ध्वजम्। अग्निवेश्मसु सर्वेषु गृहेवन्धुप-जीविनाम्।।२।। धूम्रंदद्यात्तथाश्वानं यवनांत्यजयोगृहे। खरो वेश्यागृहे योज्यो ध्वांक्षश्चापि कुटीषु च।।३।। वृषं सिंहं गजं दद्यात् प्रासादे पुरमन्दिरे।। इतिशुभम्।।) अन्य क्रम: --

काक: । हस्ती । गर्दभ: । वृष: । श्वान: । हरि: । धूम्र: । ध्वज: ।

जन्मसमये शिशुचरण (पाद) विचार:

आर्द्रादौ दश (१०) रूपाणि, विशाखा चतुर (४) लौहकम् ।
पूर्वादी सप्त (७) ताम्राणि, रेवती षट् (६) हेमकम् ।।

नक्षत्र:	पाद:	फलम्
आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती।	रजतपादं	सौभाग्यम्
विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल।	लौहपाद:	धनहानि:
पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद।	ताम्रपाद:	सामान्यशुभ:
रेवती, अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा।	सुवर्णपाद:	सर्वसौख्यम्

राशिवशादायुर्बोधक चक्रम् *

दीर्घायु:	मध्यायु:	अल्पायु:
चरभे १ लग्नेश: चरभे १ अष्टमेश:	चरभे १ लग्नेश: स्थिरभे २ अष्टमेश:	चरभे १ लग्नेश: द्विस्वभावभे ३ अष्टमेश:
स्थिरभे २ लग्नेश: द्विस्वभावभे ३ अष्टमेश:	स्थिरभे २ लग्नेश: चरभे १ अष्टमेश:	स्थिरभे २ लग्नेश: स्थिरभे २ अष्टमेश:
द्विस्वभावभे ३ लग्नेश: स्थिरभे २ अष्टमेश:	द्विस्वभावभे ३ लग्नेश: द्विस्वभावभे ३ अष्टमेश:	द्विस्वभावभे ३ लग्नेश: चरभे १ अष्टमेश:

।। सर्वसाधारण शुद्धायादिदैर्घ्यविस्तारयुतासिद्धपिण्डसारिणी ।।

दैर्घ्यम्, विस्तार, आय:, वार:, अंश:, ...
[illegible]

शल्यानयनरीति:

वर्णा:	अ.	क.	च.	ट.	त.	प.	य.	श	ह ष ग
दिश:	पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान्य	मध्य
शल्य	मनुष्यस्य	खरस्य	मनुष्यस्य	शुन:	शिशो:	तुषाङ्गार	विप्रशल्य	गोशल्य	[illegible]
हस्त	१।।।	२	२	१।।	१।।	४	२	१	१
फलानि	मृत्युदम्	राजभयम्	गृहेशमृति	बालमृति:	गृहवियोग:	दु:स्वप्नम्	दरिद्रता	गोधननाश:	कुलनाश

स्मृत्येष्टदेवताप्रष्टुर्वचनस्याद्यमक्षरम्। गृहस्थस्य तत: शल्याशल्येपूर्वविचारयेत्।। [illegible] खनेतिहजलै: पूर्ण निशास्ये न्यसेत्। प्रातर्दृष्टजलं स्थलं सदजलं मध्यं त्वसत्स्फाटितम्।।

अथेष्टनक्षत्रकल्पनाऽनेनगणना विचार:—आर्द्रादितिर्गुरुश्चैव सर्पश्चैव पिता भगा:।। [illegible] नवेष्ठा गृहतारका:।।इति।। तत्र राशिकूटादिकं सर्वं दम्पत्योरिव चिन्तयेत्।। [illegible] गृहतत्स्वामिनोरपि। परस्परंमित्रयोश्चएकनाडी प्रशस्यते।। इति।।

अथ होड़ाचक्र (वरकन्या के जन्म नक्षत्र (नामाक्षर) से विवाह मेलापक विचारोपयोगी आवश्यक विषय)

राशि	नक्षत्र वर्ण	नक्षत्र	वर्ण	वश्य	योनि	वैर	राशीश	गण	नाड़ी
मेष	चू चे चो ला	अश्विनी	क्षत्रिय	चतुष्पद	अश्व	महिष	भौम	देव	आदि
मेष	ली लू ले लो	भरणी	क्षत्रिय	चतुष्पद	गज	सिंह	भौम	मनुष्य	मध्य
१ मे. ३ वृ.	अ इ उ ए	कृत्तिका	क्षत्री १ वैश्य ३	चतुष्पद	छाग	वानर	भौम १ शुक्र ३	राक्षस	अन्त्य
वृष	ओ वा वी वू	रोहिणी	वैश्य	चतुष्पद	सर्प	नकुल	शुक्र	मनुष्य	अन्त्य
२ वृ. २ मि.	वे वो का की	मृगशिरा	वैश्य२ शूद्र२	चतु.२ द्विपद२	सर्प	नकुल	शुक्र२ बुध२	देव	मध्य
मिथुन	कू घ ङ छ	आर्द्रा	शूद्र	द्विपद	श्वान	मृग	बुध	मनुष्य	आदि
३ मि. १ क.	के को हा ही	पुनर्वसु	शूद्र३ विप्र१	द्विप३ जल१	मार्जार	मूषक	बुध३ चन्द्र१	देव	आदि
कर्क	हू हे हो डा	पुष्य	विप्र	जलचर	छाग	वानर	चन्द्र	देव	मध्य
कर्क	डी डू डे डो	आश्लेषा	विप्र	जलचर	मार्जार	मूषक	चन्द्र	राक्षस	अन्त्य
सिंह	मा मी मू मे	मघा	क्षत्रिय	वनचर	मूषक	मार्जार	सूर्य	राक्षस	अन्त्य
सिंह	मो टा टी टू	पू.फा	क्षत्रिय	वनचर	मूषक	मार्जार	सूर्य	मनुष्य	मध्य
१ सिं. ३ कं.	टे टो पा पी	उ.फा	क्षत्री१ वैश्य३	वन१ द्विप.३	गो	व्याघ्र	सूर्य१ बुध३	मनुष्य	आदि
कन्या	पू ष ण ठ	हस्त	वैश्य	द्विपद	महिष	अश्व	बुध	देव	आदि
२ कं. २ तु.	पे पो रा री	चित्रा	वैश्य२ शूद्र२	द्विपद	व्याघ्र	गो	बुध२ शुक्र२	राक्षस	मध्य
तुला	रू रे रो ता	स्वाती	शूद्र	द्विपद	महिष	अश्व	शुक्र	देव	अन्त्य
३ तु. १ वृ.	ती तू ते तो	विशाखा	शूद्र३ विप्र१	द्विप.३ कीट१	व्याघ्र	गो	शुक्र३ भौम१	राक्षस	अन्त्य
वृश्चिक	ना नी नू ने	अनुराधा	विप्र	कीट	हरिण	श्वान	भौम	देव	मध्य
वृश्चिक	नो या यी यू	ज्येष्ठा	विप्र	कीट	हरिण	श्वान	भौम	राक्षस	आदि
धनु	ये यो भा भी	मूल	क्षत्रिय	द्विपद	श्वान	मृग	गुरु	राक्षस	आदि
धनु	भू धा फा ढा	पू.षा।। पू.षा३।।	क्षत्रिय।। क्षत्री३।।	द्विप।। चतु३।।	वानर	छाग	गुरु	मनुष्य	मध्य
१ ध. ३ म.	भे भो जा जी	उ.षा.	क्षत्री१ वैश्य३	चतुष्पद	नकुल	सर्प	गुरु१ शनि३	मनुष्य	अन्त्य
मकर	खी खू खे खो	श्रवण१।। श्रवण२।।	वैश्य	चतु१।। जल२।।	वानर	मेष	शनि	देव	अन्त्य
२ म. २ कुं.	गा गी गू गे	धनिष्ठा	वैश्य२ शूद्र२	जल२ द्विप२	सिंह	गज	शनि	राक्षस	मध्य
कुम्भ	गो सा सी सू	शतभिषा	शूद्र	द्विपद	अश्व	महिष	शनि	राक्षस	आदि
३ कुं. १ मी.	से सो दा दी	पू.भा.	शूद्र३ विप्र१	द्विप३ जल१	सिंह	गज	शनि३ गुरु१	मनुष्य	आदि
मीन	दू थ झ ञ	उ.भा.	विप्र	जलचर	गो	व्याघ्र	गुरु	मनुष्य	मध्य
मीन	दे दो चा ची	रेवती	विप्र	जलचर	गज	सिंह	गुरु	देव	अन्त्य

अथात्रवरकन्ययोर्नक्षत्रमेलापके वर्णादि-नाड्यन्तानामष्टकूटानांगुणस्यसंख्याज्ञानमिदम्।

(१) वर्णगुणज्ञानाय चक्रम्

वरस्य / कन्यायाः

वर्णः ४	ब्रा.	क्ष.	वै.	शू.
ब्राह्मण	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

(चतुष्पदानामेवग्रामचरोवनचराविति द्वौभेदौ)

(२) वश्यगुणज्ञानाय चक्रम्

वरस्य / कन्यायाः

वश्य	चतु.	द्वि.	जल.	वन.	कीट
चतुष्पद	२	१	१	०	१
द्विपद	१	२	॥	०	०
जलचर	१	॥	२	१	१
वनचर	०	०	१	२	०
कीट	१	०	१	०	२

(३) तारायाः गुणबोधक चक्रम्

वरस्य / कन्यायाः

सं०	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

(६) गणमैत्रीगुणज्ञानाय चक्रम्

वरस्य / कन्यायाः

गणाः	देवता	मनुष्य	राक्षस
देवता	६	५	१
मनुष्य	५	६	०
राक्षस	१	०	६

(८) नाडीकूटगुणज्ञानम्

वरस्य / कन्यायाः

नाड़ी	आदि	मध्य	अन्त्य
आदि	०	८	८
मध्य	८	०	८
अन्त्य	८	८	०

गुणानामैक्येन ग्राह्याग्राह्यविचारः:-गुणैःषोडषभिर्निन्द्यं मध्यमं विंशतिस्तथा। श्रेष्ठं त्रिंशद्गुणं यावत्परतस्तूत्तमोत्तमम्। सद्भकूटे इति ज्ञेयं दुष्टकूटेऽथ कथ्यते।। निद्यं गुणैर्विंशतिभिर्मध्यं बाणाधिकैर्मतम्। ऊर्ध्वं च पञ्चविंशत्या श्रेष्ठं श्रेष्ठतरं ततः।।

(४) अथात्रयोनिकूटस्य गुणज्ञानायचक्रम् *(अन्तिम कॉलम में नीचे देखें।)

वरस्य / कन्यायाः

योनयः	अश्व	गज	छाग	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	हरिण	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	४	२	२	२	२	२	२	२	०	१	३	२	२	१
गज	२	४	२	२	२	२	२	२	२	१	२	३	२	०
छाग	२	३	४	२	२	२	२	३	३	१	२	०	३	१
सर्प	२	२	२	४	२	१	१	१	२	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	१	०	२	१	१
मार्जार	२	२	२	१	१	४	०	२	२	१	२	२	२	१
मूषक	२	२	२	१	१	०	४	२	२	२	२	२	१	२
गौ	२	२	३	१	२	२	२	४	३	०	३	२	२	१
महिष	०	२	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	१
व्याघ्र	१	१	१	२	१	१	२	०	१	४	१	१	२	२
हरिण	३	२	२	२	०	२	२	३	२	१	४	२	२	१
वानर	२	३	०	२	२	२	२	२	२	१	२	४	२	२
नकुल	२	२	३	०	१	२	१	२	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	०	१	२	१	१	२	१	१	२	१	२	२	४

शौनकः:-वर्गवैरं योनिवैरंगणवैरंनृदूरकं दुष्टकूटफलं सर्वं ग्रहमैत्रेणनश्यति। यथेशयोर्मिथोभावो दम्पत्यो स्यादृशोभवेत्। दुष्टकूटंशुभंमैत्र्यासद्भकूटेतिशस्यते।

(५) ग्रहमैत्रीगुणज्ञानाय चक्रम्

वरस्य / कन्यायाः

ग्रहाः	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्यः	५	५	५	४	५	०	०
चन्द्रः	५	५	४	१	४	॥	॥
भौमः	५	४	५	॥	५	३	॥
बुधः	४	१	॥	५	॥	५	४
गुरुः	५	४	५	॥	५	॥	३
शुक्रः	०	॥	३	५	॥	५	५
शनिः	०	॥	॥	४	३	५	५

(७) राशिकूटस्यगुणबोधक चक्रम्

वरस्य / कन्यायाः

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
राशयः	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृश्चिक	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
धनु	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुम्भ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

नैसर्गिकमैत्रीचक्रमिदमं चक्रम्

सूर्यः	चन्द्रः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	ग्रहाः
चन्द्र मंगल गुरु	सूर्य बुध	चन्द्र सूर्य गुरु	सूर्य शुक्र	सूर्य चन्द्र मंगल	बुध शनि	बुध शुक्र	मित्र
बुध	मंगल गुरु शुक्र शनि	शुक्र शनि	मंगल गुरु शनि	शनि	मंगल गुरु	गुरु	सम
शुक्र शनि	×	बुध	चन्द्र	बुध शुक्र	सूर्य चन्द्र	सूर्य चन्द्र मंगल	शत्रु

वर्गाः मित्रसमशत्रुचक्रम्

अ १६	क ५	च ५	ट ५	त ५	प ५	य ४	श ४	वर्गाः
गरुड़	बिड़ाल	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	अज	स्वामिनः

अन्तरिक्षजन्मज्ञानम्

धनुर्मीनिचकन्यासु मिथुने च विशेषतः।। अन्तरिक्षेभवेज्जन्मशेषे- भूमौविनिर्दिशेत्।।२।। अन्तरिक्षेनामोच्चभूमाविति।।

विवाहेविचन्द्रगुरुशुद्धिचक्रम्

रविः	चन्द्रः	गुरुः	ग्रहाः
३।६ १०।११	३।६।७ १०।११	२।५।७ ९।११	शुभस्थानानि
१।२।५।७ ९।	१।२ ५।९	१।३ १०।६	पूज्यस्थानानि
४ ८।१२	४ ८।१२	४ ८।१२	निन्दितस्थानानि

अथ कन्याविवाहे कुमारस्य उपनयने गुरुबलं चिन्त्यम्। कुमारस्य उपनयने विवाहेऽपि रवि बलं चिन्त्यम्। उभयो- श्चन्द्रबलं चिन्त्यमिति।

अथद्विपदादिभानां बोधकचक्रम्

मानव द्विपद	चतुष्पद	जलचर	सर्प
मिथुन, कन्या, तुला, धनु (पूर्वार्ध)	मेष, वृष, सिंह धनु (उत्तरार्ध) मकर (पूर्वार्ध)	कर्क, कुम्भ, मीन, मकर (उत्तरार्ध)	वृश्चिक

।। पौषमासादितः ।। १३

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
सौख्यं	क्लेशः	प्रीतिः	अर्थागमः
शून्यं	नैःस्वं	निःस्वता	मित्रता
द्रव्यक्लेश	दुःखं	इष्टाप्तिः	अर्थलाभः
लाभः	सौख्यं	मङ्गलं	वित्तलाभः
लाभः	द्रव्यप्राप्तिः	धनं	सौख्यं
प्रीतिः	लाभः	मृत्युः	अर्थागमः
लाभः	कष्टं	द्रव्यलाभः	सौख्यं
कष्टं	सौख्यं	क्लेशलाभौ	सुखं
सौख्यं	लाभः	कार्यसिद्धिः	कष्टं
क्लेशः	कष्टात्सिद्धिः	अर्थलाभः	धनं
मृत्युः	लाभः	द्रव्यलाभः	शून्यं
शून्यं	सौख्यं	मृत्युः	अतिकष्टं

अथात्र युजिभचक्रमिदम्

रेवती अश्विनी भरणी कृतिका रोहिणी मृगशिरा	आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य आश्लेषा मघा पूफा. उफा. हस्त चित्रा स्वा. विशा. अनु.	ज्ये. मूल. पूषा. उषा. श्रवण. धनिष्ठा शत. पूभा. उभा.
पूर्व भाग ६ पति श्रेष्ठः	मध्यभाग १२ द्वयोः प्रीतिः	परभाग ९ कन्या श्रेष्ठाः

।। अथ पूर्वादिदिग्गमनेतिथिचक्रम् ।।

पौष	माघ	फाल्गुन	चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११

गुण-मेलापक विचार-

१) वर-वधू की राशियों के स्वामियों में यदि (नैसर्गिक) मैत्री हो या दोनों के राशि स्वामी एक ही हो तो यह कई दोषों (वर्ण-वर्ग-तारा-योनि-गण-द्विर्द्वाश-षडाष्टक तथा नवपंचम दोषों को नष्ट करता है)। इसी प्रकार वर-वधू के नवमांश स्वामी (सम या मित्र हो या एक ही हो) तो भी यह उपर के दोषों को नष्ट करता है।

२) यदि वर कन्या की राशियां परस्पर ३-११, ४-१०, ७-७ या १-१ होती है तो यह भी राशीश मैत्री की भाँति वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रहमैत्री दोष तथा गणदोष को नष्ट करता है।

३) वर-वधू की कुंडली में यदि (क) दोनो की राशि एक हो और नक्षत्र भिन्न हो (ख) दोनों का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न हों। (ग) दोनों का नक्षत्र एक हो और चरण भिन्न-भिन्न हो तो ऐसी स्थिति में गणविचार, ग्रहमैत्री, नाड़ी, और नृदूर दोष देखने की आवश्यकता नहीं होती। परन्तु दोनो के नक्षत्र चरण समान हो अर्थात दोनो की नवांश राशि एक हो तो नाड़ी दोष निश्चित है। अवश्य है। इसका (ब्राह्मणों - क्षत्रियों - वैश्यों और शुद्रों) में कोई परिहार नहीं है।

अथ भौम(मङ्गल)दोष विचार

१) यदि वर या वधू की लग्न कुण्डली में लग्न से १,४,७,८,१२ वें स्थान पर मंगल हो तो उसे भौम दोष (मंगली) कहा जाता है। यदि वर वधू दोनों को मंगल दोष का परिहार मिलता हो तो विवाह हो सकता है। परन्तु यदि दोनों में से एक ही का दोष परिहार मिले तो विवाह नहीं हो सकता।

२) वर मंगली हो और वधू मंगली ना हो तो विवाह नहीं हो सकता परन्तु यदि कन्या मांगलिक हो और वर मांगलिक न हो तो कन्या का विवाह पहले शालिग्राम या पीपल या बरगद के वृक्ष से किया जाता है तथा ग्रहों का विधिपूर्वक पूजन किया जाता है। इसके पश्चात् विवाह हो सकता है।

अथ भौम (मङ्गल) दोषपरिहारः

१) एक की कुण्डली में मंगली दोष हो और दूसरे की कुण्डली में उसी स्थान पर मंगल, शनि या पापग्रह हो तो मंगल दोष भंग हो जाता है।

२) यदि लग्न का मंगल मेष या मकर का हो तो दोष नही होगा।

३) १२वा मंगल धनु राशि का, ४था मंगल वृश्चिक का, ७वां मंगल वृष या मकर का और ८वां मंगल कुम्भ या मीन का हो तो भी मंगल दोष नहीं होता।

४) ४था ७वां या १२वाँ मंगल मेष या कर्क राशि का हो तो दोष नही होता।

५) गुरु बली हो और शुक्र स्वराशि या उच्च का हो और लग्न या सप्तम भाव में हो तो भी दोष नहीं होगा।

६) मंगल वक्री, नीच, अस्त हो तो दोष नही होगा।

७) मंगल स्वराशि या उच्च का हो तो दोष नहीं होगा।

८) मंगल व गुरु या मंगल व चन्द्र या मंगल व राहु एक ही भाव में हो तो दोष नही होगा। ➔ ➔

९) केन्द्र, त्रिकोण में शुभ ग्रह व ३,६,११ में पाप ग्रह व सप्तम भाव में सप्तमेष हो तो भी दोष नहीं होता। यह तीनो घटना एक साथ होनी चाहिये।

१०) मंगल पर गुरु की सप्तम दृष्टि हो तो दोष नही होगा।

११) यदि कन्या की जन्म कुण्डली में १,४,७,८, व १२वें घर में मंगल हो और १,४,५,७,९ व १०में वृहस्पिति हो तो मंगल दोष नही होता।

* अथ महद्वैरेपि महिषाश्वं वानरमेषकमेतद्वयमुदासीनंस्वभावगुणंपरस्परघाताभावात्। एकयोनिष्वपिगजयोः श्वानयोः मार्जारयोः व्याघ्रयोः सिंहयोः अतिमित्रत्वेपि, नमित्रत्वं, परस्परकलहकारणात्। अथ एतद्युग्मपञ्चकं स्वभावगुणम्। व्याघ्रसिंहौ सर्पोन्दुरुर्नकुलेषुउदासीनौ। अन्येषां वैरिणी। सर्पमार्जारयोः-उन्दुरसर्पयोःवैरम्। गोमेषयोः, गोमहिष्योश्चमैत्रमिति।

श	ह ष य
ईशान्य	मध्य
गोशल्य	नृकपाल
१	३
गोधननाशः	कुलनाशः

।। श्वभ्रं हस्तमितं

। शतभं पूर्वयुग्मश्च सेव्यसेवकयोश्चैव

मेषादि राशियों के लिये पूरे संवत् वर्ष २०८२ की शुभ-अशुभ तारीखें (३० मार्च २०२५ से १९ मार्च २०२६)

राशि	मास	मार्च २०२५	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त
मेष	शुभ		४,५,११,१२,१४,१५, १८,१९,२१,२२,२३,२४	२,८,९,११,१२,१८,१९, २०,२१,२९	५,६,७,८,१४,१५, १७,२५,२६	२,३,४,५,१२,१४,१५, २३,२९,३०	१,२,८,९,१०,११, १९,२६,२७,२८,२९
	अशुभ		६,७,९,१०,१६,१७, २५,२६	४,६,७,१३,१४,१६,१७, २३,३१	१,२,३,१०,११,१२,१३, १९,२७,२८,३०	७,८,९,१०,१६,१७ २५,२७,२८	३,४,६,७,१३, २१,२२,२३,२४,३१
वृष	शुभ		६,७,१४,१५,१६,१७, २३,२४,२५,२६	४,११,१२,१३,१४, २०,२१,२३,३१	१,७,८,१०,११, १७,१९,२७,२८	४,५,७,८,१४,१५, १६,१७,२५	१,२,३,४,१०,११,१३, २१,२२,२८,२९,३१
	अशुभ	३१	१,९,१०,११,१२, १८,१९,२१,२२,२७,२८	६,७,८,९,१६,१७,१८, १९,२५	२,३,५,६,१२,१३,१४, १५,२१,२२,३०	२,३,९,१०,१२, १८,१९,२७,२८,२९,३०	६,७,८,९,१५, २३,२४,२६,२७
मिथुन	शुभ	३१	१,९,१०,१६,१७, १८,१९,२५,२६,२७,२८	६,७,१३,१४,१६,१७, २३,२५	२,३,१०,११,१२,१३, १९,२१,२२,३०	७,८,९,१०,१६,१७ १८,१९,२७,२८	३,४,६,७,१३,१५, २३,२४,३१
	अशुभ		२,३,११,१२,१४,१५, २१,२२,२३,२४,२९,३०	८,९,११,१२,१८,१९, २०,२१,२७	५,६,७,८,१४,१५, १७,२३,२४	२,३,४,५,१२,१४,१५, २०,२१,२९,३०	१,२,८,९,१०,११, १७,२६,२७,२८,२९
कर्क	शुभ	३१	१,२,३,११,१२,१८,१९ २१,२२,२७,२८,२९,३०	८,९,१६,१७,१८,१९, २५,२७	५,६,१२,१३,१४,१५, २१,२२,२३,२४	२,३,९,१०,१२, १८,१९,२०,२१,२९,३०	६,७,८,९,१५, १७,२६,२७
	अशुभ		४,५,१४,१५,१६,१७, २३,२४,२५,२६	२,११,१२,१३,१४, २०,२१,२३,२९	७,८,१०,११,१७, १९,२५,२६	४,५,७,८,१४,१५, १६,१७,२३	१,२,३,४,१०,११,१३, १९,२८,२९,३१
सिंह	शुभ		२,३,४,५,१४,१५, २१,२२,२३,२४,२९,३०	२,११,१२,१८,१९, २०,२१,२७,२९	७,८,१४,१५,१७, २३,२४,२५,२६	४,५,१२,१४,१५, २०,२१,२३	१,२,८,९,१०,११, १७,१९,२८,२९
	अशुभ	३१	१,६,७,१६,१७, १८,१९,२५,२६,२७,२८	४,१३,१४,१६,१७, २३,२५,३१	१,१०,११,१२,१३, १९,२१,२२,२७,२८	७,८,९,१०,१६,१७ १८,१९,२५	३,४,६,७,१३,१५, २१,२२,३१
कन्या	शुभ		४,५,६,७,१६,१७, २३,२४,२५,२६	२,४,१३,१४, २०,२१,२३,२९,३१	१,१०,११,१७, १९,२५,२६,२७,२८	७,८,१४,१५, १६,१७,२३,२५	३,४,१०,११,१३, १९,२१,२२,३१
	अशुभ	३१	१,२,३,९,१०,१८,१९ २१,२२,२७,२८,२९,३०	६,७,१६,१७,१८,१९, २५,२७	२,३,१२,१३,१४,१५, २१,२२,२३,२४,३०	९,१०,१२,१८,१९ २०,२१,२७,२८	६,७,८,९,१५, १७,२३,२४
तुला	शुभ	३१	१,६,७,९,१०, १८,१९,२५,२६,२७,२८	४,६,७,१६,१७, २३,२५,३१	१,२,३,१२,१३, १९,२१,२२,२७,२८,३०	९,१०,१६,१७ १८,१९,२५,२७,२८	६,७,१३,१५, २१,२२,२३,२४
	अशुभ		२,३,४,५,११,१२, २१,२२,२३,२४,२९,३०	२,८,९,१८,१९, २०,२१,२७,२९	५,६,१४,१५,१७, २३,२४,२५,२६	२,३,१२,१४,१५, २०,२१,२३,२९,३०	८,९,१०,११, १७,१९,२६,२७
वृश्चिक	शुभ	३१	१,२,३,९,१०,११,१२, २१,२२,२७,२८,२९,३०	६,७,८,९,१८,१९, २५,२७	२,३,५,६,१४,१५, २१,२२,२३,२४,३०	२,३,१२,१८,१९ २०,२१,२७,२८,२९,३०	८,९,१५, १७,२३,२४,२६,२७
	अशुभ		४,५,६,७,१४,१५, २३,२४,२५,२६	२,४,११,१२, २०,२१,२३,२९,३१	१,७,८,१७, १९,२५,२६,२७,२८	४,५,१४,१५,१६,१७ २३,२५	१,२,१०,११,१३, १९,२१,२२,२८,२९
धनु	शुभ		२,३,४,५,११,१२,१४, १५,२३,२४,२९,३०	२,८,९,११,१२, २०,२१,२७,२९	५,६,७,८,१७, २३,२४,२५,२६	२,३,४,५,१४,१५, २०,२१,२३,२९,३०	१,२,१०,११, १७,१९,२६,२७,२८,२९
	अशुभ	३१	१,६,७,९,१०,१६,१७, २५,२६,२७,२८	४,६,७,१३,१४, २३,२५,३१	१,२,३,१०,११, १९,२१,२२,२७,२८,३०	७,८,१६,१७ १८,१९,२५,२७,२८	३,४,१३,१५, २१,२२,२३,२४,३१
मकर	शुभ		४,५,६,७,१४,१५, १६,१७,२५,२६,	२,४,११,१२,१३,१४, २३,२९,३१	१,७,८,१०,११, १९,२५,२६,२७,२८	४,५,७,८,१६,१७ २३,२५	१,२,३,४,१३, १९,२१,२२,२८,२९,३१
	अशुभ	३१	१,२,३,९,१०,११,१२, १८,१९,२७,२८,२९,३०	६,७,८,९,१६,१७, २५,२७	२,३,५,६,१२,१३, २१,२२,२३,२४,३०	२,३,९,१०,१८,१९ २०,२१,२७,२८,२९,३०	६,७,१५, १७,२३,२४,२६,२७
कुम्भ	शुभ	३१	१,६,७,९,१०,१६,१७, १८,१९,२७,२८	४,६,७,१३,१४,१६,१७, २५,३१	१,२,३,१०,११,१२,१३, २१,२२,२७,२८,३०	७,८,९,१०, १८,१९,२५,२७,२८	३,४,६,७,१५, २१,२२,२३,२४,३१
	अशुभ		२,३,४,५,११,१२,१४, १५,२१,२२,२९,३०	२,८,९,११,१२,१८,१९, २७,२९	५,६,७,८,१४,१५, २३,२४,२५,२६	२,३,४,५,१२, २०,२१,२३,२९,३०	१,२,८,९, १७,१९,२६,२७,२८,२९
मीन	शुभ		२,३,९,१०,११,१२, १८,१९,२१,२२,२९,३०	६,७,८,९,१६,१७, १८,१९,२७	२,३,५,६,१२,१३,१४, १५,२३,२४,३०	२,३,९,१०,१२, २०,२१,२७,२८,२९,३०	६,७,८,९,१७, २३,२४,२६,२७
	अशुभ		४,५,६,७,१४,१५,१६, १७,२३,२४,	२,४,११,१२,१३,१४, २०,२१,२९,३१	१,७,८,१०,११,१७, २५,२६,२७,२८	४,५,७,८,१४,१५, २३,२५	१,२,३,४,१०,११, १९,२१,२२,२८,२९,३१

राशि	मास	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर	जनवरी-२०२६	फरवरी	मार्च
मेष	शुभ	४,५,१५,१६, २०,२२,२३,२४,२५	२,४,५,१३,१९ २०,२२,२३,२९,३०,३१	१,९,१६,१८,१९, २५,२६,२८	६,७,८,९,१३,१४, १५,१६,२३,२५,२६	३,९,१०,१२,१३, १९,२०,२१,२२,३०	५,६,८,९,१०,११, १५,१६,१८,२६,२७	३,५,६ ७,८,१५,१७,१८
	अशुभ	२,३,९,१७,१८ २७,२८,२९,३०	६,७,१५,१७,१८, २४,२५,२७	३,११,१२,१३,१४, २०,२१,२३,२४,३०	११,१८,१९, २०,२१,२७,२८	५,७,८,१४,१५, १६,१७,२४	१,२,३,४,१३,१४, २०,२१,२८	१, १०,११,१९
वृष	शुभ	९,१७,१८, २४,२५,२७,२८	४,५,६,७,१५, २२,२३,२४,२५,३१	१,३,११,१२,१८,१९, २०,२१,२८,३०	८,९,१५,१६, १८,१९,२५,२६,२७,२८	५,१२,१३,१४,१५, २१,२२,२४	१,२,८,९,१०,११, १८,२०,२१,२८	१,७,८ १०,११,१७,१८,१९
	अशुभ	२,३,४,५,११,१२, २०,२२,२३,२९,३०	२,८,९,१७,१८, १९,२०,२७,२९,३०	५,१३,१४,१६, २३,२४,२५,२६	२,३,११,१३,१४, २०,२१,२३,२९,३०	७,८,९,१०,१६,१७, १९,२०,२६	३,४,५,६,१३,१४, १५,१६,२२,२३	३, ५,६,१५
मिथुन	शुभ	२,३,९,११,१२, २०,२७,२८,२९,३०	६,७,८,९,१७,१८, २४,२५,२७	३,५,१३,१४, २०,२१,२३,२४,३०	२,३,११,१८,१९, २०,२१,२७,२८,२९,३०	७,८,१४,१५,१६,१७, २४,२६	३,४,१०,११,१३,१४, २०,२१,२२,२३	१०,११, १९
	अशुभ	४,५,१३,१४, २२,२३,२४,२५	२,४,५,१०,११,१९ २०,२२,२३,२९,३०,३१	१,७,१६,१८,१९, २५,२६,२८	४,५,१३,१४,१५,१६, २३,२५,२६,३१	१,९,१०,१२,१३, १९,२०,२१,२२,२८	५,६,८,९,१५,१६, १८,२४,२५	३,५,६ ७,८,१५,१७,१८
कर्क	शुभ	२,३,४,५,११,१२, १३,१४,२२,२३,२९,३०	२,८,९,१०,११, १९,२०,२७	५,७,१६, २३,२४,२५,२६	२,३,४,५,१३,१४, २०,२१,२३,२९,३०,३१	१,९,१०,१६,१७, १९,२०,२६,२८	५,६,१३,१४,१५,१६, २२,२३,२४,२५	३, ५,६,१५
	अशुभ	९,१५,१६, २४,२५,२७,२८	४,५,६,७,१३,२२ २३,२४,२५,२९,३०,३१	१,३,९,१८,१९, २०,२१,२८,३०	६,७,१५,१६, १८,१९,२५,२६,२७,२८	३,१२,१३,१४,१५, २१,२२,२४,३०	८,९,१०,११, १८,२०,२१,२६,२७	७,८, १०,११,१७,१८,१९
सिंह	शुभ	४,५,१३,१४,१५,१६, २४,२५,२९,३०	२,४,५,१०,११,१३, २२,२३,२९,३०,३१	१,७,९,१८,१९, २५,२६,२८	४,५,६,७,१५,१६, २३,२५,२६,३१	१,३,१२,१३, १९,२०,२१,२२,२८,३०	८,९,१५,१६, १८,२४,२५,२६,२७	७,८, १५,१७,१८
	अशुभ	२,३,९,११,१२, १७,१८,२७,२८	६,७,८,९,१५, २४,२५,२७	३,५,११,१२, २०,२१,२३,२४,३०	२,३,८,९,१८,१९, २०,२१,२७,२८,२९,३०	५,१४,१५,१६,१७, २४,२६	१,२,१०,११,१३,१४, २०,२१,२२,२३,२८	१, १०,११,१९
कन्या	शुभ	९,१५,१६,१७,१८, २७,२८	४,५,६,७,१३,१५, २४,२५,२९,३०,३१	१,३,९,११,१२, २०,२१,२८,३०	६,७,८,९,१८,१९, २५,२६,२७,२८	३,५,१४,१५, २१,२२,२४,३०	१,२,१०,११, १८,२०,२१,२६,२७,२८	१,१०,११ १७,१८,१९
	अशुभ	२,३,४,५,११,१२, १३,१४,२०,२९,३०	२,८,९,१०,११, १७,१८,२७	५,७,१३,१४, २३,२४,२५,२६	२,३,४,५,११, २०,२१,२३,२९,३०,३१	१,७,८,१६,१७, १९,२०,२६,२८	३,४,१३,१४,१५,१६, २२,२३,२४,२५	३, १५
तुला	शुभ	२,३,९,११,१२, १७,१८,२०,२९,३०	२,४,५,६,७,८,९,१५, १७,१८,२७	३,५,११,१२,१३,१४, २३,२४,३०	२,३,८,९,११, २०,२१,२७,२८,२९,३०	५,७,८,१६,१७, २४,२६	१,२,३,४,१३,१४, २०,२१,२२,२३,२८	१,३, १९
	अशुभ	४,५,१३,१४,१५,१६, २२,२३	१०,११,१३,१९,२०, २९,३०,३१	१,७,९,१६, २५,२६,२८	४,५,६,७,१३,१४, २३,२५,२६,३१	१,३,९,१०, १९,२०,२१,२२,२८,३०	५,६,१५,१६, १८,२४,२५,२६,२७	५,६, १५,१७,१८
वृश्चिक	शुभ	४,५,११,१२,१३,१४, २०,२२,२३	८,९,१०,११,१७,१८, १९,२०	५,७,१३,१४,१६, २५,२६	२,३,४,५,११,१३,१४, २३,२९,३०,३१	१,७,८,९,१०, १९,२०,२६,२८	३,४,५,६,१५,१६, २२,२३,२४,२५	३,५,६, १५
	अशुभ	९,१५,१६,१७,१८, २४,२५	४,५,६,७,१३,१५, २२,२३,२९,३०,३१	१,३,९,११,१२,१८,१९, २८,३०	६,७,८,९,१५,१६, २५,२६,२७,२८	३,५,१२,१३, २१,२२,२४,३०	१,२,८,९, १८,२०,२१,२६,२७,२८	१,७,८ १७,१८,१९
धनु	शुभ	१३,१४,१५,१६, २२,२३,२४,२५	४,५,१०,११,१३,१९ २०,२२,२३,२९,३०,३१	१,७,९,१६,१८,१९, २८	४,५,६,७,१३,१४, १५,१६,२५,२६,३१	१,३,९,१०,१२,१३, २१,२२,२८,३०	५,६,८,९, १८,२४,२५,२६,२७	५,६, ७,८,१७,१८
	अशुभ	९,११,१२,१७,१८, २०,२७,२८	६,७,८,९,१५,१७,१८, २४,२५	३,५,११,१२,१३,१४, २०,२१,३०	२,३,८,९,११,१८,१९, २७,२८,२९,३०	५,७,८,१४,१५, २४,२६	१,२,३,४,१०,११, २०,२१,२२,२३,२८	१,३, १०,११,१९
मकर	शुभ	९,१५,१६,१७,१८, २४,२५,२७,२८	६,७,१३,१५, २२,२३,२४,२५	३,९,११,१२,१८,१९, २०,२१,३०	६,७,८,९,१५,१६, १८,१९,२७,२८	३,५,१२,१३,१४,१५, २४,३०	१,२,८,९,१०,११, २०,२१,२६,२७,२८	१,७,८ १०,११,१९
	अशुभ	२,३,११,१२,१३,१४, २०,२२,२३,२९,३०	८,९,१०,११,१७,१८, १९,२०,२७	५,७,१३,१४,१६, २३,२४	२,३,४,५,११,१३,१४, २०,२१,२९,३०,३१	१,७,८,९,१०,१६,१७, २६,२८	३,४,५,६,१३,१४, २२,२३,२४,२५	३,५, ६
कुम्भ	शुभ	२,३,११,१२,१७,१८ २०,२७,२८,२९,३०	८,९,१५,१७,१८, २४,२५,२७	५,११,१२,१३,१४, २०,२१,२३,२४	२,३,८,९,११, १८,१९,२०,२१,२९,३०	५,७,८,१४,१५,१६, १७,२६	१,२,३,४,१०,११,१३,१४, २२,२३,२८	१,३, १०,११
	अशुभ	४,५,१३,१४,१५ १६,२२,२३,२४,२५	२,१०,११,१३, १९,२०,२२,२३,२९,३०	७,९,१६,१८,१९, २५,२६	४,५,६,७,१३,१४, १५,१६,२३,३१	१,३,९,१०,१२,१३, १९,२०,२८,३०	५,६,८,९,१५,१६, २४,२५,२६,२७	५,६, ७,८,१५
मीन	शुभ	२,३,४,५,१३,१४, २०,२२,२३,२९,३०	२,१०,११,१७,१८, १९,२०,२७,२९,३०	७,१३,१४,१६, २३,२४,२५,२६	४,५,११,१३,१४, २०,२१,२३,३१	१,७,८,९,१०,१६,१७, १९,२०,२८	३,४,५,६,१३,१४, १५,१६,२४,२५	३, ५,६,१५
	अशुभ	१५,१६,१७,१८, २४,२५,२७,२८	४,५,१३,१५, २२,२३,२४,२५,३१	१,९,११,१२,१८,१९, २०,२१,२८	६,७,८,९,१५,१६, १८,१९,२५,२६	३,५,१२,१३,१४,१५, २१,२२,३०	१,२,८,९,१०,११,१८, २६,२७,२८	१,७,८, १०,११,१७,१८

नक्षत्र व ... अनेक कष्ट होते हैं। ऐसी जनश्रुति
...,मघा। ३-...
तीसरे में ... सम्मान मिले।
होते हैं। ... व चौथे चरण में पिता का नाश होता
..., तीसरे ... १३-१४ घटी मातृनाशकारी, १५ से
...ण में ... घटी तक हिंसक वृत्ति, ४१ से ४६ तक
...ी, ६ से ... आश्लेषा नक्षत्र में उत्पन्न कन्या
बल... भाग्यवान व धनवान होते हैं।
...व विद्या प्राप्त होती है।
... का, तीसरे में माता का व चौथे में
... माता के पिता (नाना) की, १३ से
... की, ३७ से ४२ माता व पिता के कुल
... नाशक होती है। मतांतर से ज्येष्ठा के
... पिता व स्वयं का नाश करता है। ज्येष्ठा
... में माता को व धननाश व चौथे में स्वयं
... देती है। ऐसी जनश्रुति है कि मूल में उत्पन्न
... मास में पृथ्वी में तथा वैशाख, फाल्गुन,
... दिन का मूल पिता को भयकारक, शाम
... इन ८ घटियों का नाम अभुक्त मूल है
... मूल होती है) इनमे जन्में बच्चों का
... अभिषेक रुद्रपाठ, महामृत्युंजय जप
...ोता है।
...मघा की प्रथम दो घटी। रेवती की
...सूचक होते है।

...ग्रेय में सोम व शनिवार को नहीं
...रविवार व शुक्रवार को तथा उत्तर
... की यात्रा न करे।
... को उत्तर की यात्रा न करे।
...ी यदि अस्त हों तो यात्रा नहीं
... अंश तक नहीं होना चाहिये।

चैत्रशुक्लपक्षः

श्रीसंवत् २०८२ शकः १९४७ (३० मार्च से १३ अप्रैल २०२५)। सौम्यायनं याम्यगोलः (मेषार्कतः सौम्यगोलः) वसन्तऋतुः।
राष्ट्रीय ९ से २३ चैत्र १९४७। बंग १६ से ३० चैत्र १४३१। मु. २९ रम. से १४ श. १४४६। नेपाली १७ से ३१ चैत्र २०८१। शुक्रः पूर्वे।

वासन्तीय नवरात्रारम्भः। घटस्थापना दि.९/५७ या. वा अभिजिन्मुहूर्ते दि.११/३५ उ. १२/२४ या.। सूर्योदये **सिद्धार्थी** नाम सम्वत्सर :। (शेषनीचे) -(1)
मूलः दिवा ४/४४ यावत्। ब्रह्मचारिणी-ज्येष्ठागौरी दर्शनं। झूलेलाल ज.। सिंघारा। ईद। अरुन्धती व्रत। मत्स्यावतारः। सं.रेवत्यां रविः१९/४६(दिवा१/४६)।
भ.३६/३२(रा.८/२८)उपरि। चन्द्रघंटा-सौभाग्यगौरी दर्शनं। गणगौरी ३। अंगारकी वैनायकी गणेश चतुर्थी। सौभाग्यशयनव्रतम्। मंगलागौरी जन्म। -(2)
भ.३/३१(प्रा.७/१४)यावत्। कूष्मांडा-शृंगारगौरी दर्शनं। गणेशदमनक ४। स्कन्दमाता-विशालाक्षी दर्शनं। श्रीः ५। लक्ष्मीः ५। कल्पादिः५। मीनावतारः ५।
कात्यायनी-ललितागौरी दर्शनं। रविषष्ठी ६(बिहार)। अशोक ६। यमुना ६। स्कन्द-दमनकोत्सवः ६। [(4) सिद्धिदात्री-महालक्ष्मी दर्श.। रामावतारः।
भ.४९/२(रा.शे.१/२४)उपरि। कालरात्रि-भवानीगौरी दर्शनं। सूर्यदमनक ७। भवानीयात्रा प्रारम्भः रा.शे.१/२४।
भ.१७/३६(दि.१२/४९)यावत्। महानिशा पूजा। दुर्गा ८। भवानी अष्टमी। ब्रह्मपुत्रनद स्नानम् ८। अन्नपूर्णा ८। अशोक कलिकाप्राशनम् ८। अन्नपूर्णा-(3)
श्रीरामनवमी व्रतं सर्वेषां। **नवरात्रसमाप्तिः।** नवरात्र पारणा सायं ५/३६ उ. सूर्यास्तं या.।महानवमी। दुर्गा९। रविपुष्य योगः दि.९।४४ उपरि। -(4)
मूलः दिवा ९/५९ उपरि। [(5) महोत्सवः। सर्वान्देवान्दमनकेन पूजयेत् (दौने से पूजन)। स्नाने-दाने-व्रते १५। मन्वादिः१५।
भ.१४/५५ (दिवा ११/४२) उपरि। भ.४५/२९(रात्रौ ११/५५)यावत्। मूलः। सर्वेषां कामदा एकादशी व्रतम्। श्रीविष्णुदोलोत्सवः।
मूलः दिवा १२/४ यावत्। एकादशी पारणा दिवा ८/१३ यावत् अथवा दिवा १०/४२ उपरि दिवा १/१२ यावत्। विष्णुदमनकोत्सवः१२।
प्रदोषः १३ व्रतम्। **महावीर जयन्ती।** अनंग १३। [(2) उमामहेश्वर दोलोत्सवः। दमनकेन गौरीशिवपूजनम्। मन्वादिः३।
भ.५५/३९(रा.शे.३/५६)उपरि। शिव-हरि-नृसिंह दमनकोत्सवः१४। हाटकेश्वरोत्सवः१४। [(3) महागौरी दर्शनम्। भवानीयात्रा समाप्तिः रा.शे.१२/१५।
भ.२८/५(सायं ४/५४)यावत्। मासान्तः। वैशाखस्नानदानव्रतयमनियमाद्यारम्भः। **हनुमज्जन्म १५** (महाराष्ट्रेषु प्रसिद्धः)। काश्यां संकटमोचने -(5)
खरमास समाप्तिः। सं.अश्विन्यां मेषे रविः ५३/४१ (रा.शे.३/७)। मु.१५ फलं महर्घता। स्नाने-दाने पुण्यप्रदा चित्रायुता १५। वैसाखी।

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	तिथि ति.	वा.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	नक्षत्र न.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	योग यो.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	आनन्दादि योगाः	तारीख अं	रा	बं	मु	फ	स्टै अं मि	से	सूर्योदय (लोकल) घं.	मि.	सूर्यास्त (लोकल) घं.	मि.	चं रा	सं (प्रवेश काल) घ	प	स	घं	मि	र क्रां अं	क	चंद्रास्त घं.	मि.	सूर्योदय (स्टैण्डर्ड) घं.	मि.	सूर्यास्त (स्टैण्डर्ड) घं.	मि.
३०	३४	१	र	२१	५१	दि	२	३७	रे	३१	२५	सा	६	२७	ऐं	३४	३१	रा	७	४२	बव	२१	५१	बा	४८	४८	प्रवर्धमान	३०	९	१६	२९	१६	-२	४८	५	५३	६	७	मे	३१	२५	सा	६	२७	उ३	४७	७	२१	५	५३	६	१२
३०	३८	२	सो	१५	४५	दि	१२	९	अ	२७	९	दि	४	४४	वै	२६	४०	सा	४	३२	कौ	१५	४५	तै	४२	३९	रक्षः	३१	१०	१७	१	१७	-२	३०	५	५२	६	८	मे						४	१०	८	३०	५	५२	६	१२
३०	४२	३	मं	९	३४	दि	९	४०	भ	२२	५२	दि	३	०	वि	१८	४८	दि	१	२३	ग	९	३४	व	३६	३२	मुसलः	१	११	१८	२	१८	-२	१२	५	५२	६	८	वृ	३६	४९	रा	८	३५	४	३३	९	४१	५	५१	६	१३
३०	४६	४/५	बु	३/५४	३१/२२	प्रा/रा	७/४	१४/५९	कृ	१८	४९	दि	१	२२	प्री	११	६	दि	१०	१७	भ	३	३१	बव/बा	३०/५७	४२/५३	सिद्धिः	२	१२	१९	३	१९	-१	५४	५	५१	६	९	वृ						४	५६	१०	५१	५	५०	६	१३
३०	४९	६	गु	५३	०	रा	३°	१	रो	१५	१६	दि	११	५५	आ/सौ	३/५३	४५/१३	प्रा/रा	७/४	११/३६	कौ	२५	२७	तै	५३	०	उत्पातः	३	१३	२०	४	२०	-१	३५	५	५०	६	१०	मि	४३	४७	रा	११	१९	५	१९	११	५६	५	४९	६	१४
३०	५३	७	शु	४९	२	रा	१°	२४	मृ	१२	२६	दि	१०	४७	शो	५१	०	रा	२°	१२	ग	२१	१	व	४९	२	मानसः	४	१४	२१	५	२१	-१	१७	५	४९	६	११	मि						५	४२	१२°	५५	५	४८	६	१४
३०	५६	८	श	४६	११	रा	१२	१५	आर्द्रा	१०	३६	दि	१०	१	अति	४५	५७	रा	१२°	१०	भ	१७	३६	बव	४६	११	मुद्गरः	५	१५	२२	६	२२	-१	०	५	४९	६	११	क	५४	५८	रा	३°	४५	६	५	१°	४६	५	४७	६	१५
३१	०	९	र	४४	३५	रा	११	३६	पुन	९	५६	दि	९	४४	सु	४१	५५	रा	१०	३२	बा	१५	२३	कौ	४४	३५	केतुः	६	१६	२३	७	२३	-०	४२	५	४८	६	१२	क						६	२८	२°	२९	५	४६	६	१५
३१	४	१०	सो	४४	२१	रा	११	२९	पु	१०	३४	दि	९	५९	धृ	३८	५६	रा	९	२०	तै	१४	२८	ग	४४	२१	धाताः	७	१७	२४	८	२४	-०	२५	५	४७	६	१३	क						६	५१	३°	६	५	४५	६	१५
३१	७	११	मं	४५	२९	रा	११	५५	श्ले	१२	३४	दि	१०	४६	शू	३७	१	रा	८	३३	व	१४	५५	भ	४५	२९	आनन्दः	८	१८	२५	९	२५	-०	७	५	४७	६	१३	सिं	१२	३७	दि	१०	४६	७	१३	३°	३९	५	४४	६	१६
३१	११	१२	बु	४७	५३	रा	१२°	५२	मघा	१५	५३	दि	१२	४	गं	३६	७	रा	८	१०	बव	१६	४१	बा	४७	५३	चरः	९	१९	२६	१०	२६	+०	१०	५	४६	६	१४	सिं						७	३५	४°	८	५	४३	६	१६
३१	१५	१३	गु	५१	२१	रा	२°	१४	पूफा	२०	२०	दि	१	५०	वृ	३६	५	रा	८	८	कौ	१९	३७	तै	५१	२१	गदः	१०	२०	२७	११	२७	०	२६	५	४५	६	१५	कं	३६	३९	रा	८	२१	७	५८	४°	३६	५	४२	६	१७
३१	१८	१४	शु	५५	३९	रा	३°	५६	उफा	२५	४२	दि	३	५८	ध्र	३६	४४	रा	८	२३	ग	२३	३०	व	५५	३९	शुभः	११	२१	२८	१२	२८	०	४३	५	४४	६	१६	कं						८	२०	५°	४	५	४१	६	१७
३१	२२	१५	श	६०	०	स	म	ग्र	ह	३१	४१	सा	६	२०	व्या	३७	४९	रा	८	४८	भ	२८	५	बव	६०	०	मृत्युः	१२	२२	२९	१३	२९	०	५९	५	४४	६	१६	कं						८	४२	उ५	५२	५	४०	६	१८
३१	२५	१५	र	०	३०	प्रा	५	५०	चि	३७	५७	रा	८	५०	ह	३९	७	रा	९	१८	बव	०	३०	बा	३२	५८	पद्मः	१३	२३	३०	१४	३०	१	१५	५	४३	६	१७	तु	४	४९	दि	७	३५	९	४	उ६	४४	५	३९	६	१८

ति. १ रवौ मिश्रमानम् ४६।१७

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	११	१६	६	५६	५९	१५
चं.	०	३	३२	५३	८६२	२५
मं.	३	०	१६	४२	१८	३२
बु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
गु.	१	२१	३४	४२	९	९
शु.	११	३	४६	२५	३०	२०व
श.	१०	२९	४८	१८	७	७
रा.	११	२	४	३९	३	११

२ सोमे मिश्रमानम् ४६।२०

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	११	१७	६	११	५९	१३
चं.	०	१७	५५	१८	८६१	१३
मं.	३	०	३५	१४	१८	५४
बु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
गु.	१	२१	४३	४३	९	९
शु.	११	३	१६	५	२८	२१व
श.	१०	२९	५५	२५	७	६
रा.	११	२	१	३२	३	११

३ भौमे मिश्रमानम् ४६।२३

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	११	१८	५	२४	५९	११
चं.	१	२	१६	३१	८५५	३२
मं.	३	०	५४	८	१९	१६
बु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
गु.	१	२१	५२	५२	९	१६
शु.	११	२	४७	४५	२६	१५व
श.	११	०	२	३१	७	५
रा.	११	१	५८	२४	३	११

४ बुधे मिश्रमानम् ४६।२५

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	११	१९	४	३४	५९	९
चं.	१	१६	३२	३	८४५	३६
मं.	३	१	१३	२४	१९	३७
बु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
गु.	१	२२	२	८	९	२३
शु.	११	२	२१	३०	२४	२व
श.	११	०	९	३६	७	४
रा.	११	१	५५	१६	३	११

६ गुरौ मिश्रमानम् ४६।२८

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	११	२०	३	४३	५९	७
चं.	२	०	३७	३९	८३२	८
मं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
बु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
गु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
शु.	११	१	५७	२८	२१	४३व
श.	११	०	१६	४०	७	२
रा.	११	१	५२	९	३	११

७ शुक्रे मिश्रमानम् ४६।३०

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	११	२१	२	४९	५९	५
चं.	२	१४	२९	४७	८१६	१०
मं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
बु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
गु.	१	२२	३०	३८	९	४३
शु.	११	१	३५	४६	१९	२०व
श.	११	०	२३	४२	७	१
रा.	११	१	४९	१	३	११

८ शनौ मिश्रमानम् ४६।३३

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	११	२२	१	५४	५९	२
चं.	२	२८	५	५७	७९४	५७
मं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
बु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
गु.	१	२२	४०	२२	९	५०
शु.	११	१	१६	२६	१६	५३व
श.	११	०	३०	४३	७	०
रा.	११	१	४५	५४	३	११

९ रवौ मिश्रमानम् ४६।३५

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	११	२३	०	५७	५९	०
चं.	३	११	२४	५४	७८१	४५
मं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
बु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
गु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
शु.	११	०	५९	३३	१४	२४व
श.	११	०	३७	४३	६	५८
रा.	११	१	४२	४६	३	११

१० सोमे मिश्रमानम् ४६।३८

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	११	२३	५९	५७	५८	५८
चं.	३	२४	२६	३९	७६५	४१
मं.	३	२	५४	५४	२१	१८
बु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
गु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
शु.	११	०	४५	९	११	५४व
श.	११	०	४४	४१	६	५६
रा.	११	१	३९	३८	३	११

११ भौमे मिश्रमानम् ४६।४०

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	११	२४	५८	५५	५८	५६
चं.	४	७	१२	१९	७५१	३८
मं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
बु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
गु.	१	२३	०	८	१०	३
शु.	११	०	३३	१५	९	२३व
श.	११	०	५१	३७	६	५५
रा.	११	१	३६	३१	३	११

१२ बुधे मिश्रमानम् ४६।४३

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	११	२५	५७	५२	५८	५४
चं.	४	१९	४३	५७	७४०	१३
मं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
बु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
गु.	१	२३	१०	१०	१०	९
शु.	११	०	२३	५२	६	५३व
श.	११	०	५८	३२	६	५३
रा.	११	१	३३	२३	३	११

१३ गुरौ मिश्रमानम् ४६।४५

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	११	२६	५६	४६	५८	५२
चं.	५	२	४	१०	७३१	५०
मं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
बु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
गु.	१	२३	२०	१९	१०	१५
शु.	११	०	१६	५९	४	२४व
श.	११	१	५	२५	६	५२
रा.	११	१	३०	१६	३	११

१४ शुक्रे मिश्रमान ४६।४८

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	११	२७	५५	३९	५८	५०
चं.	५	१४	१६	०	७२६	३८
मं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
बु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
गु.	१	२३	३०	३४	१०	२१
शु.	११	०	१२	३५	१	५६व
श.	११	१	१२	१७	६	४९
रा.	११	१	२७	८	३	११

१५ शनौ मिश्रमान ४६।५०

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	११	२८	५४	२९	५८	४८
चं.	५	२६	२२	३९	७२४	३८
मं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
बु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
गु.	१	२३	४०	५५	१०	२७
शु.	११	०	१०	३१	०	२९मा
श.	११	१	१९	६	६	४८
रा.	११	१	२४	१	३	११

ति. १५ रवौ मिश्रमान ४६।५३

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	११	२९	५३	१७	५८	४६
चं.	६	८	२७	१६	७२५	४२
मं.	३	५	७	१५	२३	५
बु.	११	४	१८	५६	३३	२
गु.	१	२३	५१	२२	१०	३३
शु.	११	०	११	९	२	५२
श.	११	१	२५	५४	६	४६
रा.	११	१	२०	५३	३	११

५२ पंक्ति ८ शनी मिश्रमानम् ४६।३३ दिनम् ३०।५६ अयनांशाः ०।२४।१३।२४

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
११	२	३	११	१	११	११	११
२२	२८	२	२	२२	१	०	१
१	५	१३	४२	३०	१६	३०	४५
५४	५७	१७	३५	३८	२६	४३	५४
५९	७९८	२०	६	९	१६	७	३
२	५७	३९	२५व	४३	५३व	०	११
		ठ	अ	ठ	ठ	अ	व

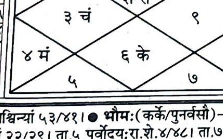

ग्रहस्थितिः (ता.३० मार्च से १३ अप्रैल २०२५)

सूर्यः (मीने/उभायां) –ता.३१ रेवत्यां १९/४६। ता.१३ मेषे/अश्विन्यां ५३/४१। ● **भौमः** (कर्के/पुनर्वसौ) –ता.८ पुष्ये ५७/११। ● **बुधः** (मीने/उभायां/वक्री/अस्तः) –ता.३ पूभायां २२/२९। ता.५ पूर्वोदयः रा.शे.४/४८। ता.७ मार्गी २४/५७। ता.११ उभायां ३३/३०। ● **गुरुः** (वृषे/रोहिण्यां४च.) –ता.१० मृगे१च.४४/५१। ● **शुक्रः** (मीने/उभायां/वक्री) –ता.३१ पूभायां ३८/१। ता.१२ मार्गी ३५/४१। ● **शनिः** (कुम्भे/पूभायां३च./अस्तः) –ता.१ मीने/पूभायां४च. २४/५७। ता.६ पूर्वोदयः रा.शे.५/१५। ● **राहुः** (मीने/पूभायां४चरणे)। ● **केतुः** (कन्यायां/उफायां२चरणे)

ग्रहाणां युतिः –ता.३० शु.श.योगः दि.११/३० शनिः १०/१९ द.। ता.३ गु.चं.योगः प्रा.५/५४ गुरुः ५/३१ द.। ता.५ भौम चन्द्र योगः रात्रि शेषे १२/३५ भौमः २/१० दक्षिणे।

(प्रचलित घड़ियों के समय के अनुसार घण्टा-मिनट में) **दैनिकहोरालग्नसारिणी** (लग्न की समाप्ति का समय दिया गया है।)

रा	१	र	२	सो	३	मं	४	बु	६	गु	७	शु	८	श	९	र	१०	सो	११	मं	१२	बु	१३	गु	१४	शु	१५	श	१५	र
मी	६	३६	६	३२	६	२८	६	२४	६	२०	६	१६	६	१२	६	८	६	४	६	०	५	५६	५	५३	५	५०	५	४६	५	४२
मे	८	१३	८	९	८	५	८	१	७	५७	७	५४	७	५०	७	४६	७	४२	७	३८	७	३४	७	३०	७	२६	७	२३	७	२०
वृ	१०	९	१०	५	१०	१	९	५७	९	५३	९	५०	९	४६	९	४२	९	३८	९	३४	९	३०	९	२६	९	२३	९	२०	९	१६
मि	१२	२२	१२	१८	१२	१४	१२	१०	१२	६	१२	३	११	५९	११	५५	११	५१	११	४७	११	४३	११	४०	११	३७	११	३४	११	३०
क	२	४१	२	३७	२	३३	२	२९	२	२५	२	२२	२	१८	२	१४	२	१०	२	६	२	२	१	५९	१	५६	१	५३	१	४९
सिं	४	५५	४	५१	४	४७	४	४३	४	३९	४	३६	४	३२	४	२८	४	२४	४	२०	४	१६	४	१३	४	१०	४	७	४	४
सूचना-नीचे दिखाये गये सभी समय रात्रिकालीन हैं।																														
कं	७	९	७	५	७	१	६	५७	६	५३	६	५०	६	४६	६	४२	६	३८	६	३४	६	३०	६	२७	६	२४	६	२१	६	१८
तु	९	२६	९	२२	९	१८	९	१४	९	१०	९	७	९	३	८	५९	८	५५	८	५१	८	४७	८	४४	८	४१	८	३८	८	३५
वृ	११	४४	११	४०	११	३६	११	३२	११	२८	११	२५	११	२१	११	१७	११	१३	११	९	११	५	११	२	१०	५९	१०	५६	१०	५२
ध	१	५०	१	४६	१	४२	१	३८	१	३४	१	३१	१	२७	१	२३	१	१९	१	१५	१	११	१	८	१	५	१	१	१२	५७
म	३	३४	३	३०	३	२६	३	२२	३	१८	३	१५	३	११	३	७	३	३	२	५९	२	५५	२	५२	२	४९	२	४६	२	४२
कुं	५	६	५	२	४	५८	४	५४	४	५०	४	४७	४	४३	४	३९	४	३५	४	३१	४	२७	४	२४	४	२१	४	१८	४	१४

पाक्षिक घटना

ता.१,५,७ को वर्षा योग है। हवा चलेगी, फल व धान्य थोड़े, मध्यम वर्षा, पृथ्वी कम्पित, समुद्री तूफान, पर्वत-वृक्षों की हानि, शासकों का विनाश, मेघों का अभाव, अस्वस्थता, सत्ता परिवर्तन, निर्बल राष्ट्रों पर सबल राष्ट्रों का आतंक। चोर डाकुओं का आतंक। राष्ट्रों में युद्ध, ग्रीष्म में धान्य भाव तेज।

१ पंक्ति १५ रवौ मिश्रमानम् ४६।५३ दिनम् ३१।२५ अयनांशाः ०।२४।१३।२५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
११	६	३	११	१	११	११	११
२९	८	५	४	२३	०	१	१
५३	२७	७	१८	५१	११	२५	२०
१७	१६	१५	५६	२२	९	५४	५३
५८	७२५	२३	३३	१०	२	६	३
४६	४२	५	२	३३	५२	४६	११
		ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	व

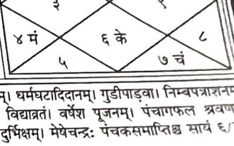

[(1) तत्सत्वात् संकल्पादौ वर्षान्तं यावद्योजनीयम्। चान्द्रसंवत्सर प्रा.। प्रपादानम्। धर्मघटादिदानम्। गुडीपाड़वा। निम्बपत्राशनम्। शैलपुत्री मुखनिर्मालिका दर्शनम्। तैलाभ्यंगम्। ध्वजारोपणम्। आरोग्यतिलक विद्याव्रतं। वर्षेश पूजनम्। पंचागफल श्रवणम्। महर्षि गौतम जयन्ती। चन्द्रदर्शनं मु. ३० फलं समता, दक्षिणोन्नतं शृंगं फलं दुर्भिक्षम्। मेषेचन्द्रः पंचकसमाप्तिश्च सायं ६/२७। मूलः। चन्द्रव्रतम् २ सायं। चैती चान्द। कल्पादिः१।

इस वर्ष प्रथम दिन से संकल्प आदि में **सिद्धार्थी नाम** सम्वत्सर का प्रयोग किया जायेगा। उत्तरभारत में सम्वत्सर के नाम का निश्चय बार्हस्पत्य वर्ष से किया जाता है। वहीं दक्षिण भारत में सौर सम्वत्सर का प्रयोग होता है। (विस्तृत विवरण पृष्ठ २ पर देखें)।

वैशाखकृष्णपक्षः

श्रीसंवत् २०८२ शकः १९४७ (१४ से २७ अप्रैल २०२५)। सौम्यायनं सौम्यगोलः वसन्तऋतुः। राष्ट्रीय २४ चैत्र से ७ वैशाख। बंग १ से १४ वैशाख १४३२। मु. १५ से २८ शव्वाल १४४६। नेपाली १ से १४ वैशाख २०८२। शुक्रः पूर्वे।

१८		तिथि (समाप्तिकाल)							नक्षत्र (समाप्तिकाल)						योग (समाप्तिकाल)						करण (समाप्तिकाल)						आनन्दादि
दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगाः
३१	२९	१	सो	५	२६	दि	७	४८	स्वा	४४	९	रा	११	१८	वज्र	४०	२२	रा	९	४७	कौ	५	२६	तै	३७	४८	छत्रः
३१	३२	२	मं	१०	९	दि	९	४०	वि	४९	५९	रा	१°	३७	सि	४१	२०	रा	१०	९	ग	१०	९	व	४२	१५	श्रीवत्सः
३१	३६	३	बु	१४	२०	दि	११	२०	अनु	५५	११	रा	३°	४०	व्य	४१	४८	रा	१०	२०	भ	१४	२०	बव	४६	३	सौम्यः
३१	३९	४	गु	१७	४६	दि	१२	४१	ज्ये	५९	३२	रा	५°	२४	व	४१	३८	रा	१०	१४	बा	१७	४६	कौ	४८	५९	कालदंड
३१	४३	५	शु	२०	१३	दि	१	३९	मू	६०	०	स	म	ग्र	प	४०	४१	रा	९	५१	तै	२०	१३	ग	५०	५५	स्थिरः
३१	४६	६	श	२१	३७	दि	२	११	मू	२	५५	प्रा	६	४३	शि	३८	५३	रा	९	६	व	२१	३७	भ	५१	४६	गदः
३१	५०	७	र	२१	५४	दि	२	१७	पूषा	५	८	दि	७	३५	सिद्ध	३६	१२	रा	८	१	बव	२१	५४	बा	५१	२८	शुभः
३१	५३	८	सो	२१	२	दि	१	५५	उषा	६	१५	दि	८	१	सा	३२	३८	सा	६	३४	कौ	२१	२	तै	५०	२	काणः
३१	५६	९	मं	१९	२	दि	१	७	श्र	६	१४	दि	८	०	शुभ	२८	१०	दि	४	४७	ग	१९	२	व	४७	३२	लुम्बः
३२	०	१०	बु	१६	३	दि	११	५५	ध	५	१४	दि	७	३५	शु	२२	५५	दि	२	४०	भ	१६	३	बव	४४	५	मित्रः
३२	३	११	गु	१२	७	दि	१०	१९	श	३	१६	प्रा	६	४८	ब्रं	१६	५७	दि	१२	१६	बा	१२	७	कौ	३९	४४	वज्रः
३२	६	१२	शु	७	२२	दि	८	२४	पूभा उभा	० ५६	२९ २५	प्रा रा	५ ४	४० १४	ऐं	१०	१९	दि	९	३६	तै	७	२२	ग	३४	३९	ध्वांक्षः
३२	१०	१३ १४	श	१ ५३	५५ ५९	प्रा रा	६ ३	१३ ४८	रे	५२	५३	रा	२°	३६	वै वि	३ ५२	९ २०	प्रा रा	६ ३	४३ ३९	व	१	५५	भ श	२८ ५५	५४ ५४	धाताः
३२	१३	३०	र	४९	३८	रा	१°	१७	अ	४८	३४	रा	१२°	५२	प्री	४७	३८	रा	१२°	२९	च	२२	४६	ना	४९	३८	आनन्दः

ति.	तारीख					स्टै. अं.		(लोकल घं.मि.)				चं. रा. सं. (प्रवेश काल)						र. क्रां. उ		(स्टैण्डर्ड टाइम घं.मि.)						
	अं.	रा.	बं.	मु.	फ.	मि.	से.	सूर्योदय		सूर्यास्त		रा.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	अं.	क.	चंद्रोदय		सूर्योदय		सूर्यास्त		
१	१४	२४	१	१५	१	१	३०	५	४२	६	१८	तु						उ ९	२५	७	३७	५	३८	६	१९	मेषसंक्रान्ति (सतुवा संक्रान्ति) पुण्यकालः दिवा ११/५६ यावत्। डॉ. आम्बेडकर जयन्ती। तुलसी पत्रेण मासपर्यन्तं त्रिकालं श्री विष्णुपूजनम्। (1)
२	१५	२५	२	१६	२	१	४५	५	४२	६	१८	वृ	३३	३४	रा	७	३	९	४७	८	३२	५	३७	६	१९	भ.४२/१५(रात्रौ १०/३१) उपरि।
३	१६	२६	३	१७	३	२	०	५	४१	६	१९	वृ						१०	८	९	२८	५	३६	६	२०	भ.१४/२०(दिवा ११/२०) यावत्। मूलः रात्रि शेषे ३/४० उपरि। संकष्टी गणेश चतुर्थी ४ व्रतम् चन्द्रोदयः रात्रौ ९/२८।
४	१७	२७	४	१८	४	२	१५	५	४०	६	२०	ध	५९	३२	रा	५°	२४	१०	२९	१०	२४	५	३५	६	२०	मूलः।
५	१८	२८	५	१९	५	२	२९	५	३९	६	२१	ध						१०	५०	११	१८	५	३४	६	२१	मूलः। गुड़फ्राइडे।
६	१९	२९	६	२०	६	२	४३	५	३९	६	२१	ध						११	११	१२°	१०	५	३३	६	२१	भ.२१/३७(दिवा २/११) उपरि। भ.५१/४६(रात्रि शेषे २/१५) यावत्। मूलः प्रातः ६/४३ यावत्।
७	२०	३०	७	२१	७	२	५६	५	३८	६	२२	म	२०	२५	दि	१	४२	११	३२	१२°	५७	५	३२	६	२२	भानुसप्तमी। ईस्टर सण्डे।
८	२१	१	८	२२	८	३	९	५	३७	६	२३	म						११	५२	१°	३९	५	३१	६	२२	शीतलाष्टमी ८ (पर्युषितान्नपानादिकमत्रविहितम्)।
९	२२	२	९	२३	९	३	२१	५	३७	६	२३	कुं	३५	४६	रा	७	४९	१२	१३	२°	१८	५	३१	६	२२	भ.४७/३२(रात्रि शेषे १२/३२) उपरि। कुम्भेचन्द्रःपंचकप्रारम्भश्च रात्रौ ७/४९।
१०	२३	३	१०	२४	१०	३	३३	५	३६	६	२४	कुं						१२	३३	२°	५५	५	३०	६	२३	भ.१६/३(दिवा ११/५५) यावत्।
११	२४	४	११	२५	११	३	४५	५	३५	६	२५	मी	४६	८	रा	११	५६	१२	५२	३°	३०	५	२९	६	२३	सर्वेषां वरूथिनी एकादशी ११ व्रतम्। श्री वल्लभाचार्य जयन्ती (५४८)।
१२	२५	५	१२	२६	१२	३	५६	५	३५	६	२५	मी						१३	१२	४°	६	५	२८	६	२४	मूलः रात्रि शेषे ४/१४ उपरि। एकादशी पारणा दिवा ८/२ यावत्। प्रदोषः १३ व्रतम्।
१३ १४	२६	६	१३	२७	१३	४	७	५	३४	६	२६	मे	५२	५३	रा	२°	३६	१३	३२	०	०	५	२७	६	२४	भ.१/५५(प्रातः ६/१३) उपरि। भ.२८/५४(सायं ५/१) यावत्। मेषेचन्द्रः पंचकसमाप्तिश्च रात्रि शेषे २/३६। मूलः। मासशिवरात्रिः १४ व्रतम्।
३०	२७	७	१४	२८	१४	४	१७	५	३३	६	२७	मे						१३	५१	०	०	५	२६	६	२५	मूलः रात्रि शेषे १२/५२ यावत्। स्नाने-दाने-दर्शे ३०। सतुवा अमावास्या। सं.भरण्यां रविः ३३/४९(रात्रौ ६/५८)।

[(1) प्रपादानं १। धर्मघटादिदानं (मास पर्याप्तौ)। अश्वत्थमूलसिञ्चनम्। गवां कण्डूयनम्। व्यजनछत्रोपानचन्दनादि दानम्। देवेगलन्तिकाकार्या।

ति.	१ सोमे मिश्रमानम् ४६।५५						२ भौमे मिश्रमानम् ४६।५७					
ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	०	०	५२	४	५८	४४	०	१	५०	४८	५८	४२
चं.	६	२०	३२	५८	७२९	३८	७	२	४२	३६	७३६	१२
मं.	३	५	३०	२०	२३	२२	३	५	५३	४१	२३	३८
बु.	११	४	५१	५८	३६	५५	११	५	२८	५४	४०	३६
गु.	१	२४	१	५५	१०	३९	१	२४	१२	३४	१०	४४
शु.	११	०	१४	१	५	१२	११	०	१९	१३	७	२९
श.	११	१	३२	३९	६	४४	११	१	३९	२३	६	४१
रा.	११	१	१७	४५	३	११	११	१	१४	३८	३	११

ति.	३ बुधे मिश्रमानम् ४७।०						४ गुरौ मिश्रमानम् ४७।२					
ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	०	२	४९	३१	५८	४०	०	३	४८	११	५८	३९
चं.	७	१४	५८	४८	७४५	४	७	२७	२३	५२	७५५	५१
मं.	३	६	१७	१९	२३	५४	३	६	४१	१३	२४	१०
बु.	११	६	९	३०	४४	६	११	६	५३	३६	४७	२६
गु.	१	२४	२३	१८	१०	५०	१	२४	३४	८	१०	५५
शु.	११	०	२६	४२	९	४२	११	०	३६	२५	११	५२
श.	११	१	४६	४	६	३९	११	१	५२	४४	६	३७
रा.	११	१	११	३०	३	११	११	१	८	२३	३	११

ति.	५ शुक्रे मिश्रमानम् ४७।४						६ शनौ मिश्रमानम् ४७।७					
ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	०	४	४६	५०	५८	३७	०	५	४५	२६	५८	३५
चं.	८	९	५९	४३	७६८	११	८	२२	४७	५४	७८१	३६
मं.	३	७	५	२३	२४	२५	३	७	२९	४८	२४	४०
बु.	११	७	४१	१	५०	३६	११	८	३१	३७	५३	३८
गु.	१	२४	४५	३	११	१	१	२४	५६	४	११	६
शु.	११	०	४८	१६	१३	५७	११	१	२	१४	१५	५९
श.	११	१	५९	२१	६	३५	११	२	५	५६	६	३२
रा.	११	१	५	१५	३	११	११	१	२	७	३	११

ति.	७ रवौ मिश्रमानम् ४७।९						८ सोमे मिश्रमानम् ४७।११					
ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	०	६	४४	१	५८	३३	०	७	४२	३४	५८	३१
चं.	९	५	४९	३०	७९५	४०	९	१९	५	९	८०९	५५
मं.	३	७	५४	२८	२४	५५	३	८	१९	२३	२५	९
बु.	११	९	२५	१६	५६	३४	११	१०	२१	५०	५९	२३
गु.	१	२५	७	१०	११	११	१	२५	१८	२१	११	१६
शु.	११	१	१८	१३	१७	५७	११	१	३६	१०	१९	५१
श.	११	२	१२	२८	६	३०	११	२	१८	५८	६	२८
रा.	११	०	५९	०	३	११	११	०	५५	५२	३	११

ति.	९ भौमे मिश्रमानम् ४७।१३						१० बुधे मिश्रमानम् ४७।१५					
ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	०	८	४१	४	५८	२९	०	९	३९	३३	५८	२७
चं.	१०	२	३५	४	८२३	४९	१०	१६	१८	५३	८३६	४८
मं.	३	८	४४	३२	२५	२४	३	९	९	५६	२५	३७
बु.	११	११	२१	१३	६२	७	११	१२	२३	२०	६४	४७
गु.	१	२५	२९	३७	११	२१	१	२५	४०	५८	११	२६
शु.	११	१	५६	२	२१	४१	११	२	१७	४३	२३	२७
श.	११	२	२५	२६	६	२५	११	२	३१	५१	६	२२
रा.	११	०	५२	४५	३	११	११	०	४९	३७	३	११

ति.	११ गुरौ मिश्रमानम् ४७।१७						१२ शुक्रे मिश्रमानम् ४७।१९					
ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	०	१०	३८	०	५८	२५	०	११	३६	२६	५८	२३
चं.	११	०	१५	४१	८४८	५	११	१४	२३	४६	८५६	५२
मं.	३	९	३५	३३	२५	५१	३	१०	१	२४	२६	४
बु.	११	१३	२८	६	६७	२२	११	१४	३५	२८	६९	५५
गु.	१	२५	५२	२४	११	३१	१	२६	३	५५	११	३६
शु.	११	२	४१	१०	२५	९	११	३	६	१९	२६	४८
श.	११	२	३८	१३	६	२०	११	२	४४	३३	६	१७
रा.	११	०	४६	२९	३	११	११	०	४३	२२	३	११

ति.	१३ शनौ मिश्रमान ४७।२१						३० रवौ मिश्रमान ४७।२[illegible]					
ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	०	१२	३४	४९	५८	२१	०	१३	३३	१०	५८	२०
चं.	११	२८	४०	३८	८६२	१४	०	१३	२	५२	८६३	२८
मं.	३	१०	२७	२९	२६	१८	३	१०	५३	३६	२६	३०
बु.	११	१५	४५	२३	७२	२४	११	१६	५७	४७	७४	५१
गु.	१	२६	१५	३०	११	४०	१	२६	२७	११	११	४५
शु.	११	३	३३	७	२८	२३	११	४	१	३०	२९	५८
श.	११	२	५०	५०	६	१४	११	२	५७	४	६	११
रा.	११	०	४०	१४	३	११	११	०	३७	७	३	११

२ पंक्ति ७ रवौ मिश्रमानम् ४७।९ दिनम् ३१।५० अयनांशाः ०।२४।१३।२६

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
०	९	३	११	१	११	११	११
६	५	७	९	२५	१	२	०
४४	४९	५४	२५	७	१८	१२	५९
१	३०	२८	१६	१०	१३	२८	०
५८ ३३	७९५ ४०	२४ ५५	५६ ३४	११ ११	१७ ५७	६ ३०	३ ११
		उ	उ	उ	उ	उ	व

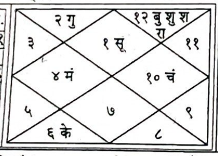

वैशाख मास में-

इस मास में गर्मी बहुत अधिक होती है। अतः ऐसे पदार्थ जिनसे गर्मी का कष्ट कम होता है उनका दान देना चाहिये उदाहरणार्थ- शीतल जल से भरे घड़े, छाता, जूता, चन्दन, पतले सूती वस्त्र। पौसरा लगवाना भी महान पुण्य का कार्य होता है।

(प्रचलित घड़ियों के समय के अनुसार घण्टा-मिनट में) **दैनिकहोरालग्नसारिणी** (लग्न की समाप्ति का समय दिया गया है।)

रा	१	सो	२	मं	३	बु	४	गु	५	शु	६	श	७	र	८	सो	९	मं	१०	बु	११	गु	१२	शु	१३	श	३०	र
मे	७	१६	७	१२	७	८	७	३	६	५९	६	५५	६	५१	६	४७	६	४३	६	३९	६	३५	६	३१	६	२७	६	२३
वृ	९	१२	९	८	९	४	८	५९	८	५५	८	५१	८	४७	८	४३	८	३९	८	३५	८	३१	८	२७	८	२३	८	१९
मि	११	२६	११	२२	११	१८	११	१३	११	९	११	५	११	१	१०	५७	१०	५३	१०	४९	१०	४५	१०	४१	१०	३७	१०	३३
क	१	४५	१	४१	१	३७	१	३२	१	२८	१	२४	१	२०	१	१६	१	१२	१	८	१	४	१	०	१२	५६	१२	५२
सिं	४	०	३	५६	३	५२	३	४७	३	४३	३	३९	३	३५	३	३१	३	२७	३	२३	३	१९	३	१५	३	११	३	७
कं	६	१४	६	१०	६	६	६	१	५	५७	५	५३	५	४९	५	४५	५	४१	५	३७	५	३३	५	२९	५	२५	५	२१
सूचना-नीचे दिखाये गये सभी समय रात्रिकालीन हैं।																												
तु	८	३१	८	२७	८	२३	८	१८	८	१४	८	१०	८	६	८	२	७	५८	७	५४	७	५०	७	४६	७	४२	७	३८
वृ	१०	४८	१०	४४	१०	४०	१०	३५	१०	३१	१०	२७	१०	२३	१०	१९	१०	१५	१०	११	१०	७	१०	३	९	५९	९	५५
ध	१२	५३	१२	४९	१२	४५	१२	४०	१२	३६	१२	३२	१२	२८	१२	२४	१२	२०	१२	१६	१२	१२	१२	८	१२	४	१२	०
म	२	३८	२	३४	२	३०	२	२५	२	२१	२	१७	२	१३	२	९	२	५	२	१	१	५७	१	५३	१	४९	१	४५
कुं	४	१०	४	६	४	२	३	५७	३	५३	६	४९	३	४५	३	४१	३	३७	३	३३	३	२९	३	२५	३	२१	३	१७
मी	५	३८	५	३४	५	३०	५	२५	५	२१	५	१७	५	१३	५	९	५	५	५	१	४	५७	४	५३	४	४९	४	४५

पाक्षिक घटना

ता.२५ को वर्षा योग है। रविवारी अमावस से अन्नों के भाव पर तेजी का असर दिखाई देता है। रेवती के बुध से कुमकुम का भाव तेज होता है। उत्तराभाद्रपदा के शुक्र से चावल, नमक, चांदी, मोती इत्यादि सफेद वस्तुओं के बाजार में मंदी आती है। फल और सूखे मेवे महंगे होते हैं।

३ पंक्ति ३० रवौ मिश्रमानम् ४७।२४ दिनम् ३२।१३ अयनांशाः ०।२४।१३।२७

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
०	०	३	११	१	११	११	११
१३	१३	१०	१६	२६	४	२	०
३३	२	५३	५७	२७	१	५७	३७
१०	५२	४६	४७	११	३०	४	७
५८ २०	८६३ २८	२६ ३०	७४ ५१	११ ४५	२९ ५४	६ ११	३ ११
		उ	उ	उ	उ	उ	व

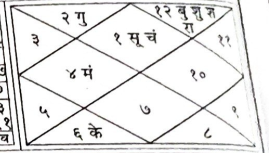

ग्रहस्थितिः (ता.१४ से २७ अप्रैल २०२५)

सूर्यः (सूर्यः मेषे/अश्विन्यां) –ता.२७ भरण्यां ३३/४९। ● **भौमः**(कर्के/पुष्ये)। ● **बुधः** (मीने/उभायां)–ता.२७ रेवत्यां ३३/७। ● **गुरुः** (वृषे/मृगे १ चरणे)। ● **शुक्रः** (मीने/पूभायां)–ता.२६ उभायां १९/३५। ● **शनिः** (मीने/पूभायां ४ चरणे)। ● **राहुः** (मीने/पूभायां ४ चरणे)। ● **केतुः** (कन्यायां/उफायां २ चरणे)।

ग्रहाणां युतिः –ता.२५ शुक्र चन्द्र योगः प्रातः ६/५२ शुक्रः २/२३ उत्तरे। ता.२५ शनि चन्द्र योगः दिवा ९/५५ शनिः २/१७ दक्षिणे। ता.२६ बुध चन्द्र योगः प्रातः ६/३५ बुधः ४/२४ दक्षिणे।

वैशाख स्नान- वैशाख स्नान का प्रारम्भ चैत्र शुक्ल एकादशी अथवा चैत्र शुक्ल पूर्णिमा अथवा मेष संक्रान्ति से होता है। इसका संकल्प मन्त्र यह है- "वैशाखं सकलं मासं मेषसंक्रमणे रवेः। प्रातः सनियमः स्नास्ये प्रीयतां मधुसूदनः।। मधुहन्तु प्रसादेन ब्राह्मणानामनुग्रहात्। निर्विघ्नमस्तु मे पुण्यं वैशाखस्नानमन्वहम्।। माधवे मेषगे भानौ मुरारे मधुसूदन। प्रातः स्नानेन मे नाथ फलदो भव पापहन् ।।" इति।

इसमें व्रती को हविष्य (हवन में प्रयोग किये जाने वाले भोज्य पदार्थ जैसे घी, चावल, तिन्नी चावल इत्यादि) का भोजन और ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिये। पूरे मास स्नान संभव ना हो तो त्रयोदशी से पूर्णिमा पर्यन्त तो स्नान अवश्य ही करना चाहिये।

ऋतुः। राष्ट्रीय २४ चैत्र से ७ वैशाख १९४७। ... शुक्रः पूर्वे।
... त्रिकालं श्री विष्णुपूजनम्। -(1)
[(1) प्रपादानं १। धर्मघटादिदानं ... मास पर्याप्तौ)। अश्वत्थमूल ... व्चनम्। गवां कण्डूयनम्। ... जनछत्रोपानचन्दनादि दानम्। ... गलन्तिकाकार्या।
... मासशिवरात्रिः १४ व्रतम्।

वैशाखशुक्लपक्षः

श्रीसंवत् २०८२ शकः १९४७ (२८ अप्रैल से १२ मई २०२५)। सौम्यायनं सौम्यगोलः वसन्तऋतुः। राष्ट्रीय ८ से २२ वैशाख १९४७। बंग १५ से २९ वैशाख १४३२। मु. २९ शव्वाल से १३ जुल्काद १४४६। नेपाली १५ से २९ वैशाख २०८२। शुक्रः पूर्वे। 19

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	आनन्दादि योगाः	तारीख अं	रा	बं	मु	फ	स्टै अं मि	से	(लोकल घं.मि.) सूर्योदय		सूर्यास्त		चं.रा.सं. (प्रवेश काल) रा	घ	प	स	घं	मि	र.क्रां. उ अं	क	(स्टैण्डर्ड टाइम घं.मि.) चंद्रास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त	
३२	१६	१	सो	४३	१८	रा	१०	४५	भ	४४	१०	रा	११	६	आ	३९	४२	रा	९	१९	किं	१६	२८	ब	४३	१८	चरः	२८	८	१५	२९	१५	४	२७	५	३३	६	२७	वृ	५८	६	रा	४*	३१	१४	१०	७	१६	५	२६	६	२५
३२	१९	२	मं	३७	११	रा	८	१७	कृ	३९	५९	रा	९	२५	सौ	३१	५८	सा	६	१२	बा	१०	१४	कौ	३७	११	गदः	२९	९	१६	३०	१६	४	३६	५	३२	६	२८	वृ						१४	२९	८	२९	५	२५	६	२६
३२	२२	३	बु	३१	३१	सा	६	०	रो	३६	१६	रा	७	५४	शो	२४	३३	दि	३	१४	तै	४	२१	ग व	३१ ५९	३१ १	शुभः	३०	१०	१७	१	१७	४	४५	५	३२	६	२८	वृ						१४	४७	९	३९	५	२४	६	२६
३२	२५	४	गु	२६	३१	दि	३	५९	मृग	३३	१६	सा	६	४१	अति	१७	४०	दि	१२	२७	भ	२६	३१	बव	५४	२७	मृत्युः	१	११	१८	२	१८	४	५३	५	३१	६	२९	मि	४	३५	दि	७	१३	१५	५	१०	४३	५	२३	६	२७
३२	२८	५	शु	२२	२४	दि	२	२०	आर्द्रा	३१	१०	सा	५	५१	सु	११	२७	दि	९	५८	बा	२२	२४	कौ	५०	५६	पद्मः	२	१२	१९	३	१९	५	०	५	३०	६	३०	मि						१५	२३	११	३९	५	२३	६	२७
३२	३२	६	श	१९	२७	दि	१	८	पुन	३०	१५	सा	५	२८	धृ	६	९	दि	७	५०	तै	१९	२७	ग	४८	३८	छत्रः	३	१३	२०	४	२०	५	८	५	३०	६	३०	क	१५	१९	दि	११	३०	१५	४१	१२	२६	५	२२	६	२८
३२	३४	७	र	१७	४८	दि	१२	२८	पु	३०	३८	सा	५	३६	शू गं	१ ५६	५३ ५१	प्रा रा	६ ४*	६ ५१	व	१७	४८	भ	४७	३८	श्रीवत्सः	४	१४	२१	५	२१	५	१४	५	२९	६	३१	क						१५	५९	१*	६	५	२१	६	२८
३२	३८	८	सो	१७	२९	दि	१२	२०	श्ले	३२	१९	सा	६	१७	वृ	५६	३९	रा	४*	१	बव	१७	२९	बा	४८	२	सौम्यः	५	१५	२२	६	२२	५	२०	५	२८	६	३२	सिं	३२	१९	सा	६	१७	१६	१६	१*	४०	५	२१	६	२९
३२	४१	९	मं	१८	३५	दि	१२	४५	मघा	३५	२२	रा	७	२९	ध्रु	५५	३८	रा	३*	३५	कौ	१८	३५	तै	४९	४६	कालदंड	६	१६	२३	७	२३	५	२६	५	२८	६	३२	सिं						१६	३३	२*	११	५	२०	६	३०
३२	४३	१०	बु	२०	५७	दि	१	४१	पूफा	३९	३५	रा	९	९	व्या	५५	३१	रा	३*	३२	ग	२०	५७	व	५२	३८	स्थिरः	७	१७	२४	८	२४	५	३१	५	२७	६	३३	कं	५५	४५	रा	३*	३७	१६	५०	२*	४०	५	१९	६	३०
३२	४६	११	गु	२४	२०	दि	३	२	उफा	४४	४४	रा	११	१३	ह	५६	४	रा	३*	४५	भ	२४	२०	बव	५६	२६	मातंग	८	१८	२५	९	२५	५	३५	५	२७	६	३३	कं						१७	६	३*	८	५	१९	६	३१
३२	४९	१२	शु	२८	३३	दि	४	४३	ह	५०	३६	रा	१*	३२	व	५७	९	रा	४*	१०	बा	२८	३३	कौ	६०	०	अमृतः	९	१९	२६	१०	२६	५	३९	५	२६	६	३४	कं						१७	२२	३*	३६	५	१८	६	३१
३२	५२	१३	श	३३	१४	सा	६	३४	चि	५६	४९	रा	४*	०	सि	५८	३०	रा	४*	४१	कौ	०	५३	तै	३३	१४	काणः	१०	२०	२७	११	२७	५	४२	५	२६	६	३४	तु	२३	४२	दि	२	४६	१७	३८	४*	६	५	१७	६	३२
३२	५५	१४	र	३८	०	रा	८	२८	स्वा	६०	०	स	म	ग्र	व्य	५९	४८	रा	५*	१२	ग	५	३७	व	३८	०	लुम्बः	११	२१	२८	१२	२८	५	४५	५	२५	६	३५	तु						१७	५३	४*	३८	५	१७	६	३२
३२	५७	१५	सो	४२	३६	रा	१०	१८	स्वा	३	३	प्रा	६	२९	व	६०	०	स	म	ग्र	भ	१०	१८	बव	४२	३६	छत्रः	१२	२२	२९	१३	२९	५	४७	५	२४	६	३६	वृ	५२	२९	रा	२*	१६	१८	९	उद	२६	५	१६	६	३३

चरयोगः।
[(1) तीर्थयात्रा प्रारम्भः। त्रिलोचनेश्वर यात्रा। चन्दन पूजा। घटादिदानम्। समुद्रस्नानम्। मातंगी जयन्ती। त्रेतायुगादिः। कल्पादिः ३।
चन्द्रदर्शनम् मु.३० फलं समता, समशृंगं फलं समम्। परशुराम जयन्ती। शिवाजी जयन्ती (प्राचीन मतेन)। प्रदोषे परशुरामावतारः।
भ.५९/१(रात्रि शेषे ५/०) उपरि। महापुण्यप्रदा रोहिणीयोगवती अक्षय तृतीया (आखातीज)। काश्यां गौतमेश्वर जलधरी शृंगारः। बद्रीकेदार -(1)
भ.२६/३१(दिवा ३/५९)यावत्। श्रम दिवसः। वैनायकी गणेश चतुर्थी।
आद्यजगद्गुरु श्रीशंकराचार्य जयन्ती (१२३६)। सूरदास जयन्ती। रामानुजाचार्य जयन्ती (दक्षिण भारते)। दृश्यागस्त्यास्तः३०/३१(सायं ५/३५)।
रामानुजाचार्य जयन्ती (उत्तर भारते)।
[(2) मूलः सायं ५/३६ उपरि।
भ.१७/४८(दिवा १२/२८) उपरि। भ.४७/३८(रात्रि शेषे १२/२४) यावत्। **गंगासप्तमी** ७। भानुसप्तमी। रविपुष्य योगः सायं ५।३६ यावत्। -(2)
मूलः। बगलामुखी जयंती ८।
मूलः रात्रौ ७/२९ यावत्। जानकी ९(मध्याह्नव्यापिनी)।
भ.५२/३८(रात्रि शेषे २/२२) उपरि।
भ.२४/२०(दिवा ३/२)यावत्। सर्वेषां मोहिनी एकादशी ११ व्रतम्।
[(3) पुष्करादेवी जन्म। वैशाखमासजनित काम्यव्रतसमाप्तिः। गोशैय्या दाने महाफलम्। सुवर्ण मधु तिल सर्पियुत घृतान्नोदक कुम्भदाने महाफलम्। ओंकारेश्वर यात्रा (मध्याह्न व्यापिनी)।
एकादशी पारणा दिवा ७/५६ यावत् अथवा दिवा १०/३३ उपरि दिवा १/११ यावत्। प्रदोषः १३ व्रतम्। परशुराम द्वादशी १२। मधुसूदन पूजा।
काणयोगः।
भ.३८/० (रात्रौ ८/२८) उपरि। नृसिंह जयन्ती १४ (प्रदोषव्यापिनी)। सायं नरसिंहावतारः। सं.कृत्तिकायां रविः १९/३९(दिवा १/९)।
भ.१०/१८ (दिवा ९/२३) यावत्। स्नाने-दाने-व्रते १५। बुद्धपूर्णिमा। बुद्धजयन्ती (२५६९तमः)। वैशाखस्नान समाप्तिः। सायं कूर्मावतारः। -(3)

ग्र.	१ सोमे मिश्रमानम् ४७।२५ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	०	१४	३१	३०	५८	१८
चं.	०	२७	२६	२०	८६०	५
मं.	३	११	२०	१७	२६	४३
बु.	११	१८	१२	३८	७७	१५
गु.	१	२६	३८	५५	११	४९
शु.	११	४	३१	२४	३१	२१
श.	११	३	३	१५	६	८
रा.	११	०	३३	५९	३	११

ग्र.	२ भौमे मिश्रमानम् ४७।२७ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	०	१५	२९	४८	५८	१६
चं.	१	११	४६	२५	८५२	८
मं.	३	११	४७	०	२६	५५
बु.	११	१९	२९	५३	७९	३८
गु.	१	२६	५०	४४	११	५३
शु.	११	५	२	४५	३२	४६
श.	११	३	९	२३	६	५
रा.	११	०	३०	५१	३	११

ग्र.	३ बुधे मिश्रमानम् ४७।२९ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	०	१६	२८	४	५८	१४
चं.	१	२५	५८	३३	८४०	७
मं.	३	१२	१३	५५	२७	८
बु.	११	२०	४९	३१	८१	५८
गु.	१	२७	२	३८	११	५८
शु.	११	५	३५	३१	३४	७
श.	११	३	१५	२९	६	२
रा.	११	०	२७	४४	३	११

ग्र.	४ गुरौ मिश्रमानम् ४७।३१ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	०	१७	२६	१८	५८	१३
चं.	२	९	५८	४०	८२५	०
मं.	३	१२	४१	३	२७	२०
बु.	११	२२	११	२९	८४	१६
गु.	१	२७	१४	३६	१२	२
शु.	११	६	९	३७	३५	२४
श.	११	३	२१	३१	५	५९
रा.	११	०	२४	३६	३	११

ग्र.	५ शुक्रे मिश्रमानम् ४७।३३ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	०	१८	२४	३१	५८	११
चं.	२	२३	४३	४०	८०८	२
मं.	३	१३	८	२२	२७	३१
बु.	११	२३	३५	४५	८६	३२
गु.	१	२७	२६	३८	१२	६
शु.	११	६	४५	२	३६	३९
श.	११	३	२७	३०	५	५६
रा.	११	०	२१	२९	३	११

ग्र.	६ शनौ मिश्रमानम् ४७।३५ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	०	१९	२२	४२	५८	९
चं.	३	७	११	४२	७९०	३०
मं.	३	१३	३५	५४	२७	४३
बु.	११	२५	२	१६	८८	४५
गु.	१	२७	३८	४४	१२	१०
शु.	११	७	२१	४१	३७	५१
श.	११	३	३३	२६	५	५३
रा.	११	०	१८	२१	३	११

ग्र.	७ रवौ मिश्रमानम् ४७।३७ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	०	२०	२०	५१	५८	७
चं.	३	२०	२२	१२	७७३	३९
मं.	३	१४	३	३६	२७	५४
बु.	११	२६	३१	२	९०	५७
गु.	१	२७	५०	५४	१२	१४
शु.	११	७	५९	३२	३९	०
श.	११	३	३९	१९	५	४९
रा.	११	०	१५	१३	३	११

ग्र.	८ सोमे मिश्रमानम् ४७।३८ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	०	२१	१८	५८	५८	६
चं.	४	३	१५	५१	७५८	२९
मं.	३	१४	३१	३०	२८	५
बु.	११	२८	१	५९	९३	६
गु.	१	२८	३	७	१२	१८
शु.	११	८	३८	३१	४०	६
श.	११	३	४५	८	५	४६
रा.	११	०	१२	६	३	११

ग्र.	९ भौमे मिश्रमानम् ४७।४० रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	०	२२	१७	४	५८	४
चं.	४	१५	५४	२०	७४५	४३
मं.	३	१४	५९	३५	२८	१६
बु.	११	२९	३५	५	९५	१४
गु.	१	२८	१५	२५	१२	२१
शु.	११	९	१८	३७	४१	९
श.	११	३	५०	५४	५	४३
रा.	११	०	८	५८	३	११

ग्र.	१० बुधे मिश्रमानम् ४७।४२ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	०	२३	१५	८	५८	२
चं.	४	२८	२०	४	७३५	५१
मं.	३	१५	२७	५१	२८	२७
बु.	०	१	१०	११	९७	११
गु.	१	२८	२७	४६	१२	२५
शु.	११	९	५९	४६	४२	१०
श.	११	३	५६	३७	५	३९
रा.	११	०	५	५१	३	११

ग्र.	११ गुरौ मिश्रमानम् ४७।४३ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	०	२४	१३	१०	५८	१
चं.	५	१०	३५	[illegible]	७२९	६
मं.	३	१५	५६	२८	२८	३७
बु.	०	३	४७	३८	९९	२२
गु.	१	२८	४०	२२	१२	२९
शु.	११	१०	४१	५६	४३	९
श.	११	४	२	१६	५	३६
रा.	११	०	२	४३	३	११

ग्र.	१२ शुक्रे मिश्रमानम् ४७।४५ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	०	२५	११	११	५७	५९
चं.	५	२२	४५	१	७२५	३२
मं.	३	१६	२४	५५	२८	४७
बु.	०	४	२७	०	१०१	२३
गु.	१	२८	५२	४०	१२	३२
शु.	११	११	२५	५	४४	५
श.	११	४	७	५२	५	३२
रा.	१०	२९	५९	३५	३	११

ग्र.	१३ शनौ मिश्रमान ४७।४७ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	०	२६	९	१०	५७	५८
चं.	६	४	५०	३३	७२५	३
मं.	३	१६	५३	४२	२८	५८
बु.	०	६	८	२३	१०३	२२
गु.	१	२९	५	११	१२	३५
शु.	११	१२	९	१०	४४	५९
श.	११	४	१३	२३	५	२८
रा.	१०	२९	५६	२८	३	११

ग्र.	१४ रवौ मिश्रमान ४७।४८ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	०	२७	७	८	५७	५६
चं.	६	१६	५५	३६	७२९	३०
मं.	३	१७	२२	४०	२९	७
बु.	०	७	५१	४०	१०५	२०
गु.	१	२९	१७	४८	१२	३९
शु.	११	१२	५४	९	४५	५१
श.	११	४	१८	५२	५	२४
रा.	१०	२९	५३	२०	३	११

ग्र.	१५ सोमे मिश्रमान ४७।४९ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	०	२८	५	४	५७	५४
चं.	६	२९	३	६	७३२	४०
मं.	३	१७	५१	४७	२९	१७
बु.	०	९	३७	५	१०७	१६
गु.	१	२९	३०	२६	१२	४२
शु.	११	१३	४०	०	४६	४१
श.	११	४	२४	१६	५	२१
रा.	१०	२९	५०	१३	३	११

४ पंक्ति ७ रवौ मिश्रमानम् ४७।३७ दिनम् ३२।३५ अयनांशाः ०।२४।१३।२८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
०	३	३	११	१	११	११	११
२०	२०	१४	२६	२७	७	३	०
२०	२२	३	३१	५०	५९	३९	१५
५१	१२	३६	२	५४	३१	१९	१३
५८ ७	७७३ ३९	२७ ५४	९० ५७	१२ १४	३९ ०	५ ४९	३ ११
		उ	उ	उ	उ	उ	व

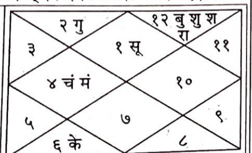

(प्रचलित घड़ियों के समय के अनुसार घण्टा-मिनट में) दैनिकहोरालग्नसारिणी (लग्न की समाप्ति का समय दिया गया है।)

रा	१ सो		२ मं		३ बु		४ गु		५ शु		६ श		७ र		८ सो		९ मं		१० बु		११ गु		१२ शु		१३ श		१४ र		१५ सो	
मे	६	१९	६	१५	६	११	६	७	६	३	५	५९	५	५५	५	५१	५	४८	५	४४	५	४०	५	३६	५	३२	५	२९	५	२५
वृ	८	१५	८	११	८	७	८	३	७	५९	७	५५	७	५१	७	४७	७	४४	७	४०	७	३६	७	३२	७	२८	७	२५	७	२१
मि	१०	२९	१०	२५	१०	२१	१०	१७	१०	१३	१०	९	१०	५	१०	१	९	५८	९	५४	९	५०	९	४६	९	४२	९	३९	९	३५
क	१२	४८	१२	४४	१२	४०	१२	३६	१२	३२	१२	२८	१२	२४	१२	२०	१२	१७	१२	१३	१२	९	१२	५	१२	१	११	५८	११	५४
सिं	३	३	२	५९	२	५५	२	५१	२	४७	२	४३	२	३९	२	३५	२	३२	२	२८	२	२४	२	२०	२	१६	२	१३	२	९
कं	५	१७	५	१३	५	९	५	५	५	१	४	५७	४	५३	४	४९	४	४६	४	४२	४	३८	४	३४	४	३०	४	२७	४	२३
सूचना-नीचे दिखाये गये सभी समय रात्रिकालीन हैं।																														
तु	७	३४	७	३०	७	२६	७	२२	७	१८	७	१४	७	१०	७	६	७	३	६	५९	६	५५	६	५१	६	४७	६	४४	६	४०
वृ	९	५१	९	४७	९	४३	९	३९	९	३५	९	३१	९	२७	९	२३	९	२०	९	१६	९	१२	९	८	९	४	९	१	८	५७
ध	११	५६	११	५२	११	४८	११	४४	११	४०	११	३६	११	३२	११	२८	११	२५	११	२१	११	१७	११	१३	११	९	११	६	११	२
म	१	४१	१	३७	१	३३	१	२९	१	२५	१	२१	१	१७	१	१३	१	१०	१	६	१	२	१२	५८	१२	५४	१२	५१	१२	४७
कुं	३	१३	३	९	३	५	३	१	२	५७	२	५३	२	४९	२	४५	२	४२	२	३८	२	३४	२	३०	२	२६	२	२३	२	१९
मी	४	४१	४	३७	४	३३	४	२९	४	२५	४	२१	४	१७	४	१३	४	१०	४	६	४	२	३	५८	३	५४	३	५१	३	४७

पाक्षिक घटना

ता.३,४ को वर्षा योग है। वृषराशि में चन्द्रदर्शन हो तो हल्दी, तिल, अगुरु, चन्दन, तृण व कुछ सफेद अन्न तेज हो सकते हैं। आश्लेषा के भौम से किसी प्रान्त में वर्षा की कमी से अन्नों का दुर्भिक्ष, जहरीले जानवरों की अधिकता। अश्विनी के बुध से गेहूँ, जौ, इत्यादि धान्य, ईख-दूध इत्यादि वस्तुओं पर अनिष्ट प्रभाव।

५ पंक्ति १४ रवौ मिश्रमानम् ४७।४८ दिनम् ३२।५५ अयनांशाः ०।२४।१३।२९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
०	६	३	०	१	११	११	१०
२७	१६	१७	७	२९	१२	४	२९
७	५५	२२	५१	१७	५४	१८	५३
८	३६	४०	४५	४८	९	५२	२०
५७ ५६	७२९ ३०	२९ ७	१०५ २०	१२ ३९	४५ ५१	५ २४	३ ११
		उ	उ	उ	उ	उ	व

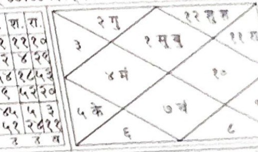

प्रदोष व्रत का निर्णय-ता.९ मई शुक्रवार को द्वादशी दिन ४/४३ पर समाप्त हो रही है और सूर्यास्त ६/३१ पर हो रहा है। अतः इस दिन त्रयोदशी को पूर्ण प्रदोषव्याप्ति मिल रही है (प्रदोष काल इस दिन सायं ६/३१ से रात ८/४१ तक है)। दूसरे दिन त्रयोदशी सूर्यास्त के बाद केवल २ मिनट मिल रही है, इतने स्वल्पकाल में पूजन नहीं हो सकता। अतः पहले दिन ता.९ मई २०२५ शुक्रवार को ही प्रदोष व्रत करें। यह प्रदोष व्रत भगवान शंकर को बहुत प्रिय है। स्नान इत्यादि कर प्रदोष काल में भगवान शंकर का पूजन करने के पश्चात ब्राह्मणों को भोजन कराकर दक्षिणा आदि देकर संतुष्ट करें। यह व्रत सभी पापों का नाश करने वाला, सुख-समृद्धि लाने वाला एवं सभी मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाला होता है।

ग्रहस्थितिः (ता.२८ अप्रैल से १२ मई २०२५)
सूर्यः (मेषे/भरण्यां) -ता.११ कृत्तिकायां १९/३९। ● भौमः(कर्के/पुष्ये)-ता.१० आश्लेषायां १९/२१। ● बुधः (मीने/रेवत्यां)-ता.७ मेषे/अश्विन्यां ४/२१। ● गुरुः (वृषे/मृगे१च.)-ता.२८ मृगे २ चरणे ५२/५१। ● शुक्रः (मीने/उभायां)। ● शनिः (मीने/पूभायां ४ चरणे)-ता.१ उभायां१ चरणे ३२/१७। ● राहुः (मीने/पूभायां४ चरणे)-ता.९ कुम्भे/पूभायां३ चरणे ३९/५१। ● केतुः (कन्यायां/उफायां२ चरणे)-ता.९ सिंहे/उफायां१ चरणे ३९/५१।
ग्रहाणां युतिः-ता.२९ शनि शुक्र योगः दिवा ७/३० शनिः ३/४३ दक्षिणे। ता.३० गु.चं. योगः रा.११/४ गुरुः ५/२३ द.। ता.३ भौम चन्द्र योगः रात्रि शेषे ४/४३ भौमः २/५ दक्षिणे।

२०		तिथि (समाप्ति काल)							नक्षत्र (समाप्ति काल)						योग (समाप्ति काल)						करण (समाप्ति काल)						आनन्दादि	तारीख					स्टै अं		(लोकल घं.मि.)				चं रा सं (प्रवेश काल)						र क्रां उ		(स्टैण्डर्ड टाइम घं.मि.)					
दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगाः	अं	रा	बं	मु	फ	मि	से	सूर्योदय		सूर्यास्त		रा	घ	प	स	घं	मि	अं	क	चंद्रोदय		सूर्योदय		सूर्यास्त	
३३	०	१	मं	४६	३९	रा	११	५५	वि	८	५५	दि	८	५०	व	०	५४	प्रा	५	३८	बा	१४	३८	कौ	४६	३९	श्रीवत्सः	१३	२३	३०	१४	१	५	४८	५	२४	६	३६	वृ						१८	२४	७	२२	५	१६	६	३३
३३	३	२	बु	५०	१	रा	१°	१५	अनु	१४	१३	दि	१०	५६	प	१	३४	प्रा	५	५३	तै	१८	२०	ग	५०	१	सौम्यः	१४	२४	३१	१५	२	५	४९	५	२३	६	३७	वृ						१८	३८	८	१८	५	१५	६	३४
३३	५	३	गु	५२	२४	रा	२°	१२	ज्ये	१८	४०	दि	१२	४३	शि	१	३४	प्रा	५	५३	व	२१	१२	भ	५२	२४	कालदंड	१५	२५	१	१६	३	५	४९	५	२३	६	३७	ध	१८	४०	दि	१२	४३	१८	५३	९	१४	५	१५	६	३४
३३	८	४	शु	५३	४६	रा	२°	४४	मू	२२	११	दि	२	७	सि. सा	० ५८	५१ २५	प्रा रा	५ ४	३५ ५७	बव	२३	५	बा	५३	४६	स्थिरः	१६	२६	२	१७	४	५	४९	५	२२	६	३८	ध						१९	७	१०	६	५	१४	६	३५
३३	११	५	श	५३	५८	रा	२°	४९	पूषा	२४	३७	दि	३	५	शुभ	५६	४८	रा	३	५७	कौ	२३	५२	तै	५३	५८	मातंगः	१७	२७	३	१८	५	५	४८	५	२२	६	३८	म	४०	३	रा	९	१५	१९	२०	१०	५४	५	१४	६	३५
३३	१३	६	र	५३	४	रा	२°	२६	उषा	२६	०	दि	३	३७	शु	५३	२८	रा	२	३७	ग	२३	३१	व	५३	४	अमृतः	१८	२८	४	१९	६	५	४६	५	२१	६	३९	म						१९	३४	११	३७	५	१३	६	३६
३३	१५	७	सो	५१	१	रा	१°	३७	श्र	२६	१४	दि	३	४३	ब्रं	४९	१३	रा	१२	५५	भ	२२	३	बव	५१	१	सिद्धिः	१९	२९	५	२०	७	५	४४	५	२१	६	३९	कुं	५६	१	रा	३°	३७	१९	४७	१२°	१६	५	१३	६	३६
३३	१७	८	मं	४७	५५	रा	१२°	२३	ध	२५	२५	दि	३	२३	ऐं	४४	८	रा	१०	५२	बा	१९	२८	कौ	४७	५५	उत्पातः	२०	३०	६	२१	८	५	४२	५	२१	६	३९	कुं						१९	५९	१२°	५२	५	१३	६	३७
३३	१९	९	बु	४३	५४	रा	१०	४५	श	२३	३९	दि	२	४०	वै	३८	१९	रा	८	३२	तै	१५	५५	ग	४३	५४	मानसः	२१	३१	७	२२	९	५	३८	५	२०	६	४०	कुं						२०	१२	१°	२७	५	१२	६	३७
३३	२२	१०	गु	३९	१	रा	८	४८	पूभा	२०	५८	दि	१	३५	वि	३१	४७	सा	५	५५	व	११	३८	भ	३९	१	मुद्गरः	२२	१	८	२३	१०	५	३५	५	२०	६	४०	मी	६	४७	दि	७	५५	२०	२४	२°	१	५	१२	६	३८
३३	२४	११	शु	३३	२७	रा	६	३४	उभा	१७	३३	दि	१२	१३	प्री	२४	४०	दि	३	४	बव	६	१४	बा	३३	२७	केतुः	२३	२	९	२४	११	५	३१	५	१९	६	४१	मी						२०	३५	२°	३६	५	१२	६	३८
३३	२६	१२	श	२७	२५	दि	४	९	रे	१३	३६	दि	१०	३७	आ	१७	१०	दि	१२	३	कौ	०	२६	तै ग	२७ ५४	२५ १४	धाता	२४	३	१०	२५	१२	५	२६	५	१९	६	४१	मे	१३	३६	दि	१०	३७	२०	४६	३°	१५	५	११	६	३९
३३	२८	१३	र	२१	३	दि	१	३६	अश्वि	९	१५	दि	८	५३	सौ	९	१९	दि	८	५५	व	२१	३	भ	४७	४९	आनन्दः	२५	४	११	२६	१३	५	२१	५	१८	६	४२	मे						२०	५७	३°	५९	५	११	६	३९
३३	३०	१४	सो	१४	३५	दि	११	१	भ	४	४५	दि	७	५	शो उति	१ ५२	२१ ९	प्रा रा	५ २	४४ ३५	श	१४	३५	च	४१	२८	चरः	२६	५	१२	२७	१४	५	१५	५	१८	६	४२	वृ	१८	३९	दि	१२	३९	२१	८	०	०	५	११	६	४०
३३	३२	३०	मं	८	२०	दि	८	३०	कृ री	० ५६	२६ ४	प्रा रा	५ ३	२० ४६	सु	४६	२	रा	११	३५	ना	८	२०	किं	३५	२४	गदः	२७	६	१३	२८	१५	५	९	५	१८	६	४२	वृ						२१	१८	०	०	५	१०	६	४०

ज्येष्ठकृष्णपक्षः

श्रीसंवत् २०८२ शकः १९४७ (१३से २७ मई २०२५)। सौम्यायनं सौम्यगोलः वसन्तऋतुः (वृषार्कतः ग्रीष्मऋतुः)। राष्ट्रीय २३ वैशाख से ६ ज्येष्ठ १९४७। बंग ३० वैशाख से १३ ज्येष्ठ १४३२। मु. १४ से २८ जुल्काद १४४६। नेपाली ३० वैशाख से १३ ज्येष्ठ २०८२। शुक्रः ...

मासान्तः। ज्येष्ठमासे पिष्टेन ब्रह्ममूर्तिं कृत्वा वस्त्राद्यैः पूजयेत्सूर्यलोक प्राप्तिः। भला महावीर प्रारम्भः।

मूलः दिवा १०/५६ उपरि। नारद जयन्ती। सं.वृषे रविः ४६/५७ (रात्रि शेषे १२/२)। मु.१५ फलं महर्घता।

भ.२१/१२(दि.१/४४) उपरि। भ.५२/२४(रात्रि शेषे २/१२) यावत्। संक्रान्ति पुण्यकालः दिवा ११/५२ यावत्। मूलः। माँ आनन्दमयी जयन्ती।

मूलः दिवा २/७ यावत्। संकष्टी गणेश चतुर्थी ४ व्रतम् चन्द्रोदयः रात्रौ १०/६। पौराणिकमतेन अगस्त्यास्तः ५१/२९(रात्रि शेषे १/५०)।

मातंग योगः।

भ.५३/४ (रात्रि शेषे २/२६) उपरि। संत तरण तारण गुरुपर्वी।

भ.२२/३ (दिवा २/२) यावत्। कुम्भेचन्द्रःपंचकप्रारम्भश्च रात्रि शेषे ३/३७।

शीतलाष्टमी ८ (पर्युषितान्न पानादिकमत्रविहितम्)। दादू दयाल पुण्यतिथिः।

मानसयोगः।

भ.११/२८ (दिवा ९/४७) उपरि। भ.३९/१ (रात्रौ ८/४८)यावत्।

मूलः दिवा १२/२३ उपरि। सर्वेषां अपरा एकादशी ११ व्रतम्।

एकादशी पारणा दिवा ७/५१यावत् अथवा दिवा १०/३२ उपरि दिवा १/१२ यावत्। शनिप्रदोषः १३ व्रतम् (सन्तानसुख प्राप्त्यर्थम्)। मूलः। -(1)

भ.२१/३(दिवा १/३६)उपरि। भ.४७/४९(रात्रि शेषे १२/१९)यावत्। मासशिवरात्रिः१४ व्रतम्। सं.रोहिण्यां रविः१०/३०(दिवा ९/२३)। मूलः -(2)

वटसावित्री व्रतम् ३०। दर्शश्राद्धम् ३०। अपराह्णव्यापिनी भावुका ३० (श्राद्धेपु)।

स्नाने-दाने-भौमवती ३०। करिदिनम्।

नौतपा के सम्बन्ध में- सूर्य जब रोहिणी नक्षत्र में आता है तो प्रथम नौ दिनों को नौतपा के नाम से जाना जाता है। यदि इन नौ दिनों में ना ठंडी हवा चले ना बारिश हो तो आने वाले दिनों में अच्छी बारिश होती है। कुछ लोगों का मानना है कि ज्येष्ठ मास में जिस दिन चन्द्रमा रोहिणी नक्षत्र पर आता है उस दिन से नौतपा प्रारम्भ होता है।

[(1) मेषेचन्द्रःपंचकसमाप्तिश्च दिवा १०/३३।

[(2) दिवा ८/५३ यावत्। नौतपा प्रारम्भः।

ति.	१ भौमे मिश्रमानम् ४७।५०						२ बुधे मिश्रमानम् ४७।५२						३ गुरौ मिश्रमानम् ४७।५३						४ शुक्रे मिश्रमानम् ४७।५४					
ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	०	२९	२	५८	५७	५३	१	०	०	५१	५७	५१	१	०	५८	४३	५७	५०	१	१	५६	३३	५७	४९
चं.	७	११	१५	४६	७४०	१४	७	२३	३६	०	७४९	५५	८	६	५	५५	७६१	२०	८	१८	४७	१५	७७४	६
मं.	[illegible]						[illegible]						[illegible]						[illegible]					
बु.	[illegible]						[illegible]						[illegible]						[illegible]					
गु.	[illegible]						[illegible]						[illegible]						[illegible]					
शु.	[illegible]						[illegible]						[illegible]						[illegible]					
श.	[illegible]						[illegible]						[illegible]						[illegible]					
रा.	[illegible]						[illegible]						[illegible]						[illegible]					

ति.	५ शनौ मिश्रमानम् ४७।५५						६ रवौ मिश्रमानम् ४७।५६						७ सोमे मिश्रमानम् ४७।५७						८ भौमे मिश्रमानम् ४७।५९					
ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	१	२	५४	२१	५७	४७	१	३	५२	८	५७	४६	१	४	४९	५४	५७	४४	१	५	४७	३८	५७	४३
चं.	९	१	४१	२१	७८७	४९	९	१४	४९	१०	८०२	४	९	२८	११	१५	८१६	२३	१०	११	४७	३७	८३०	१०
मं.	[illegible]						[illegible]						[illegible]						[illegible]					
बु.	[illegible]						[illegible]						[illegible]						[illegible]					
गु.	[illegible]						[illegible]						[illegible]						[illegible]					
शु.	[illegible]						[illegible]						[illegible]						[illegible]					
श.	[illegible]						[illegible]						[illegible]						[illegible]					
रा.	[illegible]						[illegible]						[illegible]						[illegible]					

ति.	९ बुधे मिश्रमानम् ४७।५९						१० गुरौ मिश्रमानम् ४८।०						११ शुक्रे मिश्रमानम् ४८।१					
ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	१	६	४५	२१	५७	४२	१	७	४३	३	५७	४०	१	८	४०	४३	५७	३९
चं.	१०	२५	३७	४७	८४२	४५	११	९	४०	३२	८५३	१५	११	२३	५३	४७	८६०	४३
मं.	३	२२	२०	५५	३०	३८	३	२२	५१	३३	३०	४६	[illegible]					
बु.	[illegible]						[illegible]						[illegible]					
गु.	[illegible]						[illegible]						२	१	५२	४७	१३	१२
शु.	[illegible]						[illegible]						११	२२	५२	५०	५३	५९
श.	[illegible]						[illegible]						११	५	१९	२०	४	३५
रा.	[illegible]						[illegible]						१०	२९	१५	४९	३	११

ति.	१२ शनौ मिश्रमानम् ४८।२						१३ रवौ मिश्रमान ४८।३						१४ सोमे मिश्रमान ४८।४					
ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	१	९	३८	२३	५७	३८	१	१०	३६	०	५७	३७	१	११	३३	३७	५७	३५
चं.	०	८	१४	३०	८६४	१६	०	२२	३८	४६	८६३	१४	१	७	२	०	[illegible]	[illegible]
मं.	[illegible]						[illegible]						[illegible]					
बु.	[illegible]						[illegible]						[illegible]					
गु.	२	२	५	५९	१३	१४	२	२	१९	१४	१३	१६	२	२	३२	३०	१३	१९
शु.	११	२३	४६	४९	५४	३१	११	२४	४१	२०	५५	[illegible]	११	२५	३६	२१	५५	३१
श.	११	५	२३	५४	४	३०	११	५	२८	२४	४	२६	११	५	३२	५०	४	२१
रा.	१०	२९	१२	४२	३	११	१०	२९	९	३४	३	११	१०	२९	६	२६	३	११

ति.	३० भौमे मिश्रमान ४८।४					
ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	१	१२	३१	१२	५७	३४
चं.	१	२१	१९	२५	८४७	६
मं.	३	२५	२६	४५	३१	२६
बु.	१	९	३५	३६	१३२	५२
गु.	२	२	४५	४९	१३	२१
शु.	११	२६	३१	५२	५५	५९
श.	११	५	३७	११	४	१६
रा.	१०	२९	३	१९	३	११

६ पंक्ति ६ रवौ मिश्रमानम् ४७।५६ दिनम् ३३।१३ अयनांशाः ०।२४।१३।३०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
१	९	३	०	२	११	११	१०
३	१४	२०	२०	०	१८	४	२९
५२	४९	३९	४८	४७	३१	५५	३१
८	१०	५२	५३	२४	३०	२०	२९
५७ ३७	८०२ ४	३० १८	११८ १३	१३ ५१	[illegible]	४ ३	३ ११
		उ	अ	उ	उ	उ	व

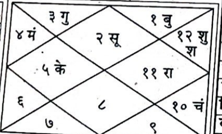

(प्रचलित घड़ियों के समय के अनुसार घण्टा-मिनट में) **दैनिकहोरालग्नसारिणी** (लग्न की समाप्ति का समय दिया गया है।)

	र १		मं २		बु ३		गु ४		शु ५		श ६		र ७		सो ८		मं ९		बु १०		गु ११		शु १२		श १३		र १४		सो ३०		मं
मे	[illegible]																													६	२१
वृ	[illegible]																													८	३५
मि	[illegible]																													१०	५४
क	[illegible]																													१	९
सिं	[illegible]																													३	२३
कं	[illegible]																													५	४०
तु	[illegible]																													७	५७
वृ	[illegible]																													१०	२
ध	[illegible]																													११	४७
म	[illegible]																													१	१९
कुं	[illegible]																													२	४७
मी	[illegible]																													४	२५

सूचना-नीचे दिखाये गये सभी समय रात्रिकालीन हैं।

पाक्षिक घटना

ता.२४ को वर्षा योग है। (तिथि, ग्रहचार, ग्रहोदयास्त, संक्रान्ति के कारण इस पक्ष में)- श्रेष्ठ पुरुष का नाश, किसी राज्य में संकट, कहीं द्रव्य की हानि, कहीं वायुमंडलीय दुर्घटना व दुखदायी स्थिति बनती है, हाथियों एवं हरिजनों को आकस्मिक तीव्र रोग से कष्ट, जनता में कलह, बाजार भावों पर कुछ तेजी, ब्राह्मणवर्ग को पीड़ा, वर्षा में कमी, अन्नों की कमी, रोगों की अधिकता, जनता में परस्पर विरोध, सूत-तिल्ली-रुई का भाव तेज होता है।

७ पंक्ति १३ रवौ मिश्रमानम् ४८।३ दिनम् ३३।२८ अयनांशाः ०।२४।१३।३१

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
१	०	३	१	२	११	११	१०
१०	२२	२४	५	२	२४	५	२९
३६	३८	२४	१४	१९	४१	२८	९
०	४६	१७	४३	१४	२०	२४	३४
५७ ३७	८६३ १४	३१ १०	१२९ ५३	१३ १६	५५ १	४ २६	३ ११
		उ	अ	उ	उ	उ	व

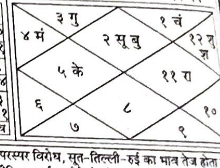

गुरु राश्यन्तर का फल-ज्येष्ठ मास में गुरु राशि बदले तो अच्छे आदमी पीड़ित, वर्षा न होने से खेती की हानि। मिथुन में गुरु के जाने से ज्येष्ठ नामक वर्ष, बालक-घोड़े रोगग्रस्त। खण्डवर्षा। कर्कुटक नामक मेघ बरसें। चोरों से पीड़ा। पश्चिम, सिन्धुदेश वायव्य, उत्तर देश में अनेक प्रकार के विचित्र रोग। श्वेत वस्त्र, कोसा, कपूर, चंदन, मजीठ, नारियल, सुपारी, सोना, चाँदी ये चैत्र से ५ महीने तक सस्ते बिकें। बाद में महंगे हों। धान्य सस्ते। श्रावण में भैंस, हाथी को महाकष्ट। पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, नैऋत्य में सुभिक्ष शासक सुखी, प्रजा में वृद्धि व सुभिक्ष, मंगल कार्यों की अधिकता, तेल-खाण्ड-शक्कर व धातु सस्ते। सौंठ, मिरच, पीपल, मजीठ, जायफल, कोथल महंगे।

ग्रहस्थितिः (ता.१३ से २७ मई २०२५)

सूर्यः (मेषे/कृत्तिकायां) —ता.१४ वृषे ४६/५७ ता.२५ रोहिण्यां १०/३० ● **भौमः**(कर्के/आश्लेषायां)। ● **बुधः** (मेषे/अश्विन्यां)—ता.१४ भरण्यां ५१/२१ ता.१६ पूर्वास्तःरा.शे.४/५० ता.२१ कृत्तिकायां ४३/१६। ता.२३ वृषे २०/६। ता.२७ रोहिण्यां ५९/१। ● **गुरुः** (वृषे/मृगे२चरणे)—ता.१५ मृगे३ मिथुने ७/४१। ● **शुक्रः** (मीने/उभायां)—ता.१६ रेवत्यां ३४/६। ● **शनिः** (मीने/उभायां१च.)। ● **राहुः** (कुम्भे/पूभायां३चरणे)। ● **केतुः** (सिंहे/उफायां१चरणे)।

ग्रहाणां युतिः —ता.२२ श.चं.योगः रा.११/३२ शनिः २/५० द.। ता.२४ शु.चं. योगः प्रा.५/२२ शुक्रः ३/५९ द.। ता.२६ बुध चन्द्र योगः रात्रि शेषे ३/२३ बुधः ४/४६ दक्षिणे।

ज्येष्ठशुक्लपक्षः

श्रीसंवत् २०८२ शाकः १९४७ (२८ मई से ११ जून २०२५)। सौम्यायनं सौम्यगोलः ग्रीष्मऋतुः। राष्ट्रीय ७ से २१ ज्येष्ठ १९४७। बंग १४ से २८ ज्येष्ठ १४३२। मु. २९ जुल्काद से १४ जुलहिज्ज १४४६। नेपाली १४ से २८ ज्येष्ठ २०८२। शुक्रः पूर्वे।

चन्द्रदर्शनम् मु. ३० फलं समता, उत्तरोन्नतं शृंगं फलं सुभिक्षम्। गङ्गादशहरा प्रारम्भः (दशाश्वमेधे दशहरा प्रयुक्त दिन १० स्नानारम्भः व्रतारम्भश्च)। -(1)
रम्भाव्रतम् ३। राणाप्रताप जयंती (४८५)।
भ.२१/४४(दिवा १/५२) उपरि। भ.५०/१४(रात्रि शेषे १/१५) यावत्। वैनायकी गणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। गुरु अर्जुनदेव पुण्यतिथिः।
मूलः रात्रि शेषे १/८ उपरि। [(1) गंगास्तोत्र पाठः। सोपपदा २।
मूलः। रानी लक्ष्मीबाई पुण्यतिथिः। अरण्यषष्ठी। जामातृषष्ठी (बंगाल)। कुमार षष्ठी। विन्ध्यवासिनी पूजा।
भ.४९/१४(रात्रि शेषे १२/५०) उपरि। मूलः रात्रि शेषे २/४९ यावत्।
भ.२०/२२(दिवा १/१८) यावत्। अष्टम्यां शुक्लादेवीपूज्या। धूमावती जयन्ती।
महेश नवमी। नवम्यामुपोष्य देवीं पूजयेत्।
गङ्गादशहरा १० अत्रतु ५ एव योगाः उपलभ्यन्ते। वृष लग्ने गंगावतरणं, सेतुबन्धरामेश्वरस्य प्रतिष्ठादिनम्। गंगास्तोत्र पाठः (दशहरा पर्वः -(2)
भ.३१/११(सायं ५/३७) उपरि। [(2) हरिद्वारे)। दशाश्वमेधेस्नानम्।
भ.३/२९(प्रातः ६/३२) यावत्। सर्वेषां निर्जला एकादशी ११ व्रतम्। अत्र निर्जलमुपोष्य सशर्कर जलकुम्भानेकादश यथाशक्तिर्वा विप्रेभ्यो दद्यात्। -(3)
[(3) भीमसेनी एकादशी। बकरीद।
प्रदोषः १३ व्रतम्। स्मार्त एकादशी पारणा दिवा ७/५१ यावत्। त्रिविक्रम पूजनम् १२। सं.मृगशीर्षे रविः ५/१८(दिवा ७/१६)।
मित्रयोगः।
भ.१६/३९(दिवा ११/४८) उपरि। भ.४८/१६(रात्रि शेषे १२/२७) यावत्। दाक्षिणात्यानां वटसावित्री व्रतम् १५। गुरोः वार्धक्यारम्भः (सायं ७/६)। (4)
[(4) मूलः सायं ६/८ उपरि। व्रताय १५।
मूलः। स्नाने-दाने १५। संत कबीरजयन्ती (६२८)। बिल्वत्रिरात्रि व्रतम्। जलयात्रा। मन्वादिः १५।

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	ति.	वा.	तिथि घ.	प.	स.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	स.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	स.	घं.	मि.	करण	घ.	प.	करण	घ.	प.	आनन्दादि योगाः	तारीख अं	रा	बं	मु	फ	स्टै. मि	अं से	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	चं. रा	प्रवेश घ	प	स	घं	मि	र क्रां अं	क	चंद्रास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.
३३	३४	१/२	बु	२/५४	२७/५५	प्रा/रा	६/४	८/६	मृग	५३	१६	रा	२°	२९	घृ	३९	२	रा	८	४७	बव	२	२७	बा/कौ	२९/५७	५५/२२	अमृतः	२८	७	१४	२९	१६	५	२	५	१७	६	४३	मि	२४	५१	दि	३	६	उ/२१	२८	८	२४	५	१०	६	४१
३३	३५	३	गु	५३	१४	रा	२°	२७	आर्द्रा	५०	५८	रा	१°	३३	शू	३२	४५	सा	६	१६	तै	२५	१८	ग	५३	१४	काणः	२९	८	१५	१	१७	४	५५	५	१७	६	४३	मि						२१	३७	९	२५	५	१०	६	४१
३३	३७	४	शु	५०	१४	रा	१°	१५	पुन	४९	४८	रा	१°	५	गं	२७	२०	दि	४	६	व	२१	४४	भ	५०	१४	लुम्बः	३०	९	१६	२	१८	४	४७	५	१७	६	४३	क	३५	१	रा	७	११	२१	४७	१०	१८	५	१०	६	४२
३३	३९	५	श	४८	३२	रा	१२°	३४	पु	४९	५४	रा	१°	८	वृ	२२	५५	दि	२	२०	बव	१९	२३	बा	४८	३२	मित्रः	३१	१०	१७	३	१९	४	३९	५	१६	६	४४	क						२१	५५	११	२	५	१०	६	४२
३३	४०	६	र	४८	१३	रा	१२°	२६	श्ले	५१	२३	रा	१°	४२	ध्रु	१९	३७	दि	१	०	कौ	१८	२३	तै	४८	१३	वज्रः	१	११	१८	४	२०	४	३१	५	१६	६	४४	सिं	५१	२३	रा	१°	४२	२२	४	११	३९	५	९	६	४३
३३	४२	७	सो	४९	१४	रा	१२°	५०	मघा	५४	१०	रा	२°	४९	व्या	१७	२२	दि	१२	६	ग	१८	४४	व	४९	१४	ध्वांक्षः	२	१२	१९	५	२१	४	२२	५	१६	६	४४	सिं						२२	१२	१२°	१२	५	९	६	४३
३३	४३	८	मं	५१	३०	रा	१°	४४	पूफा	५८	८	रा	४°	२४	ह	१६	११	दि	११	३८	भ	२०	२२	बव	५१	३०	धूम्रः	३	१३	२०	६	२२	४	१३	५	१५	६	४५	सिं						२२	१९	१२°	४१	५	९	६	४४
३३	४५	९	बु	५४	४८	रा	३°	४	उफा	६०	०	स	म	ग्र	वज्र	१५	५५	दि	११	३१	बा	२३	९	कौ	५४	४८	प्रवर्धमान	४	१४	२१	७	२३	४	४	५	१५	६	४५	कं	१४	२०	दि	१०	५३	२२	२६	१°	१०	५	९	६	४४
३३	४६	१०	गु	५८	५४	रा	४°	४२	उफा	३	८	प्रा	६	२४	सि	१६	२४	दि	११	४३	तै	२६	५१	ग	५८	५४	मातंगः	५	१५	२२	८	२४	३	५४	५	१५	६	४५	कं						२२	३३	१°	३८	५	९	६	४४
३३	४७	११	शु	६०	०	स	म	ग्र	ह	८	५२	दि	८	४२	व्य	१७	२४	दि	१२	७	व	३१	११	भ	६०	०	अमृतः	६	१६	२३	९	२५	३	४३	५	१५	६	४५	तु	४१	५६	रा	९	५५	२२	३९	२°	७	५	९	६	४५
३३	४८	११	श	३	२९	दि	६	३२	चि	१५	०	दि	११	९	व	१८	४१	दि	१२	३८	भ	३	२९	बव	३५	५०	काणः	७	१७	२४	१०	२६	३	३३	५	१४	६	४६	तु						२२	४५	२°	३९	५	९	६	४५
३३	४९	१२	र	८	११	दि	८	२५	स्वा	२१	१०	दि	१	३७	प	२०	०	दि	१	९	बा	८	११	कौ	४०	२५	लुम्बः	८	१८	२५	११	२७	३	२२	५	१४	६	४६	तु						२२	५१	३°	१४	५	९	६	४६
३३	५०	१३	सो	१२	४०	दि	१०	१२	वि	२७	५	दि	३	५९	शि	२१	७	दि	१	३६	तै	१२	४०	ग	४४	३९	मित्रः	९	१९	२६	१२	२८	३	१०	५	१४	६	४६	वृ	१०	४०	दि	९	२५	२२	५६	३°	५४	५	९	६	४६
३३	५१	१४	मं	१६	३९	दि	११	४८	अनु	३२	२७	सा	६	८	सि	२१	५०	दि	१	५३	व	१६	३९	भ	४८	१६	वज्रः	१०	२०	२७	१३	२९	२	५९	५	१४	६	४६	वृ						२३	१	उ६	१२	५	९	६	४६
३३	५२	१५	बु	१९	५४	दि	१	६	ज्ये	३७	५	रा	७	५९	सा	२१	५८	दि	१	५७	बव	१९	५४	बा	५१	४	ध्वांक्षः	११	२१	२८	१४	३०	२	४७	५	१४	६	४६	ध	३७	५	रा	७	५९	२३	५	उ७	८	५	९	६	४७

ग्र.	१ बुधे मिश्रमानम् ४८।५ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		३ गुरौ मिश्रमानम् ४८।५ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		४ शुक्रे मिश्रमानम् ४८।६ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	१	१३	२८	४७	५७	३३	१	१४	२६	२०	५७	३२	१	१५	२३	५२	५७	३१
चं.	२	५	२६	३१	८३३	८	२	१९	१९	३९	८१६	४२	३	२	५६	२१	७९९	८
मं.	३	२५	५८	११	३१	३३	३	२६	२९	४४	३१	४१	३	२७	१	२५	३१	४८
बु.	१	११	४७	२७	१३२	२७	१	१३	५९	५५	१३२	४५	१	१६	१२	४०	१३२	४४
गु.	२	२	५९	९	१३	२२	२	३	१२	३२	१३	२४	२	३	२५	५६	१३	२६
शु.	११	२७	२७	५१	५६	२६	११	२८	२४	१७	५६	५३	११	२९	२१	१०	५७	१८
श.	११	५	४१	२७	४	११	११	५	४५	३९	४	७	११	५	४९	४५	४	२
रा.	१०	२९	०	११	३	११	१०	२८	५७	४	३	११	१०	२८	५३	५६	३	११

ग्र.	५ शनौ मिश्रमानम् ४८।६ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		६ रवौ मिश्रमानम् ४८।७ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		७ सोमे मिश्रमानम् ४८।७ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	१	१६	२१	२३	५७	३०	१	१७	१८	५३	५७	२९	१	१८	१६	२१	५७	२८
चं.	३	१६	१५	२९	७८१	४५	३	२९	१७	१४	७६५	३९	४	१२	२	५३	७५१	४२
मं.	३	२७	३३	१३	३१	५५	३	२८	५	९	३२	२	३	२८	३७	११	३२	९
बु.	१	१८	२५	२४	१३२	२३	१	२०	३७	४७	१३१	४३	१	२२	४९	३०	१३०	४५
गु.	२	३	३९	२२	१३	२८	२	३	५२	५०	१३	२९	२	४	६	१९	१३	३१
शु.	०	०	१८	२९	५७	४३	०	१	१६	१२	५८	७	०	२	१४	१८	५८	३०
श.	११	५	५३	४७	३	५७	११	५	५७	४४	३	५२	११	६	१	३६	३	४७
रा.	१०	२८	५०	४८	३	११	१०	२८	४७	४१	३	११	१०	२८	४४	३३	३	११

ग्र.	८ भौमे मिश्रमानम् ४८।७ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		९ बुधे मिश्रमानम् ४८।८ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		१० गुरौ मिश्रमानम् ४८।८ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	१	१९	१३	४९	५७	२७	१	२०	११	१६	५७	२६	१	२१	८	४२	५७	२५
चं.	४	२४	३४	३५	७४०	२९	५	६	५५	४	७३२	१७	५	१९	७	२०	७२७	१३
मं.	३	२९	९	२०	३२	१६	३	२९	४१	३७	३२	२३	४	०	१४	०	३२	३०
बु.	१	२५	०	१६	१२९	३१	१	२७	९	४६	१२८	२	१	२९	१७	४८	१२६	२०
गु.	२	४	१९	५०	१३	३२	२	४	३३	२३	१३	३४	२	४	४६	५७	१३	३५
शु.	०	३	१२	४८	५८	५२	०	४	११	४१	५९	१४	०	५	१०	५४	५९	३५
श.	११	६	५	२३	३	४२	११	६	९	५	३	३७	११	६	१२	४१	३	३२
रा.	१०	२८	४१	२६	३	११	१०	२८	३८	१८	३	११	१०	२८	३५	१०	३	११

ग्र.	११ शुक्रे मिश्रमानम् ४८।८ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		११ शनौ मिश्रमानम् ४८।८ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		१२ रवौ मिश्रमानम् ४८।८ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	१	२२	६	७	५७	२४	१	२३	३	३१	५७	२३	१	२४	०	५४	५७	२२
चं.	६	१	१४	३३	७२५	१४	६	१३	११	४७	७२६	१४	६	२५	२६	१	७२९	५९
मं.	४	०	४६	३०	३२	३६	४	१	१९	६	३२	४३	४	१	५१	४९	३२	४९
बु.	२	१	२४	९	१२४	२९	२	३	२८	३८	१२२	३०	२	५	३१	८	१२०	२६
गु.	२	५	०	३२	१३	३६	२	५	१४	८	१३	३८	२	५	२७	४६	१३	३९
शु.	०	६	१०	२९	५९	५५	०	७	१०	२४	६०	१५	०	८	१०	३८	६०	३४
श.	११	६	१६	१३	३	२६	११	६	१९	३९	३	२१	११	६	२३	०	३	१६
रा.	१०	२८	३२	३	३	११	१०	२८	२८	५५	३	११	१०	२८	२५	४८	३	११

ग्र.	१३ सोमे मिश्रमान ४८।८ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		१४ भौमे मिश्रमान ४८।८ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	१	२४	५८	१७	५७	२२	१	२५	५५	३८	५७	२१
चं.	७	७	३६	१	७३६	१६	७	१९	५२	२६	७४४	४६
मं.	४	२	२४	३८	३२	५६	४	२	५७	३४	३३	२
बु.	२	७	३१	३५	११८	१८	२	९	२९	५३	११६	८
गु.	२	५	४१	२५	१३	४०	२	५	५५	४	१३	४१
शु.	०	९	११	२२	६०	५२	०	१०	१२	४	६१	१०
श.	११	६	२६	१६	३	१०	११	६	२९	२६	३	५
रा.	१०	२८	२२	४०	३	११	१०	२८	१९	३२	३	११

ति.	१५ बुधे मिश्रमान ४८।८					
ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	१	२६	५२	५९	५७	२०
चं.	८	२	१७	२	७५५	११
मं.	४	३	३०	३६	३३	८
बु.	२	११	२६	०	११३	५६
गु.	२	६	८	४५	१३	४२
शु.	०	११	१३	१४	६१	२७
श.	११	६	३२	३१	३	०
रा.	१०	२८	१६	२५	३	११

८ पंक्ति ६ रवौ मिश्रमानम् ४८।७ दिनम् ३३।४० अयनांशाः ०।२४।१३।३२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
१	३	३	१	२	०	११	१०
१७	२९	२८	२०	३	१	५	२८
१८	१७	५	३७	५२	१६	५७	४७
५३	१४	९	४७	५०	१२	४४	४१
५७ २९	७६५ ३९	३२ २	१३१ ४३	१३ २९	५८ ७	३ ५२	३ ११
		उ	अ	उ	उ	उ	व

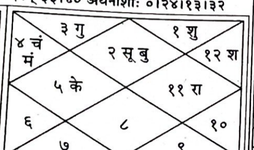

(प्रचलित घड़ियों के समय के अनुसार घण्टा-मिनट में) **दैनिकहोरालग्नसारिणी** (लग्न की समाप्ति का समय दिया गया है।)

रा	१	बु	३	गु	४	शु	५	श	६	र	७	सो	८	मं	९	बु	१०	गु	११	शु	११	श	१२	र	१३	सो	१४	मं	१५	बु
वृ	६	१७	६	१३	६	१०	६	६	६	२	५	५८	५	५४	५	५०	५	४६	५	४३	५	३९	५	३५	५	३१	५	२८	५	२४
मि	८	३१	८	२७	८	२४	८	२०	८	१६	८	१२	८	८	८	४	८	०	७	५७	७	५३	७	४९	७	४५	७	४२	७	३८
क	१०	५०	१०	४६	१०	४३	१०	३९	१०	३५	१०	३१	१०	२७	१०	२३	१०	१९	१०	१६	१०	१२	१०	८	१०	४	१०	१	९	५७
सिं	१	५	१	१	१२	५८	१२	५४	१२	५०	१२	४६	१२	४२	१२	३८	१२	३४	१२	३१	१२	२७	१२	२३	१२	१९	१२	१६	१२	१२
कं	३	१९	३	१५	३	१२	३	८	३	४	३	०	२	५६	२	५२	२	४८	२	४५	२	४१	२	३७	२	३३	२	३०	२	२६
तु	५	३६	५	३२	५	२९	५	२५	५	२१	५	१७	५	१३	५	९	५	५	५	२	४	५८	४	५४	४	५०	४	४७	४	४३

सूचना-नीचे दिखाये गये सभी समय रात्रिकालीन हैं।

रा																														
वृ	७	५३	७	४९	७	४६	७	४२	७	३८	७	३४	७	३०	७	२६	७	२२	७	१९	७	१५	७	११	७	७	७	४	७	०
ध	९	५८	९	५४	९	५१	९	४७	९	४३	९	३९	९	३५	९	३१	९	२७	९	२४	९	२०	९	१६	९	१२	९	९	९	५
म	११	४३	११	३९	११	३६	११	३२	११	२८	११	२४	११	२०	११	१६	११	१२	११	९	११	५	११	१	१०	५७	१०	५४	१०	५०
कुं	१	१५	१	११	१	८	१	४	१	०	१२	५६	१२	५२	१२	४८	१२	४४	१२	४१	१२	३७	१२	३३	१२	२९	१२	२६	१२	२२
मी	२	४३	२	३९	२	३६	२	३२	२	२८	२	२४	२	२०	२	१६	२	१२	२	९	२	५	२	१	१	५७	१	५४	१	५०
मे	४	२१	४	१७	४	१४	४	१०	४	६	४	२	३	५८	३	५४	३	५०	३	४७	३	४३	३	३९	३	३५	३	३२	३	२८

पाक्षिक घटना

ता.१,५ को वर्षा योग है। (तिथि, ग्रहचार,. ग्रहोदयास्त के कारण इस पक्ष में)-हवा बहे, रुई-सूत व कुछ प्रकार के अन्न तेज होने की सम्भावना रहती है। अन्नों के उपज पर बुरा प्रभाव, वर्षा कम, जौ-तिल-उडद-मूंग की फसल को हानि, ब्राह्मणों में कलह, तूफानी वर्षा।

९ पंक्ति १२ रवौ मिश्रमानम् ४८।८ दिनम् ३३।४९ अयनांशाः ०।२४।१३।३३

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
१	६	४	२	२	०	११	१०
२४	२५	१	५	५	८	६	२८
०	२६	५१	३१	२७	१०	२३	२५
५४	१	४९	८	४६	३८	०	४८
५७ २२	७२९ ५९	३२ ४९	१२० २६	१३ ३९	६० ३४	३ १६	३ ११
		उ	उ	उ	उ	उ	व

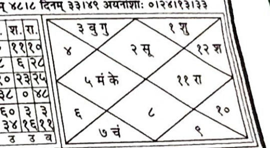

ग्रहस्थितिः (ता.२८ मई से ११ जून २०२५)

सूर्यः (वृषे/रोहिण्यां) –ता.८ मृगे ५/१८। ● **भौमः**(कर्के/आश्लेषायां)–ता.५ सिंहे/मघायां २२/१७। ● **बुधः** (वृषे/रोहिण्यां/अस्तः)–ता.३ मृगे १/३८। ता.६ मिथुने ७/३२। ता.८ पश्चिमोदयः रात्रौ ७/१३। ता.९ आर्द्रायां २१/५५। ● **गुरुः** (मृगे३/मिथुने)–ता.३० मृगे ४चरणे २१/३३। ● **शुक्रः** (मीने/रेवत्यां)–ता.३१ मेषे/अश्विन्यां २८/५०। ● **शनिः** (मीने/उभायां १ चरणे)। ● **राहुः** (कुम्भे/पूभायां ३ चरणे)। ● **केतुः** (सिंहे/उफायां १ चरणे)।

ग्रहाणां युतिः–ता.२८ गुरु चन्द्र योगः सायं ६/४३ गुरुः ५/१३ दक्षिणे। ता.१ भौ.चं. योगः दि.३/२० भौमः १/२३ द.। ता.८ गुरु बुध योगः रात्रि शेषे १/३० गुरुः १/५८ दक्षिणे।

जलकुम्भ दान-ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी निर्जला एकादशी होती है। इसमें केवल पूजा इत्यादि के समय किये हुये आचमन को छोड़कर अन्य समय में जल ग्रहण नहीं किया जाता। इस प्रकार निर्जल व्रत करने से बारह एकादशी के उपवास का फल प्राप्त होता है। द्वादशी के दिन इस एकादशी व्रत के अंगरूप सोना (स्वर्ण) और चीनी के साथ जलकुम्भ (घड़े) का दान किया जाता है। ऐसा करने से व्यक्ति संसार रूपी समुद्र से पार होकर भगवान ऋषीकेश की कृपा से परम गति को प्राप्त होता है।

जलकुम्भ दान का मन्त्र-

"देवदेव ऋषीकेश संसारार्णवतारक। उदकुम्भप्रदानेन यास्यामि परमां गतिम्।।"

२२		तिथि (समाप्तिकाल)							नक्षत्र (समाप्तिकाल)						योग (समाप्तिकाल)						करण (समाप्तिकाल)						आनन्दादि	तारीख					स्टै. अं.		(लोकल घं.मि.)				चं. रा.	सं. (प्रवेश काल)					र. क्रां. उ.		(स्टैण्डर्ड टाइम घं.मि.)					
दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगाः	अं.	रा.	बं.	मु.	फ.	मि.	से.	सूर्योदय		सूर्यास्त		रा.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	अं.	क.	चंद्रोदय		सूर्योदय		सूर्यास्त	
३३	५३	१	गु	२२	१४	दि	२	२	मूल	४०	४७	रा	९	२८	शुभ	२१	२४	दि	१	४३	कौ	२२	१४	तै	५२	५३	धूम्रः	१२	२२	२९	१५	१	२	३५	५	१३	६	४७	ध						उ २३	९	८	२	५	९	६	४७
३३	५४	२	शु	२३	३२	दि	२	३३	पूषा	४३	२८	रा	१०	३२	शु	२०	१	दि	१	१०	ग	२३	३२	व	५३	३८	प्रवर्धमान	१३	२३	३०	१६	२	२	२३	५	१३	६	४७	म	५९	२	रा	४	४६	२३	१३	८	५२	५	९	६	४७
३३	५४	३	श	२३	४४	दि	२	३८	उषा	४५	३	रा	११	१०	ब्रं	१७	४७	दि	१२	१६	भ	२३	४४	बव	५३	१७	रक्षः	१४	२४	३१	१७	३	२	१०	५	१३	६	४७	म						२३	१६	९	३७	५	९	६	४८
३३	५५	४	र	२२	४९	दि	२	१६	श्र	४५	३१	रा	११	२२	ऐं	१४	४०	दि	११	१	बा	२२	४९	कौ	५१	४७	गदः	१५	२५	३२	१८	४	१	५८	५	१३	६	४७	म						२३	१९	१०	१७	५	९	६	४८
३३	५५	५	सो	२०	४६	दि	१	२८	ध	४४	५२	रा	११	७	वै	१०	३७	दि	९	२५	तै	२०	४६	ग	४९	१३	शुभः	१६	२६	१	१९	५	१	४५	५	१३	६	४७	कुं	१५	२०	दि	११	१८	२३	२१	१०	५३	५	१०	६	४८
३३	५६	६	मं	१७	४१	दि	१२	१४	श	४३	१५	रा	१०	२८	वि	५	४५	दि	७	२८	व	१७	४१	भ	४५	४०	मृत्युः	१७	२७	२	२०	६	१	३२	५	१३	६	४७	कुं						२३	२३	११	२७	५	१०	६	४९
३३	५६	७	बु	१३	३९	दि	१०	३७	पूभा	४०	४२	रा	९	२७	प्री/आ	०/५३	३/३३	प्रा/रा	५/२	११/३६	बव	१३	३९	बा	४१	१२	पद्मः	१८	२८	३	२१	७	१	१९	५	१३	६	४७	मी	२६	२५	दि	३	४४	२३	२४	१२	०	५	१०	६	४९
३३	५६	८	गु	८	४५	दि	८	४०	उभा	३७	२२	रा	८	७	सौ	४६	३२	रा	११	४७	कौ	८	४५	तै	३५	५७	छत्रः	१९	२९	४	२२	८	१	६	५	१३	६	४७	मी						२३	२५	१२	३४	५	१०	६	४९
३३	५७	९/१०	शु	३/५३	९/५८	प्रा/रा	६/३	२५/५६	रे	३३	२६	सा	६	३२	शो	३९	०	रा	८	४६	ग	३	९	व/भ	३०/५६	३/५७	श्रीवत्सः	२०	३०	५	२३	९	०	५३	५	१३	६	४७	मे	३३	२६	सा	६	३२	२३	२६	१	१०	५	१०	६	४९
३३	५७	११	श	५०	२८	रा	१	२१	अश्वि	२९	६	दि	४	४८	अति	३१	११	सा	५	३९	बव	२३	४३	बा	५०	२८	सौम्यः	२१	३१	६	२४	१०	०	४०	५	१३	६	४७	मे						२३	२६	१	५१	५	१०	६	५०
३३	५७	१२	र	४३	५५	रा	१०	४४	भ	२४	३३	दि	३	०	सु	२३	११	दि	२	२८	कौ	१७	११	तै	४३	५५	कालदंड	२२	१	७	२५	११	०	२७	५	१३	६	४७	वृ	३८	२५	रा	८	३३	२३	२६	२	३७	५	११	६	५०
३३	५७	१३	सो	३७	३६	रा	८	१३	कृ	२०	८	दि	१	१४	धृ	१५	१८	दि	११	१८	ग	१०	४५	व	३७	३६	स्थिरः	२३	२	८	२६	१२	०	१४	५	१३	६	४७	वृ						२३	२६	३	३२	५	११	६	५०
३३	५६	१४	मं	३१	४४	सा	५	५२	रो	१६	४	दि	११	३७	शू	७	४०	दि	८	१५	भ	४	४०	श/च	३१/५९	४४/८	मातंगः	२४	३	९	२७	१३	०	१	५	१३	६	४७	मि	४४	१७	रा	१०	५४	२३	२५	०	०	५	११	६	५०
३३	५६	३०	बु	२६	३२	दि	३	४८	मृ	१२	३६	दि	१०	१५	गं/वृ	०/५३	२९/३८	प्रा/रा	५/२	२४/५१	ना	२६	३२	किं	५४	२६	अमृतः	२५	४	१०	२८	१४	-०	१२	५	१३	६	४७	मि						२३	२३	०	०	५	१२	६	५०

आषाढ़कृष्णपक्षः

श्रीसंवत् २०८२ शकः १९४७ (१२ से २५ जून २०२५)। सौम्यायनं सौम्यगोलः ग्रीष्मऋतुः। राष्ट्रीय २२ ज्येष्ठ से ४ आषाढ़ १९४७। बं. ज्ये. से १० आषाढ़ १४३२। मु. १५ से २८ जुलहि. १४४६। ने. २९ ज्ये. से ११ आषाढ़ २०८२। शुक्रः पूर्वे। ता.१३ गुरोः पश्चिमा...

मूलः रात्रौ ९/२८ यावत्। हरगोविंद जयन्ती।

भ.५३/३८(रात्रि शेषे २/३६) उपरि। गुर्वस्तः पश्चिमे (सायं ७/६)।

भ.२३/४४(दिवा २/३८) यावत्। संकष्टी गणेश चतुर्थी ४ व्रतम् चन्द्रोदयः रात्रौ ९/३७। मासान्तः।

सं.मिथुने रविः३/५०(प्रातः ६/४१)। मु.३० फलं समता। संक्रान्ति पुण्यकालः प्रातः ६/४१ उपरि दिवा १/५ यावत्।

कुम्भेचन्द्रः पंचकप्रारम्भश्च दिवा ११/१८।

भ.१७/४१(दिवा १२/१४) उपरि। भ.४५/४०(रात्रौ ११/२६) यावत्।

पद्मयोगः।

मूलः रात्रौ ८/७ उपरि। शीतलाष्टमी ८ व्रतम् (पर्युषितान्न पानादिकमत्रविहितम्)।

भ.३०/३(दिवा ५/११) उपरि। भ.५६/५७(रात्रि शेषे ३/५६) यावत्। मूलः। मेषेचन्द्रः पंचकसमाप्तिश्च सायं ६/३२।

मूलः दिवा ४/४८ यावत्। (कुष्ठादिरोग निवृत्तये) स्मार्तानाम् योगिनी एकादशी ११ व्रतम्। देवरहाबाबा पुण्य तिथि ११।

वैष्णवानाम् योगिनी एकादशी व्रतम्। स्मार्त एकादशी पारणा प्रातः ७/५४ यावत् अथवा दिवा १०/३७ उ. दिवा १/२० या.। सं.आर्द्रायां रविः -(1)

भ.३७/३६(रात्रौ ८/१३)उपरि। सोमप्रदोषः १३ व्रतम् (कुलदेवता कोप शान्त्यर्थम्)। मासशिवरात्रिः १४ व्रतम्।

भ.४/४०(दिवा ७/३) यावत्।

स्नाने-दाने-दर्शे ३०।

[(1) २/४८ (प्रातः ६/१८)। चण्डानाड़ी तदीशः शनिः (विस्तृत वर्षा विचार पेज ३ पर देखें)।

ति.	१ गुरौ मिश्रमानम् ४८।८						२ शुक्रे मिश्रमानम् ४८।८						३ शनौ मिश्रमानम् ४८।७						४ रवौ मिश्रमानम् ४८।७					
प्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	१	२७	५०	१९	५७	१९	१	२८	४७	३९	५७	१९	१	२९	४४	५८	५७	१८	२	०	४२	१६	५७	१७
चं.	८	१४	५२	१३	७६७	१०	८	२७	३९	२३	७८०	२२	९	१०	३९	४५	७९४	२४	९	२३	५४	१०	८०८	५०
मं.	४	४	३	४४	३३	१४	४	४	३६	५९	३३	२०	४	५	१०	१९	३३	२६	४	५	४३	४५	३३	३२
बु.	२	१३	१९	५६	१११	४३	२	१५	११	३८	१०९	२९	२	१७	१	७	१०७	१४	२	१८	४८	२२	१०४	५९
गु.	२	६	२२	२७	१३	४२	२	६	३६	९	१३	४३	२	६	४९	५२	१३	४४	२	७	३	३६	१३	४४
शु.	०	१२	१४	४१	६१	४४	०	१३	१६	२५	६२	०	०	१४	१८	२५	६२	१६	०	१५	२०	४१	६२	३१
श.	११	६	३५	३१	२	५४	११	६	३८	२५	२	४९	११	६	४१	१४	२	४३	११	६	४३	५६	२	३७
रा.	१०	२८	१३	१७	३	११	१०	२८	१०	१०	३	११	१०	२८	७	२	३	११	१०	२८	३	५४	३	११

ति.	५ सोमे मिश्रमानम् ४८।७						६ भौमे मिश्रमानम् ४८।६						७ बुधे मिश्रमानम् ४८।६						८ गुरौ मिश्रमानम् ४८।६					
प्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	२	१	३९	३३	५७	१७	२	२	३६	५०	५७	१६	२	३	३४	६	५७	१६	२	४	३१	२२	५७	१५
चं.	१०	७	२३	०	८२३	१०	[illegible]						[illegible]						[illegible]					
मं.	[illegible]						[illegible]						[illegible]						[illegible]					
बु.	[illegible]						[illegible]						[illegible]						[illegible]					
गु.	[illegible]						[illegible]						[illegible]						[illegible]					
शु.	[illegible]						[illegible]						[illegible]						[illegible]					
श.	[illegible]						[illegible]						[illegible]						[illegible]					
रा.	[illegible]						[illegible]						[illegible]						[illegible]					

ति.	९ शुक्रे मिश्रमानम् ४८।५						११ शनौ मिश्रमानम् ४८।४						१२ रवौ मिश्रमानम् ४८।४					
प्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	२	५	२८	३८	५७	१५	२	६	२५	५२	५७	१४	२	७	२३	७	५७	१४
चं.	०	३	२९	३१	८६३	४४	०	१७	५३	१६	८६५	२	१	२	१८	१८	८६१	२७
मं.	[illegible]						[illegible]						[illegible]					
बु.	[illegible]						२	२८	४३	२७	९०	४३	३	०	१४	०	८८	१०
गु.	[illegible]						२	८	२६	८	१३	४६	२	८	३९	५५	१३	४६
शु.	[illegible]						०	२१	३९	२६	६३	५५	०	२२	४३	२२	६४	८
श.	[illegible]						११	६	५८	१५	२	३	११	७	०	१८	१	५७
रा.	[illegible]						१०	२७	४५	९	३	११	१०	२७	४२	१	३	११

ति.	१३ सोमे मिश्रमानम् ४८।३						१४ भौमे मिश्रमान ४८।३						३० बुधे मिश्रमान ४८।२					
प्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	२	८	२०	२१	५७	१४	२	९	१७	३५	५७	१३	२	१०	१४	४८	५७	१३
चं.	[illegible]						[illegible]						[illegible]					
मं.	[illegible]						[illegible]						[illegible]					
बु.	३	१	४२	१०	८५	३३	३	३	७	४३	८२	५३	३	४	३०	३६	८०	१
गु.	२	८	५३	४१	१३	४६	२	९	७	२७	१३	४६	२	९	२१	१४	१३	४६
शु.	०	२३	४७	३०	६४	२०	०	२४	५१	५०	६४	३१	०	२५	५६	२३	६४	४१
श.	११	७	२	१५	१	५१	११	७	४	६	१	४५	११	७	५	५१	१	३९
रा.	१०	२७	३८	५४	३	११	१०	२७	३५	४६	३	११	१०	२७	३२	३८	३	११

१० पंक्ति ४ रवौ मिश्रमानम् ४८।७ दिनम् ३३।५५ अयनांशाः ०।२४।१३।३४

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
२	९	४	२	२	०	११	१०
०	२३	५	१८	७	१५	६	२८
४२	५४	४३	४८	३	२०	४३	३
१६	१०	४५	२२	३६	४१	५६	५४
५७ १७	८०८ ५०	३३ ३२	१०४ ५९	१३ ४४	६२ ३१	२ ३७	३ ११
		उ	उ	अ	उ	उ	व

५ मं के	४	२
	३ सू बु गु	१ शु
६		१२ श
७	९	११ रा
८		१० चं

आषाढ़ मास में-

इस मास में एकभक्त व्रत (एक बार भोजन) करने से धन-धान्य-पुत्र की प्राप्ति होती है। इस मास में भगवान वामन की प्रसन्नता के लिये ब्राह्मणों को छाता, नमक और आंवले का दान करना चाहिये।

(प्रचलित घड़ियों के समय के अनुसार घण्टा-मिनट में) **दैनिकहोरालग्नसारिणी** (लग्न की समाप्ति का समय दिया गया है।)

रा	१ गु		२ शु		३ श		४ र		५ सो		६ मं		७ बु		८ गु		९ शु		११ श		१२ र		१३ सो		१४ मं		३० बु	
वृ	[illegible]																										६	४३
मि	[illegible]																										९	२
क	[illegible]																										११	१७
सिं	[illegible]																										१	३१
कं	[illegible]																										३	४८
तु	[illegible]																										६	५

सूचना-नीचे दिखाये गये सभी समय रात्रिकालीन हैं।

वृ	[illegible]																										८	१०
ध	[illegible]																										९	५५
म	[illegible]																										११	२७
कुं	[illegible]																										१२	५५
मी	[illegible]																										२	३३
मे	[illegible]																										४	२९

पाक्षिक घटना

ता.२२ को वर्षा योग है। इस पक्ष में- राष्ट्रों में तनातनी होकर बाद में सन्धि होती है, घी, तेल, नमक महंगे, जनहानि, मध्यम वर्षा, बालवर्ग को पीड़ा, रुई-सूत का भाव मन्दा, परराष्ट्र की जनता से सम्पर्क, तिल्ली की हानि, सरसों उड़द की उपज में कमी, अन्न-तृण के भाव में परिवर्तन, अधिकारियों से कष्ट।

११ पंक्ति १२ रवौ मिश्रमानम् ४८।४ दिनम् ३३।५७ अयनांशाः ०।२४।१३।३५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
२	१	४	३	२	०	११	१०
७	२	९	०	८	२२	७	२७
२३	१८	४०	१४	३९	४३	०	४२
७	१८	३०	०	५५	२२	१८	१
५७ १४	८६१ २७	३४ ११	८८ १०	१३ ४६	६४ ८	१ ५७	३ ११
		उ	उ	अ	उ	उ	व

५ मं के	४ बु	२ चं
	३ सू गु	१ शु
६		१२ श
७	९	११ रा
८		१०

एकादशी व्रत का निर्णय- ता.२२ को वैष्णवों की एकादशी क्यों है? ऐसा इसलिये क्योंकि वैष्णव सम्प्रदाय को दशमी विद्ध एकादशी ग्राह्य नहीं है। आइये समझें कि क्या होती है दशमी विद्ध एकादशी- ऐसी दशमी जो अरुणोदय काल में प्रवेश कर जाय वह एकादशी को विद्ध करती है। अब देखते हैं ता.२० की स्थिति। ता.२० को दशमी तिथि का मान (३ घटी ९ पल + ५३ घटी ४८ पल) ५६ घटी ४५ पल है और अरुणोदय काल ५६ घटी ३२ पल से ही प्रारम्भ हो जा रहा है, अतः दशमी तिथि अरुणोदय काल में प्रवेश कर गयी है जो एकादशी को विद्ध कर गयी है अतः ता.२२ को वैष्णवों की एकादशी होगी ध्यान दें! स्मार्त सम्प्रदाय को दशमी विद्ध एकादशी का दोष नहीं लगता अतः वे ता.२१ को ही एकादशी मनायेंगे।

ग्रहस्थितिः (ता.१२ से २५ जून २०२५)

सूर्यः (वृषे/मृगे)-ता.१५ मिथुने ३/५०। ता.२२ आर्द्रायां २/४८। ● **भौमः**(सिंहे/मघायां)। ● **बुधः** (मिथुने/आर्द्रायां)-ता.१६ पुनर्वसौ २८/३४। ता.२२ कर्के ३८/२८। ता.२४ पुष्ये ५६/५३। ● **गुरुः** (मृगे४/मिथुने)-ता.१३ पश्चिमास्तःसायं ७/६। ता.१४ आर्द्रायां१ च.४/५७। ● **शुक्रः** (मेषे/अश्विन्यां)-ता.१३ भरण्यां ५१/३३। ● **शनिः** (मीने/उभायां१चरणे)-ता.१४उभायां२ चरणे२१/१। ● **राहुः** (कुम्भे/पूभायां३चरणे)। ● **केतुः** (सिंहे/उफायां१ चरणे)।

ग्रहाणां युतिः -ता.१९ शनि चन्द्र योगः दिवा ९/२९ शनिः ३/२३ दक्षिणे। ता.२२ शु.चं. योगः दि.२/६ शुक्रः ७/११ द.। ता.२५ गुरु चन्द्र योगः दिवा २/५१ गुरुः ५/३ दक्षिणे।

।। सं.आर्द्रायां रविः -(1)

विचार पेज ३ पर देखें)।

	३० बुधे मिश्रमान ४८।२				
रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
२	१०	१४	४८	५७	१३
२	१४	५३	२०	८२४	५५
४	११	२३	२०	३४	२७
३	४	३०	३६	८०	९
२	९	२१	१४	१३	४६
०	२५	५६	२३	६४	४४
११	७	५	५१	१	३९
१०	२७	३२	३८	३	११

यनांशाः ०।२४।१३।३५

...व सम्प्रदाय को दशमी से ... अरुणोदय काल में प्रवेश ... का मान (३ घटी ९ पल ... जा रहा है, अतः दशमी ... णवों की एकादशी होगी। ... मनायेंगे।

आषाढ़शुक्लपक्षः

श्रीसंवत् २०८२ शकः १९४७ (२६ जून से १० जुलाई २०२५)। सौम्यायनं सौम्यगोलः ग्रीष्मऋतुः। ता.५ से ११ आषाढ़ १९४७। बंग ११ से २५ आषा. १४३२। मु. २९ जून से १४ मोह. १४४७। ने. १२ से २७ आषा. २०८२। ता.८ गुरोः पूर्वोदयः। शुक्र पूर्वे।

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	ति.	वा.	तिथि घ.	तिथि प.	स.	घं.	मि.	नक्षत्र न.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	योग यो.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	आनन्दादि योगाः	तारीख अं	रा	बं	मु	फ	स्टै अं मि	से	लोकल सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	चं रा	प्रवेश काल घ	प	स	घं	मि	र क्रां अं	क	चंद्रास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.
३३	५६	१	गु	२२	२०	दि	२	७	आर्द्रा	१०	५	दि	९	१४	धू	४८	३७	रा	१२	३९	बव	२२	२०	बा	५०	४८	काणः	२६	५	११	२९	१५	-०	२५	५	१३	६	४७							२३	२१	८	५	५	१२	६	५०
३३	५५	२	शु	१९	१७	दि	१२	५४	पुन	८	४१	दि	८	४०	व्या	४४	७	रा	१०	५१	कौ	१९	१७	तै	४८	२४	लुम्बः	२७	६	१२	१	१६	०	३७	५	१३	६	४७	क	५३	५७	रा	२°	४७	२३	१९	८	५३	५	१२	६	५०
३३	५५	३	श	१७	३२	दि	१२	१२	पु	८	३४	दि	८	३८	ह	४०	४१	रा	९	२९	ग	१७	३२	व	४७	२०	मित्रः	२८	७	१३	२	१७	०	५०	५	१३	६	४७	क						२३	१७	९	३४	५	१२	६	५०
३३	५४	४	र	१७	८	दि	१२	४	ऽश्ले	९	४७	दि	९	८	वज्र	३८	१८	रा	८	३२	भ	१७	८	बव	४७	३८	वज्रः	२९	८	१४	३	१८	१	२	५	१३	६	४७	क						२३	१३	१०	९	५	१३	६	५१
३३	५४	५	सो	१८	८	दि	१२	२८	मघा	१२	२३	दि	१०	१०	सि	३६	५१	रा	८	१	बा	१८	८	कौ	४१	१६	ध्वांक्षः	३०	९	१५	४	१९	१	१४	५	१३	६	४७	सिं	९	४७	दि	९	८	२३	१०	१०	४१	५	१३	६	५१
३३	५३	६	मं	२०	२३	दि	१	२२	पूफा	१६	१२	दि	११	४२	व्य	३६	३७	रा	७	५२	तै	२०	२३	ग	५२	०	धूम्रः	१	१०	१६	५	२०	१	२६	५	१३	६	४७	सिं						२३	६	११	१०	५	१३	६	५१
३३	५२	७	बु	२३	३८	दि	२	४१	उफा	२१	०	दि	१	३८	व	३६	५७	रा	८	१	व	२३	३८	भ	५५	३९	प्रवर्धमान	२	११	१७	६	२१	१	३७	५	१४	६	४६	कं	३२	१९	सा	६	१०	२३	२	११	३८	५	१४	६	५१
३३	५१	८	गु	२७	४१	सा	४	१८	ह	२६	३५	दि	३	५२	प	३७	५३	रा	८	२३	बव	२७	४१	बा	५९	५४	रक्षः	३	१२	१८	७	२२	१	४९	५	१४	६	४६	कं						२२	५७	१२°	७	५	१४	६	५१
३३	५०	९	शु	३२	८	सा	६	६	चि	३२	३४	सा	६	१७	शि	३९	५	रा	८	५३	कौ	३२	८	तै	६०	०	मुसलः	४	१३	१९	८	२३	२	०	५	१४	६	४६	तु	५१	३३	रा	५°	३	२२	५२	१२°	३८	५	१५	६	५०
३३	४९	१०	श	३६	४५	रा	७	५७	स्वा	३८	४३	रा	८	४४	सि	४०	२३	रा	९	२४	तै	४	२७	ग	३६	४५	सिद्धिः	५	१४	२०	९	२४	२	१०	५	१४	६	४६	तु						२२	४७	१°	१२	५	१५	६	५०
३३	४८	११	र	४१	१२	रा	९	४३	वि	४४	४१	रा	११	७	सा	४१	३२	रा	९	५२	व	८	५८	भ	४१	१२	उत्पातः	६	१५	२१	१०	२५	२	२१	५	१४	६	४६	वृ	२८	१३	सा	४	३२	२२	४२	१°	५०	५	१५	६	५०
३३	४७	१२	सो	४५	७	रा	११	१८	ऽनु	५०	८	रा	१°	१९	शुभ	४२	१७	रा	१०	११	बव	१३	९	बा	४५	७	मानसः	७	१६	२२	११	२६	२	३१	५	१५	६	४५	वृ						२२	३५	२°	३४	५	१६	६	५०
३३	४६	१३	मं	४८	२३	रा	१२°	३७	ज्ये	५४	५६	रा	३°	१४	शु	४२	३१	रा	१०	१७	कौ	१६	४५	तै	४८	२३	मुद्गरः	८	१७	२३	१२	२७	२	४१	५	१५	६	४५	ध	५४	५६	रा	३°	१४	२२	२८	३°	२४	५	१६	६	५०
३३	४५	१४	बु	५०	४३	रा	१°	३४	मू	५८	४१	रा	४°	४८	ब्रं	४२	२	रा	१०	६	ग	१९	३३	व	५०	४३	केतुः	९	१८	२४	१३	२८	२	५०	५	१५	६	४५	ध						२२	२१	४	१९	५	१७	६	५०
३३	४३	१५	गु	५२	४	रा	२°	६	पूषा	६०	०	स	म	ग्र	ऐं	४०	४८	रा	९	३७	भ	२१	२३	बव	५२	४	धाता	१०	१९	२५	१४	२९	-२	५९	५	१५	६	४५	ध						२२	१४	ऊ	४७	५	१७	६	५०

चन्द्रदर्शनम् मु.४५ फलं सुभिक्षता, उत्तरोन्नतं शृंगं फलं सुभिक्षं। प.पू.वासुदेवानन्दसरस्वती (टेंबेस्वामी) समाधिदिनम्। एकभक्तव्रतं उपानच्छत्र-(1)

रथयात्रा २। मनोरथद्वितीया। रामबलराम रथोत्सवः २। जगन्नाथ रथयात्रा २ (पुरी)। [(1) लवणामलकानि वामनप्रीत्यै देयानि।

भ.४७/२०(रात्रिशेषे १२/८) उपरि। मूलः दिवा ८/३८ उपरि। वैनायकीगणेश चतुर्थी (तृतीयायोगप्राशस्त्यात्)।

भ.१७/८(दिवा १२/४) यावत्। मूलः।

मूलः दिवा १०/१० यावत्।

कुमार षष्ठी।

[(4) कावेरीतुङ्गतीर्थयोः स्नानम् १५। मन्वादिः १५। शिवशयनोत्सवः १५। कोकिलाव्रतम् १५। अद्यसायंकाले सर्वधान्यानामधिवासनं, प्रदोषे वायुपरीक्षा, द्वितीय दिने प्रातस्तोलनंच।

भ.२३/३८(दिवा २/४१) उपरि। भ.५५/३१(रात्रिशेषे ३/३० यावत्। वैवस्वतसूर्यपूजा ७(मध्याह्नव्यापिनी)।

रक्षयोगः। [(2)(प्रातः ५/५४)। चण्डानाडीतटीशः रविः (शेष वर्षा सम्बन्धी विवरण पृष्ठ ३ पर दिया है)। विष्णुशयनोत्सवः ११। ताजिया।

मुसलयोगः।

आशा दशमी (सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थं)। मन्वादिः १०। सोपपदा १०।

भ.८/५८(दिवा ८/५०) उपरि। भ.४१/१२(रात्रौ १/४३) यावत्। सर्वेषां विष्णुशयनी एकादशी व्रतम्। चातुर्मास्य व्रतारम्भः। सं.पुनर्वसौ रविः १/३८-(2)

मूलः रा.शे.१/१९ उपरि। एकादशी पारणा प्रातः ५/४० उपरि दिवा ७/५८ यावत् अथवा दिवा १०/४० उपरि दिवा १/२२ यावत्। द्वादश्यां वामनपूजनेन-(3)

मूलः। भौमप्रदोषः १३ व्रतम् (ऋणापाकरणाय प्रथमारम्भोऽभिप्रेयः)। गुरोः पूर्वोदयः (रात्रिशेषे ४/५१)। [(3) नरमेध फलप्राप्तिः।

भ.५०/४३(रात्रिशेषे १/३४) उपरि। मूलः रात्रिशेषे ४/४८ यावत्।

भ.२१/२३(दिवा १/५०)यावत्। स्नाने-दाने-व्रते १५। गुरुपूर्णिमा गुरुपूजनं व्यासपूजनञ्च १५। सन्यासी चातुर्मास्य प्रारम्भः। कर्णघण्टा-(4)

ति. प्र.	१ गुरौ मिश्रमानम् ४८।१ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	२	११	१२	१	५७	१३
चं.	२	२८	३८	१५	८०७	३५
मं.	४	११	५७	४७	३४	३२
बु.	३	५	५०	४६	७७	२२
गु.	२	९	३५	०	१३	४६
शु.	०	२७	१	७	६४	५६
श.	११	७	७	३०	१	३३
रा.	१०	२७	२९	३१	३	११

ग्र.	२ शुक्रे मिश्रमानम् ४८।१ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	२	१२	९	१४	५७	१३
चं.	३	१२	५	५०	७८१	५४
मं.	४	१२	३२	२०	३४	३८
बु.	३	७	८	८	७४	३०
गु.	२	९	४८	४६	१३	४६
शु.	०	२८	६	३	६५	७
श.	११	७	९	३	१	२७
रा.	१०	२७	२६	२३	३	११

ग्र.	३ शनौ मिश्रमानम् ४८।० रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	२	१३	६	२६	५७	१२
चं.	३	२५	१५	४४	७७३	६
मं.	४	१३	६	५७	३४	४३
बु.	३	८	२२	३८	७१	३४
गु.	२	१०	२	३१	१३	४५
शु.	०	२९	११	१०	६५	१८
श.	११	७	१०	३०	१	२१
रा.	१०	२७	२३	१६	३	११

ग्र.	४ रवौ मिश्रमानम् ४७।५९ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	२	१४	३	३९	५७	१२
चं.	४	८	८	५०	७५८	८
मं.	४	१३	४१	४०	३४	४८
बु.	३	९	३४	१२	६८	३५
गु.	२	१०	१६	१६	१३	४५
शु.	१	०	१६	२८	६५	२९
श.	११	७	११	५२	१	१५
रा.	१०	२७	२०	८	३	११

ग्र.	५ सोमे मिश्रमानम् ४७।५८ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	२	१५	०	५१	५७	१२
चं.	४	२०	४६	५८	७४५	४०
मं.	४	१४	१६	२७	३४	५३
बु.	३	१०	४२	४६	६५	३१
गु.	२	१०	३०	१	१३	४४
शु.	१	१	२१	५७	६५	३९
श.	११	७	१३	७	१	१
रा.	१०	२७	१७	१	३	११

ग्र.	६ भौमे मिश्रमानम् ४७।५७ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	२	१५	५८	३	५७	१२
चं.	५	३	१२	३८	७३६	६
मं.	४	१४	५१	२०	३४	५८
बु.	३	११	४८	१७	६२	२३
गु.	२	१०	४३	४५	१३	४४
शु.	१	२	२७	३६	६५	४९
श.	११	७	१४	१६	१	३
रा.	१०	२७	१३	५३	३	११

ग्र.	७ बुधे मिश्रमानम् ४७।५६ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	२	१६	५५	१५	५७	१२
चं.	५	१५	२८	४५	७२१	३७
मं.	४	१५	२६	१८	३५	२
बु.	३	१२	५०	४१	५९	१२
गु.	२	१०	५७	२९	१३	४३
शु.	१	३	३३	२५	६५	५१
श.	११	७	१५	११	०	५७
रा.	१०	२७	१०	४५	३	११

ग्र.	८ गुरौ मिश्रमानम् ४७।५५ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	२	१७	५२	२७	५७	१२
चं.	५	२७	३८	२१	७२६	१२
मं.	४	१६	१	२०	३५	७
बु.	३	१३	४१	५२	५५	५६
गु.	२	११	११	१२	१३	४२
शु.	१	४	३९	२८	६६	९
श.	११	७	१६	१६	०	५१
रा.	१०	२७	७	३८	३	११

ग्र.	९ शुक्रे मिश्रमानम् ४७।५४ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	२	१८	४२	३१	५७	१२
चं.	६	९	४४	३३	७२५	४५
मं.	४	१६	३६	२७	३५	१२
बु.	३	१४	४५	४८	५२	३६
गु.	२	११	२८	५४	१३	४२
शु.	१	५	४५	३३	६६	११
श.	११	७	१७	७	०	४५
रा.	१०	२७	४	३०	३	११

ग्र.	१० शनौ मिश्रमानम् ४७।५३ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	२	१९	४६	५१	५७	१२
चं.	६	२१	५०	१८	७२८	६
मं.	४	१७	११	३१	३५	१७
बु.	३	१५	३८	२३	४२	११
गु.	२	११	३८	३६	१३	४२
शु.	१	६	५१	५२	६६	२८
श.	११	७	१७	५१	०	३१
रा.	१०	२७	१	२३	३	११

ग्र.	११ रवौ मिश्रमानम् ४७।५३ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	२	२०	४४	२	५७	१२
चं.	७	३	५८	२६	७३४	३
मं.	४	१७	४६	५५	३५	२१
बु.	३	१६	२७	३४	४५	४२
गु.	२	११	५२	१९	१३	४०
शु.	१	७	५८	२०	६६	३७
श.	११	७	१८	३०	०	३२
रा.	१०	२६	५८	१५	३	११

ग्र.	१२ सोमे मिश्रमानम् ४७।५२ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	२	२१	४१	१४	५७	१२
चं.	७	१६	११	२७	७४०	१९
मं.	४	१८	२२	४७	३५	२६
बु.	३	१७	१३	१६	४२	६
गु.	२	१२	५	२६	१३	३१
शु.	१	९	४	५७	६६	४६
श.	११	७	१९	२	०	२६
रा.	१०	२६	५५	७	३	११

ग्र.	१३ भौमे मिश्रमान ४७।५० रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	२	२२	३८	२६	५७	१२
चं.	७	२८	३१	४६	७६१	३१
मं.	४	१८	५७	४३	३५	३१
बु.	३	१७	५५	२२	३८	२६
गु.	२	१२	११	३४	१३	३०
शु.	१	१०	११	४३	६६	५५
श.	११	७	११	२२	०	२०
रा.	१०	२६	५२	०	३	११

ग्र.	१४ बुधे मिश्रमान ४७।४९ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	२	२३	३५	३८	५७	१२
चं.	८	११	१	२५	७५०	४५
मं.	४	१९	३३	२४	३५	३५
बु.	३	१८	३३	४८	३६	३२
गु.	२	१२	३३	११	१३	३६
शु.	१	११	२८	३८	६०	१
श.	११	७	११	४१	०	१४
रा.	१०	२६	४८	५२	३	११

ति. ग्र.	१५ गुरौ मिश्रमान ४७।४८ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	२	२४	३२	५१	५७	१२
चं.	८	२३	४२	९	७७३	४५
मं.	४	२०	८	४१	३५	४०
बु.	३	१९	८	२७	३०	४६
गु.	२	१२	४६	४८	१३	३५
शु.	१	१२	२५	४१	६७	१२
श.	११	७	२०	३	०	८
रा.	१०	२६	४५	४५	३	११

१२ पंक्ति ४ रवौ मिश्रमानम् ४७।५९ दिनम् ३३।५४ अयनांशाः ०।२४।१३।३६

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
२	४	४	३	२	१	११	१०
१४	८	१३	९	१०	०	७	२७
३	८	४१	३४	१६	१६	११	२०
३१	५०	४०	१२	१६	२८	५२	८
५७	७५८	३४	६८	१३	६५	१	३
१२	८	४८	३५	४५	२९	१५	११
		उ	उ	अ	उ	उ	व

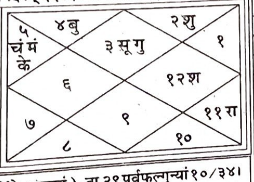

ग्रहस्थितिः (ता.२६ जून से १० जुलाई २०२५)

सूर्यः (मिथुने/आर्द्रायां)-ता.६ पुनर्वसौ १/३८। ●**भौमः** (सिंहे/मघायां)-ता.२९ पूर्वफल्गुन्यां १०/३४। ●**बुधः** (कर्के/पुष्ये)-ता.७ आश्लेषायां ०/२४। ●**गुरुः** (मिथुने/आर्द्रायां १ चरणे/अस्तः)-ता.२८ आर्द्रायां २ चरणे ३६/५८। ता.८ पूर्वोदयः रा.शे.४/५१। ●**शुक्रः** (मेषे/भरण्यां)-ता.२६ कृत्तिकायां २८/२६। ता.२९ वृषे ३२/५०। ता.८ रोहिण्यां ३७/१७। ●**शनिः** (मीने/उभायां २ चरणे)। ●**राहुः** (कुम्भे/पूभायां ३ चरणे)। ●**केतुः** (सिंहे/उफायां १ चरणे)।

ग्रहाणां युतिः-ता.२७ बु.चं. योगः दि.११/३३ बुधः २/५१ द.। ता.३० भौ.चं. योगः प्रा.६/३६ भौमः ०/१३ द.।

दैनिकहोरालग्नसारिणी (प्रचलित घड़ियों के समय के अनुसार घण्टा-मिनट में) (लग्न की समाप्ति का समय दिया गया है।)

रा	१ गु		२ शु		३ श		४ र		५ सो		६ मं		७ बु		८ गु		९ शु		१० श		११ र		१२ सो		१३ मं		१४ बु		१५ गु	
मि	६	३९	६	३५	६	३१	६	२७	६	२३	६	१९	६	१५	६	११	६	७	६	४	६	०	५	५६	५	५२	५	४८	५	४४
क	८	५८	८	५४	८	५०	८	४६	८	४२	८	३८	८	३४	८	३०	८	२६	८	२३	८	१९	८	१५	८	११	८	७	८	३
सिं	११	१३	११	९	११	५	११	१	१०	५७	१०	५३	१०	४९	१०	४५	१०	४२	१०	३८	१०	३४	१०	३०	१०	२६	१०	२२	१०	१८
कं	१	२७	१	२३	१	१९	१	१५	१	११	१	७	१	३	१२	५९	१२	५५	१२	५२	१२	४८	१२	४४	१२	४०	१२	३६	१२	३२
तु	३	४४	३	४०	३	३६	३	३२	३	२८	३	२४	३	२०	३	१६	३	१२	३	९	३	५	३	१	२	५७	२	५३	२	४९
वृ	६	१	५	५७	५	५३	५	४९	५	४५	५	४१	५	३७	५	३३	५	२९	५	२६	५	२२	५	१८	५	१४	५	१०	५	६

सूचना-नीचे दिखाये गये सभी समय रात्रिकालीन हैं।

ध	८	६	८	२	७	५८	७	५४	७	५०	७	४६	७	४२	७	३८	७	३४	७	३१	७	२७	७	२३	७	१९	७	१५	७	११
म	९	५१	९	४७	९	४३	९	३९	९	३५	९	३१	९	२७	९	२३	९	१९	९	१६	९	१२	९	८	९	४	९	०	८	५६
कुं	११	२३	११	१९	११	१५	११	११	११	७	११	३	१०	५९	१०	५५	१०	५१	१०	४८	१०	४४	१०	४०	१०	३६	१०	३२	१०	२८
मी	१२	५१	१२	४७	१२	४३	१२	३९	१२	३५	१२	३१	१२	२७	१२	२३	१२	१९	१२	१६	१२	१२	१२	८	१२	४	१२	०	११	५६
मे	२	२९	२	२५	२	२१	२	१७	२	१३	२	९	२	५	२	१	१	५७	१	५४	१	५०	१	४६	१	४२	१	३८	१	३४
वृ	४	२५	४	२१	४	१७	४	१३	४	९	४	५	४	१	३	५७	३	५३	३	५०	३	४६	३	४२	३	३८	३	३४	३	३०

पाक्षिक घटना

ता.३० जून, ता.२ से ता.५ जुलाई व ता.९ जुलाई को वर्षा योग है। (तिथि, ग्रहचार, ग्रहोदयास्त इत्यादि के कारण इस पक्ष में)-मध्यम वर्षा, अच्छा अन्नोत्पादन, तेलहन कुछ तेज, गेहों में कमी, रुई-सूत व कुछ प्रकार के अन्न तेज होने की सम्भावना रहती है।

गुरु उदय फल-मिथुन राशि के गुरु का उदय हो तो गायन-नर्तन क्षेत्र के लोगों को पीड़ा। शासकों में युद्ध, अन्नभाव तेज होता है।

१३ पंक्ति ११ रवौ मिश्रमानम् ४७।५३ दिनम् ३३।४८ अयनांशाः ०।२४।१३।३७

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
२	७	४	३	२	१	११	१०
२०	३	१७	२६	११	७	७	२६
४४	५८	४६	२७	५२	५८	१८	५८
२	२४	५६	३४	५६	२०	३०	५५
५७	७३३	३५	४५	१३	६६	०	३
१२	३	२१	४२	४०	३०	३२	११
		उ	उ	अ	उ	उ	व

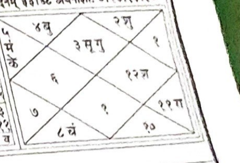

वैनायकी गणेश चतुर्थी का निर्णय-इसका निर्णय मध्याह्नव्यापिनी चतुर्थी से होता है। इस पक्ष में दोनों ही दिन (ता.२८ व ता.२९) को मध्याह्न में चतुर्थी व्याप्त है, अतः ऐसी अवस्था में तृतीया के साथ वाली चतुर्थी को लेना शास्त्र सम्मत है।-(तृतीयायोग प्राशस्त्यात्-धर्मसिन्धौ)।

पारणा-आषाढ़ शुक्ल एकादशी के पारण में अनुराधा के प्रथम चरण का विशेष निषेध है अतः द्वादशी को पारणा प्रातः ५/४० के बाद दिवा ७/५८ तक अथवा दिवा १०/४० से दिवा १/२२ के मध्य में करें।

२४		तिथि (समाप्तिकाल)							नक्षत्र (समाप्तिकाल)						योग (समाप्तिकाल)						करण (समाप्तिकाल)						आनन्दादि	तारीख					स्टै. अं.		(लोकल घं.मि.)				चं. रा. सं. (प्रवेश काल)						र. क्रां. ड.		(स्टैण्डर्ड टाइम घं.मि.)					
दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगाः	अं.	रा.	बं.	मु.	फ.	मि.	से.	सूर्योदय		सूर्यास्त		रा.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	अं.	क.	चंद्रोदय		सूर्योदय		सूर्यास्त	
३३	४२	१	शु	५२	१९	रा	२°	१२	पूषा	१	४४	प्रा	५	५९	वै	३८	४३	रा	८	४६	बा	२२	११	कौ	५२	१९	प्रवर्धमान	११	२०	२६	१५	१	-३	८	५	१६	६	४४	म	१७	१०	दि	१२	१०	उ २२	६	७	३४	५	१७	६	५०
३३	४०	२	श	५१	२४	रा	१°	५१	उषा	३	३१	प्रा	६	४२	वि	३५	४२	रा	७	३५	तै	२१	५१	ग	५१	२४	चरः	१२	२१	२७	१६	२	३	१६	५	१६	६	४४	म						२१	५८	८	१६	५	१८	६	४९
३३	३९	३	र	४९	२४	रा	१°	३	श्र	४	१३	दि	६	५९	प्री	३१	५०	सा	६	२	व	२०	२४	भ	४९	२४	गदः	१३	२२	२८	१७	३	३	२४	५	१६	६	४४	कुं	३४	२	सा	६	५५	२१	४९	८	५४	५	१८	६	४९
३३	३७	४	सो	४६	१७	रा	११	४९	धनि	३	४९	दि	६	५०	आ	२७	४	दि	४	९	बव	१७	५०	बा	४६	१७	शुभः	१४	२३	२९	१८	४	३	३१	५	१७	६	४३	कुं						२१	४०	९	२९	५	१९	६	४९
३३	३६	५	मं	४२	१४	रा	१०	१२	श पूभा	२ ५७	२२ ३५	प्रा रा	६ ५	१६ १८	सौ	२१	३१	दि	१	५६	कौ	१४	१५	तै	४२	१४	मृत्युः	१५	२४	३०	१९	५	३	३८	५	१७	६	४३	मी	४५	३४	रा	११	३२	२१	३१	१०	२	५	१९	६	४९
३३	३४	६	बु	३७	१६	रा	८	१४	उभा	५६	४०	रा	४	०	शो	१५	११	दि	११	२४	ग	९	४५	व	३७	१६	लुम्बः	१६	२५	३१	२०	६	३	४४	५	१७	६	४३	मी						२१	२१	१०	३६	५	२०	६	४८
३३	३२	७	गु	३१	३८	सा	५	५९	रे	५२	४६	रा	२°	२६	ऽति	८	१४	दि	८	३८	भ	४	२७	बव बा	३१ ५८	३८ ३१	मित्रः	१७	२६	१	२१	७	३	५०	५	१८	६	४२	मे	५२	४६	रा	२°	२६	२१	११	११	१०	५	२०	६	४८
३३	३०	८	शु	२५	२५	दि	३	३१	अश्वि	४८	२३	रा	१२	४२	सु धृ	० ५२	४२ ९	प्रा रा	५ २	३८ २९	कौ	२५	२५	तै	५२	११	वज्रः	१८	२७	२	२२	८	३	५६	५	१८	६	४२	मे						२१	१	११	४८	५	२१	६	४८
३३	२८	९	श	१८	५६	दि	१२	५५	भ	४३	५०	रा	१०	५३	शू	४४	५१	रा	११	१८	ग	१८	५६	व	४५	३८	ध्वांक्षः	१९	२८	३	२३	९	४	०	५	१८	६	४२	वृ	५७	४२	रा	४°	२६	२०	५०	१२°	३१	५	२१	६	४७
३३	२६	१०	र	१२	२०	दि	१०	१७	कृ	३९	११	रा	९	६	गं	३६	५३	रा	८	७	भ	१२	२०	बव	३९	८	धूम्रः	२०	२९	४	२४	१०	४	५	५	१९	६	४१	वृ						२०	३९	१°	२१	५	२२	६	४७
३३	२४	११	सो	५	५६	दि	७	४४	रो	३५	११	रा	७	२६	वृ	२९	१३	सा	५	४	बा	५	५६	कौ	३२	५८	प्रवर्धमान	२१	३०	५	२५	११	४	८	५	१९	६	४१	वृ						२०	२८	२°	१८	५	२२	६	४७
३३	२२	१२ १३	मं	० ५४	१ ४९	प्रा रा	५ ३	२२ १८	मृग	३१	३७	सा	६	२	ध्रु	२१	५९	दि	२	११	तै	०	१	ग व	२७ ५४	२५ ५०	रक्षः	२२	३१	६	२६	१२	४	१२	५	२०	६	४०	मि	३	११	प्रा	६	३९	२०	१६	३°	२२	५	२३	६	४६
३३	२०	१४	बु	५०	४०	रा	१°	३९	आर्द्रा	२८	५७	दि	४	५८	व्या	१५	२७	दि	११	३४	भ	२२	४५	श	५०	४०	मुसलः	२३	१	७	२७	१३	४	१४	५	२०	६	४०	मि						२०	४	४°	२८	५	२३	६	४६
३३	१७	३०	गु	४७	३८	रा	१२°	२७	पुन	२७	२०	दि	४	२०	ह	९	४३	दि	९	१७	च	१९	९	ना	४७	३८	सिद्धिः	२४	२	८	२८	१४	-४	१६	५	२०	६	४०	क	१२	३३	दि	१०	२५	१९	५१	०	०	५	२४	६	४५

श्रावणकृष्णपक्षः

श्रीसंवत् २०८२ शकः १९४७ (११ से २४ जुलाई २०२५)। सौम्यायनं कर्कार्कतः याम्यायनं। सौम्यगोलः ग्रीष्मऋतुः कर्कार्के...
राष्ट्रीय २० आ. से २ श्रा. १९४७। बंग २६ आ. से ८ श्रा. १४३२। ता.१५ से २८ मोह. १४४७। ने.२७ आषाढ़ से ९ श्रावण २०८२...

काशी विश्वनाथाय बिल्वपत्रार्चनम्। श्रावणे वर्जयेच्छाकम् १(श्रावण में हरी साग न खायें)। गुरोः बालत्व समाप्तिः (रात्रि शेषे ४/५१)। -(1)

अशून्यशयनव्रतम् २ (चन्द्रोदयेपूजा चन्द्रोदयः रात्रौ ८/१६)। [(1) मैथिल संवत् १४३३ प्रारम्भ]

भ.२०/२४(दिवा १/२८) उपरि। भ.४९/२४(रात्रि शेषे १/३) यावत्। कुम्भेचन्द्रः पंचकप्रारम्भश्च सायं ६/५५।

संकष्टी गणेश चतुर्थी ४ व्रतम् चन्द्रोदयः रात्रौ ९/२९। प्रथम श्रावण सोमवार व्रतम् (प्रदोषवदस्य विधिः सायंकाले उमामहेश्वरपूजनम्)।

गौरीपूजनं-दुर्गायात्रा हनुमद्दर्शनञ्च। नाग ५ (बंगाल-राजस्थान)। भैया ५। मासान्तः।

भ.३७/१६(रात्रौ ८/१४) उपरि। मूलः रात्रि शेषे ४/० उपरि। दक्षिणायन प्रारम्भः। सं.कर्के रविः ३०/४१ सायं ५/३७। मु.४५ फलं सुभिक्षता...

भ.४/२७(प्रातः ७/७) यावत्। मूलः। मेषेचन्द्रः पंचकसमाप्तिश्च रात्रि शेषे २/२६।

मूलः रात्रि शेषे १२/४२ यावत्। [(2) संक्रान्ति पुण्यकालः प्रातः ५/३७ उपरि सायं ५/३७ यावत्]

भ.४५/३८(रात्रौ ११/३६) उपरि। [(4) उपरि दिवा १/२३ यावत्। प्रदोषवदस्य विधिः सायंकाले उमामहेश्वरपूजनम्]

भ.१२/२०(दिवा १०/१७) यावत्। स्मार्तानाम् कामदा एकादशी व्रतम्। सं.पुष्ये रविः ०/१४(प्रातः ५/२८)। चण्डानाड़ी तदीशः शनिः (वर्षा -(3)

द्वितीय श्रावण सोमवार व्रतम्। वैष्णवानाम् कामदा एकादशी। स्मार्त एकादशी पारणा दिवा ७/४४ उपरि दिवा ८/२ यावत् अथवा १०/४३ -(4)

भ.५४/५०(रात्रि शेषे ३/१८) उपरि। गौरीपूजनं-दुर्गायात्रा हनुमद्दर्शनञ्च। भौमप्रदोषः १३ व्रतम् (ऋणमुक्ति हेतवे)।

भ.२२/४५(दिवा २/२९) यावत्। चन्द्रशेखर आजाद जन्म दिवसः। मासशिवरात्रिः १४ व्रतम्। [(3) विचार विस्तार से पृष्ठ ३ पर देखें]

स्नाने-दाने-दर्शे ३०। **गुरुपुष्य योगः दिवा ४/२० उपरि।** चितलगी अमावास्या। हरियाली ३०। दीपपूजनम् ३०।

ति.	१ शुक्रे मिश्रमानम् ४७।४७						२ शनी मिश्रमानम् ४७।४६						३ रवी मिश्रमानम् ४७।४५						४ सोमे मिश्रमानम् ४७।४४						५ भौमे मिश्रमानम् ४७।४३						६ बुधे मिश्रमानम् ४७।४२						७ गुरौ मिश्रमानम् ४७।४०					
ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	२	२५	३०	३	५७	१३	२	२६	२७	१६	५७	१३	२	२७	२४	२९	५७	१३	२	२८	२१	४२	५७	१४	२	२९	१८	५६	५७	१४	३	०	१६	९	५७	१४	३	१	१३	२४	५७	१५
चं.	९	६	३५	२४	७८६	५३	९	१९	४२	१७	८०१	१३	१०	३	३	३०	८१५	४९	१०	१६	३९	११	८३०	४	११	०	२९	२३	८४३	१०	११	१४	३२	३३	८५४	९	११	२८	४६	४२	८६१	५६
मं.	४	२०	४४	२२	३५	४४	४	२१	२०	१३	३५	४९	४	२१	५६	२	३५	५३	४	२२	३१	५५	३५	५७	४	२३	७	५२	३६	२	४	२३	४३	५४	३६	६	४	२४	२०	०	३६	१०
बु.	३	१९	३९	१३	२६	४५	३	२०	५	५८	२२	३७	३	२०	२८	३५	१८	२१	३	२०	४६	५६	१३	५८	३	२१	०	५४	९	२७	३	२१	१०	२१	४	४९	३	२१	१५	१०	०	५
गु.	२	१३	०	२३	१३	३४	२	१३	१३	५६	१३	३२	२	१३	२७	२९	१३	३१	२	१३	४०	५९	१३	२९	२	१३	५४	२९	१३	२८	२	१४	७	५६	१३	२६	२	१४	२१	२२	१३	२४
शु.	१	१३	३२	५३	६७	२०	१	१४	४०	१३	६७	२८	१	१५	४७	४१	६७	३६	१	१६	५५	१७	६७	४४	१	१८	३	१	६७	५२	१	१९	१०	५२	६७	५९	१	२०	१८	५२	६८	६
श.	११	७	२०	११	०	२	११	७	२०	१२	०	४व	११	७	२०	८	०	११व	११	७	१९	५७	०	१७व	११	७	१९	४०	०	२३व	११	७	१९	१८	०	२९व	११	७	१८	४९	०	३५व
रा.	१०	२६	४२	३७	३	११	१०	२६	३९	२९	३	११	१०	२६	३६	२२	३	११	१०	२६	३३	१४	३	११	१०	२६	३०	७	३	११	१०	२६	२६	५९	३	११	१०	२६	२३	५१	३	११

ति.	८ शुक्रे मिश्रमानम् ४७।३९						९ शनी मिश्रमानम् ४७।३८						१० रवी मिश्रमानम् ४७।३७						११ सोमे मिश्रमान ४७।३६						१२ भौमे मिश्रमान ४७।३५						१४ बुधे मिश्रमान ४७।३३						३० गुरौ मिश्रमान ४७।३२					
ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	३	२	१०	३८	५७	१५	३	३	७	५३	५७	१६	३	४	५	९	५७	१६	३	५	२	२५	५७	१७	३	५	५९	४२	५७	१७	३	६	५६	५९	५७	१८	३	७	५४	१७	५७	१८
चं.	०	१३	८	३८	८६५	३२	०	२७	३४	११	८६४	१७	१	११	५८	२८	८५८	१	१	२६	१६	२९	८४७	९	२	१०	२३	३८	८३२	४०	२	२४	१६	१९	८१५	५२	३	७	५४	१७	७९८	१०
मं.	४	२४	५६	१०	३६	१५	४	२५	३२	२५	३६	१९	४	२६	८	४४	३६	२३	४	२६	४५	७	३६	२७	४	२७	२१	३४	३६	३१	४	२७	५८	५	३६	३५	४	२८	३४	४०	३६	[illegible]
बु.	३	२१	१५	१५	४	४४व	३	२१	१०	३१	९	३५व	३	२१	०	५६	१४	२६व	३	२०	४६	२९	१९	२४व	३	२०	२७	१५	२३	५४व	३	२०	३	२२	२८	२१व	३	१९	३५	१	३२	[illegible]
गु.	२	१४	३४	४६	१३	२२	२	१४	४८	८	१३	२०	२	१५	१	२८	१३	१८	२	१५	१४	४७	१३	१६	२	१५	२८	३	१३	१४	२	१५	४१	१७	१३	[illegible]	२	१५	५४	२८	१३	९
शु.	१	२१	२६	५८	६८	१४	१	२२	३५	१२	६८	२१	१	२३	४३	३३	६८	२८	१	२४	५२	१	६८	३५	१	२६	०	३५	६८	४२	१	२७	९	१७	६८	४[illegible]	१	२८	१८	५	६८	५५
श.	११	७	१८	१४	०	४१व	११	७	१७	३३	०	४७व	११	७	१६	४६	०	५३व	११	७	१५	५२	०	५९व	११	७	१४	५३	१	५व	११	७	१३	४८	१	११व	११	७	१२	३७	१	[illegible]व
रा.	१०	२६	२०	४४	३	११	१०	२६	१७	३६	३	११	१०	२६	१४	२९	३	११	१०	२६	११	२१	३	११	१०	२६	८	१३	३	११	१०	२६	५	६	३	११	१०	२६	१	५८	३	११

१४ पंक्ति ३ रवी मिश्रमानम् ४७।४५ दिनम् ३३।३९ अयनांशाः ०।२४।१३।३८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
२	१०	४	३	२	१	११	१०
२७	३	२१	२०	१३	१५	७	२६
२४	३	५६	२८	२७	४७	२०	३६
२९	३०	२	३५	२९	४१	८	२२
५७ १३	८१५ ४९	३५ ५३	१८ २१	१३ ३१	६७ ३६	० ११	३ ११
		उ	उ	उ	उ	उ	व

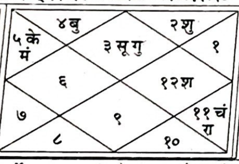

श्रावण मास में-

श्रावण मास में हरी सब्जियां नहीं खानी चाहिये। इस मास में प्रत्येक सोमवार को व्रत करना चाहिये (इसमें दिन में भोजन ना करें)। मंगलवार को गौरी माता की पूजा व हनुमानजी का दर्शन करना चाहिये।

(प्रचलित घड़ियों के समय के अनुसार घण्टा-मिनट में) **दैनिकहोरालग्नसारिणी** (लग्न की समाप्ति का समय दिया गया है।)

रा	१	शु	२	श	३	र	४	सो	५	मं	६	बु	रा	७	गु	८	शु	९	श	१०	र	११	सो	१२	मं	१४	बु	३०	गु
मि	५	४१	५	३७	५	३३	५	२९	५	२५	५	२१	क	७	३७	७	३३	७	२९	७	२५	७	२१	७	१७	७	१३	७	९
क	८	०	७	५६	७	५२	७	४८	७	४४	७	४०	सिं	९	५२	९	४८	९	४४	९	४०	९	३६	९	३२	९	२८	९	२४
सिं	१०	१५	१०	११	१०	७	१०	३	९	५९	९	५५	कं	१२	६	१२	२	११	५८	११	५४	११	५०	११	४६	११	४२	११	३८
कं	१२	२९	१२	२५	१२	२१	१२	१७	१२	१३	१२	९	तु	२	२३	२	१९	२	१५	२	११	२	७	२	३	१	५९	१	५५
तु	२	४६	२	४२	२	३८	२	३४	२	३०	२	२६	वृ	४	४०	४	३६	४	३२	४	२८	४	२४	४	२०	४	१६	४	१२
वृ	५	३	४	५९	४	५५	४	५१	४	४७	४	४३	ध	६	४५	६	४१	६	३७	६	३३	६	२९	६	२५	६	२१	६	१७
ध	७	८	७	४	७	०	६	५६	६	५२	६	४८	म	८	३०	८	२६	८	२२	८	१८	८	१४	८	१०	८	६	८	२
म	८	५३	८	४९	८	४५	८	४१	८	३७	८	३३	कुं	१०	२	९	५८	९	५४	९	५०	९	४६	९	४२	९	३८	९	३४
कुं	१०	२५	१०	२१	१०	१७	१०	१३	१०	९	१०	५	मी	११	३०	११	२६	११	२२	११	१८	११	१४	११	१०	११	६	११	२
मी	११	५३	११	४९	११	४५	११	४१	११	३७	११	३३	मे	१	८	१	४	१	०	१२	५६	१२	५२	१२	४८	१२	४४	१२	४०
मे	१	३१	१	२७	१	२३	१	१९	१	१५	१	११	वृ	३	४	३	०	२	५६	२	५२	२	४८	२	४४	२	४०	२	३६
वृ	३	२७	३	२३	३	१९	३	१५	३	११	३	७	मि	५	१८	५	१४	५	१०	५	६	५	२	४	५८	४	५४	४	५०

इस पक्ष में विशेष

ता.१६ से ता.२४ जुलाई तक वर्षा योग है। (तिथि, ग्रहचार, ग्रहोदयास्त, संक्रान्ति के कारण इस पक्ष में)-वर्षा में कमीं, मृत्युभय, चौरभय, धनक्षय, लोगों में मन-मुटाव, शत्रु से कष्ट, दुर्भिक्ष, खेती का नाश, रोगों से पीड़ा, गौ-महिषि व राजाओं को पीड़ा, पापी चित्तवृत्ति-नीच बुद्धि की प्रचुरता, चोर अधिक हों, चौपायों को पीड़ा, घोडों के भाव तेज, सफेद अन्नों का भाव कुछ तेज। श्रावणकृष्ण एकादशी को जितनी घड़ी रोहिणी नक्षत्र हो- उतने ही प्रमाण में धान्य बिकें।

१५ पंक्ति १० रवी मिश्रमानम् ४७।३७ दिनम् ३३।२१ अयनांशाः ०।२४।१३।३१

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
३	१	४	३	२	१	११	१०
४	११	२६	२१	१५	२३	७	२६
५	५८	८	०	१	४३	१६	१४
९	२८	४४	५६	२८	३३	४६	२९
५७ १६	८५८ १	३६ २३	१४ २६व	१३ १८	६८ २८	० ५३व	३ ११
	उ	अ	उ	उ	उ	व	

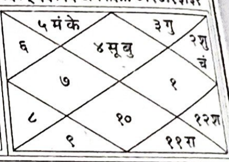

एकादशी निर्णय-स्मार्त सम्प्रदाय वालों की एकादशी का पारणा द्वादशी में ही होता है। ता.२२ को द्वादशी अत्यधिक अल्प काल होने से इसमें पारण संभव नहीं है। अतः स्मार्त वाले दशमी के दिन अर्थात ता.२० को व्रत रखकर अगले दिन एकादशी उपरान्त द्वादशी के मध्याह्न काल में (दिन १०/४३ से दिन १/२३ तक) पारण करेंगे। वहीं वैष्णवों को दशमी विद्ध एकादशी बिल्कुल ग्राह्य नहीं है अतः वे ता.२१ को व्रत रखकर ता.२२ को पारणा करेंगे।

ग्रहस्थितिः (ता.११ से २४ जुलाई २०२५)

सूर्यः(मिथुने/पुनर्वसौ)-ता.१६ कर्के ३०/४१। ता.२० पुष्ये ०/१४। ● **भौमः**(सिंहे/पूफायां)-ता.२१ उफायां ३९/८। ● **बुधः**(कर्के/आश्लेषायां)-ता.१८ वक्री २८/२९। ता.१९ पश्चिमास्तः रात्रौ ७/१६। ● **गुरुः**(मिथुने/आर्द्रायां २च.)-ता.१३ आर्द्रायां ३च.१४/३०। ● **शुक्रः**(वृषे/रोहिण्यां)-ता.२० मृगे २६/५५। ● **शनिः**(मीने/उभायां २च.)-ता.१२ वक्री ३२/४८। ● **राहुः**(कुम्भे/पूभायां ३च.)-ता.१२ पूभायां २च.३७/५५। ● **केतुः**(सिंहे/उफायां १च.)-ता.१२ पूफायां ४च.३७/५५।

ग्रहाणां युतिः-ता.१६ शनि चन्द्र योगः दिवा ४/२ शनिः ३/५० दक्षिणे। ता.२१ शुक्र चन्द्र योगः रात्रि शेषे १२/५६ शुक्रः ७/८ दक्षिणे। ता.२३ गुरु चन्द्र योगः दिवा ९/५० गुरुः ४/५५ दक्षिणे।

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	आनन्दादि योगाः	अं	रा	बं	मु	फ	स्टै अं मि से	सूर्योदय घं. मि.		सूर्यास्त घं. मि.		चं रा	घ	प	स	घं	मि	र क्रां उ अं	क	चंद्रास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त	
३३	१५	१	शु	४५	५६	रा	११	४६	पु	२७	२	दि	४	१३	वज्र	५	१	दि	७	२५	किं	१६	४७	बव	४५	५६	उत्पातः	२५	३	९	२९	१५	-४ १७	५	२१	६	३९	क						१९	३८	७	२७	५	२४	६	४५
३३	१३	२	श	४५	३४	रा	११	३८	श्ले	२८	१	दि	४	३७	सि/व्य	१/५७	२३/३२	प्रा/रा	५/४	५८/५९	बा	१५	४५	कौ	४५	३४	मानसः	२६	४	१०	३०	१६	४ १८	५	२१	६	३९	सिं	२८	१	दि	४	३७	१९	२५	८	५	५	२५	६	४४
३३	१०	३	र	४६	३४	रा	१२	२	म	३०	२३	सा	५	३४	व	५७	३०	रा	४	२५	तै	१६	४	ग	४६	३४	मुद्गरः	२७	५	११	१	१७	४ १८	५	२१	६	३९	सिं						१९	१२	८	३९	५	२५	६	४४
३३	८	४	सो	४८	४६	रा	१२	५६	पूफा	३३	५६	रा	७	०	प	५६	५८	रा	४	१३	व	१७	४०	भ	४८	४६	केतुः	२८	६	१२	२	१८	४ १८	५	२२	६	३८	कं	४९	५८	रा	१	२५	१८	५८	९	९	५	२६	६	४३
३३	६	५	मं	५२	१	रा	२	१४	उफा	३८	३५	रा	८	५२	शि	५७	१४	रा	४	२०	बव	२०	२३	बा	५२	१	घाता	२९	७	१३	३	१९	४ १७	५	२२	६	३८	कं						१८	४४	९	३८	५	२६	६	४३
३३	३	६	बु	५६	३	रा	३	५१	ह	४४	१	रा	११	२	सि	५८	५	रा	४	४०	कौ	२४	२	तै	५६	३	आनन्दः	३०	८	१४	४	२०	४ १५	५	२३	६	३७	कं						१८	३०	१०	७	५	२६	६	४२
३३	०	७	गु	६०	०	स	म	ग्र	चि	४९	५४	रा	१	२५	सा	५९	१३	रा	५	९	ग	२८	१६	व	६०	०	चरः	३१	९	१५	५	२१	४ १३	५	२४	६	३६	तु	१६	५३	दि	१२	१२	१८	१५	१०	३७	५	२७	६	४१
३२	५८	७	शु	०	२९	प्रा	५	३८	स्वा	५६	१	रा	३	५२	शुभ	६०	०	स	म	ग्र	व	०	२९	भ	३२	४७	गदः	१	१०	१६	६	२२	४ १०	५	२४	६	३६	तु						१८	०	११	१०	५	२७	६	४१
३२	५५	८	श	५	५	दि	७	३०	वि	६०	०	स	म	ग्र	शुभ	०	२८	प्रा	५	३९	बव	५	५	बा	३७	१८	शुभः	२	११	१७	७	२३	४ ६	५	२५	६	३५	वृ	४५	२९	रा	११	४०	१७	४५	११	४६	५	२८	६	४०
३२	५२	९	र	९	३१	दि	९	१६	वि	१	५९	प्रा	६	१६	शु	१	३८	प्रा	६	७	कौ	९	३१	तै	४१	२९	उत्पातः	३	१२	१८	८	२४	४ २	५	२६	६	३४	वृ						१७	२९	१२	२७	५	२८	६	४०
३२	५०	१०	सो	१३	२६	दि	१०	५१	अनु	७	३१	दि	८	२९	ब्रं	२	२६	प्रा	६	२८	ग	१३	२६	व	४५	५	मानसः	४	१३	१९	९	२५	३ ५८	५	२६	६	३४	वृ						१७	१३	१	१५	५	२९	६	३९
३२	४७	११	मं	१६	४३	दि	१२	१०	ज्ये	१२	२५	दि	१०	२७	ऐं	२	४५	प्रा	६	३५	भ	१६	४३	बव	४७	५४	मुद्गरः	५	१४	२०	१०	२६	३ ५२	५	२७	६	३३	ध	१२	२५	दि	१०	२७	१६	५७	२	८	५	२९	६	३८
३२	४४	१२	बु	१९	५	दि	१	८	मू	१६	२७	दि	१२	५	वै	२	२४	प्रा	६	२८	बा	१९	५	कौ	४९	४८	केतुः	६	१५	२१	११	२७	३ ४७	५	२७	६	३३	ध						१६	४१	३	६	५	३०	६	३८
३२	४१	१३	गु	२०	३०	दि	१	४१	पूषा	१९	३३	दि	१	१९	वि/प्री	१/५८	१८/३	प्रा/रा	६/५	१/१५	तै	२०	३०	ग	५०	३९	घाता	७	१६	२२	१२	२८	३ ४०	५	२८	६	३२	म	३५	९	रा	७	३३	१६	२४	४	७	५	३०	६	३७
३२	३८	१४	शु	२०	४७	दि	१	४९	उषा	२१	३३	दि	२	८	आ	५६	२९	रा	४	७	व	२०	४७	भ	५०	२४	आनन्दः	८	१७	२३	१३	२९	३ ३३	५	२८	६	३२	म						१६	७	उद	१२	५	३१	६	३६
३२	३५	१५	श	२०	०	दि	१	३१	श्र	२२	३०	दि	२	३१	सौ	५२	४५	रा	२	३७	बव	२०	०	बा	४९	२	स्थिरः	९	१८	२४	१४	३०	-३ २६	५	२९	६	३१	कुं	५२	३७	रा	२	३४	१५	५०	उद	५२	५	३१	६	३५

(Column groups: तिथि (समाप्ति काल); नक्षत्र (समाप्ति काल); योग (समाप्ति काल); करण (समाप्ति काल); तारीख; (लोकल घं.मि.); चं रा से (प्रवेश काल); (स्टैण्डर्ड टाइम घं.मि.))

श्रावणशुक्लपक्षः

श्रीसंवत् २०८२ शकः १९४७ (२५ जुलाई से ९ अगस्त २०२५)। याम्यायनं सौम्यगोलः वर्षाऋतुः। राष्ट्रीय ३ से १८ श्रावण १९४७। बंग ९ से २४ श्रावण १४३२। मु.२९ मोहर्रम से १४ सफर १४४७। नेपाली १० से २५ श्रावण २०८२। शुक्लः पूर्वे। (२५)

मूलः दिवा ४/१३ उपरि। नक्तव्रतारम्भः।

मूलः चन्द्रदर्शनम् मु.३० फलं समता, उत्तरोन्नतं शृंगं फलं सुभिक्षम्। सिंघारा २। [(1) विधिः सायंकाले उमामहेश्वरपूजनम्।

मूलः सायं ५/३४ यावत्। मुक्ता तीज (छोटी तीज)। ठकुराइन जन्म ३ (पश्चिम भारते)। मधुस्रवा ३ (मिथिलायां गुर्जरेषु च प्रसिद्धा)।

म.१७/४०(दिवा १२/३०)उपरि। म.४८/४६(रात्रि शेषे १२/५६)यावत्। वैनायकी गणेश चतुर्थी। तृतीय श्रावण सोमवार व्रतम् प्रदोषपरदत्त -(1)

गौरीपूजन-दुर्गायात्रा हनुमद्दर्शनञ्च। नागपंचमी ५। मध्याह्ने नागकूपयात्रा ५। गुड़िया ५। हनुमान मन्दिरे ध्वजारोपणम्।

कल्पव्यतारः ६(सायं)।

गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती ७। [(2) दधित्यागव्रतारम्भः १२। विष्णोः पवित्रारोपणम् १२। विष्णुप्रतिमादानम् १२।

म.०/२९(प्रातः ५/३८)उपरि। म.३२/४७(सायं ६/३४)यावत्। [(4) संस्कृत दिवसः। कुम्भेचन्द्रः पंचकारम्भश्च रात्रि शेषे २/३४।

सं.आश्लेषायां रविः ५७/१४(रात्रि शेषे ४/२२)। चण्डनाड़ी तदीशः शनिः (शेष विवरण पृष्ठ ३ पर)।

उत्पातयोगः। [(3) अथर्ववेदीयानां श्रावणी (भाद्रपूर्णिमायां ग्रहणसत्त्वे)। अमरनाथ यात्रा। सर्वदेवानां पवित्रारोपणम्।-(4)

म.४५/५(रात्रि ११/३१)उपरि। मूलः दिवा ८/२९ उपरि। चतुर्थ श्रावण सोमवार व्रतम्। (प्रदोषपरदस्य विधिः सायंकाले उमामहेश्वरपूजनम्)।

म.१६/४३(दिवा १२/१०)यावत्। सर्वेषां पुत्रदा एकादशी ११ व्रतम्। मूलः। गौरीपूजन-दुर्गायात्रा हनुमद्दर्शनञ्च।

मूलः दिवा १२/५ यावत्। एकादशी पारणा दिवा ८/७ यावत् अथवा दिवा १०/४४ उपरि दिवा १/८ यावत्। प्रदोषः १३ व्रतम्। शाकदानम् १३। -(2)

शिवपवित्रारोपणम् १४ (रात्रिव्यापिनी)।

म.२०/४७(दिवा १/४९)उपरि। म.५०/२४(रात्रि शेषे १/४१)यावत्। व्रताय १५। श्रावणी पूर्णिमा (कुलधर्मादिकृत्ये)। हयग्रीवोत्पत्तिः १५(सायं)।

रक्षाबन्धनम् (अपराह्णे)१५। स्नाने-दाने पुण्यतमा १५। ऋग्वेदियानां-यजुः-तैत्तिरीय-हिरण्यकेशीय-बौधायन-आपस्तंबानां-काण्वमाध्यन्दिन-(3)

ग्र.	१ शुक्रे मिश्रमानम् ४७।३१ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		२ शनी मिश्रमानम् ४७।३० रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		३ रवौ मिश्रमानम् ४७।२९ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		४ सोमे मिश्रमानम् ४७।२७ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	३	८	५१	३५	५७	११	३	९	४८	५४	५७	२०	३	१०	४६	१४	५७	२०	३	११	४३	३४	५७	२१
चं.	३	२१	१०	२१	७८०	५१	४	४	११	१२	७६५	१	४	१६	५६	१३	७५१	२६	४	२९	२७	३९	७४०	३६
मं.	४	२९	११	२०	३६	४३	४	२९	४८	३	३६	४७	५	०	२४	५१	३६	५१	५	१	१	४२	३६	५५
बु.	३	१९	२	३२	३६	१२व	३	१८	२६	२०	३९	२५व	३	१७	४६	५६	४२	०व	३	१७	४	५६	४३	५३व
गु.	२	१६	७	३८	१३	७	२	१६	२०	४५	१३	४	२	१६	३३	४९	१३	२	२	१६	४६	५१	१२	५९
शु.	१	२९	२७	०	६१	१	२	०	३६	२	६१	८	२	१	४५	९	६१	१४	२	२	५४	२३	६१	२०
श.	११	७	११	२०	१	२३व	११	७	९	५७	१	२१व	११	७	८	२९	१	३४व	११	७	६	५४	१	४०व
रा.	१०	२५	५८	५१	३	११	१०	२५	५५	४३	३	११	१०	२५	५२	३५	३	११	१०	२५	४९	२८	३	११

ग्र.	५ भौमे मिश्रमानम् ४७।२६ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		६ बुधे मिश्रमानम् ४७।२५ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		७ गुरौ मिश्रमानम् ४७।२४ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		७ शुक्रे मिश्रमानम् ४७।२३ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	३	१२	४०	५६	५७	२२	३	१३	३८	१८	५७	२३	३	१४	३५	४१	५७	२४	३	१५	३३	४	५७	२५
चं.	५	११	४८	१५	७३२	४४	५	२४	०	५९	७२७	५४	६	६	८	५३	७२६	२	६	१८	१४	५५	७२६	५८
मं.	५	१	३८	३७	३६	५९	५	२	१५	३७	३७	३	५	२	५२	४०	३७	७	५	३	२९	४७	३७	११
बु.	३	१६	२१	३	४४	५९व	३	१५	३६	४	४५	१४व	३	१४	५०	५०	४४	३७व	३	१४	६	१४	४३	७व
गु.	२	१६	५९	५०	१२	५७	२	१७	१२	४७	१२	५४	२	१७	२५	४१	१२	५१	२	१७	३८	३१	१२	४८
शु.	२	४	३	४४	६१	२६	२	५	१३	१०	६१	३२	२	६	२२	४३	६१	३८	२	७	३२	२१	६१	४४
श.	११	७	५	१४	१	४६व	११	७	३	२८	१	५२व	११	७	१	३७	१	५७व	११	६	५९	४०	२	३व
रा.	१०	२५	४६	२०	३	११	१०	२५	४३	१३	३	११	१०	२५	४०	५	३	११	१०	२५	३६	५७	३	११

ग्र.	८ शनी मिश्रमानम् ४७।२१ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		९ रवौ मिश्रमानम् ४७।२० रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		१० सोमे मिश्रमानम् ४७।१९ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	३	१६	३०	२९	५७	२५	३	१७	२७	५४	५७	२६	३	१८	२५	२१	५७	२७
चं.	७	०	२१	५३	७३०	३३	७	१२	३२	२६	७३६	३१	७	२४	४८	५७	७४४	४०
मं.	५	४	६	५८	३७	१५	५	४	४४	१३	३७	१९	५	५	२१	३१	३७	२२
बु.	३	१३	२३	७	४०	४५व	३	१२	४२	२२	३७	३५व	३	१२	४	४७	३३	११व
गु.	२	१७	५१	१९	१२	४५	२	१८	४	४	१२	४२	२	१८	१६	४६	१२	३८
शु.	२	८	४२	५	६१	५०	२	९	५१	५५	६१	५६	२	११	१	५१	७०	१
श.	११	६	५७	३७	२	८व	११	६	५५	२९	२	१४व	११	६	५३	१५	२	१९व
रा.	१०	२५	३३	५०	३	११	१०	२५	३०	४२	३	११	१०	२५	२७	३५	३	११

ग्र.	११ भौमे मिश्रमान ४७।१८ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		१२ बुधे मिश्रमान ४७।१७ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		१३ गुरौ मिश्रमान ४७।१५ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	३	१९	२२	४८	५७	२८	३	२०	२०	१६	५७	२९	३	२१	१७	४६	५७	३०
चं.	८	७	१४	३७	७५४	४४	८	१९	४८	२२	७६६	२५	९	२	३४	४६	७७२	२७
मं.	५	५	५८	५४	३७	२६	५	६	३६	२०	३७	३०	५	७	१३	५०	३७	३४
बु.	३	११	३१	८	२९	२व	३	११	२	६	२३	११व	३	१०	४७	१५	१८	०व
गु.	२	१८	२९	२४	१२	३५	२	१८	४२	०	१२	३२	२	१८	५४	३१	१२	२८
शु.	२	१२	१२	५२	७०	७	२	१३	२२	५९	७०	१२	२	१४	३२	११	७०	१८
श.	११	६	५०	५६	२	२४व	११	६	४८	३२	२	२९व	११	६	४६	३	२	३५व
रा.	१०	२५	२४	२७	३	११	१०	२५	२१	२०	३	११	१०	२५	१८	१२	३	११

ग्र.	१४ शुक्रे मिश्रमान ४७।१४ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		१५ शनी मिश्रमान ४७।१३ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	३	२२	१५	१६	५७	३१	३	२३	१२	४७	५७	३३
चं.	९	१५	३४	१३	७९३	२९	९	२८	४७	४२	८०८	७
मं.	५	७	५१	२४	३७	३७	५	८	२९	१	३७	४१
बु.	३	१०	२०	६	१२	५व	३	१०	८	१	५	४१व
गु.	२	१९	७	०	१२	२५	२	१९	१९	२५	१२	२१
शु.	२	१५	४२	२९	७०	२३	२	१६	५२	५२	७०	२८
श.	११	६	४३	२८	२	४०व	११	६	४०	४९	२	४५व
रा.	१०	२५	१५	४	३	११	१०	२५	११	५७	३	११

१६ पंक्ति ३ रवौ मिश्रमानम् ४७।२९ दिनम् ३३।१० अयनांशाः ०।२४।१३।४०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
३	४	५	३	२	२	११	१०
१०	१६	०	१७	१६	१	७	२५
४६	५६	२४	४६	३३	४५	८	५२
१४	१३	५१	५६	४९	९	२९	३५
५७ २०	७५१ २६	३६ ५१	४२ ०व	१३ २	६१ १४	१ ३४व	३ ११
		उ	अ	उ	उ	उ	व

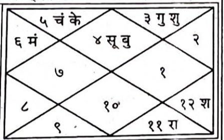

(प्रचलित घड़ियों के समय के अनुसार घण्टा-मिनट में) **दैनिकहोरालग्नसारिणी** (लग्न की समाप्ति का समय दिया गया है।)

रा	१ शु		२ श		३ र		४ सो		५ मं		६ बु		७ गु		७ शु		८ श		९ र		१० सो		११ मं		१२ बु		१३ गु		१४ शु		१५ श	
क	७	५	७	१	६	५७	६	५३	६	४९	६	४५	६	४१	६	३७	६	३३	६	२९	६	२६	६	२२	६	१८	६	१४	६	१०	६	६
सिं	९	२०	९	१६	९	१२	९	८	९	४	९	०	८	५६	८	५२	८	४८	८	४४	८	४१	८	३७	८	३३	८	२९	८	२५	८	२१
कं	११	३४	११	३०	११	२६	११	२२	११	१८	११	१४	११	१०	११	६	११	२	१०	५८	१०	५५	१०	५१	१०	४७	१०	४३	१०	३९	१०	३५
तु	१	५१	१	४७	१	४३	१	३९	१	३५	१	३१	१	२७	१	२३	१	१९	१	१५	१	१२	१	८	१	४	१	०	१२	५६	१२	५२
वृ	४	८	४	४	४	०	३	५६	३	५२	३	४८	३	४४	३	४०	३	३६	३	३२	३	२९	३	२५	३	२१	३	१७	३	१३	३	९
ध	६	१३	६	९	६	५	६	१	५	५७	५	५३	५	४९	५	४५	५	४१	५	३७	५	३४	५	३०	५	२६	५	२२	५	१८	५	१४
सूचना-नीचे दिखाये गये सभी समय रात्रिकालीन हैं।																																
म	७	५८	७	५४	७	५०	७	४६	७	४२	७	३८	७	३४	७	३०	७	२६	७	२२	७	१९	७	१५	७	११	७	७	७	३	६	५९
कुं	९	३०	९	२६	९	२२	९	१८	९	१४	९	१०	९	६	९	२	८	५८	८	५४	८	५१	८	४७	८	४३	८	३९	८	३५	८	३१
मी	१०	५८	१०	५४	१०	५०	१०	४६	१०	४२	१०	३८	१०	३४	१०	३०	१०	२६	१०	२२	१०	१९	१०	१५	१०	११	१०	७	१०	३	९	५९
मे	१२	३६	१२	३२	१२	२८	१२	२४	१२	२०	१२	१६	१२	१२	१२	८	१२	४	१२	०	११	५७	११	५३	११	४९	११	४५	११	४१	११	३७
वृ	२	३२	२	२८	२	२४	२	२०	२	१६	२	१२	२	८	२	४	२	०	१	५६	१	५३	१	४९	१	४५	१	४१	१	३७	१	३३
मि	४	४६	४	४२	४	३८	४	३४	४	३०	४	२६	४	२२	४	१८	४	१४	४	१०	४	७	४	३	३	५९	३	५५	३	५१	३	४७

१७ पंक्ति ९ रवौ मिश्रमानम् ४७।२० दिनम् ३२।५२ अयनांशाः ०।२४।१३।४१

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
३	७	५	३	२	२	११	१०
१७	१२	४	१२	१८	९	६	२५
२७	३२	४४	४२	४	५१	५५	३०
५४	२६	१३	२२	४	५५	२९	४२
५७ २६	७३६ ३१	३७ १९	३७ ३५व	१२ ४२	६१ ५६	२ १४व	३ ११
		उ	अ	उ	उ	उ	व

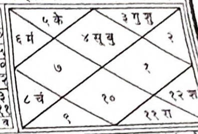

ग्रहस्थितिः (ता.२५ जुलाई से ९ अगस्त २०२५)

सूर्यः (कर्के/पुष्ये) –ता.२ आश्लेषायां ५७/१४। ● भौमः (सिंहे/उत्तरफल्गुन्यां) –ता.२७ कन्यायां ६/५९। ● बुधः (कर्के/आश्लेषायां/वक्री/अस्तः) –ता.२९ पुष्ये २२/५। ता.९ पूर्वोदयः रा.शे.५/१। ● गुरुः (मिथुने/आर्द्रायां३चरणे) –ता.२८ आर्द्रायां४चरणे १५/४४। ● शुक्रः (वृषे/मृगे) –ता.२६ मिथुने १६/९। ता.१ आर्द्रायां २/१८। ● शनिः (मीने/उभायां२चरणे/वक्री)। ● राहुः (कुम्भे/पूभायां२चरणे)। ● केतुः (सिंहे/पूफायां४चरणे)।

ग्रहाणां युतिः –ता.२५ बुध चन्द्र योगः सायं ४/३१ बुधः ८/४ दक्षिणे। ता.२८ भौम चन्द्र योगः रात्रि शेषे १/१६ भौमः १/१७ उत्तरे।

पाक्षिक घटना-ता.२५ से ता.२९ जुलाई व ता.३ से ता.९ अगस्त को वर्षा योग है। इस पक्ष में धान्यभाव तेज, वर्षा मध्यम, दक्षिण हिन्दुस्तान में उत्तम अच्छी पर वायु और [illegible] मिश्रित रोग से महामारी, राष्ट्रों में सन्धि, अधिकारियों में कष्ट।

रक्षाबन्धन- धर्मशास्त्र के अनुसार रक्षाबंधन अपराह्न में ही मनाना चाहिये। [illegible] देखने में आ रहा है कि रक्षाबंधन प्रातः काल ही कर लिया जाता है, ऐसा करना [illegible] है। इसमें पूर्णिमा तिथि कम से कम ३ मुहूर्त हो तो उस तिथि पर दिन व्यापिनी [illegible] अतः ता.९ को दिन ९/२० से दिन ३/५३ तक रक्षाबंधन का पर्व मनायें।

२६	तिथि (समाप्तिकाल)							नक्षत्र (समाप्तिकाल)						योग (समाप्तिकाल)						करण (समाप्तिकाल)					
दि. मा.	ति.	वा.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.
३२ ३२	१	र	१८	३	दि	१२	३५	घ	२२	१९	दि	२	२७	शो	४८	५	रा	१२	४६	कौ	१८	३	तै	४६	३४
३२ २९	२	सो	१५	५	दि	११	३३	श	२१	६	दि	१	५८	अति	४२	३७	रा	१०	३५	ग	१५	५	व	४३	४
३२ २६	३	मं	११	४	दि	९	५८	पूभा	१८	५१	दि	१	५	सु	३६	२०	रा	८	५	भ	११	४	बव	३८	३८
३२ २३	४	बु	६	१२	दि	८	१	उभा	१५	४७	दि	११	५२	धृ	२९	२६	सा	५	१९	बा	६	१२	कौ	३३	२३
३२ २०	५ / ६	गु	[illegible]					रे	१२	०	दि	१०	२१	शू	२१	५९	दि	२	२१	तै	०	३४	ग	[illegible]	
३२ १७	७	शु	५७	४८	रा	१२	४१	अश्वि	७	४०	दि	८	३८	गं	१४	८	दि	११	३३	भ	२१	४	बव	३७	४८
३२ १४	८	श	४५	१५	रा	१०	३	भ / कृ	[illegible]					वृ / ध्रु	[illegible]					[illegible]					
३२ ११	९	र	३४	५२	रा	७	३१	रो	५४	४१	रा	३	१७	व्या	५०	१७	रा	१	४२	तै	८	३	ग	३४	५२
३२ ७	१०	सो	२९	१	सा	५	११	मृ	५०	३६	रा	१	४९	ह	४३	०	रा	१०	४७	व	५	५६	[illegible]		
३२ ४	११	मं	२३	५१	दि	३	८	आर्द्रा	४७	३५	रा	१२	४२	व	३६	२०	रा	८	८	बा	२३	५१	कौ	५१	४६
३२ १	१२	बु	१९	४२	दि	१	२८	पुन	४६	०	रा	१२	०	सि	३०	३३	सा	५	४९	तै	१९	४२	ग	४८	१२
३१ ५८	१३	गु	१६	४१	दि	१२	१७	पु	४५	२७	रा	११	४८	व्य	२५	४१	दि	३	५३	व	१६	४१	भ	४५	५२
३१ ५४	१४	शु	१५	२	दि	११	३७	श्ले	४६	१५	रा	१२	७	व	२१	५४	दि	२	२३	श	१५	२	च	४४	५४
३१ ५१	३०	श	१४	४५	दि	११	३१	म	४८	२४	रा	१२	५९	प	१९	१३	दि	१	१८	ना	१४	४५	किं	४५	१६

आनन्दादि योगाः	तारीख अं.	रा.	बं.	मु.	फ.	स्टै. अं. मि.	से.	(लोकल घं.मि.) सूर्योदय	सूर्यास्त	चं. रा. सं. (प्रवेश काल)	र. क्रां. उ. अं. क.	(स्टैण्डर्ड टाइम घं.मि.) चंद्रोदय	सूर्योदय	सूर्यास्त
मातंगः	१०	१९	२५	१५	१	-३	१७	५ ३०	६ ३०	कुं	१५ ३३	७ २९	५ ३२	६ ३५
अमृतः	११	२०	२६	१६	२	३	९	५ ३०	६ ३०	कुं	१५ १५	८ ३	५ ३२	६ ३४
काणः	१२	२१	२७	१७	३	३	०	५ ३१	६ २९	मी ४ ३४ दि ७ २३	१४ ५७	८ ३७	५ ३३	६ ३३
लुम्बः	१३	२२	२८	१८	४	२	५०	५ ३१	६ २९	मी	१४ ३९	९ ११	५ ३३	६ ३२
मित्रः	१४	२३	२९	१९	५	२	३९	५ ३२	६ २८	मे १२ ० दि १० २१	१४ २१	९ ४८	५ ३३	६ ३१
वज्रः	१५	२४	३०	२०	६	२	२९	५ ३२	६ २७	मे	१४ ३	१० ३०	५ ३४	६ ३०
ध्वांक्षः	१६	२५	३१	२१	७	२	१७	५ ३३	६ २७	वृ १६ ५८ दि २ २१	१३ ४३	११ १७	५ ३४	६ ३०
धाता	१७	२६	१	२२	८	२	५	५ ३४	६ २६	वृ	१३ २४	[illegible]	५ ३५	६ २९
आनन्दः	१८	२७	२	२३	९	१	५३	५ ३५	६ २५	मि २२ २३ दि २ ३२	१३ ५	[illegible]	५ ३५	६ २८
चरः	१९	२८	३	२४	१०	१	४०	५ ३५	६ २५	मि	१२ ४५	[illegible]	५ ३६	६ २७
गदः	२०	२९	४	२५	११	१	२६	५ ३६	६ २४	क ३२ २२ सा ६ ९	१२ २६	[illegible]	५ ३६	६ २६
शुभः	२१	३०	५	२६	१२	१	१२	५ ३६	६ २३	क	१२ ६	[illegible]	५ ३६	६ २५
मृत्युः	२२	३१	६	२७	१३	०	५८	५ ३७	६ २३	सिं ४६ १५ रा १२ ७	११ ४६	०	५ ३७	६ २४
पद्मः	२३	१	७	२८	१४	-०	४३	५ ३८	६ २२	सिं	११ २५	०	५ ३७	६ २३

भाद्रपदकृष्णपक्षः

श्रीसंवत् २०८२ शकः १९४७ (१० से २३ अगस्त २०२५)। याम्यायनं सौम्यगोलः वर्षाऋतुः। राष्ट्रीय १९ श्रावण से १ भाद्रपद १९४७। बंग २५ श्रावण से ७ भाद्रपद १४३२। मु.१५ से २८ सफर १४४७। नेपाली २६ श्रावण से ७ भाद्रपद २०८२। शुक्रः पूर्वे

दधिभाद्रपदेत्यजेत् (नाऽत्रत्यागस्ताक्रादीनाम्)। अशून्यशयनव्रतम् २ (चन्द्रोदयः रात्रौ ७/२९)।

भ.४३/४(रात्रौ १०/४६)उपरि। रात्रौ जागरणम् (रतजग्गा)। भीमचण्डी जन्म। विन्ध्याचल जयन्ती। सिन्धारा। दाक्षिणात्यानां सोमवार व्रतम्।

भ.११/४(दिवा ९/५८)यावत्। अंगारकी (बहुला) संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रतम् चन्द्रोदयः रात्रौ ८/३७। कज्जली ३ (छोटी तीज)। सातू तीज...

मूलः दिवा ११/५२ उपरि। [(1) गोपूजा ३। बूढ़ी तीज। विशालाक्षी यात्रा ३ ...

भ.५४/२१(रात्रि शेषे ३/१७)उपरि। चन्द्र ६ व्रतम (चन्द्रोदयव्या. चन्द्रोदयः रात्रौ ९/४८)। हल ६। ललही छठ (सन्तान प्राप्ति हेतु)। मूलः।-(2)

भ.२१/४(दिवा २/०)यावत्। मूलः दिवा ८/३८ यावत्। **भारतीय स्वतंत्रता दिवसः ७९ तमः**। पारसी नव वर्षः। शीतलाव्रतम् ७। मासान्तः।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी। श्रीकृष्णावतारः। मन्वादिः८। सं.मघायां सिंहेच रविः५१/१२(रात्रि शेषे २/३)। मु.३० फलं समता। चण्डानाड़ी तदीशः ...

संक्रान्ति पुण्यकालः दिवा १२/१ यावत्। राधावल्लभानां रोहिणीव्रतम्। गोगा नवमी।

भ.१/५६(प्रातः६/२१)उपरि। भ.२९/१(दिवा ५/११)यावत्। दाक्षिणात्यानां सोमवार व्रतम्।

सर्वेषां जया एकादशी व्रतम्। [(2) मेषेचन्द्रः पंचकसमाप्तिश्च दिवा १०/२१। हरदेव जयन्ती। माईभित्रा ५। नाग ५ (गुजरात)। ...

एकादशी पारणा दिवा ८/१० यावत् अथवा दिवा १०/४३ उपरि १/१७ यावत्। प्रदोषः १३ व्रतम्।

भ.१६/४१(दिवा१२/१७)उपरि। भ.४५/५२(रात्रौ११/५८)यावत्। गुरुपुष्य योगः रात्रौ११/४८ यावत्। मूलः रात्रौ११/४८ उपरि। मासशिवरात्रिः व्रतम्।

मूलः। दर्शे ३०। पिठोरा व्रतम् ३०(प्रदोषव्यापिनी)।

स्नाने-दाने ३०। **कुशोत्पाटिनी ३०**। अश्वत्थसेचनम् ३०। दृश्यागस्त्योदयः३६/१९(रात्रौ ८/९)। मूलः रात्रि शेषे १२/५९ यावत्।

तिथिवार मिश्रमानम् सारणियाँ (ति. १ रवौ मिश्रमानम् ४७१२, २ सोमे मिश्रमानम् ४७११, ३ भौमे मिश्रमानम् ४७१०, ४ बुधे मिश्रमानम् ४७१९, ५ गुरौ मिश्रमानम् ४७१८, ७ शुक्रे मिश्रमानम् ४७१६, ८ शनौ मिश्रमानम् ४७१५, ९ रवौ मिश्रमानम् ४७१४, १० सोमे मिश्रमानम् ४७१३, ११ भौमे मिश्रमानम् ४७१२, १२ बुधे मिश्रमानम् ४७११, १३ गुरौ मिश्रमानम् ४७१०, १४ शुक्रे मिश्रमान ४६।५९, ३० शनौ मिश्रमान ४६।...) — प्रत्येक में रा. अं. क. वि. गतिः; ग्रह: सू. चं. मं. बु. गु. शु. श. रा.

तिथि	ग्रह	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
१० सोमे	सू.	४	१	५१	२३	५७	४४
१० सोमे	चं.	२	५	४९	७	८३९	५९
१० सोमे	मं.	५	१४	१०	२४	३८	१४
११ भौमे	सू.	४	२	४९	७	५७	४५
११ भौमे	चं.	२	१९	४९	७	८२४	२
११ भौमे	मं.	५	१४	४८	३८	३८	१७
१२ बुधे	सू.	४	३	४६	५२	५७	४६
१२ बुधे	चं.	३	३	३३	८	८०६	३३
१२ बुधे	मं.	५	१५	२६	५५	३८	२२
१३ गुरौ	सू.	४	४	४४	३८	५७	४८
१३ गुरौ	चं.	३	१६	५९	४२	७८८	५८
१४ शुक्रे	सू.	४	५	४२	२६	५७	४९
१४ शुक्रे	चं.	४	०	८	३९	७७२	२६
३० शनौ	सू.	४	६	४०	२६	[illegible]	

(शेष मिश्रमानम् पंक्तियाँ [illegible])

१८ पंक्ति १ रवौ मिश्रमानम् ४७।१२ दिनम् ३२।३२ अयनांशाः ०।२४।१३।४२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
३	१०	५	३	२	२	११	१०
२४	१२	९	१०	१९	१८	६	२५
१०	१५	६	२	३१	३	३८	८
२०	४९	४३	२०	४६	२०	४	४९
५७	२२	३७	०	१२	७०	२	३
३४	४८	४५	५६	१७	३४	४०	११
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	व

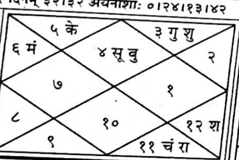

ग्रहस्थितिः (ता.१० से २३ अगस्त २०२५) सूर्यः (कर्के/आश्लेषायां)–ता.१६ सिंहे/मघायां ५१/१२। ● भौमः(कन्यायां/उत्तरफल्गुन्यां)–ता.१२ हस्तेषु ११/४८। ● बुधः (कर्के/पुष्ये/वक्री/)– ता.१० मार्गी १/३०। ता.२१ आश्लेषायां ५७/५२। ● गुरुः (मिथुने/आर्द्रायां ४ चरणे)–ता.१३ पुनर्वसौ १चरणे५/११। ● शुक्रः (मिथुने/आर्द्रायां)–ता.१२ पुनर्वसौ २६/१६। ता.२० कर्के५३/७। ता.२३ पुष्ये४१/२। ● शनिः (मीने/उभायां२ चरणे/वक्री)–ता.१० उभायां १ चरणे६/८। ● राहुः (कुम्भे/पूभायां२ चरणे)। ● केतुः (सिंहे/पूफायां४ चरणे)।

दाक्षिणात्य सोमवार व्रत- दक्षिण भारत में अमान्त मास पद्धति होने से उनका श्रावण मास श्रावणशुक्ल प्रतिपदा से प्रारम्भ होकर १ मास तक चलते हुये भाद्रपद कृष्ण अमावास्या को समाप्त होता है। उसी अनुसार उनके सोमवार व्रत होते हैं।

ग्रहाणां युतिः –ता.१२ शु.गु. योगः दि.१२/३० शुक्रः ०/५२ द.। ता.१२ श.चं. योगः रा.८/४९ शनिः ४/३ द.। ता.१९ गु.चं. योगः रा.शे.२/३५ गुरुः ४/४६ द.। ता.२० शु.चं. योगः सा.४/२२ शुक्रः ४/५२ द.। ता.२१ बु.चं.योगः रा.९/४६ बुधः३/४३ द.।

(प्रचलित घड़ियों के समय के अनुसार घण्टा-मिनट में) **दैनिकहोरालग्नसारिणी** (लग्न की समाप्ति का समय दिया गया है।)

रा	१ र		२ सो		३ मं		४ बु		५ गु		७ शु		८ श		रा	९ र		१० सो		११ मं		१२ बु		१३ गु		१४ शु		३० श	
क	६	२	५	५८	५	५४	५	५०	५	४६	५	४२	५	३८	सिं	७	४९	७	४५	७	४१	७	३७	७	३३	७	२९	७	२५
सिं	८	१७	८	१३	८	९	८	५	८	१	७	५७	७	५३	कं	१०	३	९	५९	९	५५	९	५१	९	४७	९	४३	९	३९
कं	१०	३१	१०	२७	१०	२३	१०	१९	१०	१५	१०	११	१०	७	तु	१२	२०	१२	१६	१२	१२	१२	८	१२	४	१२	०	११	५६
तु	१२	४८	१२	४४	१२	४०	१२	३६	१२	३२	१२	२८	१२	२४	वृ	२	३७	२	३३	२	२९	२	२५	२	२१	२	१७	२	१३
वृ	३	५	३	१	२	५७	२	५३	२	४९	२	४५	२	४१	ध	४	४२	४	३८	४	३४	४	३०	४	२६	४	२२	४	१८
ध	५	१०	५	६	५	२	४	५८	४	५४	४	५०	४	४६	म	६	२७	६	२३	६	१९	६	१५	६	११	६	७	६	३

सूचना-नीचे दिखाये गये सभी समय रात्रिकालीन हैं।

रा	१ र		२ सो		३ मं		४ बु		५ गु		७ शु		८ श		रा	९ र		१० सो		११ मं		१२ बु		१३ गु		१४ शु		३० श	
म	६	५५	६	५१	६	४७	६	४३	६	३९	६	३५	६	३१	कुं	७	५९	७	५५	७	५१	७	४७	७	४३	७	३९	७	३५
कुं	८	२७	८	२३	८	१९	८	१५	८	११	८	७	८	३	मी	९	२७	९	२३	९	१९	९	१५	९	११	९	७	९	३
मी	९	५५	९	५१	९	४७	९	४३	९	३९	९	३५	९	३१	मे	११	५	११	१	१०	५७	१०	५३	१०	४९	१०	४५	१०	४१
मे	११	३३	११	२९	११	२५	११	२१	११	१७	११	१३	११	९	वृ	१	१	१२	५७	१२	५३	१२	४९	१२	४५	१२	४१	१२	३७
वृ	१	२९	१	२५	१	२१	१	१७	१	१३	१	९	१	५	मि	३	१५	३	११	३	७	३	३	२	५९	२	५५	२	५१
मि	३	४३	३	३९	३	३५	३	३१	३	२७	३	२३	३	१९	क	५	३४	५	३०	५	२६	५	२२	५	१८	५	१४	५	१०

पाक्षिक घटना

ता.१० से ता.१२ व ता.२० को वर्षा योग है। (तिथि, ग्रहचार, ग्रहोदयास्त, संक्रान्ति के कारण इस पक्ष में)- तेल तेज, उत्तरवर्ती प्रान्त में अधिक वर्षा, अन्न-तृण की उपज मध्यम होती है, घोर भय, सर्वत्र दुर्भिक्ष, चोरों का उपद्रव विशेष होता है।

कुशोत्पाटिनी अमावास्या- भाद्रपद कृष्ण की अमावास्या को ब्राह्मणों द्वारा कुश उखाड़े जाते हैं जिनका उपयोग वर्ष पर्यन्त होता है। ब्राह्मण, मंत्र, कुश, अग्नि और तुलसी ये कभी बासी नहीं होते इनका पूजा में बार-बार प्रयोग किया जा सकता है।

१९ पंक्ति ९ रवौ मिश्रमानम् ४७।१४ दिनम् ३२।११ अयनांशाः ०।२४।१३।४३

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
४	१	५	३	२	३	११	१०
०	२१	१३	१२	२०	२६	६	२४
५३	३६	३२	३२	५६	१९	१६	४६
४१	६	१४	२३	२६	१	३१	५६
५७	८५	३८	४८	११	७१	३	३
४२	२	१०	४३	४९	२	२४	११
उ	उ	उ	उ	उ			व

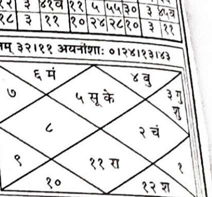

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी निर्णय- इसमें निशीथकाल अष्टमी लेनी होती है, इस वर्ष यह काल रात ११/४१ से देररात १२/२५ तक है। स्पष्ट है कि पहले दिन ता.१५ को इस काल में सप्तमी है व ता.१६ को इस काल में नवमी है, अतः किसी भी दिन निशीथकाल में अष्टमी नहीं मिल रही है। ऐसी अवस्था में दूसरे दिन की अष्टमी लेना शास्त्रसम्मत है।-(दिनद्वये निशीथव्याप्त्यभावे परैवाष्टमी ग्राह्या-धर्मसिन्धु) राधावल्लभ सम्प्रदाय के लोग उदया रोहिणी नक्षत्र के दिन ही जन्माष्टमी मनाते हैं।

भाद्रपदशुक्लपक्षः

श्रीसंवत् २०८२ शकः १९४७ (२४ अगस्त से ७ सितम्बर २०२५)। याम्यायनं सौम्यगोलः वर्षाऋतुः। राष्ट्रीय २ से १६ भाद्रपद १९४७। बंग ८ से २२ भाद्रपद १४३२। मु.२९ सफर से १४ रबिउलव्वल १४४७। नेपाली ८ से २२ भाद्रपद २०८२। शुक्रः पूर्वे।

इ.मा. घ.	इ.मा. प.	तिथि	वा.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	स.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	स.	घं.	मि.	करण	घ.	प.	करण	घ.	प.	आनन्दादि योगाः	अं	रा	बं	मु	फ	स्टै अं मि से	लोकल सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	चं. रा.	चं. प्रवेश घ.	प.	स.	घं.	मि.	र क्रां उ अं	क	चंद्रास्त	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.
३१	४८	१	र	१५	४७	दि	११	५६	पूफा	५१	४४	रा	२°	२०	शि	१७	३२	दि	१२	३९	बव	१५	४७	बा	४६	५६	छत्रः	२४	२	८	२९	१५	-० २७	५	३८	६	२२	सिं						११	५	७ ८	५	३८	६	२२
३१	४४	२	सो	१८	५	दि	१२	५१	उफा	५६	११	रा	४°	६	सि	१६	५१	दि	१२	२२	कौ	१८	५	तै	४९	४२	श्रीवत्सः	२५	३	९	१	१६	-० ११	५	३९	६	२१	कं	७	४४	दि	८	४३	१०	४४	७ ३८	५	३८	६	२१
३१	४१	३	मं	२१	२०	दि	२	११	ह	६०	०	स	म	ग्र	सा	१६	५४	दि	१२	२५	ग	२१	२०	व	५३	२१	सौम्यः	२६	४	१०	२	१७	+० ५	५	४०	६	२०	कं						१०	२४	८ ७	५	३९	६	२०
३१	३७	४	बु	२५	२३	दि	३	४८	ह	१	२६	प्रा	६	१३	शुभ	१७	३५	दि	१२	४१	भ	२५	२३	बव	५७	३७	आनन्दः	२७	५	११	३	१८	० २२	५	४१	६	१९	तु	३४	२१	रा	७	२३	१०	३	८ ३६	५	३९	६	१९
३१	३४	५	गु	२९	५२	सा	५	३५	चि	७	१७	दि	८	३४	शु	१८	३८	दि	१	६	बा	२९	५२	कौ	६०	०	चरः	२८	६	१२	४	१९	० ३९	५	४१	६	१९	तु						९	४२	९ ८	५	३९	६	१८
३१	३०	६	शु	३४	२६	रा	७	२६	स्वा	१३	१९	दि	११	०	ब्रं	१९	४७	दि	१	३५	कौ	२	९	तै	३४	२६	गदः	२९	७	१३	५	२०	० ५६	५	४२	६	१८	तु						९	२०	९ ४३	५	४०	६	१७
३१	२७	७	श	३८	५३	रा	९	१३	वि	१९	१८	दि	१	२३	ऐं	२०	५३	दि	२	१	ग	६	३९	व	३८	५३	शुभः	३०	८	१४	६	२१	१ १४	५	४३	६	१७	वृ	२	५१	प्रा	६	४८	८	५९	१० २२	५	४०	६	१६
३१	२३	८	र	४२	५२	रा	१०	४९	ऽनु	२४	५४	दि	३	३९	वै	२१	४०	दि	२	२१	भ	१०	५२	बव	४२	५२	मृत्युः	३१	९	१५	७	२२	१ ३३	५	४३	६	१७	वृ						८	३७	११ ६	५	४१	६	१५
३१	२०	९	सो	४६	१३	रा	१२°	१०	ज्ये	२९	५७	सा	५	४०	वि	२२	२	दि	२	३०	बा	१४	३२	कौ	४६	१३	पद्मः	१	१०	१६	८	२३	१ ५१	५	४४	६	१६	ध	२९	५७	सा	५	४०	८	१६	११ ५६	५	४१	६	१४
३१	१७	१०	मं	४८	४४	रा	१°	१०	मू	३४	१३	रा	७	२२	प्री	२१	४७	दि	२	२४	तै	१७	२९	ग	४८	४४	छत्रः	२	११	१७	९	२४	२ १०	५	४५	६	१५	ध						७	५४	१२° ५१	५	४१	६	१३
३१	१३	११	बु	५०	१३	रा	१°	४७	पूषा	३७	३१	रा	८	४२	आ	२०	४६	दि	२	१	व	१९	२८	भ	५०	१३	श्रीवत्सः	३	१२	१८	१०	२५	२ २९	५	४५	६	१५	म	५३	१५	रा	३°	०	७	३२	१° ५१	५	४२	६	१२
३१	९	१२	गु	५०	४०	रा	१°	५७	उषा	३९	५०	रा	९	३८	सौ	१८	५९	दि	१	१८	बव	२०	२६	बा	५०	४०	सौम्यः	४	१३	१९	११	२६	२ ४८	५	४६	६	१४	म						७	१०	२° ५३	५	४२	६	११
३१	६	१३	शु	४९	५८	रा	१°	४१	श्र	४१	३	रा	१०	७	शो	१६	२०	दि	१२	१४	कौ	२०	१९	तै	४९	५८	धूम्रः	५	१४	२०	१२	२७	३ ८	५	४७	६	१३	म						६	४८	३° ५५	५	४२	६	१०
३१	२	१४	श	४८	७	रा	१२°	५७	ध	४१	६	रा	१०	९	ऽति	१२	४६	दि	१०	४९	ग	१९	२	व	४८	७	प्रवर्धमान	६	१५	२१	१३	२८	३ २८	५	४८	६	१२	कुं	११	१५	दि	१०	१३	६	२५	४° ५८	५	४३	६	९
३०	५९	१५	र	४५	११	रा	११	४७	श	४०	७	रा	९	४६	सु	८	२०	दि	९	३	भ	१६	३९	बव	४५	११	रक्षः	७	१६	२२	१४	२९	३ ४८	५	४८	६	१२	कुं						६	३	उ६ ०	५	४३	६	८

चन्द्रदर्शनम् मु. ३० फलं समता, उत्तरोन्नतं शृंगं फलं सुभिक्षम्। [(1) चण्डानाड़ी तदीशः शनिः (शेष विवरण पृ.३ पर)।
बलभद्रावतारः२।
[(2) नन्दा ८। सोरहिया मेला प्रारम्भः। मूलः दिवा ३/३९ उपरि।
म.५३/२१(रात्रि शेषे २/५९)उपरि। हस्तर्क्षे सामगानां श्रावणी। हस्तयुता **हरितालिका३ व्रतम्** (बड़ी तीज)। अपराह्णे वाराहावतारः३। मन्वादिः३।
म.२५/२३(दिवा ३/४८)यावत्। **सिद्धिविनायक वरद गणेश चतुर्थी ४ व्रतम्।** गणेशोत्सव प्रारम्भः। चन्द्रदर्शन निषेधः चन्द्रास्तः रात्रौ ८/३६।
ऋषि पञ्चमी (मध्याह्ने सप्तर्षि पूजा, कर्षणरहित भूमिजन्यशाकाहारः)। हेमाद्रिका नाग ५।
लोलार्क ६ (पुत्रकामनार्थं काश्यां लोलार्ककुण्डे स्नानम्)। स्वामि कार्तिकेय दर्शनम् ६। पंचगव्यप्राशनम् ६।
म.३८/५३(रात्रौ ९/१३)उपरि। मुक्ताभरण ७। महालक्ष्मी व्रतारम्भः८ (निशीथव्यापिनी)। सन्तान ७। सं.पूफायां रविः ४०/५३ (रात्रौ १०/१)। -(1)
म.१०/५२(दिवा १०/२)यावत्। महारविवार। दूर्वा ८। ज्येष्ठादेवी आवाहनम् दिवा ३/३९ यावत्। लक्ष्मीकुण्डे स्नानारम्भः(दिन१६)। राधा ८। -(2)
मूलः। ज्येष्ठादेवी पूजनम् सायं ५/४० यावत्। श्रीचन्द्र जयन्ती ९ (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सवः)। अदुःख नवमी ९।
[(3) मध्याह्ने वामनावतारः। विष्णु परिवर्तनोत्सवः।
मूलः रात्रौ ७/२२ यावत्। मूले ज्येष्ठादेवी विसर्जनं रात्रौ ७/२२ यावत्।
म.१९/२८(दिवा १/२९)उपरि। म.५०/१३(रात्रि शेषे १/४७)यावत्। सर्वेषां पद्मा एकादशी ११ व्रतम्। डोलग्यारस। जलझूलनी -कर्मा ११।
एकादशी पारणा दिवा ८/१२ यावत् अथवा दिवा १०/४१ उपरि दिवा १/११ यावत्। दधिदानम्। दुग्धत्याग व्रतारम्भः १२। वामन १२। -(3)
[(4) रात्रौ शिवपरिवर्तनोत्सवः१४।
शिक्षक दिवसः। प्रदोषः १३ व्रतम्। थिरुओणम्। कुम्भेचन्द्रः पंचकप्रारम्भश्च दिवा १०/१३। -(4)
म.४८/७(रत्रि शेषे १२/५७)उपरि। अनन्त चतुर्दशी १४। काश्यां रामनगरे रामलीला प्रारम्भः। प्रौष्ठपदि श्राद्धम् १५। स्नाने-दाने-व्रते १५।
म.१६/३९(दिवा १२/२३)यावत्। खग्रासचन्द्रग्रहणं स्पर्शः रात्रौ ९.५७, मोक्षः रात्रौ १.२७। महालयारम्भः।

ग्र.	१ रवौ मिश्रमानम् ४६।५७ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		२ सोमे मिश्रमानम् ४६।५६ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		३ भौमे मिश्रमानम् ४६।५५ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		४ बुधे मिश्रमानम् ४६।५४ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	४	७	३८	६	५७	५२	४	८	३५	५९	५७	५४	४	९	३३	५२	५७	५५	४	१०	३१	४७	५७	५७
चं.	४	२५	३८	५७	७४५	४९	५	८	४	४५	७३६	३७	५	२०	२१	२३	७३०	२४	६	२	३१	४७	७२७	६
मं.	५	१८	०	४०	३८	३५	५	१८	३९	१६	३८	३९	५	११	१७	५४	३८	४२	५	१९	५६	३६	३८	४६
बु.	३	२०	२६	२९	१०	४७	३	२१	५७	१६	१५	३०	३	२३	३२	४७	११	४६	३	२५	१२	३२	१०३	३१
गु.	२	२२	१७	३४	११	१६	२	२२	२८	५०	११	११	२	२२	४०	२	११	६	२	२२	५१	८	११	१
शु.	३	४	३८	३८	७१	४०	३	५	५०	१८	७१	४५	३	७	२	३	७१	४९	३	८	१३	५२	७१	५३
श.	११	५	५१	४६	३	४८व	११	५	४७	५७	३	५२व	११	५	४४	५	३	५५व	११	५	४०	१०	३	५८व
रा.	१०	२४	२५	३	३	११	१०	२४	२१	५५	३	११	१०	२४	१८	४८	३	११	१०	२४	१५	४०	३	११

ग्र.	५ गुरौ मिश्रमानम् ४६।५३ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		६ शुक्रे मिश्रमानम् ४६।५२ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		७ शनौ मिश्रमानम् ४६।५१ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		८ रवौ मिश्रमानम् ४६।५० रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	४	११	२९	४४	५७	५८	४	१२	२७	४३	५८	०	४	१३	२५	४३	५८	२	४	१४	२३	४४	५८	३
चं.	६	१४	३८	५२	७२६	३६	६	२६	४५	२९	७२८	४६	७	८	५४	१४	७३३	२३	७	२१	७	३७	७४०	१४
मं.	५	२०	३५	२२	३८	४९	५	२१	१४	११	३८	५२	५	२२	५३	३	३८	५६	५	२२	३१	५९	३८	५९
बु.	३	२६	५६	३	१०६	४४	३	२८	४२	४७	१०९	२७	४	०	३२	१४	१११	३९	४	२	२३	५४	११३	२२
गु.	२	२३	२	९	१०	५६	२	२३	१३	५	१०	५०	२	२३	२३	५५	१०	४५	२	२३	३४	४०	१०	३९
शु.	३	९	२५	४६	७१	५८	३	१०	३७	४३	७२	२	३	११	४९	४५	७२	६	३	१३	१	५१	७२	१०
श.	११	५	३६	१२	४	१व	११	५	३२	११	४	४व	११	५	२८	७	४	७व	११	५	२४	०	४	९व
रा.	१०	२४	१२	३२	३	११	१०	२४	९	२५	३	११	१०	२४	६	१७	३	११	१०	२४	३	१०	३	११

ग्र.	९ सोमे मिश्रमानम् ४६।४९ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		१० भौमे मिश्रमानम् ४६।४८ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		११ बुधे मिश्रमानम् ४६।४७ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		१२ गुरौ मिश्रमानम् ४६।४६ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	४	१५	२१	४७	५८	५	४	१६	१९	५२	५८	७	४	१७	१७	५९	५८	८	४	१८	१६	७	५८	१०
चं.	८	३	२७	५१	७४९	८	८	१५	५७	०	७५९	५०	८	२८	३६	५०	७७२	५	९	११	२८	५५	७८५	३६
मं.	५	२३	१०	५८	३९	३	५	२३	५०	१	३९	६	५	२४	२९	७	३९	१०	५	२५	८	१७	३९	१३
बु.	४	४	१७	१६	११४	३९	४	६	११	५५	११५	३१	४	८	७	२६	११६	३	४	१०	३	२९	११६	१६
गु.	२	२३	४५	१९	१०	३४	२	२३	५५	५३	१०	२८	२	२४	६	२०	१०	२२	२	२४	१६	४२	१०	१६
शु.	३	१४	१४	१	७२	१४	३	१५	२६	१५	७२	१८	३	१६	३८	३४	७२	२२	३	१७	५०	५६	७२	२६
श.	११	५	१९	५१	४	१२व	११	५	१५	३९	४	१४व	११	५	११	२४	४	१७व	११	५	७	८	४	१९व
रा.	१०	२४	०	२	३	११	१०	२३	५६	५४	३	११	१०	२३	५३	४७	३	११	१०	२३	५०	३९	३	११

ग्र.	१३ शुक्रे मिश्रमान ४६।४५ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		१४ शनौ मि[illegible] रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	४	१९	१४	१७	५८	१२	४	२०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
चं.	९	२४	३४	३२	८००	३	१०	७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मं.	५	२५	४७	२९	३९	१६	५	२६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
बु.	४	११	५९	४५	११६	१५	४	१३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
गु.	२	२४	२६	५८	१०	१०	२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
शु.	३	१९	३	२२	७२	३०	३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
श.	११	५	२	४९	४	२२व	११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
रा.	१०	२३	४७	३२	३	११	१०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ग्र.	१५ रवौ मिश्रमान ४६।४३ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	४	२१	१०	४२	५८	१५
चं.	१०	२१	२९	३०	८२९	३६
मं.	५	२७	६	६	३९	२३
बु.	४	१५	५२	२	११५	३८
गु.	२	२४	४७	१२	९	५७
शु.	३	२१	२८	२६	७२	३८
श.	११	४	५४	६	४	२४व
रा.	१०	२३	४१	१६	३	११

अयनांशाः ०।२४।१३।४४

२० पंक्ति १ रवौ मिश्रमानम् ४६।५७ दिनम् ३१।४८ अयनांशाः ०।२४।१३।४४

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
४	४	५	३	२	३	११	१०
७	२५	१८	२०	२२	४	५	२४
३८	३८	०	२६	१७	३८	५१	२५
६	५७	४०	२९	३४	३८	४६	३
५७	७४५	३८	१०	११	७१	३	३
५२	४९	३५	४७	१६	४०	४८व	११
		उ	उ	उ	उ	उ	व

७	६ मं	४ बु शु
८	५ सू चं के	३ गु
९	२	
१०	११ रा	१
	१२ श	

दैनिकहोरालग्नसारिणी (लग्न की समाप्ति का समय दिया गया है।)
(प्रचलित घड़ियों के समय के अनुसार घण्टा-मिनट में)

रा	१ र		२ सो		३ मं		४ बु		५ गु		६ शु		७ श		८ र		९ सो		१० मं		११ बु		१२ गु		१३ शु		१४ श		१५ र	
सिं	७	२१	७	१७	७	१३	७	१०	७	६	७	२	६	५८	६	५४	६	५०	६	४६	६	४२	६	३८	६	३४	६	३०	६	२६
कं	९	३५	९	३१	९	२७	९	२४	९	२०	९	१६	९	१२	९	८	९	४	९	०	८	५६	८	५२	८	४८	८	४४	८	४०
तु	११	५२	११	४८	११	४४	११	४१	११	३७	११	३३	११	२९	११	२५	११	२१	११	१७	११	१३	११	९	११	५	११	१	१०	५७
वृ	२	९	२	५	२	१	१	५८	१	५४	१	५०	१	४६	१	४२	१	३८	१	३४	१	३०	१	२६	१	२२	१	१८	१	१४
ध	४	१४	४	१०	४	६	४	३	३	५९	३	५५	३	५१	३	४७	३	४३	३	३९	३	३५	३	३१	३	२७	३	२३	३	१९
म	५	५९	५	५५	५	५१	५	४८	५	४४	५	४०	५	३६	५	३२	५	२८	५	२४	५	२०	५	१६	५	१२	५	८	५	४
कुं	७	३१	७	२७	७	२३	७	२०	७	१६	७	१२	७	८	७	४	७	०	६	५६	६	५२	६	४८	६	४४	६	४०	६	३६
मी	८	५९	८	५५	८	५१	८	४८	८	४४	८	४०	८	३६	८	३२	८	२८	८	२४	८	२०	८	१६	८	१२	८	८	८	४
मे	१०	३७	१०	३३	१०	२९	१०	२६	१०	२२	१०	१८	१०	१४	१०	१०	१०	६	१०	२	९	५८	९	५४	९	५०	९	४६	९	४२
वृ	१२	३३	१२	२९	१२	२५	१२	२२	१२	१८	१२	१४	१२	१०	१२	६	१२	२	११	५८	११	५४	११	५०	११	४६	११	४२	११	३८
मि	२	४७	२	४३	२	३९	२	३६	२	३२	२	२८	२	२४	२	२०	२	१६	२	१२	२	८	२	४	२	०	१	५६	१	५२
क	५	६	५	२	४	५८	४	५५	४	५१	४	४७	४	४३	४	३९	४	३५	४	३१	४	२७	४	२३	४	१९	४	१५	४	११

सूचना-नीचे दिखाये गये सभी समय रात्रिकालीन हैं।

पाक्षिक घटना

ता.२६ से ता.३० अगस्त व ता.४ से ता.७ सितम्बर तक वर्षा योग है। (तिथि, ग्रहचार, ग्रहोदयास्त इत्यादि के कारण इस पक्ष में)- धान्योत्पत्ति, चौपाये सुखी, वर्षा थोड़ी, प्रजा में भय, सीमावर्ती क्षेत्रों में संघर्ष, रोगाधिक्य से जनता त्रस्त, धान-गेहूँ के भावों में अस्थिरता।

२२ पंक्ति १५ रवौ मिश्रमानम् ४६।४३ दिनम् ३०।५९ अयनांशाः ०।२४।१३।४५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
४	१०	५	४	२	३	११	१०
२१	२१	२७	१५	२४	२१	४	२३
१०	२९	६	५२	४७	२८	५४	४१
८२	३०	६	२	१२	२६	६	१६
५८	८२९	३९	११५	९	७२	४	३
२५	३६	२३	३८	५७	३८	२४व	११
		उ	अ	उ	उ	उ	व

७	६ मं	४ शु
८	५ सू बु के	३ गु
९	२	
१०	११ चं रा	१
	१२ श	

चन्द्रग्रहण फल- धूलभरी आंधी, भूकम्प, वज्रपात, उल्कापात, धूमकेतु दर्शन, तेजाबी वर्षा या कोई अद्भुत घटना हो। नेत्रों रोगों का प्रसार, पेचिश जैसी बिमारियां, अग्निकांड, दूध-घी की कमी, फल-फूल की कमी, धननाश, चोरी, भुखमरी, गरीबी, दिल्ली, पंजाब, काश्मीर और उत्तरदेश में इसका फल हो।
पश्चिमी पर्वतीय भाग में तस्करी से प्रजा को कष्ट हो। पूर्वाभाद्रपदा में ग्रहण हो तो पीड़ा, रविवारी ग्रहण से वर्ष मध्यम रहे, धान्य संग्रह उचित, राजयुद्ध, दुर्भिक्ष, घी-तेल महंगे हों।

इस गणेश चतुर्थी को भूल से चन्द्रदर्शन हो जाये तो दोषनिवारण के लिये मन्त्र-
सिंहप्रसेनमवधीत्
सिंहोजाम्बवताहतः।
सकुमारकमारोदी
स्तवह्येषस्यमन्तकः।।

ग्रहस्थितिः (ता.२४ अगस्त से ७ सितम्बर २०२५) सूर्यः (सिंहे/मघायां)-ता.३० पूर्वफल्गुन्यां ४०/५३। ● भौमः (कन्यायां/हस्तेषु)-ता.२ चित्रायां ०/४२। ● बुधः (कर्के/आश्लेषायां)-ता.३० सिंहे/मघायां २९/२८। ता.३ पूर्वास्तः स.शे.५/२०। ता.६ पूर्वफल्गुन्यां २८/३। ● गुरुः (मिथुने/पुनर्वसौ१च.)-ता.३० पुनर्वसौ२ चरणे २४/५६। ● शुक्रः (कर्के/पुष्ये)-ता.३ आश्लेषायां ४७/५४। ● शनिः (मीने/उभायां १चरणे/वक्री)। ● राहुः (कुम्भे/पूभायां २ चरणे)। ● केतुः (सिंहे/पूफायां ४चरणे)।

ग्रहाणां युतिः-ता.२६ भौम चन्द्र योगः रात्रौ १०/१३ भौमः २/४७ उत्तरे।

२८		तिथि (समाप्तिकाल)							नक्षत्र (समाप्तिकाल)						योग (समाप्तिकाल)						करण (समाप्तिकाल)					
दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.
३०	५५	१	सो	४१	१२	रा	१०	१२	पूभा	३८	३	रा	८	५७	धृ/शू	३/५३	५१	प्रा/रा	६/४	५६/२९	बा	१३	११	कौ	४१	१२
३०	५२	२	मं	३६	२१	रा	८	१६	उभा	३५	८	रा	७	४७	गं	४९	५८	रा	१°	४३	तै	८	४६	ग	३६	२१
३०	४८	३	बु	३०	४६	सा	६	२	रे	३१	२७	सा	६	१९	वृ	४२	३२	रा	१०	४५	व	३	३३	भ/बव	३०/५७	४६/४०
३०	४४	४	गु	२४	३४	दि	३	३५	अश्वि	२७	११	दि	४	३८	ध्रु	३४	४०	रा	७	३७	बा	२४	३४	कौ	५१	२२
३०	४१	५	शु	१८	८	दि	१	०	भ	२२	४०	दि	२	४९	व्या	२६	३७	दि	४	२४	तै	१८	८	ग	४४	५२
३०	३७	६	श	११	३७	दि	१०	२३	कृ	१८	६	दि	१२	५९	ह	१८	३३	दि	१	१०	व	११	३७	भ	३८	२५
३०	३३	७/८	र	५/५४	१४/९	दि/रा	७/५	५१/३१	रो	१३	४३	दि	११	१५	व	१०	३७	दि	१०	१	बव	५	१४	बा/कौ	३२/५९	१९/२३
३०	३०	९	सो	५४	२२	रा	३°	३०	मृ	९	५५	दि	९	४४	सि/व्य	३/५३	८/१२	प्रा/रा	७/४	१/१८	तै	२६	५३	ग	५४	२२
३०	२६	१०	मं	५०	१९	रा	१°	५४	आर्द्रा	६	५२	दि	८	३२	व	५०	२०	रा	१°	५५	व	२२	२१	भ	५०	१९
३०	२३	११	बु	४७	२९	रा	१२°	४६	पुन	४	५४	दि	७	४४	प	४५	२०	रा	११	५५	बव	१८	५४	बा	४७	२९
३०	१९	१२	गु	४५	५८	रा	१२°	१०	पु	४	९	दि	७	२७	शि	४१	२२	रा	१०	२०	कौ	१६	४३	तै	४५	५८
३०	१५	१३	शु	४५	४५	रा	१२°	६	श्ले	४	४२	दि	७	४१	सि	३८	२४	रा	९	१०	ग	१५	५२	व	४५	४५
३०	१२	१४	श	४६	५४	रा	१२°	३३	म	६	३८	दि	८	२७	सा	३६	३२	रा	८	२५	भ	१६	२०	श	४६	५४
३०	८	३०	र	४९	१२	रा	१°	२९	पूफा	९	४७	दि	९	४४	शुभ	३५	३३	रा	८	३	च	१८	३	ना	४९	१२

ति.	आनन्दादि योगाः	तारीख					स्टै. अं.		(लोकल घं.मि.) सूर्योदय		सूर्यास्त		चं. रा. सं. (प्रवेश काल)						र. क्रां. उ.		(स्टैण्डर्ड टाइम घं.मि.) चंद्रोदय		सूर्योदय		सूर्यास्त	
		अं.	रा.	बं.	मु.	फ.	मि.	से.					रा.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	अं.	क.						
१	मुसलः	८	१७	२३	१५	१	४	८	५	४९	६	११	मी	२३	३९	दि	३	१२	उ/५	४०	६	३५	५	४४	६	७
२	सिद्धिः	९	१८	२४	१६	२	४	२८	५	५०	६	१०	मी						५	१८	७	१०	५	४४	६	७
३	उत्पातः	१०	१९	२५	१७	३	४	४९	५	५०	६	१०	मे	३१	२७	सा	६	१९	४	५५	७	४७	५	४४	६	६
४	मानसः	११	२०	२६	१८	४	५	१०	५	५१	६	९	मे						४	३२	८	२८	५	४५	६	६
५	मुद्गरः	१२	२१	२७	१९	५	५	३०	५	५२	६	८	वृ	३६	३१	रा	८	२१	४	९	९	१४	५	४५	६	४
६	केतुः	१३	२२	२८	२०	६	५	५१	५	५३	६	७	वृ						३	४७	१०	६	५	४५	६	२
७/८	धाता	१४	२३	२९	२१	७	६	१२	५	५३	६	७	मि	४१	४५	रा	१०	२८	३	२४	११	५	५	४६	६	०
९	आनन्दः	१५	२४	३०	२२	८	६	३३	५	५४	६	६	मि						३	१	१२°	८	५	४६	५	५९
१०	चरः	१६	२५	३१	२३	९	६	५४	५	५५	६	५	क	५०	२०	रा	१°	५५	२	३७	१°	१२	५	४७	५	५८
११	गदः	१७	२६	१	२४	१०	७	१६	५	५५	६	५	क						२	१४	२°	१५	५	४७	५	५७
१२	शुभः	१८	२७	२	२५	११	७	३७	५	५६	६	४	क						१	५१	३°	१६	५	४७	५	५६
१३	मृत्युः	१९	२८	३	२६	१२	७	५८	५	५७	६	३	सिं	४	४२	दि	७	४१	१	२८	४°	१३	५	४८	५	५५
१४	पद्मः	२०	२९	४	२७	१३	८	१९	५	५८	६	२	सिं						१	५	५°	८	५	४८	५	५४
३०	छत्रः	२१	३०	५	२८	१४	८	४०	५	५८	६	२	कं	२५	४९	सा	४	९	०	४१	०	०	५	४९	५	५३

आश्विनकृष्णपक्षः

श्रीसंवत् २०८२ शकः १९४७ (८ से २१ सितम्बर २०२५)। याम्यायनं सौम्यगोलः। वर्षाऋतुः कन्यार्कतः शरदऋतुः। राष्ट्रीय १७ से ... भाद्रपद १९४७। बंग २३ भा. से ५ आश्विन १४३२। मु.१५ से २८ रवि. १४४७। नेपाली २३ भाद्रपद से ५ आश्विन २०८२। शुक्रः पूर्वे।

प्रतिपदा श्राद्धम्। फसली वर्ष सम्वत् १४३३ प्रारम्भः। [(4) ब्रह्मचारी वैष्णवानां महालयश्राद्धम् १२। मूलः दिवा ७/२७ उपरि।

मूलः रात्रौ ७/४७ उपरि। द्वितीया श्राद्धम्। अशून्यशयनव्रतम् २ (चन्द्रोदयः रात्रौ ७/१०)।

भ.३/३३(प्रातः७/९)उपरि। भ.३०/४६(सायं ६/२)यावत्। **संकष्टी गणेश चतुर्थी** ४ व्रतम् चन्द्रोदयः रात्रौ ७/४७। तृतीया श्राद्धम्। शेष नीचे-(1)

मूलः दिवा ४/३८ यावत्। चतुर्थी -पंचमी श्राद्धं अद्यैव। [(3) महालक्ष्मी दर्शनम्। अष्टका श्राद्ध ८। गजगौरी जन्म (मध्याह्ने)।

भरणी श्राद्धम् (गयाश्राद्ध फलम्)। चन्द्र ६ व्रतम् (चन्द्रोदये पूजा चन्द्रोदयः रात्रौ ९/१४)। षष्ठी श्राद्धम्। [(2) सूर्यः (विवरण पृष्ठ ३ पर)।

भ.१२/३७(दिवा १०/२३)उपरि। भ.३८/२५(रात्रौ ९/७)यावत्। सप्तमीश्राद्धम्। सं.उत्तरफल्गुन्यां रविः२५/२२(दिवा ३/५४) वायुनाड़ी तदोरा:-(2)

भानुसप्तमी। अष्टमी श्राद्धम्। **जीवत्पुत्रिका व्रतं** ८ (जिउतिया)। **महालक्ष्मी व्रतम्** ८ (चन्द्रोदयः रात्रौ ११/५)। लक्ष्मीकुण्डे स्नानसमाप्तिः।-(3)

नवमी श्राद्धम्। जीवत्पुत्रिका पारणा प्रातः। मातृनवमी ९ (अविधवाश्राद्धम्)। अन्वष्टकाश्राद्धम् ९। मासान्तः।

भ.२२/२१(दिवा २/४३)उपरि। भ.५०/१९(रात्रिशेषे१/५४)यावत्। सं.कन्यायां रविः५०/३२(रात्रिशेषे२/०)। मु.४५ फलं सुभिक्षता। दशमीश्राद्धम्।

संक्रान्ति पुण्यकालः दिवा ११/५२ यावत्। विश्वकर्मा पूजा। सर्वेषां इन्दिरा एकादशी ११ व्रतम्। एकादशी श्राद्धम्।

गुरुपुष्य योगः दिवा ७।२७ यावत्। एकादशी पारणा दिवा ८/१३ यावत् अथवा दिवा १०/३८ उपरि १/४ यावत्। द्वादशी श्राद्धम्। सन्यासि-यति -(4)

भ.४५/४५(रत्रि शेषे १२/६)उपरि। मूलः। मघाश्राद्धम्। प्रदोषः१३ व्रतम्। त्रयोदशी श्राद्धम्। कलियुगादिः।

भ.१६/२०(दिवा १२/२०)यावत्। मूलः दिवा ८/२७ यावत्। मासशिवरात्रिः१४ व्रतम्। शस्त्रादिहतस्यघातमृतस्य चतुर्दशी श्राद्धम्।

स्नाने-दाने-दर्शे ३०। **सर्वपित्री अमावास्या** (अज्ञाततिथिनामद्यैवश्राद्धम्)। **पितृविसर्जनम्** ३०। **महालयसमाप्तिः**।

ग्र.	१ सोमे मिश्रमानम् ४६।४२ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	४	२२	८	५७	५८	१७
चं.	११	५	१९	६	८४३	११
मं.	५	२७	४५	२९	३९	२६
बु.	४	१७	४७	३९	११५	६
गु.	२	२४	५७	९	९	५१
शु.	३	२२	४१	३	७२	४१
श.	११	४	४९	४२	४	२६व
रा.	१०	२३	३८	९	३	११

ग्र.	२ भौमे मिश्रमानम् ४६।४१ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	४	२३	७	१४	५८	१९
चं.	११	१९	२२	१७	८५४	३३
मं.	५	२८	२४	५५	३९	३०
बु.	४	१९	४२	४६	११४	२९
गु.	२	२५	७	०	९	४५
शु.	३	२३	५३	४५	७२	४५
श.	११	४	४५	१६	४	२७व
रा.	१०	२३	३५	१	३	११

ग्र.	३ बुधे मिश्रमानम् ४६।४० रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	४	२४	५	३३	५८	२१
चं.	०	३	३६	५०	८६२	३४
मं.	५	२९	४	२५	३९	३३
बु.	४	२१	३७	१५	११३	४७
गु.	२	२५	१६	४५	९	३८
शु.	३	२५	६	३०	७२	४९
श.	११	४	४०	४९	४	२८व
रा.	१०	२३	३१	५४	३	११

ग्र.	४ गुरौ मिश्रमानम् ४६।३९ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	४	२५	३	५४	५८	२२
चं.	०	१७	५९	२४	८६६	१०
मं.	५	२९	४३	५८	३९	३७
बु.	४	२३	३१	२	११३	१
गु.	२	२५	२६	२३	९	३१
शु.	३	२६	१९	१८	७२	५२
श.	११	४	३६	२१	४	२९व
रा.	१०	२३	२८	४६	३	११

ग्र.	५ शुक्रे मिश्रमानम् ४६।३८ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	४	२६	२	१६	५८	२४
चं.	१	२	२५	३४	८६४	४१
मं.	६	०	२३	३४	३९	४०
बु.	४	२५	२४	३	११२	१२
गु.	२	२५	३५	५४	९	२५
शु.	३	२७	३२	११	७२	५६
श.	११	४	३१	५१	४	३०व
रा.	१०	२३	२५	३९	३	११

ग्र.	६ शनौ मिश्रमानम् ४६।३८ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	४	२७	०	४०	५८	२६
चं.	१	१६	५०	१६	८५८	३
मं.	६	१	३	१४	३९	४३
बु.	४	२७	१६	१४	१११	२०
गु.	२	२५	४५	१८	९	१८
शु.	३	२८	४५	७	७२	५९
श.	११	४	२७	२१	४	३१व
रा.	१०	२३	२२	३१	३	११

ग्र.	७ रवौ मिश्रमानम् ४६।३७ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	४	२७	५९	६	५८	२८
चं.	२	१	८	१८	८४६	४८
मं.	६	१	४२	५८	३९	४७
बु.	४	२९	७	३४	११०	२६
गु.	२	२५	५४	३६	९	११
शु.	३	२९	५८	६	७३	३
श.	११	४	२२	५०	४	३२व
रा.	१०	२३	१९	२३	३	११

ग्र.	९ सोमे मिश्रमानम् ४६।३६ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	४	२८	५७	३४	५८	३०
चं.	२	१५	१५	६	८३२	१
मं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
बु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
गु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
शु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
श.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
रा.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ग्र.	१० भौमे मिश्रमानम् ४६।३५ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	४	२९	५६	४	५८	३२
चं.	२	२९	७	७	८१५	६
मं.	६	३	२	३४	३९	५३
बु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
गु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
शु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
श.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
रा.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ग्र.	११ बुधे मिश्रमानम् ४६।३४ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	५	०	५४	३६	५८	३४
चं.	३	१२	४२	१४	७९७	२९
मं.	६	३	४२	२७	३९	५६
बु.	५	४	३६	५	१०७	३६
गु.	२	२६	२१	४७	८	४९
शु.	४	३	३७	२५	७३	१३
श.	११	४	९	१३	४	३३व
रा.	१०	२३	१०	१	३	११

ग्र.	१२ गुरौ मिश्रमानम् ४६।३३ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	५	१	५३	१०	५८	३६
चं.	३	२५	५९	४३	७८०	२७
मं.	६	४	२२	२४	४०	०
बु.	५	६	२३	४१	१०६	३८
गु.	२	२६	३०	३६	८	४२
शु.	४	४	५०	३८	७३	१६
श.	११	४	४	४०	४	३३व
रा.	१०	२३	६	५३	३	११

ग्र.	१३ शुक्रे मिश्रमानम् ४६।३२ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	५	२	५१	४५	५८	३८
चं.	४	९	०	१०	७६५	०
मं.	६	५	२	२३	४०	३
बु.	५	८	१०	१९	१०५	३९
गु.	२	२६	३९	१८	८	३४
शु.	४	६	३	५५	७३	२०
श.	११	४	०	७	४	३३व
रा.	१०	२३	३	४५	३	११

ग्र.	१४ शनौ मिश्रमान ४६।३१ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	५	३	५०	२३	५८	३९
चं.	४	२१	४५	१०	७५१	५१
मं.	६	५	४२	२६	४०	६
बु.	५	९	५५	५८	१०४	३९
गु.	२	२६	४७	५३	८	२७
शु.	४	७	१७	१४	७३	२३
श.	११	३	५५	३४	४	३३व
रा.	१०	२३	०	३८	३	११

ग्र.	३० रवौ मिश्रमान ४६।३० रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	५	४	४९	२	५८	४१
चं.	५	४	१७	१	७४१	२२
मं.	६	६	२२	३३	४०	१०
बु.	५	११	४०	३७	१०३	४०
गु.	२	२६	५६	२०	८	१९
शु.	४	८	३०	३७	७३	२६
श.	११	३	५१	१	४	३२व
रा.	१०	२२	५७	३०	३	११

२३ पंक्ति ७ रवौ मिश्रमानम् ४६।३७ दिनम् ३०।३३ अयनांशाः ०।२४।१३।४७

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
४	२	६	४	२	३	११	१०
२७	१	१	२९	२५	२९	४	२३
५९	८	४२	७	५४	५८	२२	१९
६	१८	५८	३४	३६	६	५०	२३
५८/२८	८४६/४८	३९/४७	११०/२६	९/११	७३/३	४/३२व	३/११
		उ	अ	उ	उ	उ	व

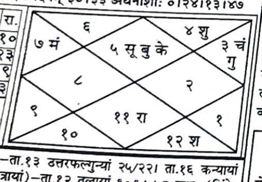

सूर्यः (सिंहे/पूर्वफल्गुन्यां) –ता.१३ उत्तरफल्गुन्यां २५/२२। ता.१६ कन्यायां ५०/३२। ● **भौमः** (कन्यायां/चित्रायां)–ता.१२ तुलायां १०/५५। ● **बुधः** (सिंहे/पूर्वफल्गुन्यां/अस्तः)–ता.१३ उ.फल्गुन्यां २७/३। ता.१५ कन्यायां १४/४६। ता.२० हस्तेषु ४८/४६। ● **गुरुः** (मिथुने/पुनर्वसौ ३ चरणे)–ता.१९ पुनर्वसौ ३ चरणे ५१/२०। ● **शुक्रः** (कर्के/आश्लेषायां)–ता.१४ सिंहे/मघायां ४८/६। ● **शनिः** (मीने/उभायां १ चरणे /वक्री)। ● **राहुः** (कुम्भे/पूभायां २ चरणे)–ता.१४ पूभायां १ चरणे ३४/४८। ● **केतुः** (सिंहे/पूफायां ४ चरणे)–ता.१४ पूफायां ३ चरणे ३४/४८।

ग्रहस्थितिः (ता.८ से २१ सितम्बर २०२५)

जिउतिया व्रत-

इस पक्ष में अष्टमी को जीवत्पुत्रिका व्रत किया जाता है। इससे सन्तान सुखी एवं स्वस्थ रहते हैं। इसी अष्टमी को लक्ष्मीकुण्ड में सोरहिया मेले की समाप्ति पर स्नान होता है।

ग्रहाणां युतिः –

ता.८ शनि चन्द्र योगः रात्रि शेषे १/५३ शनिः ३/५९ दक्षिणे। ता.१६ गुरु चन्द्र योगः सायं ४/३५ गुरुः ४/३४ दक्षिणे। ता.१९ शुक्र चन्द्र योगः सायं ५/१७ शुक्रः ०/४९ दक्षिणे।

(प्रचलित घड़ियों के समय के अनुसार घण्टा-मिनट में) **दैनिकहोरालग्नसारिणी** (लग्न की समाप्ति का समय दिया गया है।)

रा	१ सो		२ मं		३ बु		४ गु		५ शु		६ श		७ र		९ सो		१० मं		रा	११ बु		१२ गु		१३ शु		१४ श		३० र	
सिं	६	२२	६	१८	६	१४	६	१०	६	६	६	२	५	५८	५	५४	५	५०	कं	८	०	७	५६	७	५२	७	४८	७	४४
कं	८	३६	८	३२	८	२८	८	२४	८	२०	८	१६	८	१२	८	८	८	४	तु	१०	१७	१०	१३	१०	९	१०	५	१०	१
तु	१०	५३	१०	४९	१०	४५	१०	४१	१०	३७	१०	३३	१०	२९	१०	२५	१०	२१	वृ	१२	३४	१२	३०	१२	२६	१२	२२	१२	१८
वृ	१	१०	१	६	१	२	१२	५८	१२	५४	१२	५०	१२	४६	१२	४२	१२	३८	ध	२	३९	२	३५	२	३१	२	२७	२	२३
ध	३	१५	३	११	३	७	३	३	२	५९	२	५५	२	५१	२	४७	२	४३	म	४	२४	४	२०	४	१६	४	१२	४	८
म	५	०	४	५६	४	५२	४	४८	४	४४	४	४०	४	३६	४	३२	४	२८	कुं	५	५६	५	५२	५	४८	५	४४	५	४०
सूचना-नीचे दिखाये गये सभी समय रात्रिकालीन हैं।																													
कुं	६	३२	६	२८	६	२४	६	२०	६	१६	६	१२	६	८	६	४	६	०	मी	७	२४	७	२०	७	१६	७	१२	७	८
मी	८	०	७	५६	७	५२	७	४८	७	४४	७	४०	७	३६	७	३२	७	२८	मे	९	२	८	५८	८	५४	८	५०	८	४६
मे	९	३८	९	३४	९	३०	९	२६	९	२२	९	१८	९	१४	९	१०	९	६	वृ	१०	५८	१०	५४	१०	५०	१०	४६	१०	४२
वृ	११	३४	११	३०	११	२६	११	२२	११	१८	११	१४	११	१०	११	६	११	२	मि	१	१२	१	८	१	४	१	०	१२	५६
मि	१	४८	१	४४	१	४०	१	३६	१	३२	१	२८	१	२४	१	२०	१	१६	क	३	३१	३	२७	३	२३	३	१९	३	१५
क	४	७	४	३	३	५९	३	५५	३	५१	३	४७	३	४३	३	३९	३	३५	सिं	५	४६	५	४२	५	३८	५	३४	५	३०

पाक्षिक घटना

ता.८ से ता.१६ व ता.१९ से ता.२१ सितम्बर तक वर्षा योग है। इस पक्ष में- भयंकर बीमारियां जैसे (एड्स) फैलें। भैंस, गाय तथा अन्य चौपायों का भाव तेज होता है, अन्नों के भाव पर भी तेजी का असर, उड़द-मूंग आदि की उपज में कमी, आंधी-तूफान से खाद्यसामग्री का नाश। अच्छी वर्षा।

२४ पंक्ति ३० रवौ मिश्रमानम् ४६।३० दिनम् ३०।८ अयनांशाः ०।२४।१३।४८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
५	५	६	५	२	४	११	१०
४	४	६	११	२६	८	३	२२
४९	१७	२२	४०	५६	३०	५१	५७
२	१	३३	३७	२०	३७	१	३०
५८/४१	७४१/२२	४०/१०	१०३/४०	८/१९	७३/२६	४/३२व	३/११
		उ	अ	उ	उ	उ	व

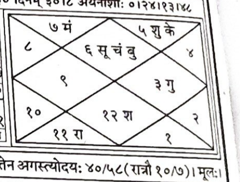

[(1) मेषेचन्द्रः पंचकसमाप्तिश्च सायं ६/१९। ललितादेवी यात्रा। पौराणिकमतेन अगस्त्योदयः ४०/५८(रात्रौ १०/७)। मूलः।

महालय के सम्बन्ध में- मृत्यु के १ वर्ष के उपरान्त तक महालय, भरणी श्राद्ध, मघाश्राद्ध नहीं करना चाहिये-धर्मसिन्धु। सन्यासियों का पिण्ड सहित श्राद्ध सदैव अपराह्ण व्यापिनी द्वादशी को ही करना चाहिये भले ही उनकी मृत्यु तिथि कुछ भी हो। जिनकी प्राकृतिक मृत्यु चतुर्दशी या पूर्णिमा को होती है उनका श्राद्ध द्वादशी अथवा अमावास्या को करना चाहिये। यदि मृत्यु प्राकृतिक न होकर शस्त्र-विष-अग्नि-जल-सींघ वाले पशु-बाघ-सर्प-दुर्घटना आदि से होती है तो उनका श्राद्ध चतुर्दशी को ही करना चाहिये, चाहे उनकी मृत्यु तिथि कुछ भी हो। ध्यान रहे कि आश्विन अधिक मास रहने पर महालय शुद्ध आश्विन कृष्णपक्ष में ही होता है, अधिक में नहीं।

आश्विनशुक्लपक्षः

श्रीसंवत् २०८२ शकः १९४७ (२२ सितम्बर से ७ अक्टूबर २०२५)। याम्यायनं सौम्यगोलः शरदऋतुः। राष्ट्रीय ३१ भाद्रपद से १५ आश्विन १९४७। बंग ६ से २१ आश्विन १४३२। मु.२९ रवि.से १४ रविउस. १४४७। नेपाली ६ से २१ आश्विन २०८२। शुक्रः पूर्वे। (२९)

इ. घ.		ति.	वा.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगाः	अं	रा	बं	मु	फ	स्टै मि.	से	सूर्योदय घं. मि.		सूर्यास्त घं. मि.		चं रा	घ.	प.	स.	घं.	मि.	र क्रां अं	क	चंद्रास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त	
२१	४	१	सो	५२	३२	रा	२°	४९	उफा	१४	४	दि	११	२७	शु	३५	२५	रा	७	५९	किं	२०	५२	बव	५२	३२	श्रीवत्सः	२२	३१	६	२९	१५	९	१	५	५९	६	१							उ०	१८	६	८	५	४९	५	५२
२१	०	२	मं	५६	३६	रा	४°	२७	ह	१९	१२	दि	१	३०	ब्रं	३५	५४	रा	८	११	बा	२४	३४	कौ	५६	३६	सौम्यः	२३	१	७	३०	१६	९	२२	६	०	६	०	कं			रा	२°	३६	द०	६	६	३७	५	४९	५	५१
२०	५७	३	बु	६०	०	स	म	ग्र	चि	२४	५१	दि	३	४६	ऐं	३६	४४	रा	८	३२	तै	२८	५१	ग	६०	०	कालदंड	२४	२	८	१	१७	९	४३	६	१	५	५९	तु	५१	५९				०	२९	७	८	५	५०	५	५०
२०	५३	३	गु	१	५	प्रा	६	१५	स्वा	३०	५०	सा	६	१०	वै	३७	४८	रा	८	५७	ग	१	५	व	३३	२५	स्थिरः	२५	३	९	२	१८	१०	४	६	१	५	५९	तु						०	५२	७	४१	५	५०	५	४८
२०	४९	४	शु	५	४५	दि	८	७	वि	३६	४९	रा	८	३४	वि	३८	५०	रा	९	२२	भ	५	४५	बव	३७	५९	मातंगः	२६	४	१०	३	१९	१०	२५	६	२	५	५८	वृ	२०	१८	दि	१	५८	१	१६	८	१८	५	५०	५	४७
२०	४६	५	श	१०	१२	दि	९	५५	ऽनु	४२	२९	रा	१०	५१	प्री	३९	३६	रा	९	४२	बा	१०	१२	कौ	४२	१५	अमृतः	२७	५	११	४	२०	१०	४५	६	३	५	५७	वृ						१	३९	९	०	५	५१	५	४६
२०	४२	६	र	१४	१७	दि	११	३३	ज्ये	४७	४१	रा	१२°	५६	आ	४०	१	रा	९	५१	तै	१४	१७	ग	४५	५८	काणः	२८	६	१२	५	२१	११	६	६	४	५	५६	ध	४७	४१	रा	१२°	५६	२	२	९	४७	५	५१	५	४५
२०	३८	७	सो	१७	४०	दि	१२	५५	मू	५२	८	रा	२°	४३	सौ	३९	४९	रा	९	४८	व	१७	४०	भ	४८	५८	लुम्बः	२९	७	१३	६	२२	११	२६	६	४	५	५६	ध						२	२६	१०	४०	५	५२	५	४४
२०	३५	८	मं	२०	१६	दि	१	५८	पूषा	५५	४५	रा	४°	१०	शो	३८	५८	रा	९	२८	बव	२०	१६	बा	५१	४	मित्रः	३०	८	१४	७	२३	११	४५	६	५	५	५५	ध						२	४९	११	३७	५	५२	५	४३
२०	३१	९	बु	२१	५३	दि	२	३७	उषा	५८	२१	रा	५°	१२	ऽति	३७	२१	रा	८	४८	कौ	२१	५३	तै	५२	९	वज्रः	१	९	१५	८	२४	१२	५	६	६	५	५४	म	११	२५	दि	१०	२७	३	१२	१२°	३६	५	५२	५	४२
२०	२७	१०	गु	२२	२४	दि	२	५०	श्र	५९	४९	रा	५°	४९	सु	३४	५०	रा	७	४९	ग	२२	२४	व	५२	७	केतुः	२	१०	१६	९	२५	१२	२४	६	७	५	५३	म						३	३६	१°	३७	५	५३	५	४१
२०	२४	११	शु	२१	५०	दि	२	३७	ध	६०	०	स	म	ग्र	धृ	३१	२७	सा	६	२८	भ	२१	५०	बव	५०	५८	धाता	३	११	१७	१०	२६	१२	४३	६	७	५	५३	कुं	३०	२	सा	५	५४	३	५९	२°	३९	५	५३	५	४०
२०	२०	१२	श	२०	६	दि	१	५६	ध/श	०/५९	१०/१६	प्रा/रा	५/५	५८/४०	शू	२७	९	दि	४	४६	बा	२०	६	कौ	४८	४२	प्रवर्धमान	४	१२	१८	११	२७	१३	२	६	८	५	५२	कुं						४	२२	३°	४०	५	५४	५	३९
२०	१६	१३	र	१७	१७	दि	१२	४८	पूभा	५७	३७	रा	४°	५७	गं	२२	०	दि	२	४२	तै	१७	१७	ग	४५	२१	चरः	५	१३	१९	१२	२८	१३	२०	६	९	५	५१	मी	४३	५	रा	११	८	४	४५	४°	४३	५	५४	५	३८
२०	१३	१४	सो	१३	२४	दि	११	१६	उभा	५४	४८	रा	३°	५०	वृ	१५	५९	दि	१२	१९	व	१३	२४	भ	४१	१	गदः	६	१४	२०	१३	२९	१३	३८	६	९	५	५१	मी						५	८	उ५	४	५	५५	५	३७
२०	९	१५	मं	८	३८	दि	९	२२	रे	५१	१४	रा	२°	२५	ध्रु	९	१७	दि	९	३८	बव	८	३८	बा	३५	५२	शुभः	७	१५	२१	१४	३०	१३	५६	६	१०	५	५०	मे	५१	१४	रा	२°	२५	द	३१	उ५	४१	५	५५	५	३६

शारदीयनवरात्रारम्भः। घटस्थापनं दिवा ९/४९ यावत् वा अभिजिन्मुहूर्ते दि.११/२६ उ. दि.१२/१४ या.। शैलपुत्रीदर्शनम्। मातामहश्राद्धम् -(1)
चन्द्रदर्शनम् मु.३० फलं समता, उत्तरोन्नतं शृंगं फलं सुभिक्षम्। ब्रह्मचारिणी दर्शनम्। [(1) (दिवा ८/१४ उपरि दिवा१०/३५ यावत्)।
चन्द्रघण्टा दर्शनम्। ([2) भद्रकाली जन्म। अन्नपूर्णापरिक्रमा दिवा १२/५५ उपरि। महानिशापूजा ८। मूलः रात्रिशेषे २/४३ यावत्।
भ.३३/२५(रात्रौ ७/१२)उपरि। चन्द्रघण्टा दर्शनम्। वैनायकी गणेश चतुर्थी।
भ.५/४५(दिवा८/७)यावत्। कूष्माण्डादेवी दर्शनम्। ललिता ५ (जागरणं मुख्यम्)। उपांग ललिता व्रतम्।

> ध्यान दें- देवी आगमन हाथी पर होने से वर्षा। प्रस्थान मनुष्य पर होने से जनता सुखी।

मूलः रात्रौ १०/५१ उपरि। स्कन्दमाता दर्शनम्। सं.हस्तेषु रविः ३/५२(प्रातः७/२४)। चण्डानाड़ी तदीशः शनिः (शेष विवरण पृ.३ पर)।
मूलः। बिल्वाभिमन्त्रणम्। कात्यायनी दर्शनम्। [(3) अन्नपूर्णा दर्शनम्। पूजाहोमाद्युपोषणं बलिदानादिकञ्च।
भ.१७/४०(दिवा १२/५५)उपरि। भ.४८/५८(रात्रि शेषे१/२७)यावत्। पत्रिकायाःप्रवेशनम्। मूले सरस्वत्यावाहनम्। कालरात्रिदर्शनं। अर्धरात्रौ-(2)
भौमवारयुता महापुण्यप्रदा महाष्टमी। दुर्गा ८। पूषाढ़ासु सरस्वती पूजनम्। **महानवमी। सन्धिपूजा।** अन्नपूर्णापरिक्रमा समाप्तिः दिवा १/५८। -(3)
नवरात्रसमाप्तिः। नवरात्रपारणा दिवा ८/२७ उपरि दिवा २/३७ यावत्। **दुर्गा ९।** सिद्धिदात्री दर्शनम्। उषाढ़ासु सरस्वत्याःपूजाबलिदानंच। मन्वादिः९।
भ.५२/७(रात्रि शेषे २/४४)उपरि। **विजयादशमी।** दशहरा। महात्मागाँधी-लालबहादुर शास्त्री जयन्ती। श्रवणेन सरस्वती विसर्जनम्। शेषनीचे-(4)
भ.२१/५०(दिवा २/३७)यावत्। सर्वेषां पापाङ्कुशा एकादशी ११ व्रतम्। **भरतमिलाप।** कुम्भेचन्द्रः पंचकप्रारम्भश्च सायं ५/५४।
एकादशी पारणा दिवा ८/२५ यावत् अथवा दिवा १०/३६ उपरि १२/५६ यावत्। शनिप्रदोषः १३ व्रतम् । दुग्धद्वादशी। पद्मनाभ १२। द्विदलत्यागारम्भः।
चरयोगः। [(5) ज्येष्ठापत्य नीराजनम्। मूलः रात्रि शेषे ३/५० उपरि।
भ.१३/२४(दिवा ११/१६)उपरि। भ.४१/१(रात्रौ १०/११)यावत्। **शरद पूर्णिमा।** कोजागरी १५। व्रताय १५। रात्रौ लक्ष्मीन्द्रकुबेरादि पूजनम्। -(5)
मेषेचन्द्रः पंचकसमाप्तिश्च रात्रि शेषे २/२५। स्नाने-दाने १५। वाल्मीकि जयन्ती। कार्तिकस्नान-व्रतयमनियमाद्यारम्भः। आकाशदीप दानम्। मूलः।

१ सोमे मिश्रमानम् ४६।२९ | २ भौमे मिश्रमानम् ४६।२८ | ३ बुधे मिश्रमानम् ४६।२७ | ३ गुरौ मिश्रमानम् ४६।२६ | ४ शुक्रे मिश्रमानम् ४६।२५ | ५ शनौ मिश्रमानम् ४६।२४ | ६ रवौ मिश्रमानम् ४६।२३ | ७ सोमे मिश्रमानम् ४६।२२ | ८ भौमे मिश्रमानम् ४६।२१ | ९ बुधे मिश्रमानम् ४६।२० | १० गुरौ मिश्रमानम् ४६।१९ | ११ शुक्रे मिश्रमानम् ४६।१८ | १२ शनौ मिश्रमान ४६।१७ | १३ रवौ मिश्रमानम् ४६।१६ | १४ सोमे मिश्रमान ४६।१५ | १५ भौमे मिश्रमान ४६।१४

(रा. अं. क. वि. गतिः — ग्रहों के सारणी-मान) [illegible]

२५ पंक्ति ६ रवौ मिश्रमानम् ४६।२३ दिनम् २९।४२ अयनांशाः ०।२४।१३।४९

२६ पंक्ति १३ रवौ मिश्रमानम् ४६।१६ दिनम् २९।२६ अयनांशाः ०।२४।१३।५०

(सू. चं. मं. बु. गु. शु. श. रा. सारणी) [illegible]

(कुण्डली) [illegible]

दैनिकहोरालग्नसारणी
(प्रचलित घड़ियों के समय के अनुसार घण्टा-मिनट में) (लग्न की समाप्ति का समय दिया गया है।)

[illegible]

सूचना-नीचे दिखाये गये सभी समय रात्रिकालीन हैं।

पाक्षिक घटना-ता.२२ से ता.३० सितम्बर व ता.१ से ता.३ अक्टूबर तक वर्षा योग है। इस पक्ष में - अनाज के व्यापार में लाभ, चौपायों का विनाश, शासकों में युद्ध, ब्राह्मणादि को पीड़ा, भूकम्प, वर्षा कम, युद्ध व जनता को कष्ट।

[(4) राज्ञांपट्टाभिषेचनं-अश्वगजरथशस्त्रादि-आयुधपूजनं विजययात्रा च विजयमुहूर्ते दि.२।४४ उपरि दि.२।३१ यावत्। विजयादेवी पूजनं। ध्वजारोहणं। बलिनीराजनं। नीलकण्ठ दर्शनं। शमीपूजनं। खञ्जनदर्शनं। अपराजितापूजनं। दुर्गाविसर्जनं। सीमोल्लंघनं। बौद्धावतारः।

ग्रहस्थितिः (ता.२२ सितम्बर से ७ अक्टूबर २०२५)

सूर्यः (कन्यायां/उत्तरफल्गुन्यां) –ता.२७ हस्तेषु ३/५२।● भौमः(तुलायां/चित्रायां)–ता.२२ स्वात्यां १२/३२।● बुधः (कन्यायां/ हस्तेषु/ अस्तः)–ता.२८ चित्रायां ४२/४२। ता.२ तुलायां ५३/४६। ता.५ पश्चिमोदयःसायं ६/३। ता.७ स्वात्यां १४/२४।● गुरुः (मिथुने/पुनर्वसौ ३ चरणे)। ●शुक्रः (सिंहे/मघायां)–ता.२५ पूर्वफल्गुन्यां ४२/३४। ता.६ उत्तरफल्गुन्यां ३२/६।● शनिः (मीने/उभायां १ चरणे/वक्री)–ता.२८ पूभायां ४ चरणे ३९/४४।● राहुः (कुम्भे/पूभायां १ चरणे)।● केतुः (सिंहे/पूफायां ३ चरणे)।

ग्रहाणां युतिः –ता.२२ बुधचन्द्र योगः रात्रौ ७/४३ बुधः २/५३ उत्तरे। ता.२४ भौमचन्द्र योगः रात्रौ ८/२१ भौमः ३/५६ उत्तरे। ता.६ शनिचन्द्र योगः दिवा ८/२९ शनिः ३/४७ दक्षिणे।

३०		तिथि (समाप्तिकाल)							नक्षत्र (समाप्तिकाल)						योग (समाप्तिकाल)						करण (समाप्तिकाल)						आनन्दादि	तारीख					स्टै. अं.		(लोकल घं.मि.)				चं. रा. सं. (प्रवेश काल)						र. क्रां. द.		(स्टैण्डर्ड टाइम घं.मि.)					
																																					सूर्योदय		सूर्यास्त										चंद्रोदय		सूर्योदय		सूर्यास्त	
दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगाः	अं.	रा.	बं.	मु.	फ.	मि.	से.					रा.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	अं.	क.						
२९	५	१/२	बु	१/५३	६/५४	प्रा/रा	७/४	९/४२	अश्वि	४७	५	रा	१२°	४५	व्या/ह	१/५२	५७/९	प्रा/रा	६/३	४२/३३	कौ	३	६	तै/ग	३०/५७	३/०	मृत्युः	८	१६	२२	१५	१	१४	१३	६	११	५	४९	मे						दृ	५४	६	२१	५	५५	५	३५
२९	२	३	गु	५०	२९	रा	२°	७	भ	४२	३२	रा	१०	५७	व	४५	५७	रा	१२°	१९	व	२३	४४	भ	५०	२९	पद्मः	९	१७	२३	१६	२	१४	३०	६	१२	५	४८	वृ	५६	२३	रा	४	२९	६	१७	७	७	५	५६	५	३४
२८	५८	४	शु	४४	१	रा	११	३२	कृ	३७	५६	रा	९	७	सि	३७	४९	रा	९	४	बव	१७	१५	बा	४४	१	छत्रः	१०	१८	२४	१७	३	१४	४६	६	१२	५	४८	वृ						६	३९	७	५८	५	५६	५	३३
२८	५४	५	श	३७	४६	रा	९	३	रो	३३	३१	रा	७	२२	व्य	२९	४९	सा	५	५३	कौ	१०	५४	तै	३७	४६	श्रीवत्सः	११	१९	२५	१८	४	१५	२	६	१३	५	४७	वृ						७	२	८	५७	५	५७	५	३२
२८	५१	६	र	३२	५	रा	६	४६	मृ	२९	३८	सा	५	४८	व	२२	१३	दि	२	५०	ग	४	५६	व/ण	३२/५९	५/३६	सौम्यः	१२	२०	२६	१९	५	१५	१७	६	१४	५	४६	मि	१	२५	प्रा	६	३१	७	२५	१०	०	५	५७	५	३१
२८	४७	७	सो	२७	७	सा	४	४८	आर्द्रा	२६	२८	दि	४	३३	प	१५	९	दि	१२	२	बव	२७	७	बा	५५	१०	कालदंड	१३	२१	२७	२०	६	१५	३२	६	१५	५	४५	मि						७	४७	११	५	५	५८	५	३०
२८	४३	८	मं	२३	१३	दि	३	१५	पुन	२४	१९	दि	३	४२	शि	८	५४	दि	९	३२	कौ	२३	१३	तै	५१	५०	स्थिरः	१४	२२	२८	२१	७	१५	४६	६	१५	५	४५	क	९	४१	दि	९	५०	८	९	१२°	९	५	५८	५	२९
२८	४०	९	बु	२०	२७	दि	२	९	पु	२३	२०	दि	३	१९	सि/सा	३/५५	३१/४३	प्रा/रा	७/५	२३/४१	ग	२०	२७	व	४९	४५	मातंगः	१५	२३	२९	२२	८	१६	०	६	१६	५	४४	क						८	३२	१°	१०	५	५९	५	२८
२८	३६	१०	गु	१९	३	दि	१	३६	श्ले	२३	४०	दि	३	२७	शुभ	५६	३	रा	४°	२४	भ	१९	३	बव	४९	०	अमृतः	१६	२४	३०	२३	९	१६	१३	६	१७	५	४३	सिं	२३	४०	दि	३	२७	८	५४	२°	८	५	५९	५	२७
२८	३३	११	शु	१८	५८	दि	१	३५	म	२५	१६	सा	४	७	शु	५३	५१	रा	३°	३२	बा	१८	५८	कौ	४९	३६	काणः	१७	२५	३१	२४	१०	१६	२६	६	१७	५	४३	सिं						९	१६	३°	३	६	०	५	२६
२८	२९	१२	श	२०	१३	दि	२	५	पूफा	२८	१०	सा	५	१६	ब्रं	५२	३७	रा	३°	३	तै	२०	१३	ग	५१	२५	लुम्बः	१८	२६	१	२५	११	१६	३८	६	१८	५	४२	कं	४४	४	रा	११	३७	९	३८	३°	५५	६	०	५	२५
२८	२६	१३	र.	२२	३७	दि	३	३	उफा	३२	८	रा	६	५२	ऐं	५२	११	रा	२°	५३	व	२२	३७	भ	५४	१९	मित्रः	१९	२७	२	२६	१२	१६	४९	६	१९	५	४१	कं						९	५९	४°	४७	६	१	५	२५
२८	२२	१४	सो	२६	१	सा	४	२५	ह	३७	२	रा	८	५०	वै	५२	२५	रा	२°	५९	श	२६	१	च	५७	३९	वज्रः	२०	२८	३	२७	१३	१७	०	६	२०	५	४०	कं						१०	२१	०	०	६	१	५	२४
२८	१९	३०	मं	२९	१७	सा	५	४५	चि	४२	३१	रा	११	२	वि	५३	४	रा	३°	१६	ना	२९	१७	किं	६०	०	ध्वांक्षः	२१	२९	४	२८	१४	१७	११	६	२०	५	४०	तु	९	४०	दि	९	५४	१०	४३	०	०	६	२	५	२३

कार्तिककृष्णपक्षः

श्रीसंवत् २०८२ शकः १९४७ (८ से २१ अक्टूबर २०२५)। याम्यायनं सौम्यगोलः (तुलार्कतः याम्यगोलः) शरदऋतुः। [illegible]
२९ आश्विन १९४७। बंग २२ आ. से ४ कार्ति. १४३२। मु.१५ से २८ रबिउ. १४४७। नेपाली २२ आश्विन से ५ कार्ति. २०८२। [illegible]

मूलः रात्रिशेषे १२/४५ यावत्। कार्तिके द्विदलंत्यजेत्। तुलसीदलेन श्रीविष्णुं प्रपूजयेत्। अशून्यशयनव्रतं २ चन्द्रोदयेपूजा (रात्रौ ६/२१)।

भ.२३/४४ (दि.३/२६)उ.। भ.५०/२९(रात्रौ २/७)या.।

[(1) पुण्यकालः दिवा ७/५६ उपरि सूर्यास्तं यावत्। सायं गोवत्सक्रीडनं [illegible]

करक (करवा) सं. गणेश चतुर्थी व्रतम् चन्द्रोदयः रात्रौ ७/५८। सं.चित्रायां रविः३६/८(रात्रौ ८/२३)। चण्डानाड़ी तदीशःशनि (विवरण पृ [illegible])

श्रीवत्सयोगः।

करवा चौथ के चन्द्रोदय- दिल्ली ८/१४, मुम्बई ८/५६, लखनऊ ८/३, प्रयागराज ८/३, अयोध्या [illegible] सुलतानपुर ८/०, सतना ८/९, जबलपुर ८/१७, रीवा ८/७, कटनी [illegible]

भ.३२/५(सायं ६/४६) उपरि। भ.५९/३६ (रात्रि शेषे ५/४७) यावत्।

अहोई अष्टमी ८। कालिका पूजनम्। दीप अष्टमी (चन्द्रोदयः रात्रौ ११/५)।

राधाष्टमी। अरुणोदये राधाकुण्डेस्नानम् (मथुरा)।

भ.४९/४५(रात्रि शेषे १/५३)उपरि। मूलः दिवा ३/१९ उपरि।

[(4) निशीथेमहाकालीपूजा (निशीथकालः रात्रौ ११/१६ [illegible] रात्रि शेषे १२/७ यावत्)। चतुर्वर्तियुक्तयमाय दीपम् १४। उल्कादानं दीपदानञ्च प्रदोषे ३०। शेषरात्रौदरिद्रनिस्सारणम्।

भ.१९/३(दिवा १/३६)यावत्। मूलः। मासान्तः।

[(2) प्रदोषे निशामुखे यमायापमृत्युवारक दीपदानम्। द्वादश्यादिपञ्चसु नीरा[illegible]

मूलः सायं ४/७ यावत्। सर्वेषां रम्भा एकादशी ११ व्रतम्। गोवत्स द्वादशी। सं.तुलायां रविः१९/५१ (दिवा १/५६)। मु.३० फलं समता। संक्रान्ति -(1)

एकादशी पारणा दिवा ८/१७ यावत् अथवा दिवा १०/३३ उपरि १२/५० यावत्। शनिप्रदोषः१३ व्रतम्। धनत्रयोदशी (धनतेरस)। धन्वन्तरी १३। -(2)

भ.२२/३७ (दिवा ३/३)उपरि। भ.५४/१९ (रात्रि शेषे ३/४५)यावत्। नरक १४ निमित्त स्नानं (चन्द्रोदये रा.शे.४/४७)। शेष विवरण नीचे देखें -(3)

अत्रारुणोदयकाले हनुमज्जन्मदर्शनञ्च १४। प्रातःयमभीष्मयोःतर्पणम्। **लक्ष्मीपूजनम् ३०। दीपावली ३०।** प्रदोषे इन्द्र गणेशकुबेरादि पूजनम्। -(4)

स्नाने-दाने-दर्शे भौमवती ३०। गोत्रिरात्रि व्रत समाप्तिः। जैन २५५२ व गुजराती सम्वत् २०८२ प्रारम्भः।

तिथि	१ बुधे मिश्रमानम् ४६।१३						३ गुरौ मिश्रमानम् ४६।१२						४ शुक्रे मिश्रमानम् ४६।१०						५ शनौ मिश्रमानम् ४६।९						६ रवौ मिश्रमानम् ४६।८						७ सोमे मिश्रमानम् ४६।७						८ भौमे मिश्रमानम् ४६।६					
ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	५	२१	३१	२०	५९	१६	५	२२	३०	३५	५९	१८	५	२३	२९	५३	५९	२०	५	२४	२९	१३	५९	२२	५	२५	२८	३५	५९	२४	५	२६	२७	५९	५९	२६	५	२७	२७	२५	५९	२८
चं.	०	१३	६	५६	८६५	१	०	२७	३१	५७	८६६	१०	१	११	५८	७	८६२	३	१	२६	२०	१०	८५२	५७	२	१०	३३	७	८३९	४५	२	२४	३२	५२	८२३	४५	३	८	१६	३७	८०६	२५
मं.	६	१७	५२	४१	४१	५	६	१८	३३	४६	४१	८	६	१९	१४	५५	४१	११	६	१९	५६	६	४१	१५	६	२०	३७	२१	४१	१८	६	२१	१८	३९	४१	२१	६	२२	०	०	४१	२४
बु.	६	८	५६	५२	८८	४४	६	१०	२५	३६	८७	५९	६	११	५३	३५	८७	१४	६	१३	२०	४९	८६	२८	६	१४	४७	१६	८५	४०	६	१६	१२	५६	८४	५१	६	१७	३७	४८	८४	०
गु.	२	२८	५९	१	५	५३	२	२९	४	५४	५	४४	२	२९	१०	३८	५	३४	२	२९	१६	१३	५	२५	२	२९	२१	३७	५	१५	२	२९	२६	५२	५	५	२	२९	३१	५८	४	५५
शु.	४	२९	२५	४४	७४	१४	५	०	३९	५९	७४	१७	५	१	५४	१५	७४	१९	५	३	८	३५	७४	२२	५	४	२२	५६	७४	२४	५	५	३७	२०	७४	२६	५	६	५१	४६	७४	२८
श.	११	२	३६	४१	४	४व	११	२	३२	३८	४	१व	११	२	२८	३७	३	५८व	११	२	२४	३९	३	५५व	११	२	२०	४४	३	५१व	११	२	१६	५२	३	४८व	११	२	१३	४	३	४५व
रा.	१०	२२	४	२१	३	११	१०	२२	१	१३	३	११	१०	२१	५८	६	३	११	१०	२१	५४	५८	३	११	१०	२१	५१	५१	३	११	१०	२१	४८	४३	३	११	१०	२१	४५	३५	३	११

तिथि	९ बुधे मिश्रमानम् ४६।५						१० गुरौ मिश्रमानम् ४६।३						११ शुक्रे मिश्रमानम् ४६।२						१२ शनौ मिश्रमानम् ४६।१						१३ रवौ मिश्रमानम् ४६।०						१४ सोमे मिश्रमान ४५।५८						३० भौमे मिश्रमान [illegible]					
ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	५	२८	२६	५३	५९	३०	५	२९	२६	२३	५९	३२	६	०	२५	५५	५९	३४	६	१	२५	२९	५९	३६	६	२	२५	६	५९	३८	६	३	२४	४४	५९	४०	६	४	२४	२४	५९	[illegible]
चं.	३	२१	४३	२	७८९	६	४	४	५२	८	७७२	५७	४	१७	४५	५	७५८	४६	५	०	२३	५१	७४७	३	५	१२	५०	५४	७३८	४	५	२५	८	५९	७३१	५३	६	७	२०	५२	७२८	[illegible]
मं.	६	२२	४१	२४	४१	२७	६	२३	२२	५१	४१	३१	६	२४	४	२२	४१	३४	६	२४	४५	५६	४१	३७	६	२५	२७	३३	४१	४०	६	२६	९	१३	४१	४३	६	२६	५०	५६	[illegible]	[illegible]
बु.	६	१९	१	४८	८३	६	६	२०	२४	५४	८२	९	६	२१	४७	३	८१	९	६	२३	८	११	८०	१	६	२४	२८	१२	७८	४९	६	२५	४७	२	७७	३१	६	२७	४	३३	७६	[illegible]
गु.	२	२९	३६	५३	४	४५	२	२९	४१	३८	४	३५	२	२९	४६	१३	४	२५	२	२९	५०	३८	४	१५	२	२९	५४	५३	४	४	२	२९	५८	५८	३	५४	३	०	२	५२	३	[illegible]
शु.	५	८	६	१५	७४	३१	५	९	२०	४५	७४	३३	५	१०	३५	१८	७४	३५	५	११	४९	५३	७४	३७	५	१३	४	३०	७४	३९	५	१४	१९	१०	७४	[illegible]	५	१५	३३	५१	७४	[illegible]
श.	११	२	९	२०	३	४१व	११	२	५	३९	३	३७व	११	२	२	२	३	३३व	११	१	५८	२९	३	२९व	११	१	५४	५९	३	२५व	११	१	५१	३४	३	२१व	११	१	४८	१३	३	[illegible]
रा.	१०	२१	४२	२८	३	११	१०	२१	३९	२०	३	११	१०	२१	३६	१३	३	११	१०	२१	३३	५	३	११	१०	२१	२९	५७	३	११	१०	२१	२६	५०	३	११	१०	२१	२३	४२	३	११

२७ पंक्ति ६ रवौ मिश्रमानम् ४६।८ दिनम् २८।५१ अयनांशाः ०।२४।१३।५१

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
५	२	६	६	२	५	११	१०
२५	१०	२०	१४	२९	४	२	२१
२८	३३	३७	४७	२१	२२	२०	५१
३५	७	२१	१६	३७	५६	४४	५१
५९/२४	८३९/४५	४१/१८	८५/४०	५/१५	७४/२४	३/५१व	३/११
		ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	व

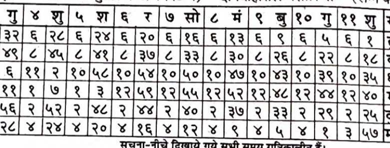

(ता.२० अक्टूबर को)

लक्ष्मीपूजन मुहूर्त

वृषलग्न-सायं ६/५१ से रात ८/४७ तक

और

सिंहलग्न- देररात १/२० से रात ३/३५ तक।

ग्रहस्थितिः (ता.८ से २१ अक्टूबर) २०२५

सूर्यः (कन्यायां/हस्तेषु) –ता.१० चित्रायां ३६/८। ता.१७ तुलायां १९/५१। ●**भौमः**(तुलायां/स्वात्यां)–ता.११ विशाखायां ५१/४५। ● **बुधः** (तुलायां/स्वात्यां)–ता.१६ विशाखायां २७/४९। ● **गुरुः** (मिथुने/पुन.३च.)–ता.२१ पुन.४/कर्के ०/४७। ● **शुक्रः** (सिंहे/उफायां)–ता.९ कन्यायां १३/५०। ता.१७ हस्तेषु १७/३३। ● **शनिः** (मीने/पूभायां ४च./वक्री)। ● **राहुः** (कुम्भे/पूभायां१च.)। ● **केतुः** (सिंहे/पूफायां३च.)।

ग्रहाणां युतिः –ता.१३ गुरु चन्द्र योगः रात्रिशेषे ४/१ गुरुः ४/१७ दक्षिणे। ता.१९ शुक्र चन्द्र योगः रात्रि शेषे ३/१० शुक्रः ३/४१ उत्तरे। ता.२१ बुध भौम योगः दिवा ११/३० बुधः २/८ दक्षिणे।

(प्रचलित घड़ियों के समय के अनुसार घण्टा-मिनट में) **दैनिकहोरालग्नसारिणी** (लग्न की समाप्ति का समय दिया गया है।)

रा	१	बु	३	गु	४	शु	५	श	६	र	७	सो	८	मं	९	बु	१०	गु	११	शु	रा	१२	श	१३	र	१४	सो	३०	मं
कं	६	३६	६	३२	६	२८	६	२४	६	२०	६	१६	६	१३	६	९	६	५	६	१	तु	८	१४	८	१०	८	६	८	२
तु	८	५३	८	४९	८	४५	८	४१	८	३७	८	३३	८	३०	८	२६	८	२२	८	१८	वृ	१०	३१	१०	२७	१०	२३	१०	१९
वृ	११	१०	११	६	११	२	१०	५८	१०	५४	१०	५०	१०	४७	१०	४३	१०	३९	१०	३५	ध	१२	३६	१२	३२	१२	२८	१२	२४
ध	१	१५	१	११	१	७	१	३	१२	५९	१२	५५	१२	५२	१२	४८	१२	४४	१२	४०	म	२	२१	२	१७	२	१३	२	९
म	३	०	२	५६	२	५२	२	४८	२	४४	२	४०	२	३७	२	३३	२	२९	२	२५	कुं	३	५३	३	४९	३	४५	३	४१
कुं	४	३२	४	२८	४	२४	४	२०	४	१६	४	१२	४	९	४	५	४	१	३	५७	मी	५	२१	५	१७	५	१३	५	९

सूचना-नीचे दिखाये गये सभी समय रात्रिकालीन हैं।

मी	६	०	५	५६	५	५२	५	४८	५	४४	५	४०	५	३७	५	३३	५	२९	५	२५	मे	६	५९	६	५५	६	५१	६	४७
मे	७	३८	७	३४	७	३०	७	२६	७	२२	७	१८	७	१५	७	११	७	७	७	३	वृ	८	५५	८	५१	८	४७	८	४३
वृ	९	३४	९	३०	९	२६	९	२२	९	१८	९	१४	९	११	९	७	९	३	८	५९	मि	११	९	११	५	११	१	१०	५७
मि	११	४८	११	४४	११	४०	११	३६	११	३२	११	२८	११	२५	११	२१	११	१७	११	१३	क	१	२८	१	२४	१	२०	१	१६
क	२	७	२	३	१	५९	१	५५	१	५१	१	४७	१	४४	१	४०	१	३६	१	३२	सिं	३	४३	३	३९	३	३५	३	३१
सिं	४	२२	४	१८	४	१४	४	१०	४	६	४	२	३	५९	३	५५	३	५१	३	४७	कं	५	५७	५	५३	५	४९	५	४५

पाक्षिक घटना-ता.८ से ता.१० व ता.१७ से ता.२१ अक्टूबर को वर्षा योग है। (तिथि, ग्रहचार, ग्रहोदयास्त, संक्रान्ति के कारण इस पक्ष में)- तृण संग्रह से लाभ, चौपायों को दुख, वर्षा थोड़ी, जौ-गेहूँ में तेजी, कपास महंगा, जनता अन्न धन से सुखी किन्तु कहीं रोगों की अधिकता व अन्नों की कमी, अधिकारियों से कष्ट। घोर भय, सर्वत्र दुर्भिक्ष।

गुरु राश्यन्तर फल- कर्क में गुरु के जाने से आषाढ़ नामक वर्ष व कम्वल नामक मेघ होता है जिससे पीड़ा, गो-सेवक वर्ग को शस्त्र-अग्नि का भय, बर्तन और फूल के व्यापार में लाभ, पूर्व-दक्षिण में वर्षा, कार्तिक-फाल्गुन में धान्य महंगे। पश्चिम, वायव्य, सिन्धुदेश, उत्तर में चौपायों का नाश, मृगों को दुःख, दुर्भिक्ष। सोना-चांदी-तांबा-रेशम-मोती-द्रव्य-मूंगा-अन्न [illegible] चतुराई की बातों से बिके। मजीठ, श्वेत वस्त्र सस्ते। गेहूँ-चावल-तेल-घी-लवण-शक्कर-उर्द महंगे। पापवृत्ति बढ़े। रेशमी वस्त्र, [illegible] लौंग, मिर्च के व्यापार से गर्मियों में लाभ। वर्षा काल में महावर्षा, सब धान्य सस्ते।

२८ पंक्ति १३ रवौ मिश्रमानम् ४६।० दिनम् २८।२६ अयनांशाः ०।२४।१३।५२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
६	५	६	६	२	५	११	१०
२	१२	२५	२४	२९	१३	१	२१
२५	५०	२७	२८	५४	४	५४	२९
६	५४	३३	१२	५३	३०	५९	५७
५९/३८	७३८/४	४१/४०	७८/४९	४/४	७४/३९	३/२५व	३/११
		ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	व

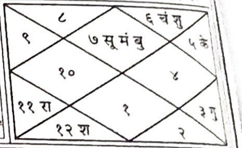

[(3) चन्द्रोदय के समय गुडमार, चिरचिटा या लटजीरा की जड़ों को हाथ में लेकर भ्रमण करें, तिल का तेल शरीर में लगा कर स्नान करें। इससे रोगों का नाश होता है। यमपंचकारम्भः। कामेश्वरी-गौतमेश्वर जयन्ती १३ (काश्यां)। गोत्रिरात्रिव्रतारम्भः। मासशिवरात्रिः। [illegible]

कार्तिकशुक्लपक्षः

श्रीसंवत् २०८२ शकः १९४७ (२२ अक्टूबर से ५ नवम्बर २०२५)। याम्यायने याम्यगोलः शरदऋतुः। राष्ट्रीय ३० आश्विन से १४ कार्तिक १९४७। बंग ५ से ११ कार्तिक १४३२। मु.२९ रवि. से १३ जमादु. १४४७। नेपाली ६ से २० कार्तिक २०८२। शुक्रः पूर्वे।

दि. घ.	मा. प.	ति.	वा.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	आनन्दादि योगाः	अं	रा	बं	मु	फ	स्टै मि	अं से	सूर्योदय (लोकल) घं.	मि.	सूर्यास्त (लोकल) घं.	मि.	चं रा	प्रवेश घ	प	स	घं	मि	र क्रां अं	क	चंद्रास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.
२८	१५	१	बु	३४	१६	रा	७	४४	स्वा	४८	२४	रा	१*	२४	प्री	५३	५९	रा	३*	३८	किं	१	४६	बव	३४	१६	घूम्रः	२२	३०	५	२९	१५	१७	२०	६	२१	५	३९	तु						द ११	४	५	४२	६	२	५	२२
२८	१२	२	गु	३९	१६	रा	९	४५	वि	५४	२०	रा	३*	४७	आ	५४	५५	रा	४*	१	बा	६	४६	कौ	३९	१६	प्रवर्धमान	२३	१	६	३०	१६	१७	२९	६	२२	५	३८	वृ	३७	५१	रा	९	११	११	२५	६	१७	६	३	५	२१
२८	८	३	शु	४३	४६	रा	११	३४	ऽनु	६०	०	स	म	ग्र	सौ	५५	४१	रा	४*	२१	तै	११	३१	ग	४३	४६	रक्षः	२४	२	७	१	१७	१७	३८	६	२२	५	३८	वृ						११	४६	६	५८	६	४	५	२०
२८	५	४	श	४७	५५	रा	१*	१४	ऽनु	०	५	प्रा	६	६	शो	५६	९	रा	४*	३२	व	१५	५१	भ	४७	५५	अमृतः	२५	३	८	२	१८	१७	४५	६	२३	५	३७	वृ						१२	७	७	४३	६	४	५	२०
२८	१	५	र	५१	२५	रा	२*	३८	ज्ये	५	२२	दि	८	१४	ऽति	५६	४	रा	४*	३१	बव	१९	४०	बा	५१	२५	काणः	२६	४	९	३	१९	१७	५२	६	२४	५	३६	ध	५	२२	दि	८	१४	१२	२७	८	३३	६	५	५	१९
२७	५८	६	सो	५४	८	रा	३*	४४	मू	१०	१	दि	१०	५	सु	५५	२४	रा	४*	१५	कौ	२२	४६	तै	५४	८	लुम्बः	२७	५	१०	४	२०	१७	५९	६	२४	५	३६	ध						१२	४८	९	२७	६	५	५	१८
२७	५४	७	मं	५५	५१	रा	४*	२६	पूषा	१३	४८	दि	११	३७	धृ	५३	५६	रा	३*	४१	ग	२५	०	व	५५	५१	मित्रः	२८	६	११	५	२१	१८	४	६	२५	५	३५	म	२९	३५	सा	५	५६	१३	८	१०	२५	६	६	५	१७
२७	५१	८	बु	५६	३३	रा	४*	४३	उषा	१६	४०	दि	१२	४६	शू	५१	४०	रा	२*	४६	भ	२६	१२	बव	५६	३३	वज्रः	२९	७	१२	६	२२	१८	९	६	२६	५	३४	म						१३	२८	११	२३	६	६	५	१७
२७	४८	९	गु	५६	३	रा	४*	३२	श्र	१८	२५	दि	१	२९	गं	४८	२९	रा	१*	३१	बा	२६	१८	कौ	५६	३	केतुः	३०	८	१३	७	२३	१८	१३	६	२६	५	३४	कुं	४८	५६	रा	१	४१	१३	४८	१२*	२३	६	७	५	१६
२७	४५	१०	शु	५४	२३	रा	३*	५३	ध	१९	४	दि	१	४६	वृ	४४	२३	रा	११	५४	तै	२५	१३	ग	५४	२३	धाता	३१	९	१४	८	२४	१८	१६	६	२७	५	३३	कुं						१४	७	१*	२२	६	८	५	१५
२७	४१	११	श	५१	३७	रा	२*	४६	श	१८	३८	दि	१	३५	ध्रु	३९	२६	रा	९	५५	व	२३	०	भ	५१	३७	आनन्दः	१	१०	१५	९	२५	१८	१९	६	२८	५	३२	कुं						१४	२६	२*	२३	६	८	५	१५
२७	३८	१२	र	४७	४४	रा	१*	१४	पूभा	१७	४	दि	१२	५९	व्या	३३	३५	रा	७	३५	बव	१९	४०	बा	४७	४४	चरः	२	११	१६	१०	२६	१८	२०	६	२८	५	३२	मी	२	३८	प्रा	७	१२	१४	४५	३*	२४	६	९	५	१४
२७	३५	१३	सो	४२	५५	रा	११	२०	उभा	१४	३०	दि	११	५८	ह	२६	५७	सा	४	५७	कौ	१५	२०	तै	४२	५५	गदः	३	१२	१७	११	२७	१८	२१	६	२९	५	३१	मी						१५	४	४*	२९	६	१०	५	१३
२७	३२	१४	मं	३७	२४	रा	९	७	रे	११	८	दि	१०	३७	व	१९	४३	दि	२	४	ग	१०	१०	व	३७	२४	शुभः	४	१३	१८	१२	२८	१८	२१	६	३०	५	३०	मे	११	८	दि	१०	३७	१५	२३	५*	३८	६	१०	५	१३
२७	२८	१५	बु	३१	१८	रा	६	४२	अश्वि	७	४	दि	९	१	सि	११	५६	दि	१०	५८	भ	४	२१	बव/बा	३१/५८	१८/७	मृत्युः	५	१४	१९	१३	२९	१८	२०	६	३०	५	३०	मे						१५	४१	उ४	५४	६	११	५	१२

अन्नकूट-गोवर्धनपूजा-मार्गपालीबंधनं-अभ्यंगस्नानं-नववस्त्रादिधारणं-नारीकर्तृकनीराजनम्। बलिपूजा-गोक्रीड़ा। यष्टिकाकर्षणं-सायंमंगलमालिका।
भ्रातृद्वितीया (भइया दूज)। यम२। चित्रगुप्तपूजनम्। भगिनीगृहेभोजनम्। चन्द्रदर्शनम् मु. ४५ फलं सुभिक्षता, उत्तरोन्नतं शृंगं फलं सुभिक्षम्। -(1)
सं.स्वात्यां रविः २/३ (प्रातः ६/५३)। चण्डानाड़ी तदीशः शनिः (शेष विवरण पृ.३ पर)।
भ.१५/५१ (दिवा १२/२४) उपरि। भ.४७/५५ (रात्रि शेषे १/१४) यावत्। मूलः प्रातः ६/६ उपरि। वैनायकी गणेश चतुर्थी।
रविषष्ठी व्रतारम्भः। सौभाग्य पंचमी। मूलः।
मूलः दिवा १०/५ यावत्। रविषष्ठीव्रतम् ६ (डाला छठ)। अद्य दिनमुपोष्य सायंकालीनार्घ्यमत्र विहितम्।
भ.५५/५१ (रात्रि शेषे ४/२६) उपरि। रविषष्ठिव्रतिनां पारणा (अरुणोदये अर्घ्यं दत्वा पारणाच सूर्यव्रतिनाम्)। कल्पादिः ७।
भ.२६/१२ (दिवा ४/३५) यावत्। गोपाष्टमी ८। अयोध्या-मथुरा परिक्रमा प्रारम्भः रात्रि शेषे ४/४३। [(2) रात्रि शेषे ४/३२। विष्णुवैवाहिक त्रिरात्रव्रतारम्भः।
कुम्भेचन्द्रः पंचकप्रारम्भश्च रात्रि शेषे १/४१। कृतयुगादिः। अक्षय९। धात्री (आंवला) पूजनम्। कूष्माण्ड ९मी। अयोध्या-मथुरा परिक्रमा समाप्तिः -(2)
अयोध्यायां पंचक्रोशीयात्रारम्भः रात्रिशेषे ३/५३। भीष्मपंचकव्रतारम्भः। [(3) चातुर्मास्यव्रत समाप्तिः। विष्णुप्रबोधोत्सवः। विष्णुत्रिरात्रि व्रत समाप्तिः।
भ.२३/० (दिवा३/२०) उपरि। भ.५१/३७ (रात्रि शेषे२/४६) यावत्। सर्वेषां प्रबोधिनी एकादशी व्रतम्। अयोध्या पंचक्रोशीयात्रा समाप्तिः रा.शे.२/४६। -(3)
एकादशी पारणा (निर्णय नीचे देखें)। तुलसी विवाहः १२। द्विदलदानम्। मन्वादिः १२।
मूलः दिवा ११/५८ उपरि। सोमप्रदोषः १३ व्रतम्। वैकुण्ठ १४व्र., महाविष्णुपूजा निशीथे रात्रौ ११/१७ उ. रात्रौ १२/९ यावत् (शेष विवरण नीचे)। -(4)
भ.३७/२४ (रात्रौ ९/७) उपरि। मेषेचन्द्रः पंचकसमाप्तिश्च दिवा १०/३७ यावत्। काशीविश्वेश्वर प्रतिष्ठादिनम् १४। वैकुंठ१४ पारणा प्रातः। मूलः।
भ.४/२१ (दिवा ७/५५) यावत्। मूलः दिवा ९/१ यावत्। **कार्तिकीपूर्णिमा १५ (देव दीपावली)। गुरुनानक जयन्ती।** शेष विवरण नीचे -(5)

[(1) वस्त्रादिभिः भगिनी पूजनं। यमुनास्नानम्। अपराह्णे यमतर्पणम्। यमधर्मेश्वर पूजनम्। यमायार्घ्यदानम्। यमपंचक समाप्तिः।

ग्र.	१ बुधे मिश्रमानम् ४५।५६ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		२ गुरौ मिश्रमानम् ४५।५४ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		३ शुक्रे मिश्रमानम् ४५।५३ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		४ शनौ मिश्रमानम् ४५।५१ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		५ रवौ मिश्रमानम् ४५।५० रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	६	५	२४	६	५९	४४	६	६	२३	५०	५९	४६	६	७	२३	३६	५९	४८	६	८	२३	२४	५९	५०	६	९	२३	१४	५९	५२
चं.	६	१९	२९	१८	७२७	३७	७	१	३६	५४	७२९	१६	७	१३	४६	११	७३३	१७	७	२५	५९	२७	७३९	२८	८	८	१८	५५	७४७	४२
मं.	६	२७	३२	४३	४१	५०	६	२८	१४	३३	४१	५३	६	२८	५६	२५	४१	५६	६	२९	३८	२१	४१	५९	७	०	२०	२१	४२	२
बु.	६	२८	२०	३८	७४	३१	६	२९	३५	८	७२	४७	७	०	४७	५५	७०	५३	७	१	५८	४८	६८	४७	७	३	७	३५	६६	२९
गु.	३	०	६	३५	३	३३	३	०	१०	८	३	२२	३	०	१३	३०	३	१२	३	०	१६	४२	३	१	३	०	१९	४३	२	५०
शु.	५	१६	४८	३४	७४	४५	५	१८	३	१९	७४	४७	५	१९	१८	६	७४	४९	५	२०	३२	५५	७४	५१	५	२१	४७	४६	७४	५२
श.	११	१	४४	५६	३	१२व	११	१	४१	४४	३	८व	११	१	३८	३६	३	३व	११	१	३५	३३	२	५९व	११	१	३२	३४	२	५४व
रा.	१०	२१	२०	३५	३	११	१०	२१	१७	२७	३	११	१०	२१	१४	२०	३	११	१०	२१	११	१२	३	११	१०	२१	८	४	३	११

ग्र.	६ सोमे मिश्रमानम् ४५।४९ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		७ भौमे मिश्रमानम् ४५।४७ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		८ बुधे मिश्रमानम् ४५।४६ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		९ गुरौ मिश्रमानम् ४५।४४ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		१० शुक्रे मिश्रमानम् ४५।४३ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	६	१०	२३	७	५९	५४	६	११	२३	०	५९	५६	६	१२	२२	५६	५९	५८	६	१३	२२	५४	६०	०	६	१४	२२	५४	६०	२
चं.	८	२०	४६	३८	७५७	५०	९	३	२४	२८	७६९	४०	९	१६	१४	८	७८३	१	९	२९	१७	९	७९७	३१	१०	१२	३४	४०	८१२	४३
मं.	७	१	२	२३	४२	५	७	१	४४	२८	४२	९	७	२	२६	३७	४२	१२	७	३	८	४९	४२	१५	७	३	५१	४	४२	१८
बु.	७	४	१४	४	६३	५६	७	५	१८	०	६१	८	७	६	१९	८	५८	३	७	७	१७	११	५४	३९	७	८	११	४९	५०	५४
गु.	३	०	२२	३३	२	३९	३	०	२५	१२	२	२८	३	०	२७	४०	२	१७	३	०	२९	५७	२	६	३	०	३२	३	१	५५
शु.	५	२३	२	३८	७४	५४	५	२४	१७	३२	७४	५६	५	२५	३२	२८	७४	५८	५	२६	४७	२६	७४	५९	५	२८	२	२५	७५	१
श.	११	१	२९	४१	२	४९व	११	१	२६	५२	२	४४व	११	१	२४	८	२	३९व	११	१	२१	२९	२	३४व	११	१	१८	५५	२	२९व
रा.	१०	२१	४	५७	३	११	१०	२१	१	४९	३	११	१०	२०	५८	४२	३	११	१०	२०	५५	३४	३	११	१०	२०	५२	२६	३	११

ग्र.	११ शनौ मिश्रमानम् ४५।४१ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		१२ रवौ मिश्रमानम् ४५।४० रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		१३ सोमे मिश्रमान ४५।३८ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		१४ भौमे मिश्रमान ४५।३६ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		१५ बुधे मिश्रमान ४५।३५ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	६	१५	२२	५५	६०	३	६	१६	२२	५९	६०	५	६	१७	२३	४	६०	७	६	१८	२३	११	६०	९	६	१९	२३	२०	६०	११
चं.	१०	२६	७	२२	८२७	५२	११	९	५५	१४	८४२	०	११	२३	५७	१४	८५३	५६	०	८	११	१०	८६२	२२	०	२२	३३	३२	८६६	१३
मं.	७	४	३३	२२	४२	२१	७	५	१५	४३	४२	२४	७	५	५८	७	४२	२७	७	६	४०	३५	४२	३०	७	७	२३	५	४२	३४
बु.	७	९	२	४३	४६	४६	७	९	४९	२९	४२	१२	७	१०	३१	४१	३७	१०	७	११	८	५१	३१	३८	७	११	४०	२९	२५	३३
गु.	३	०	३३	५७	१	४४	३	०	३५	४१	१	३२	३	०	३७	१३	१	२२	३	०	३८	३४	१	२०	३	०	३९	४४	०	५८
शु.	५	२९	१७	२६	७५	२	६	०	३२	२९	७५	४	६	१	४७	३२	७५	५	६	३	२	३८	७५	७	६	४	१७	४५	७५	८
श.	११	१	१६	२६	२	२४व	११	१	१४	२	२	१८व	११	१	११	४४	२	१३व	११	१	९	३१	२	७व	११	१	७	२४	२	२व
रा.	१०	२०	४९	११	३	११	१०	२०	४६	११	३	११	१०	२०	४३	४	३	११	१०	२०	३९	५६	३	११	१०	२०	३६	४८	३	११

२९ पंक्ति ५ रवौ मिश्रमानम् ४५।५० दिनम् २८।१ अयनांशाः ०।२४।१३।५३

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
६	८	७	७	३	५	११	१०
९	८	०	३	०	२१	१	२१
२३	१८	२०	७	१९	४७	३२	८
१४	५५	२१	३५	४३	४६	३४	४
५९	७४७	४२	६६	२	७४	२	३
५२	४२	२	२९	५०	५२	५८व	११
		ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	व

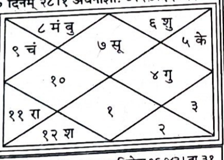

दैनिकहोरालग्नसारिणी (लग्न की समाप्ति का समय दिया गया है।)

(प्रचलित घड़ियों के समय के अनुसार घण्टा-मिनट में)

रा	१ बु		२ गु		३ शु		४ श		५ र		६ सो		७ मं		८ बु		९ गु		१० शु		११ श		१२ र		१३ सो		१४ मं		१५ बु	
तु	७	५८	७	५४	७	५०	७	४६	७	४२	७	३८	७	३४	७	३०	७	२६	७	२२	७	१८	७	१४	७	१०	७	६	७	२
वृ	१०	१५	१०	११	१०	७	१०	३	९	५९	९	५५	९	५१	९	४७	९	४३	९	३९	९	३५	९	३१	९	२७	९	२३	९	१९
ध	१२	२०	१२	१६	१२	१२	१२	८	१२	४	१२	०	११	५६	११	५२	११	४८	११	४४	११	४०	११	३६	११	३२	११	२८	११	२४
म	२	५	२	१	१	५७	१	५३	१	४९	१	४५	१	४१	१	३७	१	३३	१	२९	१	२५	१	२१	१	१७	१	१३	१	९
कुं	३	३७	३	३३	३	२९	३	२५	३	२१	३	१७	३	१३	३	९	३	५	३	१	२	५७	२	५३	२	४९	२	४५	२	४१
मी	५	५	५	१	४	५७	४	५३	४	४९	४	४५	४	४१	४	३७	४	३३	४	२९	४	२५	४	२१	४	१७	४	१३	४	९

सूचना-नीचे दिखाये गये सभी समय रात्रिकालीन हैं।

मे	६	४३	६	३९	६	३५	६	३१	६	२७	६	२३	६	१९	६	१५	६	११	६	७	६	३	५	५९	५	५५	५	५१	५	४७
वृ	८	३९	८	३५	८	३१	८	२७	८	२३	८	१९	८	१५	८	११	८	७	८	३	७	५९	७	५५	७	५१	७	४७	७	४३
मि	१०	५३	१०	४९	१०	४५	१०	४१	१०	३७	१०	३३	१०	२९	१०	२५	१०	२१	१०	१७	१०	१३	१०	९	१०	५	१०	१	९	५७
क	१	१२	१	८	१	४	१	०	१२	५६	१२	५२	१२	४८	१२	४४	१२	४०	१२	३६	१२	३२	१२	२८	१२	२४	१२	२०	१२	१६
सिं	३	२७	३	२३	३	१९	३	१५	३	११	३	७	३	३	२	५९	२	५५	२	५१	२	४७	२	४३	२	३९	२	३५	२	३१
कं	५	४१	५	३७	५	३३	५	२९	५	२५	५	२१	५	१७	५	१३	५	९	५	५	५	१	४	५७	४	५३	४	४९	४	४५

पाक्षिक घटना

ता.२२ से ता.३० अक्टूबर व ता.३ से ता.५ नवम्बर को वर्षा योग है। (तिथि, ग्रहचार, ग्रहोदयास्त, संक्रान्ति के कारण इस पक्ष में)- तृण संग्रह करने से लाभ, वर्षा थोड़ी, चौपायों, पशु-पक्षियों को पीड़ा, रोगों की अधिकता, फसल अच्छी।

३० पंक्ति १२ रवौ मिश्रमानम् ४५।४० दिनम् २७।३८ अयनांशाः ०।२४।१३।५४

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
६	११	७	७	३	६	११	१०
२६	९	५	९	०	०	१	२०
२२	५५	१५	४९	३५	३२	२४	४६
५९	२४	४३	२१	४१	२१	२	११
६०	८४२	४२	४२	१	७५	२	३
५	०	२४	२२	३२	४	१८व	११
		ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	व

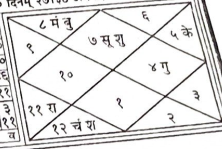

[(5) स्नाने-दाने-व्रते १५। भीष्मपंचकव्रत समाप्तिः। कार्तिकस्नानव्रत-यमनियमादि समाप्तिः। कार्तिकेय दर्शनम्। निम्बार्क जयन्ती। क्षीरसागरादिस्नानम्। मन्वादिः १५। मासान्तः।

[(4) - महाविष्णु पूजन के उपरान्त अरुणोदय काल में काशी में मणिकर्णिका घाट पर स्नान व उसके उपरान्त (६/१० पर सूर्योदय होने के बाद) प्रातःकाल शिवपूजन करना चाहिये।

एकादशी पारणा निर्णय- स्मार्तों के लिये पारणा काल प्रातः ६/९ से दिवा ८/२२ या दिन १०/३४ से १२/४७ तक मिल रहा है। परन्तु वैष्णवों के लिये हरिवासर योग (जो त्याज्य है वह दिन ८/२५ पर समाप्त हो रहा है) अतः इसके उपरान्त संगव काल के बाद मध्याह्न में दिवा १०/३४ से दिवा १२/४७ तक वैष्णवों को पारणा करना उचित होगा।

ग्रहस्थितिः (ता.२२ अक्टूबर से ५ नवम्बर २०२५)

सूर्यः (तुलायां/चित्रायां) —ता.२४ स्वात्यां २/३। ● भौमः (तुलायां/विशाखायां) —ता.२६ वृश्चिकेषु १६/४३। ता.३१ अनुराधासु १/३४। ● बुधः (तुलायां/विशाखायां) —ता.२४ वृश्चिकेषु ५/१४। ता.२६ अनुराधायां ५६/५७। ● गुरुः (कर्के/पुनर्वसौ ४चरणे)। ● शुक्रः (कन्यायां/हस्तेषु) —ता.२७ चित्रायां ५९/३१। ता.२ तुलायां १९/३८। ● शनिः (मीने/पूभायां ४चरणे/वक्री)। ● राहुः (कुम्भे/पूभायां १ चरणे)। ● केतुः (सिंहे/पूफायां ३ चरणे)।

ग्रहाणां युतिः—ता.२३ भौम चन्द्र योगः सायं ६/५९ भौमः ४/३० उत्तरे। ता.२३ बुध चन्द्र योगः रात्रौ ९/४६ बुधः २/१५ उत्तरे। ता.२ शनि चन्द्र योगः सायं ४/२८ शनिः ३/४० दक्षिणे।

मार्गशीर्षकृष्णपक्षः

श्रीसंवत् २०८२ शकः १९४७ (६ से २० नवम्बर २०२५)। याम्यायनं याम्यगोलः। शरदऋतुः वृश्चिकार्कतः हेमन्तऋतुः। राष्ट्रीय १५ से २९ कार्तिक १९४७। बंग २० का. से ४ मार्गशीर्ष १४३२। मु.१४ से २८ जमादुल. १४४७। नेपाली २१ कार्तिक से ५ मार्गशीर्ष २०८२। शुक्रः पूर्वे।

३२	तिथि (समाप्ति काल)	नक्षत्र (समाप्ति काल)	योग (समाप्ति काल)	करण (समाप्ति काल)	आनन्दादि योगाः	तारीख	स्टै अं (लोकल घं.मि.)	चं रा सं (प्रवेश काल)	र क्रां द	(स्टैण्डर्ड टाइम घं.मि.)
दि. मा	ति. वा. घ. प. स. घं. मि.	न. घ. प. स. घं. मि.	यो. घ. प. स. घं. मि.	क. घ. प. क. घ. प.		अं रा ई मु फ	मि से सूर्योदय सूर्यास्त	रा घ प स घं मि	अं क	चंद्रोदय सूर्योदय सूर्यास्त
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	पद्मः	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मित्रः	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वज्रः	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ध्वांक्षः	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	धूम्रः	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	प्रवर्धमानः	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	रक्षः	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मुसलः	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	सिद्धिः	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	उत्पातः	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मानसः	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मुद्गरः	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ध्वांक्षः	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	धूम्रः	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	प्रवर्धमानः	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

सं.विशाखायां रविः २२/४ (दिवा ३/०)।
भ.४५/२५(रात्रि शेषे १२/२२)उपरि।
भ.१२/२० (दिवा ११/८)यावत्। संकष्टी गणेश चतुर्थी ४ व्रतम् चन्द्रोदयः रात्रौ ७/४५। सौभाग्यसुन्दरी व्रतम् ३।
धूम्रयोगः।
भ.५८/३(रात्रि शेषे ५/२७) उपरि। मायानंद चैतन्य जयन्ती ५।
भ.२६/४६(दिवा ४/५७) यावत्। मूलः रात्रौ ११/१६ उपरि।
मूलः। मध्याह्न-प्रदोषोभय व्यापिनी **महाभैरवाष्टमी ८ व्रतम्**।
मूलः रात्रौ ११/५० यावत्।
भ.२४/५८(दिवा ४/१६)उपरि। भ.५५/३८(रात्रि शेषे ४/३२) यावत्।
मासान्तः। स्मार्तानाम् उत्पन्ना एकादशी ११ व्रतम्।
वैष्णवानां उत्पन्ना एकादशी व्रतम्। स्मार्त एकादशी पारणा दिवा ८/२७ यावत् अथवा १०/३७ उपरि १२/४६ यावत्। सं.वृश्चिके रविः १८/३१-(1)
सोमप्रदोषः १३ व्रतम् (कुलदेवता कोप शान्त्यर्थम्)।
भ.५/३९(दिवा ८/३५) उपरि। भ.३७/५७(रात्रौ ९/३१) यावत्। मासशिवरात्रिः १४ व्रतम्।
दर्शश्राद्धम् ३०। सं.अनुराधायां रविः ३६/४४ (रात्रौ ९/२)।
स्नाने-दाने अमावास्या ३०।

पक्षाचार पढ़ने की विधि- कभी-कभी किसी एक दिन अनेक त्यौहार होने से पूरा विषय एक पंक्ति में नहीं आ पाता। ऐसे में निशान या चिन्ह देकर उसे आगे बढ़ाया जाता है- उदाहरणार्थ - इस पक्ष में ता.१६ की पंक्ति में सं. वृश्चिके रविः १८/३१ के बाद -(1) ऐसा चिन्ह लिखा हुआ है। इसके आगे का विषय देखने के लिये इस चिन्ह [(1) को खोजें। जैसा कि आप देख रहे है कि ता.२० की पंक्ति में वही चिन्ह आपको दिखाई दे रहा है, वहीं पर शेष विवरण है। कभी-कभी कई पंक्तियों में विषय अधिक होने पर -(2),-(3) आदि का भी उपयोग किया जाता है।

[(1) (दिवा १/४२)। मु.३० फलं समता। संक्रान्ति पुण्यकालः प्रातः ७/१८ उपरि दिवा १/४२ यावत्।

तिथि / ग्रह	१ गुरौ मिश्रमानम् ४५।३३	२ शुक्रे मिश्रमानम् ४५।३१	३ शनौ मिश्रमानम् ४५।३०	४ रवौ मिश्रमानम् ४५।२८	५ सोमे मिश्रमानम् ४५।२६	७ भौमे मिश्रमानम् ४५।२५	८ बुधे मिश्रमानम् ४५।२३	९ गुरौ मिश्रमानम् ४५।२१	१० शुक्रे मिश्रमानम् ४५।१९	११ शनौ मिश्रमानम् ४५।१८	१२ रवौ मिश्रमान ४५।१६	१२ सोमे मिश्रमानम् ४५।१४	१३ भौमे मिश्रमान ४५।१२	१४ बुधे मिश्रमान ४५।११
प्र.	रा. अं. क. वि. गतिः	रा. अं. क. वि. गतिः	रा. अं. क. वि. गतिः	रा. अं. क. वि. गतिः	रा. अं. क. वि. गतिः	रा. अं. क. वि. गतिः	रा. अं. क. वि. गतिः	रा. अं. क. वि. गतिः	रा. अं. क. वि. गतिः	रा. अं. क. वि. गतिः	रा. अं. क. वि. गतिः	रा. अं. क. वि. गतिः	रा. अं. क. वि. गतिः	रा. अं. क. वि. गतिः
सू.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	६ २८ २६ १ ६० २६	६ २९ २६ २७ ६० २८	७ ० २६ ५५ ६० २९	७ १ २७ २४ ६० ३१	७ २ २७ ५५ ६० ३३	७ ३ २८ २८ ६० ३४
चं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४ २६ २४ २६ ७५३ ४३	५ ८ ५८ ९ ७४३ २३	५ २१ २१ ३२ ७३५ ४५	६ ३ ३७ १७ ७३० ४६	६ १५ ४८ ३ ७२८ २३	६ २७ ५६ २६ ७२८ २९
मं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७ १३ ४७ ५८ ४३ १	७ १४ ३० ५९ ४३ ४	७ १५ १४ ३ ४३ ७	[illegible]	[illegible]	[illegible]
बु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
गु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३ ० ४२ ६ ० ३९व	३ ० ४१ २७ ० ४०व	३ ० ४० ३७ १ १व	३ ० ३९ ३५ १ १३व	३ ० ३८ २३ १ १४व	[illegible]
शु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	६ ५० ४ ७५ २०	६ १८ ५ २४ ७५ २१	६ १९ २० ४५ ७५ २२	६ २० ३६ ७ ७५ २३	६ २१ ५१ ३१ ७५ २४	[illegible]
श.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११ ० ५१ २२ १ ४व	११ ० ५० १८ ० ५८व	११ ० ४९ १९ ० ५२व	११ ० ४८ २७ ० ६६व	११ ० ४७ ४२ ० ४०व	[illegible]
रा.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१० ५ ३२ ३ ११	१० २० २ २५ ३ ११	१० १९ ५९ १७ ३ ११	१० १९ ५६ २० ३ ११	१० १९ ५३ २ ३ ११	[illegible]

ति.	३० गुरौ मिश्रमानम् ४५।९					
प्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	[illegible]					
चं.	[illegible]					
मं.	७	१८	६	५०	४३	११
बु.	७	३	२९	३	८१	४८व
गु.	३	०	३६	५८	१	३५व
शु.	६	२३	६	५५	७५	२५
श.	११	०	४७	१	०	३४व
रा.	१०	१९	४९	५४	३	११

३१ पंक्ति ४ रवौ मिश्रमानम् ४५।२८ दिनम् २७।१६ अयनांशाः ०।२४।१३।५५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
६	२	७	७	३	६	११	१०
२३	११	१०	१२	०	९	०	२०
२४	४९	१३	४०	४२	१८	५९	२४
१४	५२	३८	६	२९	२५	५०	१८
६० १८	८३२ २०	४२ ४६	४ ५६व	० १३	७५ १३	१ ०४व	३ ११
	अ	उ	उ	ट	उ	व	

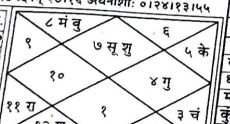

(प्रचलित घड़ियों के समय के अनुसार घण्टा-मिनट में) दैनिकहोरालग्नसारिणी (लग्न की समाप्ति का समय दिया गया है।)

रा	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सिं	कं
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

सूचना-नीचे दिखाये गये सभी समय रात्रिकालीन हैं।

पाक्षिक घटना

ता.१९ को वर्षा योग है। (तिथि, ग्रहचार, ग्रहोदयास्त व संक्रान्ति इत्यादि के कारण इस पक्ष में)- जल की कमी, जननाश, छत्र भंग, श्रावण मास में वर्षा न हो, शासक प्रसन्न, अन्न तेज, धनक्षय, रोगों का प्रसार, अन्नों की कमी, अधिकारियों से कष्ट, फसल अच्छी, अन्न-तृण पर बुरा असर।

कर्क का वृहस्पति वक्री हो तो घोर दुर्भिक्ष, युद्ध का वातावरण, राष्ट्रभंग, महा उपद्रव, रसादि सब वस्तु, घी-तेल-खाण्ड-कपास के व्यापार से लाभ। मार्गशीर्ष से ७ महीने तक धान्यभाव तेज रहे।

३२ पंक्ति १२ रवौ मिश्रमानम् ४५।१६ दिनम् २६।५६ अयनांशाः ०।२४।१३।५६

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
७	५	७	७	३	६	११	१०
०	२१	१५	८	०	१८	०	२०
२६	२१	१४	४२	४१	५	५०	२
५५	३२	३	३३	२७	२४	१८	२५
६० २९	७३५ ४५	४३ ७	७१ १०व	० ५०व	७५ २१	० ५८व	३ ११
	अ	अ	उ	उ	उ	व	

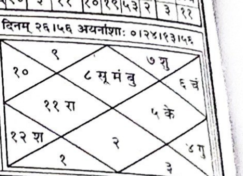

एकादशी निर्णय- इस पक्ष में ता.१४ को सूर्योदय में दशमी, दूसरे दिन (ता.१५) को सूर्योदय में एकादशी, तीसरे दिन (ता.१६) को द्वादशी व चौथे दिन (ता.१७) को सूर्योदय में पुनः अवशिष्ट द्वादशी है। ऐसी अवस्था में एकादशी पर दशमी का वेध हो या न हो फिर भी चूंकि दो दिन सूर्योदय में द्वादशी है अतः स्मार्त लोग (ता.१५ को व्रत करेंगे) क्योंकि इस दिन सूर्योदय में एकादशी मिल रही है। वैष्णव सम्प्रदाय वाले (ता.१६ को व्रत रखेंगे) क्योंकि उस दिन ६० घटी की द्वादशी मिल रही है। (**द्वादशी मात्राधिक्यवती शुद्धा।-धर्मसिंधौ**)।

ग्रह स्थितिः (ता.६ से २० नवम्बर २०२५) सूर्यः (तुलायां/स्वात्यां/अनुराधासु)-ता.६ विशाखायां २२/४। ता.१६ वृश्चिकेषु १८/३१। ता.१९ अनुराधासु ३६/४४। ● भौमः (वृश्चिकेषु)-ता.७ भौमास्तः पश्चिमे सायं ५/४२। ता.१८ ज्येष्ठायां ४४/३९। ● बुधः (वृश्चिकेषु/अनुराधाया)-ता.९ वक्री ४०/४१। ता.१२ पश्चिमास्तः सायं ५/३७। ता.२० विशाखायां ५१/४३। ● गुरुः (कर्के/पुनर्वसौ४च.)-ता.१२ वक्री ४५/१६। ● शुक्रः (तुलायां/चित्रायां)-ता.७ स्वात्यां ३९/३। ता.१८ विशाखायां १६/२२। ● शनिः (मीने/पूभायां ४च./वक्री)। ● राहुः (कुम्भे/पूभायां१च.)-ता.१७ शतभिषायां४च. ३१/२९। ● केतुः (सिंहे/पूफायां३च.)-ता.१७ पूफायां२च. ३१/२९।

ग्रहाणां युतिः -ता.१० गु.चं. योगः दि.१/२६ गुरुः ३/५७ द.। ता.१२ बु.भौ.योगः रा.११/३० बुधः १/१९ द.। ता.१९ शु.चं. योगः दि.२/६ शुक्रः ५/४४ उ.। ता.२० बु.चं. योगः दि २/५९ बुधः ५/२९ उ.।

[illegible]	[illegible]	ति.	वा.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	आनन्दादि योगाः	अं.	रा.	बं.	मु.	फ.	स्टै.अं. मि.	से.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	चं. रा.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	र.क्रां.द. अं.	क.	चंद्रास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.
२६	४३	१	शु	१९	२७	दि	२	८	ऽनु	१७	३०	दि	१	२२	ऽति	९	४७	दि	१०	१७	बव	१९	२७	बा	५१	३१	रक्षः	२१	३०	५	२९	१६	१६	११	६	३९	५	२१	वृ						द १९	५५	५	४०	६	२२	५	६
२६	४१	२	श	२३	३६	दि	३	४९	ज्ये	२२	५४	दि	३	३३	सु	१०	१६	दि	१०	२९	कौ	२३	३६	तै	५५	२३	मुसलः	२२	१	६	३०	१७	१५	५६	६	४०	५	२०	ध	२२	५४	दि	३	३३	२०	८	६	२९	६	२३	५	६
२६	३९	३	र	२७	११	सा	५	१५	मू	२७	४६	दि	५	२९	धृ	१०	२१	दि	१०	३२	ग	२७	११	व	५८	३३	सिद्धिः	२३	२	७	१	१८	१५	४१	६	४०	५	२०	ध						२०	२१	७	२२	६	२३	५	६
२६	३७	४	सो	२९	५६	सा	६	२२	पूषा	३१	४९	रा	७	८	शू	९	५०	दि	१०	२०	भ	२९	५६	बव	६०	०	उत्पातः	२४	३	८	२	१९	१५	२४	६	४१	५	१९	म	४७	४४	रा	१°	३०	२०	३३	८	१८	६	२४	५	६
२६	३४	५	मं	३१	४३	रा	७	६	उषा	३४	५७	रा	८	२४	गं	८	३७	दि	९	५२	बव	०	५०	बा	३१	४३	मानसः	२५	४	९	३	२०	१५	७	६	४१	५	१९	म						२०	४५	९	१६	६	२५	५	५
२६	३२	६	बु	३२	२७	रा	७	२४	श्र	३७	३	रा	९	१५	वृ	६	३७	दि	९	५	कौ	२	५	तै	३२	२७	छत्रः	२६	५	१०	४	२१	१४	४९	६	४२	५	१९	म						२०	५७	१०	१४	६	२६	५	५
२६	३०	७	गु	३२	४	रा	७	१५	ध	३८	४	रा	९	४०	ध्रु	३	४९	दि	७	५८	ग	२	१५	व	३२	४	श्रीवत्सः	२७	६	११	५	२२	१४	३०	६	४२	५	१८	कुं	७	४६	दि	९	३२	२१	८	११	११	६	२६	५	५
२६	२८	८	शु	३०	२८	सा	६	३८	श	३७	५४	रा	९	३७	व्या / ह	० / ५५	४ / १८	प्रा / रा	६ / ४	२९ / ३६	भ	१	१६	बव / बा	३० / ५९	२८ / ५	सौम्यः	२८	७	१२	६	२३	१४	१०	६	४२	५	१८	कुं						२१	१८	१२°	९	६	२७	५	५
२६	२६	९	श	२७	४३	सा	५	३३	पूभा	३६	३७	रा	९	७	व	४९	४३	रा	२°	२२	कौ	२७	४३	तै	५५	४९	कालदंड	२९	८	१३	७	२४	१३	५०	६	४३	५	१७	मी	२२	२	दि	३	१७	२१	२९	१°	८	६	२८	५	५
२६	२४	१०	र	२३	५६	दि	४	२	उभा	३४	२०	रा	८	१२	सि	४३	१९	रा	११	४८	ग	२३	५६	व	५१	३३	स्थिरः	३०	९	१४	८	२५	१३	२९	६	४३	५	१७	मी						२१	३९	२°	९	६	२८	५	५
२६	२३	११	सो	१९	१०	दि	२	८	रे	३१	६	सा	६	५५	व्य	३६	९	रा	८	५७	भ	१९	१०	बव	४६	२४	मातंगः	१	१०	१५	९	२६	१३	७	६	४३	५	१७	मे	३१	६	सा	६	५५	२१	४८	३°	१३	६	२९	५	५
२६	२१	१२	मं	१३	३८	दि	११	५७	अश्वि	२७	९	सा	५	२२	व	२८	२७	सा	५	५३	बा	१३	३८	कौ	४०	३६	अमृतः	२	११	१६	१०	२७	१२	४५	६	४४	५	१६	मे						२१	५७	४°	२२	६	३०	५	५
२६	१९	१३	बु	७	३३	दि	९	३२	भ	२२	४४	दि	३	३७	प	२०	२३	दि	२	४०	तै	७	३३	ग	३४	२२	काणः	३	१२	१७	११	२८	१२	२१	६	४४	५	१६	वृ	३६	३५	रा	९	९	२२	६	५°	३४	६	३१	५	६
२६	१७	१४ / १५	गु	१ / ५३	१२ / ३८	प्रा / रा	६ / ४	५९ / २६	कृ	१८	९	दि	१	४७	शि	१२	९	दि	११	२३	व	१	१२	भ / बव	२८ / ५४	१ / ५०	लुम्बः	४	१३	१८	१२	२९	११	५८	६	४४	५	१६	वृ						२२	१४	उ४	२०	६	३२	५	६

मूलः दिवा १/२२ उपरि।
मूलः। चन्द्रदर्शनम् मु.३० फलं समता, उत्तरोन्नतं शृंगं फलं शुभिक्षम्।
म.५८/३३ (रात्रि शेषे ५/४८) उपरि। मूलः दिवा ५/२१ यावत्।
भ.२९/५६ (रात्रौ ६/२२) यावत्। वैनायकी गणेश चतुर्थी। गुरु तेगबहादुर शहीद दिवसः (नानकशाही)।
जानकी मंगल (श्रीरामविवाहः)। कर्कोटक नाग ५। गुरु तेग बहादुर (शहीद) समाधि दिवसः (पारंपरिक)।
बलदेव-हलधर जयन्ती ६ (सायाह्ने)। स्कन्द ६। चम्पा ६।
म.३२/४ (रात्रौ ७/१५) उपरि। कुम्भेचन्द्रः पंचकारम्भश्च दिवा ९/३२। सूर्यसप्तमी (मध्याह्ने)। भक्त नरसी मेहता जयन्ती। संत तारणतारण जयन्ती।
भ.२/१६ (प्रातः६/५७) यावत्।
कल्पादिः९। नन्दा नवमी (अद्य देवी पूजनेन श्री विष्णुलोकप्राप्तिः)।
म.५१/३३ (रात्रि शेषे ३/५) उपरि। मूलः रात्रौ ८/१२ उपरि।
भ.१९/१० (दिवा २/८) यावत्। सर्वेषां मोक्षदा एकादशी ११ व्रतम्। वैकुण्ठ एकादशी। गीता जयन्ती। मेषेचन्द्रः पंचकसमाप्तिश्च सायं ६/५५। मूलः।
भौमप्रदोषः १३ व्रतम्। मूलः सायं ५/२२ यावत्। एकादशी पारणा दिवा ८/४२ यावत् अथवा दिवा १०/४३ उपरि ११/५७ यावत्। -(1)
काश्यां पिशाचमोचन यात्रा दर्शनञ्च १४। अज्ञात पिशाचादिदुरितघ्नैकोद्दिष्टः १४। [(1) सं.ज्येष्ठायां रविः ४७/२ (रात्रि शेषे २/१९)।
भ.२/१२ (प्रातः ६/५९) उपरि। भ.२८/२ (सायं ५/४३) यावत्। स्नाने-दाने-व्रते १५। दत्त जयन्ती १५। राजराजेश्वरी-त्रिपुरसुन्दरी-त्रिपुरभैरवी -(2)

[(2) षोडशी त्रिपुरसुन्दरी - अन्नपूर्णा - श्री विद्या जयन्ती च। चन्द्रपूजा (चन्द्रोदये सायं ४/२०) अत्र कुसुम्भरक्तवस्त्रच्छन्न कांस्य पात्रस्थं सौवर्ण चन्द्रप्रतिमा दानम्, समुवर्णदानञ्च १५।

ति.	१ शुक्रे मिश्रमानम् ४५।७						२ शनौ मिश्रमानम् ४५।५						३ रवौ मिश्रमानम् ४५।३						४ सोमे मिश्रमानम् ४५।१					
ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	७	५	२९	३७	६०	३७	७	६	३०	१४	६०	३८	७	७	३०	५३	६०	४०	७	८	३१	३३	६०	४१
चं.	७	२२	१५	५०	७३५	३६	८	४	३१	२६	७४२	२४	८	१६	५३	५०	७५१	१३	८	२९	२५	४	७६१	५६
मं.	[illegible]						[illegible]						[illegible]						[illegible]					
बु.	[illegible]						[illegible]						[illegible]						[illegible]					
गु.	[illegible]						[illegible]						[illegible]						[illegible]					
शु.	[illegible]						[illegible]						[illegible]						[illegible]					
श.	[illegible]						[illegible]						[illegible]						[illegible]					
रा.	[illegible]						[illegible]						[illegible]						[illegible]					

ति.	५ भौमे मिश्रमानम् ४५।०						६ बुधे मिश्रमानम् ४४।५८						७ गुरौ मिश्रमानम् ४४।५६						८ शुक्रे मिश्रमानम् ४४।५४					
ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	७	९	३२	१४	६०	४३	७	१०	३२	५६	६०	४४	७	११	३३	४०	६०	४५	७	१२	३४	२६	६०	४६
चं.	९	१२	७	०	७७४	२३	९	२५	१	२३	७८८	२०	१०	८	९	४३	८०३	२२	१०	२१	३३	६	८१८	५३
मं.	७	२१	४३	५५	४३	३४	७	२२	२७	२९	४३	३७	[illegible]						७	२३	५४	४६	४३	४३
बु.	[illegible]						[illegible]						[illegible]						६	२६	२३	२२	३	५६व
गु.	[illegible]						[illegible]						[illegible]						[illegible]					
शु.	[illegible]						[illegible]						[illegible]						[illegible]					
श.	[illegible]						[illegible]						[illegible]						[illegible]					
रा.	[illegible]						[illegible]						[illegible]						[illegible]					

ति.	९ शनौ मिश्रमानम् ४४।५२						१० रवौ मिश्रमानम् ४४।५१						११ सोमे मिश्रमानम् ४४।४९					
ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	७	१३	३५	२२	६०	४८	७	१४	३६	०	६०	४९	७	१५	३६	५९	६०	५०
चं.	११	५	११	५९	८३४	०	११	१९	५	५९	८४७	३२	०	३	१३	३१	७५८	१३
मं.	७	२४	३८	२८	४३	४६	७	२५	२२	१४	४३	४८	७	२६	६	२	४३	५२
बु.	६	२६	१९	२६	६	५४मा	६	२६	२६	२०	१६	५२	६	२६	४३	१२	२५	५३
गु.	३	०	१५	५९	३	२४व	३	०	१२	४४	३	२५व	३	०	९	११	३	३५व
शु.	७	३	५६	६	७५	३१	७	५	४१	३७	७५	३२	७	६	५७	१	७५	३२
श.	११	०	४५	३८	०	२२	११	०	४६	०	०	२८	११	०	४६	२८	०	३४
रा.	१०	१९	२१	४६	३	११	१०	१९	१८	३९	३	११	१०	१९	१५	३१	३	११

ति.	१२ भौमे मिश्रमान ४४।४७						१३ बुधे मिश्रमान ४४।४५						१४ गुरौ मिश्रमानम् ४४।४३					
ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	७	१६	३७	३९	६०	५१	७	१७	३८	३०	६०	५२	७	१८	३९	२२	६०	५३
चं.	०	१७	३२	४४	८६४	४६	१	१	५६	३०	८६६	१७	१	१६	२२	४७	८६२	२७
मं.	७	२६	४९	५४	४३	५४	७	२७	३३	४४	४३	५७	७	२८	१७	४५	४४	०
बु.	६	२७	१	५	३३	५७	६	२७	४३	२	४१	६	६	२८	२६	७	४७	२४
गु.	३	०	५	४४	३	४६व	३	०	१	५८	३	५६व	२	२९	५८	२	४	६व
शु.	७	८	१२	४२	७५	३३	७	९	२८	१४	७५	३३	७	१०	४३	४७	७५	३४
श.	११	०	४७	२	०	४०	११	०	४७	४२	०	४६	११	०	४८	२८	०	५२
रा.	१०	१९	१२	२३	३	११	१०	१९	९	१६	३	११	१०	१९	६	८	३	११

३३ पंक्ति ३ रवौ मिश्रमानम् ४५।३ दिनम् २६।३९ अयनांशाः ०।२४।१३।५७

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
७	८	७	६	३	६	११	१०
७	१६	२०	२९	०	२६	०	१९
३०	५३	१६	३८	३१	५३	४५	४०
५३	५०	५६	५२	३८	१२	३८	३२
६० / ४०	७५१ / १३	४३ / २८	६१ / ४७व	२ / ९व	७५ / २७	० / १५व	३ / ११
	अ	अ	उ	उ	उ	व	

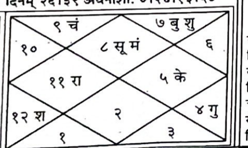

काशी में पिशाचमोचन यात्रा

मार्गशीर्ष शुक्ल की मध्याह्न व्यापिनी चतुर्दशी को पिशाचमोचन यात्रा व श्राद्ध करने से अज्ञात पिशाचों से मुक्ति मिलती है और अपराह्णव्यापिनी चतुर्दशी को यात्रा व श्राद्ध करने से पितरों को पैशाच्य से मुक्ति मिलती है।

(प्रचलित घड़ियों के समय के अनुसार घण्टा-मिनट में) **दैनिकहोरालग्नसारिणी** (लग्न की समाप्ति का समय दिया गया है।)

रा	१ शु	२ श	३ र	४ सो	५ मं	६ बु	७ गु	८ शु	९ श	१० र	११ सो	१२ मं	१३ बु	१४ गु
वृ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७ २६
ध	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	९ ३१
म	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११ १६
कुं	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१२ ४८
मी	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२ १६
मे	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३ ५४

सूचना-नीचे दिखाये गये सभी समय रात्रिकालीन हैं।

वृ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५ ५०
मि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८ ४
क	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१० २३
सिं	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१२ ३८
कं	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२ ५२
तु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५ ९

पाक्षिक घटना

ता.२१ को वर्षा योग है। (तिथि, ग्रहचार, ग्रहोदयास्त इत्यादि के कारण इस पक्ष में)- अस्वस्थता, सत्ता परिवर्तन, राष्ट्रों में तनाव, शासक कठोर, थोड़ी वर्षा, नाना प्रकार से खेती की हानि, युद्धोन्माद, चौपायों को कष्ट, उच्चाधिकारी-श्रेष्ठ व्यक्तियों की मृत्यु।।

गुरु राश्यन्तर फल-मिथुन में गुरु के जाने से ज्येष्ठ नामक वर्ष। बालक-घोड़े रोगग्रस्त। वर्षा मध्यम स्वरूप की। चोरों से पीड़ा। पश्चिम व उत्तर भारत में अनेक प्रकार के विचित्र रोग, सफेद वस्त्र, कपूर, चंदन, मजीठ, नारियल, सुपारी, सोना, चांदी ये चैत्र से ५ महीने तक सस्ते बिकें, बाद में महंगे हों परन्तु धान्य सस्ते। श्रावण में भैंस, हाथियों को महाकष्ट। पूर्व व दक्षिण भारत में सुभिक्ष, शासक स्वस्थ, प्रजा में वृद्धि, तेल, खाण्ड, शक्कर धातु सस्ते। सोंठ, मिरच, पीपल, मजीठ व जायफल महंगे।

३४ पंक्ति १० रवौ मिश्रमानम् ४४।५१ दिनम् २६।२४ अयनांशाः ०।२४।१३।५८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
७	११	७	६	३	७	११	१०
१४	१९	२५	२६	०	५	०	१९
३६	५	२२	२६	१२	४१	४६	१८
०	५९	१४	२०	४४	३७	०	३९
६० / ४९	८४७ / ३२	४३ / ४८	१६ / ५२	३ / २५व	७५ / ३२	० / २८	३ / ११
	अ	उ	उ	उ	उ	व	

भौमप्रदोष १३ व्रतारम्भ- प्रथम बार प्रदोष व्रत प्रारम्भ करने के लिये शनिवार, शुक्लपक्ष व पंचांग शुद्धि चाहिये परन्तु यदि प्रदोष व्रत कर्ज से मुक्ति हेतु करना हो तो उसे सोमवार या मंगलवार के शुक्लपक्ष से प्रारम्भ करें। प्रदोष व्रत करने से भगवान शिव-पार्वती व हनुमानजी प्रसन्न होते हैं।

गीता जयन्ती - इस दिन भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया था। इस दिन पूजा, उपवास करके गीता का पाठ करना चाहिये।

ग्रहस्थितिः (ता.२१ नवम्बर से ४ दिसम्बर २०२५)

सूर्यः (वृश्चिकेषु/अनुराधासु) –ता.२ ज्येष्ठायां ४७/२। ● भौमः (वृश्चिकेषु /ज्येष्ठायां/अस्तः)। ● बुधः (वृश्चिकेषु/ विशाखायां/वक्री/अस्तः)–ता.२३ तुलायां २४/२८। ता.२६ पूर्वोदयः रा.शे.५/५२। ता.२९ मार्गी ३६/५५। ● गुरुः (कर्के/पुनर्वसौ ४ चरणे/वक्री)–ता.४ मिथुने/पुनर्वसौ ३ चरणे १५/५१। ● शुक्रः (तुलायां/विशाखायां)– ता.२६ वृश्चिके १३/२४। ता.२८ अनुराधासु ५२/१९। ● शनिः (मीने/पूभायां ४ चरणे/वक्री)–ता.२८ मार्गी ४०/५८। ● राहुः (कुम्भे/शतभिषायां ४ चरणे)। ● केतुः (सिंहे/पूफायां २ चरणे)।

ग्रहाणां युतिः –ता.२१ भौम चन्द्र योगः सायं ६/० भौमः ४/२७ उत्तरे। ता.२५ बु.शु. योगः दि.९/३० शुक्रः १/३ द.। ता.२९ शनि चन्द्र योगः रात्रि शेषे १२/५० शनिः ३/४६ दक्षिणे।

३४ दि.	मा	तिथि (समाप्ति काल) ति.	वा.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	नक्षत्र (समाप्ति काल) न.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	योग (समाप्ति काल) यो.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	करण (समाप्ति काल) क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	आनन्दादि योगाः	तारीख अं	रा	घं	मु	ए	स्टै अं मि	से	(लोकल घं.मि.) सूर्योदय		सूर्यास्त		चं रा (प्रवेश काल)	घ	प	स	घं	मि	रक्तांद अं	क	(स्टैण्डर्ड टाइम घं.मि.) चंद्रोदय		सूर्योदय		सूर्यास्त	
२६	२६	१	गु	४८	४४	रा	२°	१	रो	१३	३६	दि	११	५८	सि/सा	३/५२	५६/४	दि/रा	८/४	६/५५	बा	२२	४७	कौ	४८	४४	मित्रः	५	१४	१९	१३	१	११	३३	६	४५	५	१५	मि	४२	२८	रा	११	७	२२	२२	५	२२	६	३२	५	६
२६	१५	२	श	४३	१४	रा	११	५०	मृ	९	२४	दि	१०	२९	शुभ	४८	३१	रा	१°	५८	तै	२५	५९	ग	४३	२४	वज्रः	६	१५	२०	१४	२	११	९	६	४५	५	१५	मि						२२	३०	६	३०	६	३३	५	६
२६	१३	३	र	३८	३६	रा	९	५९	आर्द्रा	५	५५	दि	८	५५	शु	४१	४८	रा	११	१६	व	१०	५५	म	३८	३६	ध्वांक्षः	७	१६	२१	१५	३	१०	४३	६	४५	५	१५	क	४८	५५	रा	२°	७	२२	३६	७	४०	६	३३	५	६
२६	१२	४	सो	३४	५७	रा	८	३२	पुन	३	१७	दि	७	५३	ब्रं	३५	५१	रा	८	५५	बव	६	४६	बा	३४	५७	धूम्रः	८	१७	२२	१६	४	१०	१७	६	४६	५	१४	क						२२	४३	८	४८	६	३४	५	६
२६	११	५	मं	३२	३०	रा	७	३५	पु	१	४६	दि	७	१७	ऐं	३०	५२	सा	६	५६	कौ	३	४४	तै	३२	३०	प्रवर्धमान	९	१८	२३	१७	५	९	५१	६	४६	५	१४	क						२२	४९	९	५१	६	३५	५	७
२६	१०	६	बु	३१	२४	रा	७	८	श्ले	१	३२	दि	७	१२	वै	२६	५५	सा	५	२१	ग	१	५७	व	३१	२४	रक्षः	१०	१९	२४	१८	६	९	२४	६	४६	५	१४	सिं	१	३२	दि	७	१२	२२	५५	१०	५०	६	३५	५	७
२६	९	७	गु	३१	३३	रा	७	१३	म	२	३३	दि	७	३७	वि	२३	५६	दि	४	११	म	१	२८	बव	३१	३३	मुसलः	११	२०	२५	१९	७	८	५६	६	४६	५	१४	सिं						२३	०	११	४६	६	३६	५	७
२६	८	८	शु	३२	५८	रा	७	४८	पूफा	४	५०	दि	८	३३	प्री	२१	५५	दि	३	२३	बा	२	१५	कौ	३२	५८	सिद्धिः	१२	२१	२६	२०	८	८	२८	६	४६	५	१४	कं	२०	४०	दि	२	५३	२३	५	१२	३९	६	३७	५	८
२६	७	९	श	३५	३१	रा	८	४९	उफा	८	१८	दि	९	५६	आ	२०	४९	दि	२	५७	तै	४	१४	ग	३५	३१	उत्पातः	१३	२२	२७	२१	९	८	०	६	४७	५	१३	कं						२३	९	१°	३१	६	३७	५	८
२६	६	१०	र	३८	५७	रा	१०	१२	ह	१२	४०	दि	११	४२	सौ	२०	२५	दि	२	४८	व	७	१४	म	३८	५७	मानसः	१४	२३	२८	२२	१०	७	३२	६	४७	५	१३	तु	४५	१०	रा	१२°	४२	२३	१३	२°	२३	६	३८	५	८
२६	६	११	सो	४३	६	रा	११	५२	चि	१७	४९	दि	१	४६	शो	२०	३६	दि	२	५३	बव	११	१	बा	४३	६	मुद्गरः	१५	२४	२९	२३	११	७	३	६	४७	५	१३	तु						२३	१६	३°	१६	६	३८	५	९
२६	५	१२	मं	४७	३८	रा	१°	४२	स्वा	२३	२४	दि	४	१	अति	२१	८	दि	३	६	कौ	१५	२२	तै	४७	३८	केतुः	१६	२५	१	२४	१२	६	३४	६	४७	५	१३	तु						२३	१९	४°	१०	६	३९	५	९
२६	४	१३	बु	५२	१८	रा	३°	३५	वि	२९	१३	सा	६	२१	सु	२१	५१	दि	३	२५	ग	१९	५८	व	५२	१८	धाता	१७	२६	२	२५	१३	६	५	६	४७	५	१३	वृ	१२	४४	दि	११	४६	२३	२१	५°	५	६	४०	५	९
२६	४	१४	गु	५६	५५	रा	५°	२६	अनु	३५	३	रा	८	४१	धृ	२२	३७	दि	३	४३	म	२४	३७	श	५६	५५	आनन्दः	१८	२७	३	२६	१४	५	३५	६	४७	५	१३	वृ						२३	२३	६°	०	६	४०	५	१०
२६	४	३०	शु	६०	०	स	म	ग्र	ज्ये	४०	३४	रा	१०	५५	शू	२३	९	दि	३	५७	च	२९	२	ना	६०	०	चरः	१९	२८	४	२७	१५	५	६	६	४७	५	१३	ध	४०	३४	रा	१०	५५	२३	२५	०	०	६	४१	५	१०
२६	३	३०	श	१	८	प्रा	७	८	मू	४५	३९	रा	१२	५७	गं	२३	२३	सा	४	३	ना	१	८	किं	३२	५५	गदः	२०	२९	५	२८	१६	४	३६	६	४७	५	१३	ध						२३	२६	०	०	६	४१	५	११

पौषकृष्णपक्षः

श्रीसंवत् २०८२ शकः १९४७ (५ से २० दिसम्बर २०२५)। याम्यायने याम्यगोलः। हेमन्तऋतुः। मुहर्रम १४ से २९ [illegible] १९ मार्गशीर्ष से ५ पौष १९३२। मु.१३ से २८ जमादुस्सानी १४४७। नेपाली २० मार्गशीर्ष से ५ पौष २०८२। शुक्रस्य पूर्वास्त [illegible]

मित्रयोगः।

वज्रयोगः।

म.१०/५५ (दिवा १०/५५) उपरि। भ.३८/३६ (रात्रौ ९/५९) यावत्।

संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रतम् चन्द्रोदयः रात्रौ ८/४८।

मूलः दिवा ७/१७ उपरि। शुक्रस्य वार्धक्यारम्भः (रात्रि शेषे ६/२२)।

म.३१/२४ (रात्रौ ७/८) उपरि। मूलः।

म.१/२८ (प्रातः ७/११) यावत्। मूलः दिवा ७/३७ यावत्।

रुक्मिणी ८। तिथितः महामना मालवीय जयन्ती। शुक्रास्तः पूर्वे (रात्रि शेषे ६/२२)।

उत्पातयोगः।

भ.७/२४ (दिवा ९/३२) उपरि। म.३८/५७ (रात्रौ १०/१२) यावत्। मासान्तः।

सर्वेषां सफला एकादशी ११ व्रतम्। खरमास प्रारम्भः। सं. मूले/धनुषि रविः ५४/१० (रात्रि शेषे ४/१८)। मुहूर्त १५ फल महर्घता।

संक्रान्ति पुण्यकालः दिवा ११/५२ यावत्। एकादशी पारणा दिवा ८/४४ यावत् अथवा दिवा १०/४९ उपरि दिवा १२/५५ यावत्। भुक्त्वा १२।

म.५२/१८ (रात्रि शेषे ३/३५) उपरि। प्रदोषः १३ व्रतम्।

म.२४/३७ (दिवा ४/३१) यावत्। मूलः रात्रौ ८/४१ उपरि। मासशिवरात्रिः१४ व्रतम्।

मूलः। स्नाने-दाने-दर्श बकुला ३०।

मूलः रात्रि शेषे १२/५७ यावत्। स्नाने-दाने ३०।

संकष्टी गणेश चतुर्थी का निर्णय-
ता.७ दिसम्बर को चन्द्रोदय के समय तृतीया तिथि है व ता.८ दिसम्बर को चन्द्रोदय के समय पंचमी तिथि है। दोनो ही दिन चन्द्रोदय के समय चतुर्थी तिथि न मिलने के कारण शास्त्रानुसार दूसरे दिन की चतुर्थी लेनी होती है। दोनो दिन चन्द्रोदय काल में न हो तो परा- (द्विदने चन्द्रोदय व्याप्त्यभावे परैव-धर्मसिन्धौ)।

ति. प्र.	१ शुक्रे मिश्रमानम् ४४।४२ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		२ शनौ मिश्रमानम् ४४।४० रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		३ रवौ मिश्रमानम् ४४।३८ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		४ सोमे मिश्रमानम् ४४।३७ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		५ भौमे मिश्रमानम् ४४।३५ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	७	१९	४०	१६	६०	५४	७	२०	४१	१०	६०	५५	७	२१	४२	६	६०	५६	७	२२	४३	२	६०	५७	७	२३	४३	५९	६०	५८
चं.	२	०	४५	१४	८५३	३४	२	१४	५८	४८	८४०	३७	२	२८	५९	२५	८२४	५६	३	१२	४४	२१	८०७	५८	३	२६	१२	१९	७९१	३
मं.	७	२९	१	४५	४४	३	७	२९	४५	४३	४४	५	८	०	२९	५३	४४	८	८	१	१४	१	४४	११	८	१	५८	१२	४४	१४
बु.	६	२९	११	३१	५२	५५	७	०	४	२६	५७	४६	७	१	२	१२	६२	१	७	२	४	१३	६५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
गु., शु., श., रा.	[illegible]																													

	६ बुधे मिश्रमानम् ४४।३३ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		७ गुरौ मिश्रमानम् ४४।३२ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		८ शुक्रे मिश्रमानम् ४४।३० रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		९ शनौ मिश्रमानम् ४४।२८ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		१० रवौ मिश्रमानम् ४४।२७ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	७	२४	४४	५८	६०	५९	७	२५	४५	५७	६१	०	७	२६	४६	५७	६१	१	७	२७	४७	५८	६१	२	७	२८	४९	०	६१	२
चं.	४	९	२३	२२	७७५	१५	४	२२	१८	३६	७६१	१८	५	४	५९	५५	७४९	४२	५	१७	२९	३६	७४०	३६	५	२९	५०	११	७३४	५
मं.–रा.	[illegible]																													

	११ सोमे मिश्रमान ४४।२५ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		१२ भौमे मिश्रमानम् ४४।२४ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		१३ बुधे मिश्रमान ४४।२३ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		१४ गुरौ मिश्रमान [illegible] रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	७	२९	५०	२	६१	३	८	०	५१	५	६१	४	८	१	५२	९	६१	४	८	२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
चं.	६	११	४	१६	७३०	७	६	२४	१६	२३	७२८	३६	७	६	२२	५९	७२९	२६	७	१८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मं.–रा.	[illegible]																							

	३० शुक्रे मिश्रमान ४४।२० रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		३० शनौ मिश्रमान ४४।१८ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.–चं.	[illegible]											
मं.	८	९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८	४	५५	२४	६१	६
बु.	७	१६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४१	८	१३	२	४६	७४	१३
गु.	२	२८	४०	२८	८६	२७	८	१०	७	१३	४४	४३
शु.	७	२१	३	४०	६	२६व	७	२७	४१	२४	८७	७
श.	११	१	२२	१२	५५	३७	२	२८	३४	१३	६	२२व
रा.	१०	२८	१९	१४	३	२२	११	१	५३	२७	५५	३७

३५ पंक्ति ३ रवौ मिश्रमानम् ४४।३८ दिनम् २६।१३ अयनांशा: ०।२४।१३।५९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
७	२	८	७	२	७	११	१०
२१	२८	०	१	२९	१४	०	१८
४२	५९	२९	२	४५	३०	५१	५६
६	२५	५३	१२	१४	२९	२४	४५
६०	८२४	४४	६२	४	७५	१	३
५६	५६	८	१	३५व	३५	११	११
	अ	उ	उ	उ	उ	व	

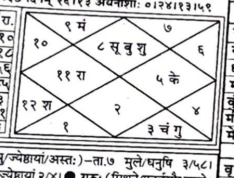

(प्रचलित घड़ियों के समय के अनुसार घण्टा-मिनट में) दैनिकहोरालग्नसारिणी (लग्न की समाप्ति का समय दिया गया है।)

	१	शु	२	श	३	र	४	सो	५	मं	६	बु	७	गु	८	शु	९	श	१०	र	११	सो	१२	मं	१३	बु	१४	गु	३०	शु	३०	श
वृ	७	२२	७	१८	७	१४	७	१०	७	६	७	२	६	५८	६	५४	६	५०	६	४६	६	४२	[illegible]									
ध	९	२७	९	२३	९	१९	९	१५	९	११	९	७	९	३	८	५९	८	५५	८	५१	८	४७	[illegible]									
म	११	११	११	७	११	३	११	०	१०	५६	१०	५२	१०	४८	१०	४४	१०	४०	१०	३६	१०	३२	[illegible]									
कुं	१२	४४	१२	४०	१२	३६	१२	३२	१२	२८	१२	२४	१२	२०	१२	१६	१२	१२	१२	८	१२	४	[illegible]									
मी	२	१२	२	८	२	४	२	०	१	५६	१	५२	१	४८	१	४४	१	४०	१	३६	१	३२	[illegible]									
मे	३	५०	३	४६	३	४२	३	३८	३	३४	३	३०	३	२६	३	२२	३	१८	३	१४	३	१०	[illegible]									
वृ	५	४६	५	४२	५	३८	५	३४	५	३०	५	२६	५	२२	५	१८	५	१४	५	१०	५	६	[illegible]									
मि	८	०	७	५६	७	५२	७	४८	७	४४	७	४०	७	३६	७	३२	७	२८	७	२४	७	२०	[illegible]									
क	१०	१९	१०	१५	१०	११	१०	७	१०	३	९	५९	९	५५	९	५१	९	४७	९	४३	९	३९	[illegible]									
सिं	१२	३४	१२	३०	१२	२६	१२	२२	१२	१८	१२	१४	१२	१०	१२	६	१२	२	११	५८	११	५४	[illegible]									
कं	२	४८	२	४४	२	४०	२	३६	२	३२	२	२८	२	२४	२	२०	२	१६	२	१२	२	८	[illegible]									
तु	५	५	५	१	४	५७	४	५३	४	४९	४	४५	४	४१	४	३७	४	३३	४	२९	४	२५	[illegible]									

सूचना-नीचे दिखाये गये सभी समय रात्रिकालीन हैं।

३६ पंक्ति १० रवौ मिश्रमानम् ४४।२७ दिनम् २६।६ अयनांशा: ०।२४।१३।५०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
७	५	८	७	२	७	११	१०
२८	२९	५	९	२८	२३	०	१८
४९	५०	३९	२०	९	२९	१	३६
०	११	४९	१४	५८	३८	४७	५२
६१	७३४	४४	८०	५	७५	१	३
२	५	२७	१४	३८	३६	५३	११
	अ	उ	उ	अ	उ	व	

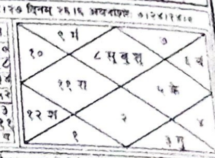

इस पक्ष में-ता.१३ को [illegible] योग है। पौषकृष्णपक्ष में तिथिवृद्धि हो तो [illegible] पौष ३० को मूल व शनिवार हो तो [illegible] में लाभ, जनता सन्तुष्ट। शुक्रास्त फल- [illegible] होने से उत्पात। [illegible] में होने से हिन्दू देशों में तनाव। [illegible] भारत के [illegible] हिमांचल के निकट, पश्चिम भारत में गुजरात के आसपास, पूर्वी भारत में बिहार ([illegible] निकट) व मध्यप्रदेश में मालवा के आसपास के क्षेत्रों में [illegible] [illegible] जहाजों का विनाश, सत्ता परिवर्तन और जनहानि, पुराने किलों के टूटने का डर। [illegible] युद्ध सम्भव हो। इजिप्त में अन्न की कमी हो, यूरोपीय देशों में [illegible] होता है।

ग्रहस्थितिः (ता. ५ से २० दिसम्बर २०२५) सूर्यः (वृश्चिकेषु/ज्येष्ठायां) –ता.१५ मूले/धनुषि ५४/१०। ● भौमः (वृश्चिकेषु/ज्येष्ठायां/अस्तः)–ता.७ मुले/धनुषि ३/५८। ● बुधः (तुलायां/विशाखायां) वक्री)। ● शुक्रः (वृश्चिके/अनुराधासु)–ता.६ वृश्चिकेषु ३९/५९। ता.९ अनुराधासु ५३/१५। ता.२० ज्येष्ठायां २/४। ● गुरुः (मिथुने/पुनर्वसौ ३ चरणे/ पूभायां ४ चरणे)। ● राहुः (कुम्भे/शतभिषायां ४ चरणे)–ता.९ ज्येष्ठायां २७/१९। ता.१२ पूर्वास्तः रात्रि शेषे ६/२२। ता.२० धनुषि/मूले १/५८। ● शनिः (मीने/ ● केतुः (सिंहे/पूफायां २ चरणे)।

ग्रहाणां युतिः –ता.७ गुरु चन्द्र योगः रात्रौ ९/१८ गुरुः ३/४३ दक्षिणे। ता.१८ बु.चं.योगः सा.५/४३ बुधः ६/१० उ.। ता.१९ शु.चं.योगः रा.१०/२१ शुक्रः ४/५२ उ.। ता.२० भौम चन्द्र योगः सायं ५/५९ भौमः ३/५० उत्तरे।

…राष्ट्रीय १४ से २९ आग्रहायण १९४७। बंग … नेपाली … पौष २०८२। शुक्रस्य पूर्वास्तः ता.१२।

संकष्टी गणेश चतुर्थी का निर्णय- ता.७ दिसम्बर को चन्द्रोदय के समय तृतीया तिथि है व ता.८ दिसम्बर को चन्द्रोदय के समय चतुर्थी तिथि है। दोनो ही दिन चन्द्रोदय के समय चतुर्थी तिथि न मिलने के कारण शास्त्रसम्मत दूसरे दिन की चतुर्थी लेनी होती है। दोनो दिन चन्द्रोदय काल में न हो तो परा- (दिनद्वये चन्द्रोदय व्याप्त्यभावे परैव- धर्मसिन्धौ)।

…से ४/१८। मुहूर्त १५ फलं महर्घता।
…उपरि दिवा १२/५५ यावत्। सुरूपा १२।

…१४ गुरौ मिश्रमानम् ४४।२१ … अयनांशाः ०।२४।१४।०

…द हो तो स्वस्थता, बाद में कष्ट। …शुक्रास्त फल- पौष मास में …तरी भारत के रेगिस्तानी क्षेत्र व …ं भारत में बिहार (पटना के … दुर्भिक्ष, विमान और पानी के …टने का डर। दक्षिण भारत में …मुटाव उत्पन्न होता है।

पौषशुक्लपक्षः

श्रीसंवत् २०८२ शाकः १९४७ (२१ दिसम्बर २०२५ से ३ जनवरी २०२६)। याम्यायनं याम्यगोलः। हेमन्तऋतुः। राष्ट्रीय ३० आग्र. से १३ पौष १९४७। बंग ६ से १९ पौष १४३२। मु. २९ जमादु. से १३ रज्जब १४४७ ने ६ से १९ पौष २०८२। शुक्लाब्दः।

		तिथि ति.	वा.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	नक्षत्र न.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	योग यो.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	आनन्दादि योगाः
२६	३	१	र	४	४३	दि	८	३५	पूषा	४९	५९	रा	२*	४२	वृ	२३	५	दि	३	५६	बव	४	४३	बा	३६	९	शुभः
२६	३	२	सो	७	३४	दि	९	४३	उषा	५३	३०	रा	४*	६	ध्रु	२२	११	दि	३	३५	कौ	७	३४	तै	३८	२९	मृत्युः
२६	३	३	मं	९	२५	दि	१०	२८	श्र	५५	५८	रा	५*	६	व्या	२०	३०	दि	२	५५	ग	९	२५	व	३९	४९	लुम्बः
२६	४	४	बु	१०	१४	दि	१०	४८	ध	५७	२१	रा	५*	४०	ह	१८	०	दि	१	५५	भ	१०	१४	बव	४०	३	मित्रः
२६	४	५	गु	९	५३	दि	१०	४०	श	५७	३४	रा	५*	४५	व	१४	३७	दि	१२	३४	बा	९	५३	कौ	३९	५	वज्रः
२६	४	६	शु	८	१८	दि	१०	३	पूभा	५६	३४	रा	५*	२२	सि	१०	१६	दि	१०	५१	तै	८	१८	ग	३६	५७	ध्वांक्षः
२६	५	७	श	५	३६	दि	८	५८	उभा	५४	३१	रा	४*	३२	व्य/ब	५/५३	३/५५	दि/रा	८/६	४५/१९	व	५	३६	भ	३३	४०	धूम्रः
२६	५	८/९	र	१/५५	४५/१२	प्रा/रा	७/५	२७/३१	रे	५१	२७	रा	३*	२०	प	५१	५८	रा	३*	३३	बव	१	४५	बा/कौ	२९/५६	२१/५७	प्रवर्धमान
२६	६	१०	सो	५१	२१	रा	३*	१७	अश्वि	४७	३९	रा	१*	४८	शि	४४	२५	रा	१२*	३१	तै	२४	९	ग	५१	२१	रक्षः
२६	६	११	मं	४५	१५	रा	१२*	५१	भ	४३	१९	रा	१२*	५	सि	३६	२६	रा	९	२०	व	१८	१८	भ	४५	१५	मुसलः
२६	७	१२	बु	३८	५२	रा	१०	१८	कृ	३८	४२	रा	१०	१५	सा	२८	११	सा	६	३	बव	१२	४	बा	३८	५२	सिद्धिः
२६	८	१३	गु	३२	३४	रा	७	४७	रो	३४	९	रा	८	२६	शुभ	१९	५७	दि	२	४५	कौ	५	४३	तै/ग	३२/५९	३४/३५	उत्पातः
२६	९	१४	शु	२६	३५	सा	५	२४	मृ	२९	५५	सा	६	४४	शु	११	५४	दि	११	३२	व	२६	३५	भ	५३	५३	मानसः
२६	१०	१५	श	२१	११	दि	३	१४	आर्द्रा	२६	१८	सा	५	१७	ब्रं/ऐ	४/५२	१४/५७	प्रा/रा	८/५	२८/३९	बव	२१	११	बा	४८	५३	मुद्गरः

तारीख अं.	रा.	बं.	मु.	फ.	स्टै. अं. मि.	से.	(लोकल घं.मि.) सूर्योदय		सूर्यास्त		चं. रा. सं. (प्रवेश काल) रा.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	र. क्रां. द. अं.	क.	(स्टैण्डर्ड टाइम घं.मि.) चंद्रास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त	
२१	३०	६	२९	१७	+४	६	६	४७	५	१३	ध						द २३	२६	६	१३	६	४२	५	११
२२	१	७	१	१८	३	३६	६	४७	५	१३	म	५	५८	दि	९	५	२३	२६	७	११	६	४२	५	१२
२३	२	८	२	१९	३	६	६	४७	५	१३	म						२३	२६	८	९	६	४३	५	१२
२४	३	९	३	२०	२	३६	६	४७	५	१३	कुं	२६	४१	सा	५	२४	२३	२५	९	६	६	४३	५	१३
२५	४	१०	४	२१	२	७	६	४७	५	१३	कुं						२३	२४	१०	३	६	४३	५	१३
२६	५	११	५	२२	१	३७	६	४७	५	१३	मी	४२	४९	रा	११	२८	२३	२२	११	०	६	४४	५	१४
२७	६	१२	६	२३	१	७	६	४७	५	१३	मी						२३	१९	११	५८	६	४४	५	१५
२८	७	१३	७	२४	०	३८	६	४७	५	१३	मे	५१	२७	रा	३*	२०	२३	१७	१२	५८	६	४५	५	१५
२९	८	१४	८	२५	०	८	६	४७	५	१३	मे						२३	१४	२*	२	६	४५	५	१६
३०	९	१५	९	२६	-०	२१	६	४७	५	१३	वृ	५७	१३	रा	५*	३८	२३	१०	३*	१०	६	४५	५	१७
३१	१०	१६	१०	२७	०	५०	६	४७	५	१३	वृ						२३	६	४*	२१	६	४६	५	१७
१	११	१७	११	२८	१	१९	६	४६	५	१४	वृ						२३	१	५*	३२	६	४६	५	१८
२	१२	१८	१२	२९	१	४७	६	४६	५	१४	मि	१	५५	दि	७	३२	२२	५६	उ४	४	६	४६	५	१९
३	१३	१९	१३	३०	-२	१६	६	४६	५	१४	मि						२२	५०	उ५	२४	६	४६	५	१९

चन्द्रदर्शनम् मु.३० फलं समता, उत्तरोन्नतं शृंगं फलं सुभिक्षाय।
मृत्युयोगः।
भ.३९/४९(रात्रौ १०/३९)उपरि। अंगारकी वैनायकी गणेश चतुर्थी।
भ.२०/१४(दिवा १०/४८)यावत्। कुम्भेचन्द्रः पंचकप्रारम्भश्च सायं ५/२४।
क्रिसमस (बड़ा दिन)। महामना मालवीय जयन्ती (आंग्लतिथितः)।
प्रकाशोत्सव प्रारम्भः।
भ.५/३६(दिवा ८/५८) उपरि। भ.३३/४० (रात्रौ ८/१२) यावत्। मूलः रात्रि शेषे ४/३२ उपरि। गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती (प्राचीन मतेन)।
मूलः। मेषेचन्द्रः पंचकसमाप्तिश्च रात्रि शेषे ३/२०। शाकम्भरी नवरात्रारम्भः। राधाबाबा जन्म दिवसः। सं.पूषाढ़ायां रविः ५९/२४ (रात्रि शेषे ६/३०)।
मूलः रात्रि शेषे १/४८ यावत्। शाम्ब दशमी (उड़ीसा)।
भ.१८/१८ (दिवा ४/४) उपरि। भ.४५/१५(रात्रि शेषे १२/५१) यावत्। सर्वेषां पुत्रदा एकादशी ११ व्रतम्। तैलंग स्वामी जयन्ती ११।-(1)
एकादशी पारणा प्रातः ८/५१ यावत् अथवा दिवा १०/५७ उपरि दिवा १/२ यावत्। |(1) मन्वादिः ११। सोमप्रदोष ११।
अंग्रेजी नववर्ष २०२६ प्रारम्भः। प्रदोषः १३ व्रतम्। |(2) प्रतिदिनं अरुणोदये समुद्रे काश्यां दशाश्वमेधे प्रयागे वा स्नाने विशेषम्।
भ.२६/३५ (दिवा ५/२४)उपरि। भ.५३/५३ (रात्रि शेषे ४/१९)यावत्। व्रताय १५।
स्नाने-दाने पौषी १५। शाकम्भरी नवरात्र समाप्तिः। शाकम्भरी १५। प्रयागे माघमेला कल्पवासारंभश्च। माघस्नान-व्रत-यमनियमाद्यारम्भः १५। -(2)

ति. ग्र.	१ रवौ मिश्रमानम् ४४।१७ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		२ सोमे मिश्रमानम् ४४।१६ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		३ भौमे मिश्रमानम् ४४।१५ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	८	५	५६	३०	६१	७	८	६	५७	३६	६१	७	८	७	५८	४३	६१	७
चं.	८	२५	२७	५८	७५४	३९	९	८	२	३८	७६६	२	९	२०	४८	४०	७७९	१२
मं.	८	१०	५१	५६	४४	४६	८	११	३६	४२	४४	४८	८	१२	२१	३०	४४	५१
बु.	७	१९	८	२१	८७	५१	७	२०	३६	१२	८८	३०	७	२२	४	४२	८९	५
गु.	२	२८	२७	५०	६	२९व	२	२८	२१	२१	६	३५व	२	२८	१४	४६	६	४१व
शु.	८	२	८	५३	७५	३७	८	३	२४	३०	७५	३६	८	४	४०	६	७५	३६
श.	११	१	१७	२	२	३४	११	१	१९	३६	२	४०	११	१	२२	१६	२	४५
रा.	१०	१८	१२	५९	३	११	१०	१८	९	५१	३	११	१०	१८	६	४४	३	११

ग्र.	४ बुधे मिश्रमानम् ४४।१४ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		५ गुरौ मिश्रमानम् ४४।१३ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		६ शुक्रे मिश्रमानम् ४४।११ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	८	८	५९	५१	६१	८	८	१०	०	५९	६१	८	८	११	२	७	६१	८
चं.	१०	३	४७	५२	७९३	५०	१०	१७	१	४२	८०९	२५	११	०	३१	७	८२५	११
मं.	८	१३	६	२१	४४	५३	८	१३	५१	१५	४४	५६	८	१४	३६	१०	४४	५८
बु.	७	२३	३३	४७	८९	३६	७	२५	३	२३	९०	३	७	२६	३३	२६	९०	२८
गु.	२	२८	८	४	६	४७व	२	२८	१	१७	६	५३व	२	२७	५४	२४	६	५८व
शु.	८	५	५५	४३	७५	३६	८	७	११	१९	७५	३६	८	८	२६	५५	७५	३६
श.	११	१	२५	१	२	५१	११	१	२७	५२	२	५७	११	१	३०	४९	३	२
रा.	१०	१८	३	३६	३	११	१०	१८	०	२९	३	११	१०	१७	५७	२१	३	११

ग्र.	७ शनौ मिश्रमानम् ४४।१० रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		८ रवौ मिश्रमानम् ४४।१० रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		१० सोमे मिश्रमानम् ४४।९ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	८	१२	३	१५	६१	९	८	१३	४	२४	६१	९	८	१४	५	३३	६१	९
चं.	११	१४	१६	२७	८४०	२	११	२८	१६	२०	८५२	४२	०	१२	२९	२	८६१	४९
मं.	८	१५	२१	९	४५	१	८	१६	६	१०	४५	३	८	१६	५१	१३	४५	६
बु.	७	२८	३	५४	९०	५०	७	२९	३४	४४	९१	११	८	१	५	५५	९१	३०
गु.	२	२७	४७	२६	७	३व	२	२७	४०	२४	७	७व	२	२७	३३	१६	७	१२व
शु.	८	९	४२	३१	७५	३६	८	१०	५८	७	७५	३६	८	१२	१३	४२	७५	३५
श.	११	१	३३	५१	३	८	११	१	३६	५८	३	१३	११	१	४०	११	३	१८
रा.	१०	१७	५४	१३	३	११	१०	१७	५१	६	३	११	१०	१७	४७	५८	३	११

ग्र.	११ भौमे मिश्रमानम् ४४।८ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		१२ बुधे मिश्रमानम् ४४।७ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		१३ गुरौ मिश्रमानम् ४४।६ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	८	१५	६	४२	६१	९	८	१६	७	५१	६१	९	८	१७	९	०	६१	९
चं.	०	२६	५०	११	८६६	२६	१	११	१३	७	८६०	२१	१	२५	४२	२८	८५९	७
मं.	८	१७	३६	१९	४५	८	८	१८	२१	२७	४५	१०	८	१९	६	३७	४५	१३
बु.	८	२	३७	२५	९१	४८	८	४	९	१३	९२	५	८	५	४१	१८	९२	२३
गु.	२	२७	२६	४	७	१६व	२	२७	१८	४३	७	२१व	२	२७	११	२१	७	२४व
शु.	८	१३	२९	१८	७५	३५	८	१४	४४	५३	७५	३५	८	१६	०	२८	७५	३५
श.	११	१	४३	३०	३	२४	११	१	४६	५३	३	२९	११	१	५०	२२	३	३४
रा.	१०	१७	४४	५१	३	११	१०	१७	४१	४३	३	११	१०	१७	३८	३५	३	११

ग्र.	१४ शुक्रे मिश्रमानम् ४४।६ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		१५ शनौ मिश्रमानम् ४४।५ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	८	१८	१०	१०	६१	९	८	१९	[illegible]	[illegible]	६१	९
चं.	२	१०	१	३५	८४४	१७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मं.	८	१९	५१	५०	४५	१५	८	२०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
बु.	८	७	१३	४१	९२	४०	८	८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
गु.	२	२७	४	७	७	२६व	२	२६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
शु.	८	१७	१६	२	७५	३४	८	१८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
श.	११	१	५३	५७	३	४०	११	१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
रा.	१०	१७	३५	२८	३	११	१०	१७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

३७ पंक्ति १ रवौ मिश्रमानम् ४४।१७ दिनम् २६।३ अयनांशाः ०।२४।१४।१

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
८	८	८	७	२	८	११	१०
५	२५	१०	१९	२८	२	१	१८
५६	२७	५१	८	२७	८	१७	१२
३०	५८	५६	२१	५०	५३	२	५९
६१ ७	७५४ ३९	४४ ४६	८७ ५१	६ २९व	७५ ३७	२ ३४	३ ११
	अ	उ	उ		अ	उ	व

कुण्डली: १० । ८ बु । ११ रा । ९ सू चं मं शु । ७ । १२ श । ६ । १ । ३ गु । ५ के । २ । ४

व्रताय पूर्णिमा
(व्रत की पूर्णिमा)
उदया पूर्णिमा ता.३ जनवरी २०२६ को है परन्तु व्रत की पूर्णिमा ता.२ को दिखायी गयी है ऐसा इसलिये क्योंकि ता.२ को प्रदोष काल में पूर्णिमा तिथि मिल रही है परन्तु ता.३ को नहीं मिलेगी।

ग्रहस्थितिः (ता.२१ दिसम्बर २०२५ से ३ जनवरी २०२६)
सूर्यः (मूले/धनुषि) –ता.२८ पूर्वाषाढ़ासु ५९/२४। ● **भौमः** (मुले/धनुषि/अस्तः) –ता.२५ पूर्वाषाढासु २/२७। ● **बुधः** (वृश्चिकेषु/ज्येष्ठायां) –ता.२९ मूले/धनुषि ०/५१। ता.२ पूर्वास्तः रा.शे.६/२२। ● **गुरुः** (मिथुने/पुनर्वसौ ३ चरणे/वक्री)। ● **शुक्रः** (धनुषि/मूले/अस्तः) –ता.३० पूर्वाषाढासु ३६/४२। ● **शनिः** (मीने/पूभायां ४चरणे)। ● **राहुः** (कुम्भे/शतभिषायां ४चरणे)। ● **केतुः** (सिंहे/पूफायां २चरणे)।
ग्रहाणां युतिः –ता.२७ श.चं. योगः दि.९/६ शनिः ४/२ द.। ता.३ गु.चं. योगः रा.शे.३/३१ गुरुः ३/४२ द.।

दैनिकहोरालग्नसारिणी (प्रचलित घड़ियों के समय के अनुसार घण्टा-मिनट में) (लग्न की समाप्ति का समय दिया गया है।)

रा	१ र		२ सो		३ मं		४ बु		५ गु		६ शु		७ श		८ र		१० सो		११ मं		१२ बु		१३ गु		१४ शु		१५ श	
ध	८	२५	८	२१	८	१७	८	१३	८	९	८	५	८	१	७	५७	७	५३	७	४९	७	४५	७	४१	७	३७	७	३३
म	१०	१०	१०	६	१०	२	९	५८	९	५४	९	५०	९	४६	९	४२	९	३८	९	३४	९	३०	९	२६	९	२२	९	१८
कुं	११	४२	११	३८	११	३४	११	३०	११	२६	११	२२	११	१८	११	१४	११	१०	११	६	११	२	१०	५८	१०	५४	१०	५०
मी	१	१०	१	६	१	२	१२	५८	१२	५४	१२	५०	१२	४६	१२	४२	१२	३८	१२	३४	१२	३०	१२	२६	१२	२२	१२	१८
मे	२	४८	२	४४	२	४०	२	३६	२	३२	२	२८	२	२४	२	२०	२	१६	२	१२	२	८	२	४	२	०	१	५६
वृ	४	४४	४	४०	४	३६	४	३२	४	२८	४	२४	४	२०	४	१६	४	१२	४	८	४	४	४	०	३	५६	३	५२

सूचना-नीचे दिखाये गये सभी समय रात्रिकालीन हैं।

रा	१ र		२ सो		३ मं		४ बु		५ गु		६ शु		७ श		८ र		१० सो		११ मं		१२ बु		१३ गु		१४ शु		१५ श	
मि	६	५८	६	५४	६	५०	६	४६	६	४२	६	३८	६	३४	६	३०	६	२६	६	२२	६	१८	६	१४	६	१०	६	६
क	९	१७	९	१३	९	९	९	५	९	१	८	५७	८	५३	८	४९	८	४५	८	४१	८	३७	८	३३	८	२९	८	२५
सिं	११	३२	११	२८	११	२४	११	२०	११	१६	११	१२	११	८	११	४	११	०	१०	५६	१०	५२	१०	४८	१०	४४	१०	४०
कं	१	४६	१	४२	१	३८	१	३४	१	३०	१	२६	१	२२	१	१८	१	१४	१	१०	१	६	१	२	१२	५८	१२	५४
तु	४	३	३	५९	३	५५	३	५१	३	४७	३	४३	३	३९	३	३५	३	३१	३	२७	३	२३	३	१९	३	१५	३	११
वृ	६	२०	६	१६	६	१२	६	८	६	४	६	०	५	५६	५	५२	५	४८	५	४४	५	४०	५	३६	५	३२	५	२८

पाक्षिक घटना
(तिथि, ग्रहचार, ग्रहोदयास्त इत्यादि के कारण इस पक्ष में) - अस्वस्थता, छत्रभंग, राजाओं में विग्रह, भय व रोगों का प्रसार, अन्न-जल व तृण की हानि जिससे अन्नभाव तेज, वर्षा अच्छी, दूध की कमी, फसल मध्यम स्वरूप की, तिल, घी, उड़द, महंगे, पशु-पक्षी एवं बालकों को कष्ट, महान व्यक्ति का नाश, जनता में आतंक।

३८ पंक्ति ८ रवौ मिश्रमानम् ४४।१० दिनम् २६।५ अयनांशाः ०।२४।१४।२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
८	११	८	७	२	८	११	१०
१३	२८	१६	२९	२७	१०	१	१७
४	१६	६	३४	४०	५८	३६	५१
२४	२०	१०	४४	२४	७	५८	६
६१ ९	८५२ ४२	४५ ३	९१ ११	७ ७व	७५ ३६	३ १३	३ ११
	अ	उ	उ		अ	उ	व

कुण्डली: १० । ८ बु । ११ रा । ९ सू मं शु । ७ । १२ श चं । ६ । १ । ३ गु । ५ के । २ । ४

शाकम्भरी नवरात्र- शाकम्भरी नवरात्र का व्रत पौष शुक्ल नवमी से प्रारम्भ होकर पौष की पूर्णिमा तक मनाया जाता है। माँ शाकम्भरी देवी दुर्गा का ही एक स्वरूप है। इन्हें वनशंकरी और शताक्षी नाम से भी जाना जाता है। इस नवरात्र में फल-फूल और सब्जियों का दान करना पुण्यप्रद होता है। यह व्रत करने से व्यक्ति के सभी कष्ट दूर हो जाते हैं और सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।
कल्पवासारंभ- पौषी पूर्णिमा से प्रयागराज में संगम तट पर कल्पवास का प्रारम्भ होता है। कल्पवासी यहां निवास करते हुये सत्संग, हवन-पूजन इत्यादि कार्य करते हैं। सामान्यतः माघी पूर्णिमा को कल्पवास की विधिपूर्वक समाप्ति कर अपने-अपने स्थानों को लौट जाते हैं, कुछ लोग महाशिवरात्रि तक यहां पर वास करते हैं। कल्पवास करने से जन्म-जन्मान्तर के बन्धनों से मुक्ति प्राप्त होती है।

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	आनन्दादि योगाः	अं	रा	बं	मु	फ	स्टै. अं मि	से	लोकल सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	चं रा सं रा	घ	प	स	घं	मि	र क्रां द अं	क	स्टैण्डर्ड चंद्रोदय घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.
२६	११	१	र	१६	३४	दि	१	२४	पुन	२३	२८	दि	४	१०	वै	५०	५८	रा	३°	१०	कौ	१६	३४	तै	४४	४९	केतुः	४	१४	२०	१४	१	-२	४४	६	४६	५	१४	क	१	१	दि	१०	२३	द २२	४४	६	२४	६	४७	५	२०
२६	१२	२	सो	१३	३	दि	१२	०	पु	२१	४५	दि	३	२९	वि	४५	४१	रा	१°	४	ग	१३	३	व	४१	५३	धाता	५	१५	२१	१५	२	३	११	६	४६	५	१४	क						२२	३८	७	३२	६	४७	५	२१
२६	१४	३	मं	१०	४८	दि	११	४	श्ले	२१	१३	दि	३	१६	प्री	४१	२३	रा	११	२०	भ	१०	४८	बव	४०	१३	आनन्दः	६	१६	२२	१६	३	३	३८	६	४५	५	१५	सिं	२१	१३	दि	३	१६	२२	३१	८	३५	६	४७	५	२१
२६	१५	४	बु	९	४२	दि	१०	३९	म	२१	५६	दि	३	३३	आ	३८	५	रा	१०	१	बा	९	४२	कौ	३९	५१	चरः	७	१७	२३	१७	४	४	५	६	४५	५	१५	सिं						२२	२४	९	३४	६	४७	५	२२
२६	१६	५	गु	९	५९	दि	१०	४६	पूफा	२३	५४	दि	४	२०	सौ	३५	४४	रा	९	५	तै	९	५९	ग	४०	४८	गदः	८	१८	२४	१८	५	४	३१	६	४५	५	१५	कं	३९	३४	रा	१०	३६	२२	१६	१०	२९	६	४७	५	२३
२६	१८	६	शु	११	२९	दि	११	२२	उफा	२७	०	सा	५	३५	शो	३४	१७	रा	८	३०	व	११	२९	भ	४२	४७	शुभः	९	१९	२५	१९	६	४	५७	६	४४	५	१६	कं						२२	८	११	२३	६	४७	५	२३
२६	१९	७	श	१४	५	दि	१२	२४	ह	३१	६	रा	७	१४	अति	३३	३७	रा	८	१४	बव	१४	५	बा	४५	४९	मृत्युः	१०	२०	२६	२०	७	५	२२	६	४४	५	१६	कं						२१	५९	१२	१६	६	४७	५	२४
२६	२१	८	र	१७	३३	दि	१	४८	चि	३६	०	रा	९	११	सु	३३	३३	रा	८	१३	कौ	१७	३३	तै	४९	३७	पद्मः	११	२१	२७	२१	८	५	४६	६	४४	५	१६	तु	३	२५	दि	८	९	२१	५०	१°	९	६	४७	५	२५
२६	२३	९	सो	२१	४१	दि	३	२७	स्वा	४१	२८	रा	११	२२	धृ	३३	५७	रा	८	२२	ग	२१	४१	व	५३	५७	छत्रः	१२	२२	२८	२२	९	६	१०	६	४३	५	१७	तु						२१	४१	२°	३	६	४७	५	२६
२६	२५	१०	मं	२६	१४	सा	५	१६	वि	४७	१५	रा	१°	४१	शू	३४	३७	रा	८	३८	भ	२६	१४	बव	५८	३४	श्रीवत्सः	१३	२३	२९	२३	१०	६	३४	६	४३	५	१७	वृ	३०	४७	रा	७	६	२१	३१	२°	५८	६	४७	५	२६
२६	२६	११	बु	३०	५५	रा	७	९	अनु	५३	६	रा	४°	१	गं	३५	२३	रा	८	५६	बा	३०	५५	कौ	६०	०	सौम्यः	१४	२४	३०	२४	११	६	५७	६	४३	५	१७	वृ						२१	२०	३°	५३	६	४७	५	२७
२६	२८	१२	गु	३५	३०	रा	८	५९	ज्ये	५८	४७	रा	६°	१८	वृ	३६	३	रा	९	१२	कौ	३	१३	तै	३५	३०	कालदंड	१५	२५	१	२५	१२	७	१९	६	४२	५	१८	ध	५८	४७	रा	६°	१८	२१	१०	४°	४७	६	४७	५	२८
२६	३०	१३	शु	३९	४५	रा	१०	४०	मू	६०	०	स	म	ग्र	ध्रु	३६	२७	रा	९	२२	ग	७	३८	व	३९	४५	स्थिरः	१६	२६	२	२६	१३	७	४०	६	४२	५	१८	ध						२०	५८	५°	३९	६	४७	५	२९
२६	३३	१४	श	४३	२५	रा	१२°	८	मू	४	३	दि	८	२४	व्या	३६	२६	रा	९	२२	भ	११	३५	श	४३	२५	गदः	१७	२७	३	२७	१४	८	१	६	४१	५	१९	ध						२०	४७	६°	२७	६	४७	५	२९
२६	३५	३०	र	४६	१८	रा	१	१८	पूषा	८	३९	दि	१०	१५	ह	३५	५०	रा	९	७	च	१४	५१	ना	४६	१८	शुभः	१८	२८	४	२८	१५	-८	२१	६	४१	५	१९	म	२४	३९	दि	४	३९	२०	३५	०	०	६	४७	५	३०

माघकृष्णपक्षः

श्रीसंवत् २०८२ शकः १९४७ (४ से १८ जनवरी २०२६)। याम्यायनं मकरार्कतः सौम्यायनं। याम्यगोलः। हेमन्तऋतुः मकरार्कतः शिशिरऋतुः। रा.१४ से २८ पौष १९४७। बंग २० पौष से ४ माघ १४३२। मु.१४ से २८ रज्जब १४४७। ने. २० पौष से ५ माघ २०८२। [illegible]

अतःप्रभृतिमाघे मूलकभक्षणं न कार्यम् (१ मास मूली न खायें)। रवि-पुष्य योगः दिवा ४/१० उपरि।

भ.४१/५३(रात्री ११/३२)उपरि। मूलः दिवा ३/२९ उपरि। गुरुगोविन्दसिंह जयन्ती (नानकशाही)।

भ.१०/४४(दिवा ११/४)यावत्। मूलः। अंगारकी संकष्टी गणेशचतुर्थी ४ व्रतम् चन्द्रोदय रात्रौ ८/३५। बड़ा गणेश जयन्ती। गणेशोत्पत्तिः। -(2)

मूलः दिवा ३/३३ यावत्।

गदयोगः।

[(2) तिलकुटी [illegible]

भ.११/२९(दिवा ११/२२)उपरि। भ.४२/४७(रात्रौ ११/५४)यावत्।

तिथितः स्वामी विवेकानन्द जयन्ती। तिथितः रामानन्दाचार्य जयन्ती ७।

सं.उत्तराषाढायां रविः ४/१३ (दिवा ८/२८)।

भ.५३/५७(रात्रि शेषे ४/२२)उपरि। स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (आंग्ल तिथितः)।

भ.२६/१४(दिवा ५/१६)यावत्। भोगी (आन्ध्र)। लोहडी। मासान्तः।

सं.मकरे रविः२०/३१(दिवा ३/०)। सर्वेषां षट्तिला एकादशी११। **खरमास समाप्तिः।** संक्रान्तिपुण्यकालः दिवा३/० उपरि सूर्यास्तं यावत्। -(1)

मूलः। एकादशी पारणा दिवा ८/५४ यावत् अथवा दिवा ११/१ उपरि दिवा १/८ यावत्। तिल १२। तिलोत्पत्तिः१२।

भ.३९/४५(रात्री १०/४०)उपरि। मूलः। प्रदोषः१३ व्रतम्। मासशिवरात्रिः१४ व्रतम्।

भ.११/३५(दिवा ११/२५)यावत्। मूलः दिवा ८/२४ यावत्।

स्नाने-दाने-दर्शे (महोदययोगवती) **मौनी अमावास्या।** प्रयागेत्रिवेणीसंगमे, काश्यांदशाश्वमेधे, समुद्रे वा मौनव्रताचरणेन स्नानं विधेयम्। पर्वस्नानम्।

[(1) मु.३० फलं समता। मूलः रात्रि शेषे [illegible] उपरि। तिल स्नान-दान-तिलोद्वर्तनं, तिलहोमः, तिलभोजनम् ११। तिलस्नायी तिलोद्वर्ती तिलहोमी तिलोदकी। तिलभुक् तिलदाताच षट्तिला पापनाशिनी। तिलसंक्रान्तिः। पोंगल।

१ रवौ मिश्रमानम् ४४।४

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	८	२०	१२	२९	६१	९
चं.	३	८	३	५२	८१५	४३
मं.	[illegible]					
बु.	८	१०	१९	१८	९३	१५
गु.	२	२६	४९	१२	७	३१व
शु.	८	१९	४७	१०	७५	३४
श.	११	२	३	२१	३	५०
रा.	१०	१७	२९	१३	३	११

२ सोमे मिश्रमानम् ४४।४

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	८	२१	१३	३८	६१	९
चं.	३	२१	४१	३५	८००	४९
मं.	[illegible]					
बु.	८	११	५२	३४	९३	३४
गु.	२	२६	४१	४१	७	३३व
शु.	८	२१	२	४८	७५	३३
श.	११	२	५	११	३	५५
रा.	१०	१७	२६	५	३	११

३ भौमे मिश्रमानम् ४४।३

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	८	२२	१४	४८	६१	९
चं.	[illegible]					
मं.	[illegible]					
बु.	८	१३	२६	८	९३	५४
गु.	२	२६	३४	९	७	३५व
शु.	८	२२	१८	१७	७५	३३
श.	११	२	९	६	४	०
रा.	१०	१७	२२	५८	३	११

४ बुधे मिश्रमानम् ४४।३

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	८	२३	१५	५७	६१	९
चं.	[illegible]					
मं.	[illegible]					
बु.	८	१५	०	२	९४	१४
गु.	२	२६	२६	३४	७	३६व
शु.	८	२३	३३	५०	७५	३२
श.	११	२	१३	५	४	५
रा.	१०	१७	१९	५०	३	११

५ गुरौ मिश्रमानम् ४४।३

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	८	२४	१७	६	६१	९
चं.	[illegible]					
मं.	[illegible]					
बु.	[illegible]					
गु.	२	२६	१८	५८	७	३७व
शु.	८	२४	४९	२२	७५	३२
श.	११	२	१७	१०	४	१०
रा.	१०	१७	१६	४२	३	११

६ शुक्रे मिश्रमानम् ४४।२

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	८	२५	१८	१५	६१	९
चं.	[illegible]					
मं.	[illegible]					
बु.	[illegible]					
गु.	२	२६	११	२१	७	३८व
शु.	८	२६	४	५४	७५	३१
श.	११	२	२१	२०	४	१५
रा.	१०	१७	१३	३५	३	११

७ शनौ मिश्रमानम् ४४।२

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	८	२६	१९	२३	६१	८
चं.	[illegible]					
मं.	[illegible]					
बु.	[illegible]					
गु.	२	२६	३	४३	७	३८व
शु.	८	२७	२०	२५	७५	३१
श.	११	२	२५	३५	४	१९
रा.	१०	१७	१०	२७	३	११

८ रवौ मिश्रमानम् ४४।२

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	८	२७	२०	३२	६१	८
चं.	[illegible]					
मं.	[illegible]					
बु.	८	२१	१९	१४	९५	४९
गु.	२	२५	५६	५	७	३८व
शु.	८	२८	३५	५६	७५	३०
श.	११	२	२९	५४	४	२४
रा.	१०	१७	७	२०	३	११

९ सोमे मिश्रमानम् ४४।२

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	८	२८	२१	४०	६१	८
चं.	६	२०	३०	५५	७२९	३९
मं.	[illegible]					
बु.	८	२२	५५	३	९६	१६
गु.	२	२५	४८	२७	७	३८व
शु.	८	२९	५१	२७	७५	३०
श.	११	२	३४	१८	४	२९
रा.	१०	१७	४	१२	३	११

१० भौमे मिश्रमानम् ४४।२

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	८	२९	२२	४७	६१	७
चं.	७	२	४०	३४	७२८	५१
मं.	[illegible]					
बु.	८	२४	३१	१८	९६	४४
गु.	२	२५	४०	४९	७	३७व
शु.	९	१	६	५७	७५	२९
श.	११	२	३८	४७	४	३३
रा.	१०	१७	१	४	३	११

११ बुधे मिश्रमानम् ४४।२

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	९	०	२३	५५	६१	७
चं.	७	१४	४९	२५	७३०	२१
मं.	[illegible]					
बु.	८	२६	८	३	९७	१४
गु.	२	२५	३३	१२	७	३६व
शु.	९	२	२२	२६	७५	२९
श.	११	२	४३	२०	४	३८
रा.	१०	१६	५७	५७	३	११

१२ गुरौ मिश्रमानम् ४४।२

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	९	१	२५	२	६१	६
चं.	[illegible]					
मं.	[illegible]					
बु.	८	२७	४५	१७	९७	४५
गु.	२	२५	२५	३६	७	३५व
शु.	९	३	३७	५५	७५	२८
श.	११	२	४७	५८	४	४३
रा.	१०	१६	५४	४९	३	११

१३ शुक्रे मिश्रमान ४४।२

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	९	२	२६	८	६१	६
चं.	[illegible]					
मं.	[illegible]					
बु.	८	२९	२३	१	९८	१६
गु.	२	२५	१८	१	७	३३व
शु.	९	४	५३	२३	७५	२८
श.	११	२	५२	४१	४	४७
रा.	१०	१६	५१	४२	३	११

१४ शनौ मिश्रमान ४४।२

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	९	३	२७	१४	६१	[illegible]
चं.	[illegible]					
मं.	[illegible]					
बु.	[illegible]					
गु.	[illegible]					
शु.	[illegible]					
श.	[illegible]					
रा.	१०	१६	४८	३४	३	११

३० रवौ मिश्रमानम् ४४।३

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	९	४	२८	२०	६१	५
चं.	९	४	१	५२	७५८	१५
मं.	९	२	०	१७	४५	४९
बु.	९	२	४०	७	९९	२२
गु.	२	२५	२	५७	७	२९व
शु.	९	७	२४	१८	७५	२६
श.	११	३	२	११	४	५६
रा.	१०	१६	४५	२६	३	११

३९ पंक्ति १ रवौ मिश्रमानम् ४४।४ दिनम् २६।११ अयनांशाः ०।२४।१४।३

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
८	३	८	८	२	८	११	१०
२०	८	२१	१०	२६	१९	२	१७
१२	३	२२	१९	४१	४७	१	२९
२९	५२	२३	१८	१२	१०	२१	१३
६१	८१७	४५	९३	७	७५	३	३
१	४३	२०	१५	३१व	३४	५०	११
		अ	अ	उ	अ	उ	व

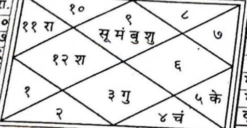

(प्रचलित घड़ियों के समय के अनुसार घण्टा-मिनट में) दैनिकहोरालग्नसारिणी (लग्न की समाप्ति का समय दिया गया है।)

रा	१	र	२	सो	३	मं	४	बु	५	गु	६	शु	७	श	८	र	९	सो	१०	मं	११	बु
ध	७	२९	७	२५	७	२१	७	१७	७	१३	७	९	७	५	७	१	६	५७	६	५३	६	४९
म	९	१४	९	१०	९	६	९	२	८	५८	८	५४	८	५०	८	४६	८	४२	८	३८	८	३४
कुं	१०	४६	१०	४२	१०	३८	१०	३४	१०	३०	१०	२६	१०	२२	१०	१८	१०	१४	१०	१०	१०	६
मी	१२	१४	१२	१०	१२	६	१२	२	११	५८	११	५४	११	५०	११	४६	११	४२	११	३८	११	३४
मे	१	५२	१	४८	१	४४	१	४०	१	३६	१	३२	१	२८	१	२४	१	२०	१	१६	१	१२
वृ	३	४८	३	४४	३	४०	३	३६	३	३२	३	२८	३	२४	३	२०	३	१६	३	१२	३	८
मि	६	२	५	५८	५	५४	५	५०	५	४६	५	४२	५	३८	५	३४	५	३०	५	२६	५	२२
क	८	२१	८	१७	८	१३	८	९	८	५	८	१	७	५७	७	५३	७	४९	७	४५	७	४१
सिं	१०	३६	१०	३२	१०	२८	१०	२४	१०	२०	१०	१६	१०	१२	१०	८	१०	४	१०	०	९	५६
कं	१२	५०	१२	४६	१२	४२	१२	३८	१२	३४	१२	३०	१२	२६	१२	२२	१२	१८	१२	१४	१२	१०
तु	३	७	३	३	२	५९	२	५५	२	५१	२	४७	२	४३	२	३९	२	३५	२	३१	२	२७
वृ	५	२४	५	२०	५	१६	५	१२	५	८	५	४	५	०	४	५६	४	५२	४	४८	४	४४

रा	१२	गु	१३	शु	१४	श	३०	र
म	८	३१	८	२७	८	२३	८	१९
कुं	१०	३	९	५९	९	५५	९	५१
मी	११	३१	११	२७	११	२३	११	१९
मे	१	९	१	५	१	१	१२	५७
वृ	३	५	३	१	२	५७	२	५३
मि	५	१९	५	१५	५	११	५	७
क	७	३८	७	३४	७	३०	७	२६
सिं	९	५३	९	४९	९	४५	९	४१
कं	१२	७	१२	३	११	५९	११	५५
तु	२	२४	२	२०	२	१६	२	१२
वृ	४	४१	४	३७	४	३३	४	२९
ध	६	४६	६	४२	६	३८	६	३४

सूचना-नीचे दिखाये गये सभी समय रात्रिकालीन हैं।

पाक्षिक घटना

ता.१८,१९ को वर्षा योग है। (तिथि, ग्रहचार, ग्रहोदयास्त, संक्रान्ति इत्यादि के कारण इस पक्ष में)-युद्ध, चोरी अधिक हो, अनाज के भाव पूर्ववत् स्थिर रहें। रोगों की अधिकता, कुसमय में वर्षा, अच्छी फसल, ८ वर्ष तक के बालक पीड़ित, महान व्यक्ति का नाश, जनता में आतंक।

४१ पंक्ति ३० रवौ मिश्रमानम् ४४।३ दिनम् २६।३५ अयनांशाः ०।२४।१४।१५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
९	९	९	९	२	९	११	१०
४	४	२	२	२५	७	३	१६
२८	१	०	४०	२	२४	२	४५
२०	५२	१७	७	५७	१८	११	२६
६१	७५८	४५	९९	७	७५	४	३
५	१५	४९	२२	२९व	२६	५६	११
		अ	अ	उ	अ	उ	व

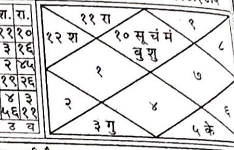

ग्रहस्थितिः (ता.४ से १८ जनवरी २०२६)

सूर्यः (मूले/पूर्वाषाढासु) -ता.११ उत्तराषाढासु ८/१३। ता.१४ मकरे २०/३१। ● भौमः (मूले/पूर्वाषाढासु/अस्तः)-ता.११ उत्तराषाढासु ४३/२४। ता.१६ मकरे ६/११। ● बुधः (मूले/धनुषि/अस्तः)-ता.६ पूर्वाषाढासु ४०/५। ता.१५ उत्तराषाढासु ३/५६। ता.१७ मकरे ६/४७। ● गुरुः (मिथुने/पुनर्वसौ३च./वक्री)-ता.५ पुनर्वसौ२च.५७/२७। ● शुक्रः (धनुषि/पूर्वाषाढासु/अस्तः)-ता.१० उत्तराषाढासु ११/५३। ता.१२ मकरे ५०/४८। ● शनिः (मीने/पूभायां ४ चरणे)। ● राहुः (कुम्भे/शतभिषायां ४ चरणे)। ● केतुः (सिंहे/पूफायां २ चरणे)।

ग्रहाणां युतिः -ता. ८ शु.भौ. योगः दि.८/३० शुक्रः ०/१० उ.। ता.१८ बु.भौ.योगः दि.७/३० बुधः ०/५८ द.। ता.१८ भौ.चं. योगः रा.७/४१ भौमः २/३७ उ.। ता.१८ बु.चं. योगः रा.८/३८ बुधः १/३६ उ.। ता.१८ शु.चं. योगः रा.शे.६/३२ शुक्रः २/८ उ.।

नोट- ता.१४ को **मकर संक्रान्ति (खिचड़ी)** दिन ३/० पर लग रही है अतः स्नान-दान आदि ता. १४ को दिन ३/० से सूर्यास्त तक करना शास्त्र सम्मत है। ता.१५ जनवरी को **तिलद्वादशी** है, इस दिन तिल के तेल से मन्दिरों में देवताओं हेतु दीपक जलायें, तिल से होम करें, ब्राह्मणों को तिल का दान दें व स्वयं भी तिल से बने हुये पदार्थ खायें। **मासशिवरात्रि १४** व्रत का निर्णय- ता.१६ को निशीथ में चतुर्दशी तिथि की पूर्ण व्याप्ति है व दूसरे दिन एकदेश व्याप्ति है अतः ता.१६ को ही मासशिवरात्रि का व्रत होगा। (दूसरे दिन निशीथ में चतुर्दशी की एकदेश व्याप्ति हो व पहले दिन पूर्णव्याप्ति हो तो पहले दिन ही करनी)। (परेद्युर्निशीथैकदेश व्याप्तौ पूर्वेद्युः संपूर्ण तदव्याप्तौ पूर्वैव-धर्मसिन्धौ)।

माघशुक्लपक्षः

श्रीसंवत् २०८२ शकः १९४७ (१९ जनवरी से १ फरवरी २०२६)। सौम्यायनं। याम्यगोलः। शिशिरऋतुः। ग. २९ पौष से १२ माघ १९४७। बंग ५ से १८ माघ १४३२। मु. २९ रज्जब से १२ साबान १४४७। नेपाली ६ से १९ माघ २०८२। ता.३१ शुक्रस्य पश्चिमोदयः।

ति.	वा.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	आनन्दादि योगाः	अं.	रा.	बं.	मु.	फ.	स्टै. अं. मि.	से.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	चं. रा.	रा.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	र.क्रां.द. अं.	क.	चंद्रास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.
		तिथि (समाप्तिकाल)					नक्षत्र (समाप्तिकाल)						योग (समाप्तिकाल)						करण (समाप्तिकाल)							तारीख							(लोकल घं.मि.)				चं. रा. सं. (प्रवेश काल)								(स्टैण्डर्ड टाइम घं.मि.)					
१	सो	४८	१३	रा	२°	४	उषा	१२	२७	दि	११	४६	वज्र	३४	३२	रा	८	३६	किं	१७	१५	बव	४८	१३	काणः	१९	२९	५	२९	१६	-८	४०	६	४१	५	१९	म							द २०	२३	६	२	६	४७	५	३१
२	मं	४९	२	रा	२°	२३	श्र	१५	१५	दि	१२	५३	सि	३२	२५	रा	७	४५	बा	१८	३८	कौ	४९	२	लुम्बः	२०	३०	६	३०	१७	८	५९	६	४०	५	२०	कुं	४६	१७	रा	१°	१८	२०	१०	७	१	६	४७	५	३२
३	बु	४८	३९	रा	२°	१४	घ	१६	५८	दि	१	३४	व्य	२९	२४	सा	६	३३	तै	१८	५१	ग	४८	३९	मित्रः	२१	१	७	१	१८	९	१७	६	४०	५	२०	कुं						१९	५७	७	५८	६	४७	५	३३
४	गु	४७	५	रा	१°	३५	श	१७	३३	दि	१	४७	व	२५	२९	दि	४	५८	व	१७	५२	भ	४७	५	वज्रः	२२	२	८	२	१९	९	३३	६	३९	५	२१	कुं						१९	४३	८	५६	६	४६	५	३३
५	शु	४४	१६	रा	१२°	२८	पूभा	१६	५४	दि	१	३२	प	२०	३५	दि	३	०	बव	१५	४०	बा	४४	१६	ध्वांक्षः	२३	३	९	३	२०	९	५०	६	३९	५	२१	मी	२	१६	प्रा	७	४१	१९	३०	९	५३	६	४६	५	३४
६	श	४०	२०	रा	१०	५३	उभा	१५	८	दि	१२	४९	शि	१४	४७	दि	१२	४१	कौ	१२	१८	तै	४०	२०	धूम्रः	२४	४	१०	४	२१	१०	५	६	३८	५	२२	मी						१९	१५	१०	५२	६	४६	५	३५
७	र	३५	२७	रा	८	५६	रे	१२	२१	दि	११	४३	सि	८	१०	दि	१०	२	ग	७	५३	व	३५	२७	प्रवर्धमान	२५	५	११	५	२२	१०	२०	६	३८	५	२२	मे	१२	२१	दि	११	४३	१९	१	११	५३	६	४६	५	३६
८	सो	२९	५१	रा	६	४१	अश्वि	८	४७	दि	१०	१६	सा / शु	० / ५२	५४ / ७	प्रा / रा	७ / ३	७ / ५८	भ	२	३९	बव / बा	२९ / ५६	५१ / ४७	रक्षः	२६	६	१२	६	२३	१०	३४	६	३७	५	२३	मे						१८	४६	१२	५८	६	४५	५	३६
९	मं	२३	४३	सा	४	१४	भ / कृ	४ / ५५	३३ / २४	प्रा / रा	८ / ६	३४ / ४४	शु	४४	४९	रा	१२°	४१	कौ	२३	४३	तै	५०	३२	मुसलः	२७	७	१३	७	२४	१०	४७	६	३७	५	२३	वृ	१८	२४	दि	२	७	१८	३१	२°	६	६	४५	५	३७
१०	बु	१७	२१	दि	१	४१	रो	५५	१९	रा	४°	५३	ब्रं	३६	३४	रा	९	२३	ग	१७	२१	व	४४	१३	शुभः	२८	८	१४	८	२५	१०	५९	६	३६	५	२४	वृ						१८	१५	३°	१४	६	४५	५	३८
११	गु	११	४	दि	११	९	मृ	५१	१	रा	३°	८	ऐं	२८	२९	सा	६	८	भ	११	४	बव	३८	३	मृत्युः	२९	९	१५	९	२६	११	११	६	३५	५	२५	मि	२३	१०	दि	४	०	१७	५९	४°	२०	६	४४	५	३९
१२ / १३	शु	५ / ५४	३ / ३४	दि / रा	८ / ६	४५ / ३४	आर्द्रा	४७	१३	रा	१°	३७	वै	२०	४२	दि	३	१	बा	५	३	कौ / तै	३२ / ५९	२० / ३७	पद्मः	३०	१०	१६	१०	२७	११	२१	६	३५	५	२५	मि						१७	४३	५°	२०	६	४४	५	३९
१४	श	५५	११	रा	४°	४७	पुन	४४	१६	रा	१२°	२६	वि	१३	३०	दि	१२	७	ग	२७	२४	व	५५	११	छत्रः	३१	११	१७	११	२८	११	३१	६	३४	५	२६	क	२९	५८	सा	६	४२	१७	२६	६°	२२	६	४३	५	४०
१५	र	५१	४६	रा	३°	२५	पु	४२	१७	रा	११	३८	प्री	६	५८	दि	९	३०	भ	२३	२८	बव	५१	४६	श्रीवत्सः	१	१२	१८	१२	२९	-११	४०	६	३४	५	२६	क						१७	१०	उ५	१०	६	४३	५	४१

काणयोगः।

चन्द्रदर्शनं मु.३० फलं समता, उत्तरोन्नतंशृंगं फलं सुभिक्षम्। कुम्भेचन्द्रः पंचकप्रारम्भश्च रात्रिशे. १/१८। सं.अभिजित्प्रवृत्यर्कः ५३/२४(रात्रिशे.४/९)।

गौरी तृतीया।

भ.१७/५२(दिवा १/५५)उपरि। भ.४७/५(रात्रि शेषे १/३६)यावत्। वरद वैनायकी गणेश चतुर्थी। सोपपदा ४। तिलं ४। कुन्द ४। ढुण्ढिराज व्रतम्।

वसन्त पंचमी ५। काशी हिन्दूविश्वविद्यालय प्रतिष्ठादिनं। सरस्वती पूजा। रतिकाम महोत्सवः५। श्रीः५। वागेश्वरी जयन्ती। सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती।

मूलः दिवा १२/४९ उपरि। सं.श्रवणेप्वर्कः ९/५८(दिवा १०/५५)। [(1) सं.अभिजित्रिवृत्यर्कः २/२९(प्रातः७/४६)। मन्वादिः७।

भ.३५/२७(रात्रौ ८/५७)उपरि। **रथसप्तमी** ७। भानुसप्तमी। मूलः। मेषेचन्द्रः पंचकसमाप्तिश्च दिवा ११/४३। नर्मदा जयन्ती। अचला ७। -(1)

भ.२/३९(प्रातः७/४९)यावत्। मूलः दिवा १०/१६ यावत्। भारतीय गणतन्त्रदिवसः ७७तमः। **भीष्म ८**।

हरषुब्रह्मदेव पुण्यतिथि महोत्सवः। महानन्दा ९।

भ.४४/१३(रात्रि शेषे १२/२६)उपरि। लाला लाजपत राय जयन्ती।

भ.११/४(दिवा ११/१०)यावत्। सर्वेषां जया एकादशी ११ व्रतम्। भीष्म ११।

[(2) ११/३८ उपरि। प्रयागे माघमेला समाप्तिः। माघस्नान व्रत-यम -नियमादि समाप्तिः१५। तिलपात्र दानम्। श्री ललिता जयन्ती। कम्बुककम्बल दानम् १५।

एकादशी पारणा दिवा ८/४५ यावत्। भीष्म १२। प्रदोषः१३ व्रतम्। तिलद्वादशी। शालिग्रामशिलादानम्। कल्पादिः१३। सोपपदा १२।

भ.५५/११(रात्रि शेषे ४/४७)उपरि। **शुक्रस्य पश्चिमोदयः** (सायं ५/५३)।

भ.२३/२८(दिवा ४/६)यावत्। स्नाने-दाने-व्रते माघी पूर्णिमा। संत रैदास जयन्ती। रवि-पुष्य योगः रात्री ११/३८ यावत्। मूलः रात्री -(2)

१ सोमे मिश्रमानम् ४४।३

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	९	५	२९	२४	६१	४
चं.	९	१६	४०	६	७७०	२७
मं.	९	२	४६	६	४५	५१
बु.	९	४	१९	२८	९९	५५
गु.	२	२४	५५	२८	७	२६व
शु.	९	८	३९	४४	७५	२६
श.	११	३	७	१५	५	०
रा.	१०	१६	४२	१९	३	११

२ भौमे मिश्रमानम् ४४।३

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	९	६	३०	२९	६१	४
चं.	९	२९	३०	३३	७८४	२६
मं.	९	३	३१	५७	४५	५३
बु.	९	५	५९	२३	१००	२८
गु.	२	२४	४८	२	७	२३व
शु.	९	९	५५	१०	७५	२५
श.	११	३	१२	१५	५	४
रा.	१०	१६	३९	११	३	११

३ बुधे मिश्रमानम् ४४।४

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	९	७	३१	३२	६१	३
चं.	१०	१२	३४	५९	७११	४९
मं.	९	४	१७	५०	४५	५५
बु.	९	७	३९	५१	१०१	१
गु.	२	२४	४०	३९	७	२०व
शु.	९	११	१०	३५	७५	२४
श.	११	३	१७	१९	५	८
रा.	१०	१६	३६	४	३	११

४ गुरौ मिश्रमानम् ४४।४

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	९	८	३२	३५	६१	२
चं.	१०	२५	५४	४८	८१५	५५
मं.–रा.	[illegible]					

५ शुक्रे मिश्रमानम् ४४।५

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	९	९	३३	३७	६१	१
चं.	११	९	३०	४३	८३१	४५
मं.	९	५	४९	४२	४५	५९
बु.–रा.	[illegible]					

६ शनौ मिश्रमानम् ४४।६

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	९	१०	३४	३९	६१	१
चं.	११	२३	२२	२७	८४६	४
मं.	९	६	३५	४०	४६	०
बु.–रा.	[illegible]					

७ रवौ मिश्रमानम् ४४।६

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	९	११	३५	३९	६१	०
चं.	०	७	२८	३२	८५७	३०
मं.	९	७	२१	४१	४६	२
बु.–रा.	[illegible]					

८ सोमे मिश्रमानम् ४४।७

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	९	१२	३६	३९	६०	५९
चं.	०	२१	४६	१	८६४	४२
मं.	९	८	७	४३	४६	४
बु.	९	१६	१०	२१	१०३	४०
गु.–रा.	[illegible]					

९ भौमे मिश्रमानम् ४४।८

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.–रा.	[illegible]					

१० बुधे मिश्रमानम् ४४।९ — [illegible]

११ गुरौ मिश्रमानम् ४४।१० — [illegible]

१२ शुक्रे मिश्रमानम् ४४।११ — [illegible]

१४ शनौ मिश्रमानम् ४४।१२ — [illegible]

१५ रवौ मिश्रमानम् ४४।१३ — [illegible]

४२ पंक्ति ७ रवौ मिश्रमानम् ४४।६ दिनम् २६।५२ अयनांशाः ०।२४।१४।६

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
९	०	९	९	२	९	११	१०
११	७	७	१४	२४	१६	३	१६
३५	२८	२१	२७	११	१२	३८	२३
३९	३२	४१	११	४२	८	१७	३३
६१ ०	८५७ ३०	४६ २	१०३ १०	७ ४व	७५ २१	५ २४	३ ११
		अ	अ	उ	अ	उ	व

एकादशी पारणा निर्णय-

एकादशी व्रत का पारणा द्वादशी में होता है। यह प्रातः काल या मध्याह्न काल में किया जाता है। उस काल में द्वादशी तिथि होनी चाहिये। ध्यान दें कि प्रातः काल के बाद आने वाले संगव काल में पारणा नहीं किया जाता है। इस द्वादशी को यद्यपि प्रातः काल दिवा ८/५४ तक है परन्तु द्वादशी तिथि का मान दिवा ८/४५ तक होने से पारणा ८/४५ के पूर्व ही करना होगा।

दैनिकहोरालग्नसारिणी (लग्न की समाप्ति का समय दिया गया है।)

(प्रचलित घड़ियों के समय के अनुसार घण्टा-मिनट में)

रा	१ सो		२ मं		३ बु		४ गु		५ शु		६ श		७ र		८ सो		९ मं		१० बु		११ गु		१२ शु		१४ श		१५ र	
म	८	१६	८	१२	८	८	८	४	८	०	७	५६	७	५२	७	४९	७	४५	७	४१	७	३७	७	३३	७	२९	७	२५
कुं	९	४८	९	४४	९	४०	९	३६	९	३२	९	२८	९	२४	९	२१	९	१७	९	१३	९	९	९	५	९	१	८	५७
मी	११	१६	११	१२	११	८	११	४	११	०	१०	५६	१०	५२	१०	४९	१०	४५	१०	४१	१०	३७	१०	३३	१०	२९	१०	२५
मे	१२	५४	१२	५०	१२	४६	१२	४२	१२	३८	१२	३४	१२	३०	१२	२७	१२	२३	१२	१९	१२	१५	१२	११	१२	७	१२	३
वृ	२	५०	२	४६	२	४२	२	३८	२	३४	२	३०	२	२६	२	२३	२	१९	२	१५	२	११	२	७	२	३	१	५९
मि	५	४	५	०	४	५६	४	५२	४	४८	४	४४	४	४०	४	३७	४	३३	४	२९	४	२५	४	२१	४	१७	४	१३

सूचना-नीचे दिखाये गये सभी समय रात्रिकालीन हैं।

रा	१ सो		२ मं		३ बु		४ गु		५ शु		६ श		७ र		८ सो		९ मं		१० बु		११ गु		१२ शु		१४ श		१५ र	
क	७	२३	७	१९	७	१५	७	११	७	७	७	३	६	५९	६	५६	६	५२	६	४८	६	४४	६	४०	६	३६	६	३२
सिं	९	३८	९	३४	९	३०	९	२६	९	२२	९	१८	९	१४	९	११	९	७	९	३	८	५९	८	५५	८	५१	८	४७
कं	११	५२	११	४८	११	४४	११	४०	११	३६	११	३२	११	२८	११	२५	११	२१	११	१७	११	१३	११	९	११	५	११	१
तु	२	९	२	५	२	१	१	५७	१	५३	१	४९	१	४५	१	४२	१	३८	१	३४	१	३०	१	२६	१	२२	१	१८
वृ	४	२६	४	२२	४	१८	४	१४	४	१०	४	६	४	२	३	५९	३	५५	३	५१	३	४७	३	४३	३	३९	३	३५
ध	६	३१	६	२७	६	२३	६	१९	६	१५	६	११	६	७	६	४	६	०	५	५६	५	५२	५	४८	५	४४	५	४०

पाक्षिक घटना

(तिथि, ग्रहचार, ग्रहोदयास्त इत्यादि के कारण इस पक्ष में) - महाघोर दुर्भिक्ष, महाभय। अस्वस्थता, छत्रभंग, राजाओं में विग्रह, रोगों की अधिकता, ईख, तीसी, गेहूँ, चना वगैरह को पाला पड़ने से हानि, चौपायों को कष्ट।

शुक्रोदय फल- लोक में सुख, सुभिक्ष, छत्र भंग, धान्य तेज, वातकष्ट, दुर्भिक्ष।

४३ पंक्ति १५ रवौ मिश्रमानम् ४४।१३ दिनम् २७।११ अयनांशाः ०।२४।१४।७

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
९	३	९	९	२	९	११	१०
१८	२७	१२	२६	२३	२४	४	१६
४२	५	४४	३८	२४	५९	१७	१
२९	४१	३०	३५	९	२१	२६	४०
६० ५३	८१० ४२	४६ १३	१०५ ४८	६ २४व	७५ १६	५ ५०	३ ११
		अ	अ	उ	उ	उ	व

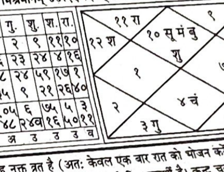

नोट- ता.२२ जनवरी २०२६ को ढुण्ढिराज (गणेश) व्रत है। यह नक्त व्रत है (अतः केवल एक बार रात को भोजन करें), प्रदोष में पूजा, तिल से बने लड्डुओं का नैवेद्य एवं स्वयं तिल का लड्डु खाना चाहिये। आज ही प्रदोषव्यापिनी तिल चतुर्थी है। कुन्द चतुर्थी भी आज ही है, इसमें कुन्दपुष्प से श्री विष्णु का पूजन किया जाता है। ता.२५ को रथसप्तमी ७ है, रविवार होने से यह विजया नामक महापुण्यप्रदा कहलायेगी। ता.२६ को **भीष्माष्टमी** है इस दिन तिल से तर्पण, श्राद्ध करना चाहिये ऐसा न करने से पूरे सम्वत्सर में किये हुये पुण्यों का नाश हो जाता है। ता.३० को भीष्म द्वादशी है इस दिन भी तर्पण व श्राद्ध करने से लम्बी आयु प्राप्त होती है। इसी दिन तिलद्वादशी है इसमें तिल के तेल से देवता को दीपक दिखाना चाहिये।

ग्रहस्थितिः (ता.१९ जनवरी से १ फरवरी २०२६)

सूर्यः (मकरे/उत्तराषाढ़ासु) -ता.२४ श्रवणेषु ९/५८। ● **भौमः**(मकरे/उषासु/अस्तः)-ता.२९ श्रवणे १०/२०। ● **गुरुः** (मिथुने/पुनर्वसौ२च./वक्री)। ● **बुधः** (मकरे/उत्तराषाढासु/अस्तः)-ता.२३ श्रवणेषु ७/२१ ता.२३ धनिष्ठायां ५१/९ ● शुक्रः (मकरे/उत्तराषाढासु/अस्तः)-ता.२० श्रवणे ४७/५१। ता.३१ पश्चिमोदयः। सायं५/५३ ता.३१ धनिष्ठासु २४/५८। ● **शनिः** (मीने/पूभायां ४चरणे)-ता.२२ उभायां१ चरणे १५/४६। ●**राहुः** (कुम्भे/शतभिषायां४चरणे)-ता.२० शतभिषायां ३चरणे २८/२३। ●**केतुः** (सिंहे/पूफायां२च.)-ता.२० पूफायां१ चरणे २८/२३।

ग्रहाणां युतिः -ता.२३ श.चं. योगः सा.६/११ शनिः ४/२१ द.। ता.२८ शु.बु.योगः रा.शे.४/३० शुक्रः ०/४४ उ.। ता.३१ गु.चं. योगः दि.८/० गुरुः ३/५१ द.।

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	आनन्दादि योगाः	अं	रा	बं	मु	फ	स्टै अं मि	से	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	चं रा	घ	प	स	घं	मि	र क्रां द अं	क	चंद्रोदय घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.
२७	१४	१	सो	४९	३५	रा	२	३१	ऽश्ले	४१	३०	रा	११	१८	आ/सौ	१/५५	२०/२०	प्रा/रा	७/५	१४/२२	बा	२०	४०	कौ	४९	३५	सौम्यः	२	१३	१९	१३	१	-११	४९	६	३३	५	२७	सिं	४१	३०	रा	११	१८	१६	५२	६	१५	६	४२	५	४१
२७	१७	२	मं	४८	३६	रा	२	८	म	४१	५३	रा	११	२७	शो	५३	२	रा	३	५५	तै	१९	५	ग	४८	३६	कालदंड	३	१४	२०	१४	२	११	५६	६	३३	५	२७	सिं						१६	३५	७	१६	६	४२	५	४२
२७	२०	३	बु	४८	५६	रा	२	१५	पूफा	४३	३२	रा	१२	६	ऽति	५०	२५	रा	२	५१	व	१८	४६	भ	४८	५६	स्थिरः	४	१५	२१	१५	३	१२	३	६	३२	५	२८	कं	५९	२	रा	६	१८	१६	१७	८	१४	६	४१	५	४३
२७	२३	४	गु	५०	२४	रा	२	५०	उफा	४६	१९	रा	१	१२	सु	४८	३९	रा	२	९	बव	१९	४०	बा	५०	२४	मातंगः	५	१६	२२	१६	४	१२	९	६	३१	५	२९	कं						१५	५९	९	१०	६	४१	५	४४
२७	२६	५	शु	५२	५९	रा	३	५१	ह	५०	९	रा	२	४४	धृ	४७	४४	रा	१	४६	कौ	२१	४२	तै	५२	५९	अमृतः	६	१७	२३	१७	५	१२	१४	६	३१	५	२९	कं						१५	४१	१०	४	६	४०	५	४४
२७	३०	६	श	५६	२३	रा	५	१३	चि	५४	४८	रा	४	३५	शू	४७	२८	रा	१	३९	ग	२४	४१	व	५६	२३	काणः	७	१८	२४	१८	६	१२	१८	६	३०	५	३०	तु	२२	२५	दि	३	३८	१५	२२	१०	५८	६	४०	५	४५
२७	३३	७	र	६०	०	स	म	ग्र	स्वा	६०	०	स	म	ग्र	गं	४७	४५	रा	१	४५	भ	२८	२८	बव	६०	०	लुम्बः	८	१९	२५	१९	७	१२	२२	६	२९	५	३१	तु						१५	४	११	५३	६	३९	५	४६
२७	३६	७	सो	०	३३	प्रा	६	५१	स्वा	०	११	प्रा	६	४२	वृ	४८	२३	रा	२	०	बव	०	३३	बा	३२	४८	छत्रः	९	२०	२६	२०	८	१२	२४	६	२९	५	३१	वृ	४९	२७	रा	२	२५	१४	४४	१२	४८	६	३८	५	४६
२७	३९	८	मं	५	३	दि	८	३९	वि	५	५४	दि	९	०	ध्रु	४९	१०	रा	२	१८	कौ	५	३	तै	३७	२५	श्रीवत्सः	१०	२१	२७	२१	९	१२	२६	६	२८	५	३२	वृ						१४	२५	१	४३	६	३८	५	४७
२७	४३	९	बु	९	४६	दि	१०	३१	ऽनु	११	४८	दि	११	२०	व्या	४९	५९	रा	२	३७	ग	९	४६	व	४२	४	सौम्यः	११	२२	२८	२२	१०	१२	२७	६	२७	५	३३	वृ						१४	६	२	३८	६	३७	५	४८
२७	४६	१०	गु	१४	२२	दि	१२	२०	ज्ये	१७	३६	दि	१	३८	ह	५०	३७	रा	२	५१	भ	१४	२२	बव	४६	२८	कालदंड	१२	२३	२९	२३	११	१२	२७	६	२७	५	३३	ध	१७	३६	दि	१	३८	१३	४६	३	३१	६	३६	५	४८
२७	४९	११	शु	१८	३५	दि	२	१	मू	२३	१	दि	३	४८	व	५०	५१	रा	२	५७	बा	१८	३५	कौ	५०	२५	स्थिरः	१३	२४	१	२४	१२	१२	२७	६	२६	५	३४	ध						१३	२६	४	२०	६	३६	५	४९
२७	५३	१२	श	२२	१५	दि	३	२९	पूषा	२७	५५	सा	५	४५	सि	५०	३७	रा	२	५०	तै	२२	१५	ग	५३	४२	मातंगः	१४	२५	२	२५	१३	१२	२६	६	२५	५	३५	म	४४	३	रा	१२	१२	१३	५	५	५	६	३५	५	५०
२७	५६	१३	र	२५	९	दि	४	३७	उषा	३२	३	रा	७	२३	व्य	४९	४३	रा	२	२७	व	२५	९	भ	५६	५	अमृतः	१५	२६	३	२६	१४	१२	२४	६	२५	५	३५	म						१२	४५	५	४६	६	३४	५	५०
२७	५९	१४	सो	२७	१	सा	५	२२	श्र	३५	१२	रा	८	३९	व	४७	५८	रा	१	४६	श	२७	१	च	५७	२५	सिद्धिः	१६	२७	४	२७	१५	१२	२१	६	२४	५	३६	म						१२	२४	०	०	६	३४	५	५१
२८	३	३०	मं	२७	४९	सा	५	४०	घ	३७	१७	रा	९	२८	प	४५	२३	रा	१२	४२	ना	२७	४९	किं	५७	३७	उत्पातः	१७	२८	५	२८	१६	-१२	१७	६	२३	५	३७	कुं	६	२९	दि	९	९	१२	३	०	०	६	३३	५	५१

फाल्गुनकृष्णपक्षः

श्रीसंवत् २०८२ शकः १९४७ (२ से १७ फरवरी २०२६)। सौम्यायनं। याम्यगोलः। शिशिरऋतुः। रा. १३ से २८ माघ १९४७। बं. १९ माघ से ५ फाल्गुन १४३२। मु.१३ से २८ सावान १४४७। नेपाली २० माघ से ५ फाल्गुन २०८२। शुक्रः पश्चिमे।

मूलः।

मूलः रात्रौ ११/२७ यावत्। शुक्रस्य बालत्व समाप्तिः (सायं ५/५३)।

भ.१८/४६(दिवा २/११)उपरि। भ.४८/५६(रात्रि शेषे २/१५)यावत्।

संकष्टी गणेश चतुर्थी ४ व्रतम् चन्द्रोदयः रात्रौ ९/१०।

सं.घनिष्ठायामर्कः१८/४ (दिवा १/५४)।

भ.५६/२३(रात्रि शेषे ५/१३)उपरि।

भ.२८/२८(सायं ६/२)यावत्। भानुसप्तमी।

सीताष्टमी ८(सीताजन्म मध्याह्ने)। अष्टकाश्राद्धम् (अपराह्णे)।

श्रीवत्सयोगः।

भ.४२/४(रात्रौ ११/२७)उपरि। मूलः दिवा ११/२० उपरि। मासान्तः। समर्थ गुरु रामदास नवमी।

भ.१४/२२(दिवा १२/२१)यावत्। **सं.कुम्भेचार्कः** ५३/२३ (रात्रि शेषे ३/५७)। मुहूर्त ३० फलं समता। मूलः।

संक्रान्ति पुण्यकालः दिवा १२/१० यावत्। मूलः दिवा ३/४८ यावत्। सर्वेषां विजया एकादशी ११ व्रतम्।

एकादशी पारणा दिवा ८/४९ यावत् अथवा दिवा ११/३ उपरि दिवा १/१७ यावत्। शनिप्रदोषः१३ व्रतम् (सन्तानसुख प्राप्त्यर्थम्)।

भ.२५/९(दिवा ४/३८)उपरि। भ.५६/५(रात्रि शेषे ५/०)यावत्। **महाशिवरात्रिः**१४ व्रतम् निशीथ कालः रा.११/४९ उपरि -(2)

सिद्धियोगः।

कुम्भेचन्द्रः पंचकप्रारम्भश्च दिवा ९/९। द्वापरयुगादिः। स्नाने-दाने दर्शे-भौमवती ३०(धनिष्ठायुतायां पितृणां तिलान्नदानेन पुण्यप्राप्तिः)। - (1)

[(2) रात्रि शेषे १२/४० यावत्। श्रीकाशीविश्वनाथदर्शनं पूजानं। जलाभिषेकः, सर्वत्र शिवपूजनंदर्शनञ्च। कृत्तिवासेश्वर दर्शनम्। वैद्यनाथज्योतिर्लिङ्ग १४। रात्रौजागरणं। रुद्राभिषेकः, ज्योतिर्लिंग पूजा, चतुर्दशलिङ्ग पूजा १४।

[(1) अश्वत्थमूले प्रणिधाय विष्णुं सम्पूज्य सम्यग्विविधोपचारैः प्रदक्षिणापैः फलादि द्रव्यैः स्त्रीभिर्विधेया पति सौख्यवृद्ध्यै" इति मन्त्रेण अश्वत्थ (पीपल) वृक्षस्य १०८ परिक्रमा कार्या। (इस अमावास्या को स्त्रियों को विष्णु का पूजन करने के पश्चात् उपरोक्त मन्त्र का पाठ करते हुये पीपल के वृक्ष की १०८ प्रदक्षिणा करनी चाहिये)। इससे पति का जीवन सुखमय होता है।

ति. १ सोमे मिश्रमानम् ४४।१४

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	९	१९	४३	१२	६०	५२
चं.	४	०	३६	२३	७९४	९
मं.	९	१३	३०	४३	४६	१५
बु.	९	२८	२४	२३	१०५	५५
गु.	२	२३	१७	४५	६	१७व
शु.	९	२६	१४	३७	७५	१५
श.	११	४	२३	२७	५	५४
रा.	१०	१५	५८	३२	३	११

२ भौमे मिश्रमानम् ४४।१५

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	९	२०	४४	४	६०	५१
चं.	४	१३	५०	३१	७७८	३५
मं.	९	१४	१६	५८	४६	१६
बु.	१०	०	१०	१८	१०५	५५
गु.	२	२३	११	२९	६	१०व
शु.	९	२७	२९	५२	७५	१४
श.	११	४	२९	२०	५	५७
रा.	१०	१५	५५	२५	३	११

३ बुधे मिश्रमानम् ४४।१७

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	९	२१	४४	५५	६०	५०
चं.	४	२६	४९	६	७६४	४२
मं.	९	१५	३	१५	४६	१८
बु.	१०	१	५६	१२	१०५	४७
गु.	२	२३	५	१९	६	२व
शु.	९	२८	४५	६	७५	१३
श.	११	४	३५	७	६	०
रा.	१०	१५	५२	१७	३	११

४ गुरौ मिश्रमानम् ४४।१८

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	९	२२	४५	४५	६०	४९
चं.	५	९	३३	४८	७५२	५५
मं.	९	१५	४९	३३	४६	१९
बु.	१०	३	४१	५९	१०५	२९
गु.	२	२२	५९	१६	५	५५व
शु.	१०	०	०	११	७५	१२
श.	११	४	४१	७	६	३
रा.	१०	१५	४९	१०	३	११

५ शुक्रे मिश्रमानम् ४४।१९

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	९	२३	४६	३४	६०	४७
चं.	५	२२	६	४२	७४३	२६
मं.	९	१६	३५	५२	४६	२१
बु.	१०	५	२७	२८	१०४	५९
गु.	२	२२	५३	२२	५	४७व
शु.	१०	१	१५	३१	७५	११
श.	११	४	४७	११	६	७
रा.	१०	१५	४६	२	३	११

६ शनौ मिश्रमानम् ४४।२१

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	९	२४	४७	२१	६०	४६
चं.	६	४	३०	९	७३६	२०
मं.	९	१७	२२	१२	४६	२२
बु.	१०	७	१२	२७	१०४	१५
गु.	२	२२	४७	३४	५	३९व
शु.	१०	२	३०	४२	७५	१०
श.	११	४	५३	१७	६	१०
रा.	१०	१५	४२	५४	३	११

७ रवौ मिश्रमानम् ४४।२२

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	९	२५	४८	७	६०	४५
चं.	६	१६	४६	२९	७३१	३६
मं.	९	१८	८	३४	४६	२३
बु.	१०	८	५६	४२	१०३	१४
गु.	२	२२	४१	५५	५	३१व
शु.	१०	३	४५	५२	७५	९
श.	११	४	५९	२७	६	१३
रा.	१०	१५	३९	४७	३	११

७ सोमे मिश्रमानम् ४४।२४

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	९	२६	४८	५२	६०	४४
चं.	६	२८	५८	५	७२९	१२
मं.	९	१८	५४	५७	४६	२४
बु.	१०	१०	३९	५६	१०१	५२
गु.	२	२२	३६	२४	५	२२व
शु.	१०	५	१	१	७५	८
श.	११	५	५	४०	६	१६
रा.	१०	१५	३६	३९	३	११

८ भौमे मिश्रमानम् ४४।२५

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	९	२७	४९	३६	६०	४२
चं.	७	११	७	१८	७२९	६
मं.	९	१९	४१	२२	४६	२६
बु.	१०	१२	२१	४८	१००	५
गु.	२	२२	३१	२	५	१४व
शु.	१०	६	१६	९	७५	७
श.	११	५	११	५५	६	१९
रा.	१०	१५	३३	३२	३	११

९ बुधे मिश्रमानम् ४४।२७

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	९	२८	५०	१८	६०	४१
चं.	७	२३	१६	२३	७३१	१४
मं.	९	२०	२७	४८	४६	२७
बु.	१०	१४	१	५२	९७	४९
गु.	२	२२	२५	४८	५	५व
शु.	१०	७	३१	१६	७५	६
श.	११	५	१८	१४	६	२१
रा.	१०	१५	३०	२४	३	११

१० गुरौ मिश्रमानम् ४४।२९

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	९	२९	५०	५९	६०	४०
चं.	८	५	२७	३८	७३५	३९
मं.	९	२१	१४	१५	४६	२८
बु.	१०	१५	३९	४१	९४	५९
गु.	२	२२	२०	४३	४	५६व
शु.	१०	८	४६	२२	७५	५
श.	११	५	२४	३६	६	२४
रा.	१०	१५	२७	१६	३	११

११ शुक्रे मिश्रमानम् ४४।३०

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	१०	०	५१	३८	६०	३८
चं.	८	१७	४३	१६	७४२	१८
मं.	९	२२	०	४३	४६	२९
बु.	१०	१७	१४	४०	९१	३३
गु.	२	२२	१५	४७	४	४७व
शु.	१०	१०	१	२७	७५	४
श.	११	५	३१	०	६	२७
रा.	१०	१५	२४	९	३	११

१२ शनौ मिश्रमान ४४।३२

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	१०	१	५२	१७	६०	३७
चं.	९	०	५	३४	७५२	१३
मं.	९	२२	४७	१२	४६	३०
बु.	१०	१८	४६	१३	८७	२६
गु.	२	२२	११	०	४	३७व
शु.	१०	११	१६	३१	७५	३
श.	११	५	३७	२७	६	३०
रा.	१०	१५	२१	१	३	११

१३ रवौ मिश्रमान ४४।३४

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	१०	२	५२	५३	६०	३५
चं.	९	१२	३६	४७	७६२	११
मं.	९	२३	३३	४२	४६	३१
बु.	१०	२०	१३	३९	८२	३५
गु.	२	२२	६	२३	४	२८व
शु.	१०	१२	३१	३४	७५	२
श.	११	५	४३	५६	६	३२
रा.	१०	१५	१७	५४	३	११

ति. १४ सोमे मिश्रमान ४४।३६

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	१०	३	५३	२८	६०	३४
चं.	९	२५	११	६	७७५	३०
मं.	९	२४	२०	१४	४६	३२
बु.	१०	२२	३६	१३	७६	५८
गु.	२	२२	१	५५	४	१८व
शु.	१०	१३	४६	३६	७५	१
श.	११	५	५०	२९	६	३५
रा.	१०	१५	१४	४६	३	११

३० भौमे मिश्रमान ४४।३८

ग्र.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	१०	४	५४	२	६०	३२
चं.	१०	८	१४	३६	७९०	२५
मं.	९	२५	६	४६	४६	३३
बु.	१०	२२	५३	११	७०	३५
गु.	२	२१	५७	३७	४	८व
शु.	१०	१५	१	३७	७५	०
श.	११	५	५७	४	६	३७
रा.	१०	१५	११	३९	३	११

४४ पंक्ति ७ रवौ मिश्रमानम् ४४।२२ दिनम् २७।३३ अयनांशा: ०।२४।१४।८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
९	६	९	१०	२	१०	११	१०
२५	१६	१८	८	२२	३	४	१५
४८	४६	८	५६	४१	४५	५९	३९
७	२९	३४	४२	५५	५२	२७	४७
६० ४५	७३१ ३६	४६ २३	१०३ १४	५ ३१व	७५ ९	६ १३	३ ११
	अ	उ	उ	उ	उ	व	

४५ पंक्ति १३ रवौ मिश्रमानम् ४४।३४ दिनम् २७।५६ अयनांशा: ०।२४।१४।९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
१०	९	९	१०	२	१०	११	१०
२	१२	२३	२०	२२	१२	५	१५
५२	३६	३३	१३	६	३१	४३	१७
५३	४७	४२	३९	२३	३४	५६	५४
६० ३५	७६२ ११	४६ ३१	८२ ३५	४ २८व	७५ २	६ ३२	३ ११
	अ	उ	उ	उ	उ	व	

(प्रचलित घड़ियों के समय के अनुसार घण्टा-मिनट में) दैनिकहोरालग्नसारिणी (लग्न की समाप्ति का समय दिया गया है।)

रा	१ सो		२ मं		३ बु		४ गु		५ शु		६ श		७ र		७ सो		८ मं		९ बु		१० गु	
म	७	२१	७	१७	७	१३	७	९	७	५	७	१	६	५७	६	५३	६	४९	६	४५	६	४१
कुं	८	५३	८	४९	८	४५	८	४१	८	३७	८	३३	८	२९	८	२५	८	२१	८	१७	८	१३
मी	१०	२१	१०	१७	१०	१३	१०	९	१०	५	१०	१	९	५७	९	५३	९	४९	९	४५	९	४१
मे	११	५९	११	५५	११	५१	११	४७	११	४३	११	३९	११	३५	११	३१	११	२७	११	२३	११	१९
वृ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

सूचना-नीचे दिखाये गये सभी समय रात्रिकालीन हैं।

रा	१ सो		२ मं		३ बु		४ गु		५ शु		६ श		७ र		७ सो		८ मं		९ बु		१० गु	
क	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
सिं	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कं	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
तु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वृ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ध	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

रा	११ शु		१२ श		१३ र		१४ सो		३० मं	
कुं	८	९	८	५	८	१	७	५७	७	५३
मी	९	३७	९	३३	९	२९	९	२५	९	२१
मे	११	१५	११	११	११	७	११	३	१०	५९
वृ	१	११	१	७	१	३	१२	५९	१२	५५
मि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
क	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
सिं	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कं	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
तु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वृ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ध	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
म	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ग्रहस्थितिः (ता. २ से १७ फरवरी २०२६)

सूर्यः (मकरे/श्रवणेषु) —ता. ६ धनिष्ठासु १८/४। ता.१२ कुम्भे ५३/२३। ● भौमः (मकरे/श्रवणे/अस्तः)—ता.१५ धनिष्ठासु २६/५२। ● बुधः (मकरे/धनिष्ठायां/अस्तः)—ता.३ कुम्भे ३८/२३। ता.५ पश्चिमोदयः सायं ६/९। ता.७ शतभिषायां २५/३७। ता.१५ पूर्वभाद्रपदासु ३४/३८। ● गुरुः (मिथुने/पुनर्वसौ१चरणे/वक्री)—ता.२ पुनर्वसौ १चरणे २२/४७। ● शुक्रः (मकरे/धनिष्ठासु)—ता.५ कुम्भे ४४/०। ता.११ शतभिषायां ३/२७। ● शनिः (मीने/उभायां१चरणे)। ● राहुः (कुम्भे/शतभिषायां३चरणे)। ● केतुः (सिंहे/पूफायां१चरणे)।

ग्रहाणां युतिः —ता.१६ भौम चन्द्र योगः रात्रौ ११/१२ भौमः ०/४६ उत्तरे।

पाक्षिक घटना–ता.१६ को वर्षा योग है। (तिथि, ग्रहचार, ग्रहोदयास्त, संक्रान्ति इत्यादि के कारण इस पक्ष में) अन्नोत्पादन अच्छा होता है। श्रेष्ठ पुरुष का नाश, किसी राज्य में संकट, कहीं द्रव्य की हानि, कहीं वायुमंडलीय दुर्घटना व दुखदायी स्थिति, कभी-कभी हवा बहे, गुड़-शक्कर धान्य सस्ते हों। महामारी जैसे रोग हों।

नोट- इस पक्ष की भौमवती अमावास्या धनिष्ठा नक्षत्र युक्त होने से पितरों के निमित्त तिल व अन्न दान करना महापुण्यप्रद होता है।

फाल्गुनशुक्लपक्षः

श्रीसंवत् २०८२ शकः १९४७ (१८ फरवरी से ३ मार्च २०२६)। सौम्यायनं। याम्यगोलः। शिशिरऋतुः। ता.२९ माघ से १२ फाल्गुन १९४७। बंग ६ से १९ फा.१४३२। मु.२१ सावान से १३ रमजान १४४७। नेपाली ६ से १९ फा.२०८२। शुक्रः पश्चिमे। **३९**

[illegible]	तिथि ति.	वा.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	नक्षत्र न.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	योग यो.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	आनन्दादि योगाः
२८ ६	१	बु	२७	२४	सा	५	२९	श्र	३८	१२	रा	९	४९	शि	४१	५०	रा	११	१६	बव	२७	२४	बा	५६	३४	मानसः
२८ १०	२	गु	२५	४५	सा	४	४८	पूभा	३७	५३	रा	९	४०	सि	३७	१८	रा	९	२७	कौ	२५	४५	तै	५४	१८	मुद्गरः
२८ १३	३	शु	२२	५२	दि	३	३८	उभा	३६	२३	रा	९	३	सा	३१	५१	रा	७	१४	ग	२२	५२	व	५०	५१	केतुः
२८ १७	४	श	१८	५०	दि	२	१	रे	३३	४८	रा	८	१	शुभ	२५	२९	सा	४	४२	भ	१८	५०	बव	४६	२२	धाता
२८ २०	५	र	१३	५३	दि	१२	२	अश्वि	३०	२१	सा	६	३७	शु	१८	२५	दि	१	५१	बा	१३	५३	कौ	४१	२	आनन्दः
२८ २४	६	सो	८	१२	दि	९	४४	भ	२६	१५	सा	४	५८	ब्रं	१०	४७	दि	१०	४७	तै	८	१२	ग	३५	५	चरः
२८ २८	७ / ८	मं	१ / ५३	५९ / ३१	प्रा / रा	७ / ४	१४ / ३८	कृ	२१	४५	दि	३	९	ऐं / वै	२ / ५१	४४ / ४४	प्रा / रा	७ / ४	३३ / १४	व	१	५९	भ / बव	२८ / ५५	४४ / ३०	गदः
२८ ३१	९	बु	४९	१०	रा	२°	५	रो	१७	९	दि	१	१८	वि	४६	१९	रा	१२°	५८	बा	२२	२०	कौ	४९	१०	शुभः
२८ ३५	१०	गु	४३	१३	रा	११	४२	मृ	१२	४४	दि	११	३१	प्री	३८	२९	रा	९	४९	तै	१६	११	ग	४३	१३	मृत्युः
२८ ३८	११	शु	३७	५५	रा	९	३४	आर्द्रा	८	४९	दि	९	५५	आ	३१	९	सा	६	५२	व	१०	३४	भ	३७	५५	पद्मः
२८ ४२	१२	श	३३	२९	रा	७	४६	पुन	५	३६	दि	८	३७	सौ	२४	२९	दि	४	११	बव	५	४२	बा	३३	२९	छत्रः
२८ ४६	१३	र	३०	३	रा	६	२४	पु	३	१९	दि	७	४३	शो	१८	३५	दि	१	४९	कौ	१	४६	तै / ग	३० / ५८	३ / ५७	श्रीवत्सः
२८ ४९	१४	सो	२७	५१	सा	५	३०	ऽश्ले	२	१३	दि	७	१५	ऽति	१३	३९	दि	११	५०	व	२७	५१	भ	५७	२२	सौम्यः
२८ ५३	१५	मं	२६	५३	सा	५	६	म	२	२०	दि	७	१७	सु	९	४२	दि	१०	१४	बव	२६	५३	बा	५७	२	कालदंड

ति.	तारीख अं.	रा.	बं.	मु.	फ.	स्टै.अं. मि.	से.	(लोकल घं.मि.) सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	चं. रा.	सं. (प्रवेश काल) घ.	प.	स.	घं.	मि.	र.क्रां.द. अं.	क.	(स्टैण्डर्ड टाइम घं.मि.) चंद्रास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.
१	१८	२९	६	२९	१७	-१२	१३	६	२३	५	३७	कुं						द ११	४२	६	४७	६	३२	५	५२
२	१९	३०	७	१	१८	१२	८	६	२२	५	३८	मी	२३	५	दि	३	४५	११	२१	७	४६	६	३१	५	५३
३	२०	१	८	२	१९	१२	२	६	२१	५	३९	मी						११	०	८	४५	६	३०	५	५३
४	२१	२	९	३	२०	११	५६	६	२०	५	४०	मे	३३	४८	रा	८	१	१०	३८	९	४७	६	३०	५	५४
५	२२	३	१०	४	२१	११	४९	६	२०	५	४०	मे						१०	१६	१०	५१	६	२९	५	५४
६	२३	४	११	५	२२	११	४१	६	१९	५	४१	वृ	४०	८	रा	१०	३१	९	५४	११	५८	६	२८	५	५५
७ / ८	२४	५	१२	६	२३	११	३३	६	१८	५	४२	वृ						९	३२	१°	५	६	२७	५	५५
९	२५	६	१३	७	२४	११	२४	६	१८	५	४२	मि	४४	५२	रा	१२°	२३	९	१०	२°	११	६	२६	५	५६
१०	२६	७	१४	८	२५	११	१५	६	१७	५	४३	मि						८	४८	३°	११	६	२५	५	५७
११	२७	८	१५	९	२६	११	५	६	१६	५	४४	क	५१	१८	रा	२°	५५	८	२५	४°	५	६	२४	५	५७
१२	२८	९	१६	१०	२७	१०	५४	६	१६	५	४४	क						८	३	४°	५१	६	२३	५	५८
१३	१	१०	१७	११	२८	१०	४३	६	१५	५	४५	क						७	४०	५°	३१	६	२३	५	५८
१४	२	११	१८	१२	२९	१०	३१	६	१४	५	४६	सिं	२	१३	दि	७	१५	७	१७	उ५	१	६	२२	५	५९
१५	३	१२	१९	१३	३०	-१०	१९	६	१३	५	४७	सिं						६	५४	उ६	०	६	२१	५	५९

- चन्द्रदर्शनं मु० १५ फलं महर्घता समश्रृंगं फलं समम्। अद्यारभ्य द्वादश दिनात्मकं पयोव्रतं भागवतोक्तम् (पुत्र कामना हेतु)।
- सं.शतभिषायामर्कः २९/४२ (सायं ६/२४)। रामकृष्ण परमहंस जयन्ती २। फुलेरा २।
- भ.५०/५१ (रात्रि शेषे २/५०) उपरि। मूलः रात्रौ ९/३ उपरि।
- भ.१८/५० (दिवा २/१) यावत्। वैनायकी गणेश चतुर्थी। मूलः। मेषचन्द्रः पंचकसमाप्तिश्च रात्रौ ८/१।
- मूलः सायं ६/३७ यावत्।
- चरयोगः।
- भ.१/५९ (प्रातः ७/१४) उपरि। भ.२८/४४ (सायं ५/५७) यावत्। **होलाष्टक प्रारम्भः (विवरण नीचे देखें)**। दादूदयाल जयन्ती।
- शुभयोगः।
- मृत्युयोगः।
- भ.१०/३४ (दिवा १०/३८) उपरि। भ.३७/५५ (रा.९/३४) यावत्। सर्वेषां आमलकी एकादशी ११ व्रतम्। **रंगभरी एकादशी ११ व्रतम्**।-(3)
- एकादशी पारणा दिवा ८/४१ यावत् अथवा दिवा १०/५९ उपरि दिवा १/१६ यावत्।
- मूलः दिवा ७/४३ उपरि। प्रदोषः १३ व्रतम्। **रवि-पुष्य योगः दिवा ७/४३ यावत्।**
- मूलः दिवा ७/४३ उपरि। भ.५७/२२ (राशे.५/१९) यावत्। मूलः। **होलिकादहनम् भद्रापुच्छे राशे. १/१० उपरि राशे. २/२१ या.**।-(2)
- भ.२७/५१ (सायं ५/३०) उपरि। भ.५७/२२ (राशे.५/१९) यावत्। मूलः। होलिकादहनम् ...
- भ.२७/५१ (सायं ५/३०) उपरि। होलिकादहनम्...

[(1) स्नाने-दाने १५। कारिदिनम्। प्रदोषे काश्यां चतुष्षष्ठि-योगिनीयात्रा। रजोत्सवः। छारंडी। धूलिवन्दनम् १। मन्वादिः १५। चैतन्यमहाप्रभु जयन्ती।

[(2) हुताशनीजन्म १५। ढुण्ढाराक्षसीपूजा १५। पुरुषोत्तमदोलोत्सवः १५। होलाष्टक समाप्तिः। व्रताय १५।

[(3) मेला श्रीखाटूश्यामजी प्राम्भः (२ दिवसात्मकः)।

ग्र.	१ बुधे मिश्रमानम् ४४।४० रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		२ गुरौ मिश्रमानम् ४४।४२ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		३ शुक्रे मिश्रमानम् ४४।४४ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		४ शनौ मिश्रमानम् ४४।४६ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	१०	५	५४	३४	६०	३१	१०	६	५५	५	६०	२९	१०	७	५५	३४	६०	२७	१०	८	५६	१	६०	२६
चं.	१०	२१	२५	२	८०६	३२	११	४	५१	३४	८२३	०	११	१८	३४	३४	८३८	३७	०	२	३३	१०	८५२	०
मं.	९	२५	५३	२०	४६	३४	९	२६	३९	५४	४६	३५	९	२७	२६	२९	४६	३६	९	२८	१३	५	४६	३७
बु.	१०	२४	३	४६	६३	२७	१०	२५	७	१२	५५	३५	१०	२६	२	४८	४७	६	१०	२६	४९	५४	३८	४
गु.	२	२१	५३	२८	३	५८व	२	२१	४९	३०	३	४८व	२	२१	४५	४२	३	३८व	२	२१	४२	३	३	२८व
शु.	१०	१६	१६	३६	७४	५८	१०	१७	३१	३५	७४	५७	१०	१८	४६	३२	७४	५६	१०	२०	१	२८	७४	५५
श.	११	६	३	४९	६	४०	११	६	१०	२०	६	४२	११	६	१७	२	६	४४	११	६	२३	४७	६	४६
रा.	१०	१५	८	३१	३	११	१०	१५	५	२३	३	११	१०	१५	२	१६	३	११	१०	१४	५९	८	३	११

ग्र.	५ रवौ मिश्रमानम् ४४।४८ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		६ सोमे मिश्रमानम् ४४।५० रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		७ भौमे मिश्रमानम् ४४।५२ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		९ बुधे मिश्रमानम् ४४।५४ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		१० गुरौ मिश्रमानम् ४४।५६ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	१०	९	५६	२७	६०	२४	१०	१०	५६	५२	६०	२३	१०	११	५७	१४	६०	२१	१०	१२	५७	३५	६०	१९	१०	१३	५७	५४	६०	१७
चं.	०	१६	४५	१०	८६१	४६	१	१	६	५६	८६६	४४	१	१५	३३	४०	८६६	१७	१	२९	५९	५६	८६०	२८	२	१४	२०	२५	८५०	२
मं.	९	२८	५९	४३	४६	३८	९	२९	४६	२०	४६	३९	१०	०	३२	५९	४६	३९	१०	१	१९	३८	४६	४०	१०	२	६	१९	४६	४१
बु.	१०	२७	२७	५७	२८	३६	१०	२७	५६	३४	१८	५२	१०	२८	१५	२६	९	०	१०	२८	२४	२६	०	४१व	१०	२८	२३	३७	१०	२५व
गु.	२	२१	३८	३६	३	१७व	२	२१	३५	१८	३	७व	२	२१	३२	१२	२	५६व	२	२१	२९	१६	२	४५व	२	२१	२६	३१	२	३४व
शु.	१०	२१	१६	२३	७४	५४	१०	२२	३१	१७	७४	५२	१०	२३	४६	९	७४	५१	१०	२५	१	०	७४	५०	१०	२६	१५	५०	७४	४९
श.	११	६	३०	३३	६	४९	११	६	३७	२२	६	५१	११	६	४४	१२	६	५३	११	६	५१	५	६	५५	११	६	५८	०	६	५६
रा.	१०	१४	५६	१	३	११	१०	१४	५२	५३	३	११	१०	१४	४९	४५	३	११	१०	१४	४६	३८	३	११	१०	१४	४३	३०	३	११

ग्र.	११ शुक्रे मिश्रमानम् ४४।५९ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		१२ शनौ मिश्रमान ४५।१ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		१३ रवौ मिश्रमानम् ४५।३ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		१४ सोमे मिश्रमान ४५।५ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		१५ भौमे मिश्रमान ४५।८ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	१०	१४	५८	१२	६०	१६	१०	१५	५८	२७	६०	१४	१०	१६	५८	४१	६०	१२	१०	१७	५८	५३	६०	१०	१०	१८	५९	४	६०	९
चं.	२	२८	३०	२९	८३६	१०	३	१२	२६	३७	८२०	१८	३	२६	६	५५	८०३	४७	४	९	३०	४२	७८७	४४	४	२२	३८	२६	७७२	५१
मं.	१०	२	५२	५१	४६	४१	१०	३	३९	४१	४६	४२	१०	४	२६	२३	४६	४३	१०	५	१३	५	४६	४३	१०	५	५९	४८	४६	४४
बु.	१०	२८	१३	११	१९	३८व	१०	२७	५३	३३	२८	१७व	१०	२७	२५	१७	३६	११व	१०	२६	४९	६	४३	१२व	१०	२६	५	५४	४९	१०व
गु.	२	२१	२३	५६	२	२३व	२	२१	२१	३३	२	१३व	२	२१	१९	२०	२	१व	२	२१	१७	११	१	५०व	२	२१	१५	२८	१	३९व
शु.	१०	२७	३०	३१	७४	४७	१०	२८	४५	२६	७४	४६	११	०	०	१२	७४	४५	११	१	१४	५७	७४	४३	११	२	२९	४१	७४	४२
श.	११	७	४	५६	६	५८	११	७	११	५४	७	०	११	७	१८	५४	७	२	११	७	२५	५६	७	३	११	७	३२	५९	७	५
रा.	१०	१४	४०	२३	३	११	१०	१४	३७	१५	३	११	१०	१४	३४	७	३	११	१०	१४	३१	०	३	११	१०	१४	२९	५२	३	११

४६ पंक्ति ५ रवौ मिश्रमानम् ४४।४८ दिनम् २८।२० अयनांशाः ०।२४।१४।१०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
१०	०	९	१०	२	१०	११	१०
९	१६	२८	२७	२१	२१	६	१४
५६	४५	५९	२७	३८	१६	३०	५६
२७	१०	४३	५७	३६	२३	३३	१
६० / २४	८६१ / ४६	४६ / ३८	२८ / ३६	३ / १७व	७४ / ५४	६ / ४९	३ / ११
		अ	उ	उ	उ	उ	व

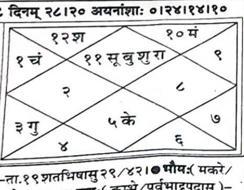

प्रदोषः १३ व्रत का निर्णय- दोनो ही दिन (ता.२८ फरवरी व ता.१ मार्च) को त्रयोदशी कम-ज्यादा प्रदोषकाल में है। पूजा के लिये आवश्यक ५ घटि किसी भी दिन नहीं मिल रही है। दूसरे दिन संकल्पकाल में त्रयोदशी मिलने से दूसरे ही दिन ता.१ मार्च को ही प्रदोषव्रत होगा।

ग्रहाणां युतिः -ता.१८ शु.चं. योगः दि.२/५१ शुक्रः १/४४द.। ता.१८ बु.चं.योगः रा.शे.४/३४ बुधः ०/८उ.। ता.२१ श.चं. योगः रा.शे.५/३५ शनिः ४/३८ द.। ता.२६ शु.बु. योगः रा.शे.४/३० शुक्रः ४/१२द.। ता.२७ गु.चं.योगः दि.११/५६ गुरुः ३/५८द.।

ग्रहस्थितिः (ता.१८ फरवरी से ३ मार्च २०२६)

सूर्यः (कुम्भे/धनिष्ठासु)-ता.१९ शतभिषासु २९/४२।● **भौमः** (मकरे/धनिष्ठासु/अस्तः)-ता.२४ कुम्भे २/२५।● **बुधः** (कुम्भे/पूर्वभाद्रपदासु)-ता.२५ वक्री ३०/३०। ता.१ पश्चिमास्तः सायं ६/२३।● **गुरुः** (मिथुने/पुनर्वसौ१च./वक्री)।● **शुक्रः** (कुम्भे/शतभिषायां)-ता.२१ पूभायां ४३/३२। -ता.२४ उभायां २च.८/९।● **शनिः** (मीने/उभायां१च.)-ता.१ मीने ४४/५०।● **राहुः** (कुम्भे/शतभिषायां३च.)।● **केतुः** (सिंहे/पूफायां१च.)।

दैनिकहोरालग्नसारिणी (लग्न की समाप्ति का समय दिया गया है।)

(प्रचलित घड़ियों के समय के अनुसार घण्टा-मिनट में)

रा	१ बु		२ गु		३ शु		४ श		५ र		६ सो		७ मं		९ बु		१० गु		११ शु		१२ श		१३ र		१४ सो		१५ मं	
कुं	७	५०	७	४६	७	४२	७	३८	७	३४	७	३०	७	२६	७	२२	७	१८	७	१४	७	१०	७	६	७	२	६	५८
मी	९	१८	९	१४	९	१०	९	६	९	२	८	५८	८	५४	८	५०	८	४६	८	४२	८	३८	८	३४	८	३०	८	२६
मे	१०	५६	१०	५२	१०	४८	१०	४४	१०	४०	१०	३६	१०	३२	१०	२८	१०	२४	१०	२०	१०	१६	१०	१२	१०	८	१०	४
वृ	१२	५२	१२	४८	१२	४४	१२	४०	१२	३६	१२	३२	१२	२८	१२	२४	१२	२०	१२	१६	१२	१२	१२	८	१२	४	१२	०
मि	३	६	३	२	२	५८	२	५४	२	५०	२	४६	२	४२	२	३८	२	३४	२	३०	२	२६	२	२२	२	१८	२	१४
क	५	२५	५	२१	५	१७	५	१३	५	९	५	५	५	१	४	५७	४	५३	४	४९	४	४५	४	४१	४	३७	४	३३

सूचना-नीचे दिखाये गये सभी समय रात्रिकालीन हैं।

रा	१ बु		२ गु		३ शु		४ श		५ र		६ सो		७ मं		९ बु		१० गु		११ शु		१२ श		१३ र		१४ सो		१५ मं	
सिं	७	४०	७	३६	७	३२	७	२८	७	२४	७	२०	७	१६	७	१२	७	८	७	४	७	०	६	५६	६	५२	६	४८
कं	९	५४	९	५०	९	४६	९	४२	९	३८	९	३४	९	३०	९	२६	९	२२	९	१८	९	१४	९	१०	९	६	९	२
तु	१२	११	१२	७	१२	३	११	५९	११	५५	११	५१	११	४७	११	४३	११	३९	११	३५	११	३१	११	२७	११	२३	११	१९
वृ	२	२८	२	२४	२	२०	२	१६	२	१२	२	८	२	४	२	०	१	५६	१	५२	१	४८	१	४४	१	४०	१	३६
ध	४	३३	४	२९	४	२५	४	२१	४	१७	४	१३	४	९	४	५	४	१	३	५७	३	५३	३	४९	३	४५	३	४१
म	६	१८	६	१४	६	१०	६	६	६	२	५	५८	५	५४	५	५०	५	४६	५	४२	५	३८	५	३४	५	३०	५	२६

पाक्षिक घटना

ता.१८,२४ को वर्षा योग है। (तिथि, ग्रहचार, ग्रहोदयास्त इत्यादि के कारण इस पक्ष में)- अस्वस्थता, राष्ट्रों में विरोध, मध्यम वर्षा, चना, मटर, तिल्ली, उड़द, मूंग आदि की ओलों के पड़ने से हानि, तेलहन, लोहे का सामान, सूत-कपड़ा इन परतेजी का रुख, तेज हवा चले, वृक्ष शीत से नष्ट हों व सरकारी खजाने में कमी होती है।

होलिकादहन निर्णय - ता.३ मार्च को पूर्णिमा तिथि प्रदोषकाल में नहीं है तथा उसी दिन ग्रस्तोदित चन्द्रग्रहण है। अतः **ता.२ मार्च को होलिकादहन होगा** परन्तु इस दिन भद्रा की व्याप्ति प्रदोषकाल से लेकर देररात ५/१९ तक होने के कारण होलिकादहन भद्रापुच्छ में देररात १/१० से देररात २/२१ के मध्य में करना धर्मशास्त्र सम्मत है। **ता.३ मार्च** को विभूतिधारण व रंग की होली होगी।

४७ पंक्ति १३ रवौ मिश्रमानम् ४५।३ दिनम् २८।४६ अयनांशाः ०।२४।१४।११

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
१०	३	१०	१०	२	११	११	१०
१६	२६	४	२७	२१	०	७	१४
५८	६	२६	२५	११	०	१८	३४
४१	५५	२३	१७	२०	१२	५४	७
६० / १२	८०३ / ४७	४६ / ४३	३६ / ११व	२ / १व	७४ / ४५	७ / २	३ / ११
		अ	अ	उ	उ	उ	व

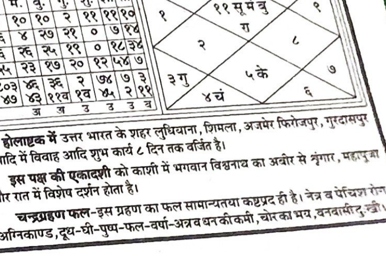

होलाष्टक में उत्तर भारत के शहर लुधियाना, शिमला, अजमेर फिरोजपुर, गुरदासपुर इत्यादि में विवाह आदि शुभ कार्य ८ दिन तक वर्जित है।

इस पक्ष की एकादशी को काशी में भगवान विश्वनाथ का अबीर से शृंगार, महापूजा और रात में विशेष दर्शन होता है।

चन्द्रग्रहण फल-इस ग्रहण का फल सामान्यतया कष्टप्रद ही है। नेत्र व पेचिश रोग, अग्निकाण्ड, दूध-घी-पुष्प-फल-वर्षा-अन्न व धन की कमी, चोर का भय, वनवासी दुःखी।

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	स.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.
२८	५७	१	बु	२७	१०	सा	५	१२	पूफा	३	४१	दि	७	४८	धृ	६	४४	दि	९	२	कौ	२७	१०	तै	५७	५३
२९	०	२	गु	२८	३७	सा	५	४५	उफा	६	१२	दि	८	४८	शू	४	४३	दि	८	१२	ग	२८	३७	व	४९	५२
२९	४	३	शु	३१	६	रा	६	४४	ह	९	४७	दि	१०	१३	गं	३	३२	दि	७	४३	भ	३१	६	बव	६०	०
२९	८	४	श	३४	२८	रा	८	४	चि	१४	१६	दि	११	५९	वृ	३	७	दि	७	३२	बव	२	४७	बा	३४	२८
२९	१२	५	र	३८	२९	रा	९	३९	स्वा	१९	२६	दि	२	३	ध्रु	३	१६	दि	७	३५	कौ	६	३८	तै	३८	२९
२९	१५	६	सो	४२	५६	रा	११	२५	वि	२५	५	सा	४	१७	व्या	३	५१	दि	७	४८	ग	१०	४२	व	४२	५६
२९	१९	७	मं	४७	३४	रा	१°	१५	अनु	३०	५७	सा	६	३७	ह	४	४२	दि	८	७	भ	१५	१५	बव	४७	३४
२९	२३	८	बु	५२	७	रा	३°	३	ज्ये	३६	५०	रा	८	५७	व	५	३७	दि	८	२८	बा	१९	५०	कौ	५२	७
२९	२७	९	गु	५६	२२	रा	४°	४४	मू	४२	२७	रा	११	११	सि	६	२५	दि	८	४६	तै	२४	१५	ग	५६	२२
२९	३०	१०	शु	६०	०	स	म	ग्र	पूषा	४७	३५	रा	१°	१३	व्य	६	५६	दि	८	५८	व	२८	१४	भ	६०	०
२९	३४	१०	श	०	६	प्रा	६	१२	उषा	५२	१	रा	२°	५८	व	७	०	दि	८	५८	भ	०	६	बव	३१	३३
२९	३८	११	र	३	०	दि	७	२१	श्र	५५	३२	रा	४°	२२	प	६	२७	दि	८	४४	बा	३	०	कौ	३३	५५
२९	४१	१२	सो	४	५०	दि	८	३	ध	५७	५७	रा	५°	१९	शि	५	८	दि	८	१२	तै	४	५०	ग	३५	१२
२९	४५	१३	मं	५	३३	दि	८	२०	श	५९	११	रा	५°	४७	सि / सा	२ / ५६	५७ / ४८	प्रा / रा	७ / ६	१८ / ०१	व	५	३३	भ	३५	१८
२९	४९	१४	बु	५	३	दि	८	७	पूभा	५१	८	रा	५°	४५	शुभ	५५	३४	रा	४°	२०	श	५	३	च	३४	११
२९	५३	३० / १	गु	३ / ५६	२० / ३५	दि / रा	७ / ६	२६ / ४	उभा	५७	५२	रा	५°	१४	शुक्ल	५०	२२	रा	२°	१४	ना	३	२०	कि / बव	३१ / ५१	३७ / ५५

ति.	आनन्दादि योगाः	तारीख अं	र	बं	मु	फ	स्टै (मि से)	लोकल सूर्योदय	लोकल सूर्यास्त	चं रा	सं (प्रवेश काल) घ प स घं मि	र क्रां द (अं क)	स्टैण्डर्ड चंद्रोदय	सूर्योदय	सूर्यास्त
१	स्थिरः	४	१३	२०	१४	१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२	मातंगः	५	१४	२१	१५	२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३	अमृतः	६	१५	२२	१६	३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४	काणः	७	१६	२३	१७	४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
५	लुम्बः	८	१७	२४	१८	५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
६	मित्रः	९	१८	२५	१९	६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
७	वज्रः	१०	१९	२६	२०	७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
८	ध्वांक्षः	११	२०	२७	२१	८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
९	धूम्रः	१२	२१	२८	२२	९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१०	प्रवर्धमान	१३	२२	२९	२३	१०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१०	रक्षः	१४	२३	३०	२४	११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
११	गदः	१५	२४	१	२५	१२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	म		२ १३	४° १८	६ ९	६ ५
१२	शुभः	१६	२५	२	२६	१३	७ ५	६ ४	५ ५६	कुं	२६ ५१ दि ४ ५१	१ ५०	४° ५४	६ ८	६ ६
१३	मृत्युः	१७	२६	३	२७	१४	६ ४८	६ ३	५ ५७	कुं		१ २६	५° २७	६ ७	६ ६
१४	पद्मः	१८	२७	४	२८	१५	६ ३०	६ २	५ ५७	मी	४४ १३ रा ११ ४६	१ २	० ०	६ ६	६ ७
३०	छत्र	१९	२८	५	२९	१६	६ १३	६ १	५ ५८	मी		० ३८	० ०	६ ५	६ ७

चैत्रकृष्णपक्षः

श्रीसंवत् २०८२ शकः १९४७ (४ से १९ मार्च २०२६)। सौम्यायनं याम्यगोलः। शिशिरऋतुः मीनार्कतः वसन्तऋतुः। रा. १३ से २८ फाल्गुन १९४७। बंग २० फा. से ५ चैत्र १४३२। मु. १४ से २९ रमजान १४४७। नेपाली २० फा. से ५ चैत्र २०८२। शुक्रः पश्चिमे।

वसन्तोत्सवः१। प्रातःअभ्यंग स्नानम्-नृत्यादिभिः। रतिकाममहोत्सवः१। चन्दनेनसह आम्र कुसुमप्राशनम्। सं.पूभायामर्कः ४५/५५(रा.शे.१२/४२)।

भ.५९/५२(रात्रि शेषे ६/१६)उपरि। प्राकृतजनोत्सवः(द्वितीयामारभ्य पंचमीयावत्)। संत तुकाराम जयन्ती।

भ.३१/६(सायं ६/४४)यावत्। संकष्टी गणेश चतुर्थी ४ व्रतम् चन्द्रोदयः रात्रौ ८/४६ (तृतीया योग प्राशस्त्यात्)। कल्पादिः३।

काणयोगः। [(1) चतुर्दश्यां यः स्नायात्शिवसन्निधौ, न प्रेतत्वमवाप्नोति गंगायां तु विशेषतः)। दर्श श्राद्धं ३०। मन्वादिः३०।

रंगपंचमी।

भ.४२/५६(रात्रौ ११/२५)उपरि। एकनाथ षष्ठी।

भ.१५/१५(दिवा १२/२०)यावत्। मूलः सायं ६/३७ उपरि।

मूलः। शीतलाष्टमी ८(पर्युषितान्न पानादिकमत्रविहितम्)।

मूलः रात्रौ ११/११ यावत्।

भ.२८/१४(सायं ५/२९)उपरि। मासान्तः।

भ.०/६(प्रातः६/१२)यावत्। **खरमास प्रारम्भः। सं.मीनेचार्कः** ४६/३८(रात्रि शेषे १२/४९)। मुहूर्त ४५ फलं सुभिक्षता। संक्रान्ति पुण्यकालः दिवा १२/५ यावत्। सर्वेषां पापमोचनी एकादशी ११ व्रतम्।

कुम्भेचन्द्रः पंचकप्रारम्भश्च दिवा ४/५१। एकादशी पारणा दिवा ८/३ यावत्। सोमप्रदोषः१३ व्रतम् (कुलदेवता कोप शान्त्यर्थम्)।

भ.५/३३(दिवा ८/२०)उपरि। भ.३५/१८(रात्रौ ८/१४)यावत्। मासशिवरात्रिः१४ व्रतम्। **वारुणी योगःदिवा ८/२० यावत्।**

सं.उत्तराभाद्रपदायामर्कः७/३६(दिवा ९/८)। रुद्रकर तीर्थस्नानात्परमपदप्राप्तिः १४। केदारकुण्डोदकपानम् १४। पिशाच चतुर्दशी (चैत्रकृष्ण-(1)

स्नाने-दाने ३०। **(सम्वत् २०८२) सिद्धार्थी नाम** चान्द्रसम्वत्सरस्य समाप्तिः। **अद्यैव (सम्वत् २०८३) रौद्र नाम सम्वतसरारम्भः।**-(2)

[(2) **वासन्तीय नवरात्रारम्भः।** घटस्थापना दि.१२/२९ उपरि। संकल्पादौ **रौद्रनाम** वर्षान्तं यावद्योजनीयम्। चान्द्रसंवत्सर प्रारम्भः। प्रपादानम्। धर्मघटादिदानम्। गुडीपाड़वा। निम्बपत्राशनम्। शैलपुत्री मुखनिर्मालिका दर्शनम्। तैलाभ्यंगम्। ध्वजारोपणम्। आरोग्यतिलक विद्याव्रतञ्च। वर्षेश पूजनम्। पंचागफल श्रवणं। महर्षि गौतम जयन्ती। कल्पादिः१। पूर्णवत्सरी ३०। मूलः रा.शे.५/१४ उ.।

ग्र.	१ बुधे मिश्रमानम् ४५।१० रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		२ गुरौ मिश्रमानम् ४५।१३ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		३ शुक्रे मिश्रमानम् ४५।१५ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	१०	१९	५९	१२	६०	७	१०	२०	५९	११	६०	५	१०	२१	५९	२४	६०	३
चं.	५	५	३१	२५	७६०	३	५	१८	११	२८	७४९	१४	६	०	४०	४३	७४०	४१
मं.	१०	६	४६	३२	४६	४४	१०	७	३३	१६	४६	४४	१०	८	२०	०	४६	४५
बु.	१०	२५	१६	४३	५३	५१व	१०	२४	२२	४४	५७	३२व	१०	२३	२५	१३	५९	४५व
गु.	२	२१	१३	४९	१	२८व	२	२१	१२	२१	१	१७व	२	२१	११	४	१	६व
शु.	११	३	४४	२३	७४	४१	११	४	५९	४	७४	३९	११	६	१३	४२	७४	३८
श.	११	७	४०	४	७	६	११	७	४७	११	७	८	११	७	५४	१९	७	९
रा.	१०	१४	२४	४५	३	११	१०	१४	२१	३४	३	११	१०	१४	१८	२३	३	११

ग्र.	४ शनौ मिश्रमानम् ४५।१७ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		५ रवौ मिश्रमानम् ४५।२० रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		६ सोमे मिश्रमानम् ४५।२२ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	१०	२२	५९	२७	६०	१	१०	२३	५९	२८	५९	५९	१०	२४	५९	२७	५९	५७
चं.	६	१३	१	२४	७३४	२५	६	२५	१५	४९	७३०	२७	७	७	२६	१६	७२८	४७
मं.	१०	९	६	४५	४६	४५	१०	९	५३	३०	४६	४५	१०	१०	४०	१५	४६	४६
बु.	१०	२२	२५	२८	६०	३७व	१०	२१	२४	५२	६०	९व	१०	२०	२४	४३	५८	२६व
गु.	२	२१	९	५९	०	५४व	२	२१	९	५	०	४३व	२	२१	८	२२	०	३२व
शु.	११	७	२८	२०	७४	३६	११	८	४२	५७	७४	३५	११	९	५७	३२	७४	३४
श.	११	८	१	२८	७	१०	११	८	८	३८	७	१२	११	८	१५	५०	७	१३
रा.	१०	१४	१५	१२	३	११	१०	१४	१२	१४	३	११	१०	१४	९	७	३	११

ग्र.	७ भौमे मिश्रमानम् ४५।२५ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		८ बुधे मिश्रमानम् ४५।२७ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		९ गुरौ मिश्रमानम् ४५।३० रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	१०	२५	५९	२५	५९	५५	१०	२६	५९	२०	५९	५३	१०	२७	५९	१४	५९	५२
चं.	७	१९	३५	३	७२९	२३	८	१	४४	२५	७३२	१७	८	१३	५६	४२	७३७	३१
मं.	१०	११	२७	१	४६	४६	१०	१२	१३	४७	४६	४६	१०	१३	०	३३	४६	४६
बु.	१०	१९	२६	१७	५५	३३व	१०	१८	३०	४४	५१	४०व	१०	१७	३९	४	४६	५६व
गु.	२	२१	७	५०	०	२०व	२	२१	७	३०	०	७मा	२	२१	७	३७	०	१९
शु.	११	११	१२	६	७४	३२	११	१२	२६	३८	७४	३१	११	१३	४१	८	७४	२९
श.	११	८	२३	३	७	१४	११	८	३०	१७	७	१५	११	८	३७	३२	७	१६
रा.	१०	१४	५	५१	३	११	१०	१४	२	५१	३	११	१०	१३	५९	४४	३	११

ग्र.	१० शुक्रे मिश्रमान ४५।३२ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		१० शनौ मिश्रमानम् ४५।३५ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		११ रवौ मिश्रमानम् ४५।३८ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	१०	२८	५९	५	५९	५०	१०	२९	५८	५५	५९	४८	११	०	५८	४२	५९	४६
चं.	८	२६	१४	१३	७४५	६	९	८	३९	१९	७५५	२	९	२१	१४	२१	७६७	१५
मं.	१०	१३	४७	१९	४६	४६	१०	१४	३४	५	४६	४६	१०	१५	२०	५१	४६	४६
बु.	१०	१६	५२	८	४१	३१व	१०	१६	१०	३७	३५	२६व	१०	१५	३५	१	२९	२०व
गु.	२	२१	७	५६	०	३१	२	२१	८	२७	०	४२	२	२१	९	९	०	५३
शु.	११	१४	५५	३७	७४	२८	११	१६	१०	५	७४	२६	११	१७	२४	३१	७४	२४
श.	११	८	४४	४७	७	१७	११	८	५२	४	७	१८	११	८	५९	२२	७	१८
रा.	१०	१३	५६	३६	३	११	१०	१३	५३	२९	३	११	१०	१३	५०	२१	३	११

ग्र.	१२ सोमे मिश्रमान ४५।४० रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		१३ भौमे मिश्रमान ४५।४३ रा.	अं.	क	वि.	गतिः	
सू.	११	१	५८	२८	५९	४४	११	२	५८	१२	५९	४२
चं.	१०	४	१	३६	७८१	३१	१०	१७	३	७	७९७	२३
मं.	१०	१६	७	३८	४६	४६	१०	१६	५४	२४	४६	४६
बु.	१०	१५	५	४०	२२	५३व	१०	१४	४२	४८	१६	२१व
गु.	२	२१	१०	२	१	४	२	२१	११	६	१	१५
शु.	११	१८	३८	५५	७४	२२	११	१९	५३	१८	७४	२१
श.	११	९	६	४०	७	१९	११	९	१४	०	७	२०
रा.	१०	१३	४७	१३	३	११	१०	१३	४४	६	३	११

ग्र.	१४ बुधे मिश्रमान ४५।४५ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः		३० गुरौ मिश्रमान ४५।४८ रा.	अं.	क.	वि.	गतिः	
सू.	११	३	५७	५३	५९	४०	११	४	५७	३३	५९	३८
चं.	११	०	२०	३१	८१४	७	११	१३	५४	३७	८३०	३८
मं.	१०	१७	४१	१०	४६	४६	१०	१८	२७	५६	४६	४६
बु.	१०	१४	२६	२६	९	५२व	१०	१४	१६	३४	३	३०व
गु.	२	२१	१२	२१	१	२७	२	२१	१३	४८	१	३८
शु.	११	२१	७	३९	७४	२०	११	२२	२१	५९	७४	१८
श.	११	९	२१	२०	७	२०	११	९	२८	४०	७	२१
रा.	१०	१३	४०	५८	३	११	१०	१३	३७	५१	३	११

४८ पंक्ति ५ रवौ मिश्रमानम् ४५।२० दिनम् २९।१२ अयनांशाः ०।२४।१४।१२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
१०	६	१०	१०	२	११	११	१०
२३	२५	९	२१	२१	८	८	१४
५९	१५	५३	२४	९	४२	८	१२
२८	४९	३०	५२	५	५७	३८	१४
५९/५९	७३०/२७	४६/४५	६०/९व	०/४३व	७४/३५	७/१२	३/११
अ	अ	ठ	ठ	ठ	व		

१२ शशु
१०
१
११ सूमंबु रा
९
२
८
३ गु
५ के
७ चं
४
६

(प्रचलित घड़ियों के समय के अनुसार घण्टा-मिनट में) **दैनिकहोरालग्नसारिणी** (लग्न की समाप्ति का समय दिया गया है।)

रा	१ बु		२ गु		३ शु		४ श		५ र		६ सो		७ मं		८ बु		९ गु		१० शु		१० श		रा	११ र		१२ सो		१३ मं		१४ बु		३० गु	
कुं	६	५४	६	५०	६	४६	६	४२	६	३८	६	३४	६	३०	६	२६	६	२२	६	१८	६	१४	मी	७	३८	७	३४	७	३०	७	२६	७	२२
मी	८	२२	८	१८	८	१४	८	१०	८	६	८	२	७	५८	७	५४	७	५०	७	४६	७	४२	मे	९	१६	९	१२	९	८	९	४	९	०
मे	१०	०	९	५६	९	५२	९	४८	९	४४	९	४०	९	३६	९	३२	९	२८	९	२४	९	२०	वृ	११	१२	११	८	११	४	११	०	१०	५६
वृ	११	५६	११	५२	११	४८	११	४४	११	४०	११	३६	११	३२	११	२८	११	२४	११	२०	११	१६	मि	१	२६	१	२२	१	१८	१	१४	१	१०
मि	२	१०	२	६	२	२	१	५८	१	५४	१	५०	१	४६	१	४२	१	३८	१	३४	१	३०	क	३	४५	३	४१	३	३७	३	३३	३	२९
क	४	२९	४	२५	४	२१	४	१७	४	१३	४	९	४	५	४	१	३	५७	३	५३	३	४९	सिं	६	०	५	५६	५	५२	५	४८	५	४४
सिं	६	४४	६	४०	६	३६	६	३२	६	२८	६	२४	६	२०	६	१६	६	१२	६	८	६	४	कं	८	१४	८	१०	८	६	८	२	७	५८
कं	८	५८	८	५४	८	५०	८	४६	८	४२	८	३८	८	३४	८	३०	८	२६	८	२२	८	१८	तु	१०	३१	१०	२७	१०	२३	१०	१९	१०	१५
तु	११	१५	११	११	११	७	११	३	१०	५९	१०	५५	१०	५१	१०	४७	१०	४३	१०	३९	१०	३५	वृ	१२	४८	१२	४४	१२	४०	१२	३६	१२	३२
वृ	१	३२	१	२८	१	२४	१	२०	१	१६	१	१२	१	८	१	४	१	०	१२	५६	१२	५२	ध	२	५३	२	४९	२	४५	२	४१	२	३७
ध	३	३७	३	३३	३	२९	३	२५	३	२१	३	१७	३	१३	३	९	३	५	३	१	२	५७	म	४	३८	४	३४	४	३०	४	२६	४	२२
म	५	२२	५	१८	५	१४	५	१०	५	६	५	२	४	५८	४	५४	४	५०	४	४६	४	४२	कुं	६	१०	६	६	६	२	५	५८	५	५४

सूचना-नीचे दिखाये गये सभी समय रात्रिकालीन हैं।

४९ पंक्ति ११ रवौ मिश्रमानम् ४५।३८ दिनम् २९।३८ अयनांशाः ०।२४।१४।१३

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
११	९	१०	१०	२	११	११	१०
०	२१	१५	१५	२१	१७	८	१३
५८	१४	२०	३५	९	२४	५९	५०
४२	२१	५१	१	९	३१	२२	२१
५९/४६	७६७/१५	४६/४६	२९/२०व	०/५३	७४/२४	७/१८	३/११
अ	अ	उ	उ	उ	व		

१
११ मंबुरा
२
१२ सूशुश
१० चं
३ गु
९
४
६
८
५ के
७

ग्रहस्थितिः (ता.४ से १९मार्च २०२६)

सूर्यः(कुम्भे/शतभिषासु)–ता.४पूर्वाभाद्रपदासु४५/५५।ता.१४मीने४६/३८।ता.१८ उत्तराभाद्रपदासु७/३६।●**भौमः**(कुम्भे/धनिष्ठासु/अस्तः)–ता.४शतभिषायां३६/४५।●**बुधः**(कुम्भे/पूर्वभाद्रपदासु/वक्री/अस्तः)–ता.१०शतभिषायां८/५८।ता.१६पूर्वोदयःरा.शे.५/३७।●**गुरुः**(मिथुने/पुनर्वसौ१च./वक्री)–ता.११मार्गी४५/०।●**शुक्रः**(मीने/पूभायां)–ता.४उभायां२५/३२।ता.१५रेवत्यां९/४१।●**शनिः**(मीने/उभायां२चरणे)–ता.१३पश्चिमास्तःसायं६/२८।●**राहुः**(कुम्भे/शतभिषायां३चरणे)।●**केतुः**(सिंहे/पूफायां१चरणे)।

ग्रहाणां युतिः –ता.८ शु.श. योगः रा.शे.३/३० शनिः १/०द.।ता.१४बु.भौ. योगः दि.११/३० बुधः ३/५८ उ.।ता.१७बु.चं. योगः रा.७/३८ बुधः २/०उ.।ता.१७भौ.चं. योगः रा.शे. ३/२४ भौमः १/३२द.।ता.१९ शनि चन्द्र योगः रात्रौ ७/४३ शनिः ४/५५ दक्षिणे।

विशेषविचार–ता.१९ मार्च को प्रतिपदा का क्षय होने से अगला सम्वत्सर भी इसी दिन प्रारम्भ होगा व उससे सम्बन्धित सभी कार्य १९ मार्च को ही होंगे।

पाक्षिकघटना–ता.१३,१७ को वर्षा योग है। (तिथि, ग्रहचार, ग्रहोदयास्त, संक्रान्ति के कारण इस पक्ष में)– हवा चले, सागर व्यापार से हानि, वर्षा थोड़ी, शासक अनीतिपूर्ण, युद्ध, चूहों आदि से फसल की हानि, महामारी जैसे रोगों की वृद्धि, चावल, नमक, चांदी, मोती इत्यादि सफेद वस्तुओं के बाजार में मंदी, फल और सूखे मेवे महंगे होते हैं।

अथ वर्षप्रवेश सारिणीयम् । जन्मवारेष्टघटीपलेषुप्रतिवर्षेक्षेपकवारादिः ।

ग.व.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
वा.	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५
घ.	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६
प.	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८
वि.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

ग.व.	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४
वा.	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३
घ.	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१	४७	२	१८	३३
प.	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६
वि.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

ग.व.	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६
वा.	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१
घ.	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१३	२८	४८	५९	१५	३०	४६	१	१७	३२	४८	३	१९	३४	५०
प.	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४
वि.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

अथ बीजोप्तिचक्रम् राहुभाहिनभावधि

८	३	१	३	१	३	१	३	४
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

अथ ग्रहाणांदीप्तांशाः

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
१५	१२	८	७	९	७	९

अथ वर्षकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थग्रहाणां फलं ताजिकोक्तम्

ग्रहा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	क्लेशः भयं चिन्ता	शोकः नृपाद्भीतिः	पराक्रमः धनलाभः	हानिः पीडाभयं	रोगभयम् पुत्रनाशः	सौख्यं शत्रुनाशः	स्त्रीकष्टं पीडाभयं	शोक कष्टादिभयं	धर्मवृद्धिः राज्यप्रदः	सुखाप्तिः राज्याप्तिः	सुखं अर्थलाभः	उद्वेगः पीडा च
चंद्रः	कफज्वरः पीडा	नेत्रपीडा धनप्राप्तिः	धनप्राप्तिः हर्षश्च	सुखम् शत्रुनाशः	सुखम् सुमतिश्च	अंगपीडा व्ययः	ज्वरार्तिः भयं	विविधकष्ट भयं	पुण्योदयः धनागमः	सुकर्म जयाप्तिः	यशः अर्थलाभः	व्ययः नेत्रपीडा
मंगलः	वातार्तिः व्रणश्च	दृशोरुक् वित्तनाशः	नैरुज्यम् द्रव्यलाभः	व्यसनम् रुग्भयम्	पुरार्तिः दुर्मतिः	सुखं शत्रुनाशः	स्त्रीनाशः कष्टं	ज्वरार्तिः व्रणश्च	पुण्योदयः धनाप्तिः	राज्य अर्थलाभः	सुखं जयाप्तिः	विरोधः कर्णपीडा
बुधः	सौख्यम् धनलाभः	द्रव्याप्तिः सुखम्	सुखम् सुमतश्च	सुखम् द्रव्यलाभः	पुत्रवित्त सुखाप्तिः	रोगभयं कलहश्च	धनागमः सुखं	व्यग्रता कफार्तिः	धनं कीर्त्याप्तिः	मानसुखा- दिलाभः	सुतः अर्थलाभः	शत्रु रोगभयं
गुरुः	सुखय- शोर्यलाभ	कीर्तिधना- दिलाभः	जयः सौख्यम्	वाहनप्राप्तिः सुखम्	पुत्राप्तिः सुखञ्च	शत्रुरोगा- दिभयं	सुखं वित्तप्राप्ति	कठिन रुग्भयम्	सुखं भाग्यवृद्धि	राज्य अर्थलाभः	क्षेमः अर्थलाभः	शोक रोगभयं
शुक्रः	सुमानः धनलाभः	धनाप्तिराज्य सुखम्	कीर्तिवृद्धि अर्थागमः	सुखार्थ लाभः	धनागमः सुखं	रिपोर्भीति कष्टं	कलत्र सौख्यं	ज्वरपीडा- दिभयं	धर्म धनागमः	मान जयादिलाभः	धनाप्तिः पुत्राप्तिः	व्ययः नेत्ररुक्
शनिः	रिपोर्भयम् वातार्तिः	पीडाभयं विरोधः	धनाप्तिः जयश्च	सुखार्थ कष्टनाशः	सुतहानिः पीडाच	धनाप्तिः आर्तिनाश	स्त्रीकष्टं कलिः	दुःखरोगादि भयं	भाग्यवृद्धि शत्रुनाशः	धनहानिः पीडाभयं	विपुलः सुलाभः	क्लेशः चिन्ता
राहुः	शिरोर्तिः कलहश्च	नृपभयं पीडाच	शत्रुनाशः शुभश्च	वातार्तिः दुःखश्च	बुद्धिनाशः अघनी	रिपुक्षयः आरोग्यं	पीडाभयं धनक्षयः	धनक्षयः रुग्भयं	धनधर्म वृद्धि	वाहननाशः भयः	पुत्रार्थ सुखलाभः	व्याधि भयं
केतुः	पीडाभयं चिन्ताच	क्लेशः धनक्षयः	आरोग्यं धनलाभः	कष्टं नृपाद्भयं	पीडाभयं दुर्मतिः	सुखं धनागमः	क्लेशः रुक् च	ज्वरपीडा- दिभयं	भाग्य यशोर्थलाभ	कीर्तिः अर्थलाभः	पुत्रार्तिः सुलाभः	शोकार्तिः भयं
मुंथा	सौख्यम् शत्रुनाशः	सुयशः अर्थागमः	कार्यपुष्टिः धनागमः	अंगपीडा दुःखश्च	सुबुद्धि सुखाप्तिः	रोगभयं अर्थनाशः	रोगभयं व्यसनम्	दुर्व्यसनम् रोगभयं	भाग्योदय मानलाभः	राज्यसुखम् धनाप्तिः	धर्मः अर्थलाभः	सुव्ययः लाभः

।। अथ ताजिकोक्तग्रहाणांदृग्बलसारिणीयम् ।।

रा	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	अंशाः
० मे	६०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	४	२	गु.२ ह.१
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	ऋ
१ वृ	०	१	२	४	५	६	८	९	१०	१२	१३	१४	१६	१७	१८	२०	२१	२२	२४	२५	२६	२८	२९	३०	३२	३३	३४	३६	३७	३८	गु.४ ह.३
	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	घ
२ मि	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३५	३४	३३	३२	३१	३०	३०	२९	२८	२७	२६	२५	२५	२४	२३	२२	२१	२०	२०	१९	१८	१७	१६	१५	गु.५ ह.२
	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	ऋ
३ क	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	गु.१ ह.१
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ
४ सिं	४५	४३	४२	४०	३९	३७	३६	३४	३३	३१	३०	२८	२७	२५	२४	२२	२१	१९	१८	१६	१५	१३	१२	१०	९	७	६	४	३	१	गु.३ ह.२
	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	ऋ
५ कं	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८	गु.२ ह.१
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ
६ तु	६०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	४	२	गु.२ ह.१
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	ऋ
७ वृ	०	१	३	४	६	७	९	१०	१२	१३	१५	१६	१८	१९	२१	२२	२४	२५	२७	२८	३०	३१	३३	३४	३६	३७	३९	४०	४२	४३	गु.३ ह.२
	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	घ
८ ध	४५	४४	४३	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३४	३३	३२	३१	३०	२९	२८	२७	२६	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	गु.१ ह.१
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	ऋ
९ म	१५	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१२	१२	१२	१२	१२	१२	११	११	११	११	११	११	१०	१०	१०	१०	१०	गु.१ ह.६
	०	५०	४०	३०	२०	१०	०	५०	४०	३०	२०	१०	०	५०	४०	३०	२०	१०	०	५०	४०	३०	२०	१०	०	५०	४०	३०	२०	१०	ऋ
१० कुं	१०	९	९	९	८	८	८	७	७	७	६	६	६	५	५	५	४	४	४	३	३	३	२	२	२	१	१	१	०	०	गु.१ ह.३
	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	ऋ
११ मी	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८	गु.२ ह.१
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ

अयात्रहद्दाचक्रमिदम्

मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	रा
६	८	६	७	६	७	६	७	१२	७	७	१२	अं
वृ	शु	बु	मं	वृ	बु	श	मं	बृ	बु	शु	शु	स्वा
६	६	६	६	५	१०	८	४	५	७	६	४	अं
शु	बु	शु	शु	शु	शु	बु	शु	शु	गु	बु	बृ	स्वा
८	८	५	६	७	४	७	८	४	८	७	३	अं
बु	गु	गु	बु	श	गु	गु	बु	बु	शु	गु	बु	स्वा
५	५	७	७	६	७	७	५	५	४	५	९	अं
मं	श	मं	गु	बु	मं	शु	गु	मं	श	मं	मं	स्वा
५	३	६	४	६	२	२	६	४	४	५	२	अं
श	मं	श	श	मं	श	मं	श	श	मं	श	श	स्वा

अग्नैर्निवासज्ञानमाह-प्रतिपादितस्तिथिर्वारयुता सैका ४ भक्ता-०।३ शेषे भूमौ-वासः १ शेषे स्वर्गे २ शेषे पाताले वासः।

अथ मेषादत्रद्रेष्काणचक्रमिदम्

मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	रा
१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	अं
मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श	स्वा
२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	अं
र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	स्वा
३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	अं
शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	स्वा

अयात्रत्रिराशिपाः

रा	मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
दि	र	शु	श	शु	गु	चं	बु	मं	श	मं	गु	चं
रा	गु	चं	बु	मं	र	शु	श	शु	श	मं	गु	चं

अथ ग्रहाणां होमार्थसमिधः ४२

अर्कः पलाशः खदिरस्त्वपामार्गोऽथपिप्पलः। औदुम्बरशमीदूर्वाकुशाश्च समिधः क्रमादिति।

अथ ग्रहाणांसंक्रमणकाले जन्मपादानांपराशितदृष्टानुसारात् ज्ञानम्

१	६	११	चं	स्वर्णपादः	शुभः
२	५	९	चं	रजतपादः	शुभः
३	७	१०	चं	ताम्रपादः	मध्यमः
४	८	१२	चं	लौहपादः	अशुभः

अथ वर्षपंचाधिकारिणः

१	जन्मलग्नपतिः
२	अब्दलग्नपतिः
३	मुन्थाराशिपतिः
४	त्रिराशिपतिः
५	दिवारात्रिपः
६	[illegible]

अथ देवालये गेहविषये जलाशये राहुमुखज्ञानम्। यत्र राहुमुखं तत्र पृष्ठकोणे खातं शुभं भवति।

०	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां	आग्नेय्यां
देवालयारम्भे	मी.मे.वृ. स्थितेऽर्के	मि.क.सिं. सूर्ये	कं.तु.वृ. सूर्ये	ध.म.कुं. सूर्ये
जलाशयारम्भे	म.कुं.मी. स्थितेऽर्के	मे.वृ.मि. सूर्ये	क.सिं.कं. सूर्ये	तु.वृ.ध. सूर्ये
गृहारम्भे	सिं.कं.तु. स्थितेऽर्के	वृ.ध.म. सूर्ये	कुं.मी.मे. सूर्ये	वृ.मि.क. सूर्ये

अथ ग्रहाणाम् तंत्रोक्त मंत्राः

सू.	मं	ॐ घृणिः सूर्याय नमः
चं.	मं	ॐ सों सोमाय नमः
मं.	मं	ॐ अं अंगारकाय नमः
बु.	मं	ॐ बुं बुधाय नमः
गु.	मं	ॐ बृं बृहस्पतये नमः
शु.	मं	ॐ शुं शुक्राय नमः
श.	मं	ॐ शं शनैश्चराय नमः
रा.	मं	ॐ रां राहवे नमः
के.	मं	ॐ कें केतवे नमः

अथ ग्रहाणां संक्रान्तौ शुभेष्ववर्ज्यघटीनां बोधकचक्रम्

सू.	६
चं.	२
मं.	१
बु.	६
गु.	८८
शु.	९
श.	१६०
सं.स्वा.	घटी

अथ मासप्रवेशेमुद्दादशाक्रम

द.प.	दि.	घ.
सू	१	३०
चं	२	३०
मं	१	४५
रा	४	३०
गु	४	०
श	४	४५
बु	४	२५
के	१	४५
शु	५	०

अथ जन्मार्कांशादेकैकवर्षस्य दिनात्मक मुद्दादशाबोधकचक्रम्

दशापतिः	दिन संख्या ३६०	दिनदशा फलम्
सू	२०	[illegible]
चं	५०	सुभोगः
मं	२८	तापरोगः
बु	५६	लाभः
गु	३६	पीडाभयं
शु	५८	धनाप्तिः
श	४२	नाशः शोकः
रा	७०	[illegible]

अथोत्पन्नशिशोः [illegible]

[illegible]

वर्षे मुन्थानयनम्

गताब्देषु जन्मलग्नसंख्यासंयोज्य १२ तष्टे शेषराशौ मुन्था स्यात्।

अथ पुरुषजन्मकुण्डल्यां तन्वादि १२ भावस्थग्रहफलानि

श्रीः	तनुः १	धनं २	भ्रातृः ३	सुखं ४	पुत्रः ५	शत्रुः ६	स्त्रीः ७	मृत्युः ८	धर्मः ९	कर्मः १०	लाभः ११	व्ययः १२
सूर्यः	क्रूरः अंगपीडा	चक्षुरोगी धनी	सुखी विक्रमी	असुखी सोद्विग्नः	निःस्वः असुतः	बलवान् शत्रुजित्	स्त्रीजित् खलः	नेत्ररोगी अल्पायुः	सुतार्थ-सुखभाक्	सुख-शौर्य्यभाक्	बहुधन-वान्	अपव्ययी पतितः
चंद्रः	सुरूपः अन्यः	कुटुम्बी धनी	हिंस्रः सात्विकी	सुखी सुशीलः	धनी पुत्रवान्	अल्पायुः बहुशत्रुः	ईर्ष्युस्त्री-प्रमदः	व्याध्यर्दि-तस्सुखी	सौभाग्यः धनो च	धर्मार्थ-शौर्ययुतः	ख्यातः सलाभः	अङ्गहीनः हिंस्रः
भौमः	क्रूरः व्रणी	कोपी कुटिलः	विक्रमी सुधीः	विसुखः पीडितः	असुतः दरिद्रः	अरिजित् सुखी	दाराजित् रणरुचिः	अल्पपुत्रः रोगी	पापरतः दुर्मनोरथः	सुख-शौर्य्यवान्	बहुधनी सुखी	जाति-भ्रष्टः
बुधः	विद्वान् सुखी	धनी गुणी	दुर्जनः भ्रमणशील	पीडितः सुखी	मन्त्री असुतः	अशत्रुः विशीलः	धर्मज्ञः सुकीर्तिः	सद्गुणी धनी	पुत्रार्थ-सुखभाक्	सुखी पराक्रमी	यशस्वी धनी	अश्रमः पतितः
गुरुः	चिरायुः विद्वान्	सुवाक् धनी	कृपणः पापी	सुखी धनी	श्रीमान् प्रतापी	अशत्रुः कामी	पितृतो-ऽधिकः	नीचः अनायुः	तपस्वी पुत्रवान्	सधनः सुकृतः	सलाभः पुत्राप्तिः	खलः दरिद्रः
शुक्रः	सकामी सुखी	धनी सुवाक्यः	पापी कृपणः	सुखी सुधीः	सुखी धीमान्	रोगी अशत्रुः	कलह-प्रियः	नीचः दीर्घायुः	प्रतापी तपस्वी	सुधर्मी मानवान्	सुमतिः सलाभः	खलः बन्धुनाशः
शनिः	निःस्वः रोगी	वस्त्ररोगी धनी	अतिवि-क्रमवान्	विसुखः दुःखी	दरिद्री विपुत्रः	शत्रुजिद् सुखी	स्त्रीजित् दुःखी	नेत्ररोगी अल्पपुत्रा	सुतार्थ-सुखभाक्	सुखी पराक्रमी	प्रभूत-धनवान्	कुष्ठी पतितः
राहुः	सकामी रोगी	अधर्मो विरोधी	सुधीः विक्रमी	असुखी मातृहा	कुमती दुर्मगः	सबलः श्रीयुतः	सप्रगेहः अशुचिः	रोगी गतायुः	विकलः दैन्ययुक्तः	मानी सुखी	धनी पुत्रवान्	दुर्जनः पतितः
केतुः	गतायुः सकामः	खलः धर्महा	शूरः पराक्रमी	मातृहा दुःखी	असुतः मूर्खः	धनी सवीर्यः	प्रमेहरोगी दारहा	क्लेशयुतः व्रणी	पापी दुर्भगः	नष्टपितृकः हानिः	ख्यातः धनी	दुर्जनः पतितः
गुलिकः	रोगार्तः मन्दधीः	क्रोधी विषयी	विशोदरः अशोकः	रोगी पापकृत्	स्वल्पपुत्रः अभयः	रिपुहन्ता विनोदी	कुदारः कृतघ्नः	निःस्वः दुःखार्तः	पापकृत् निर्दयी	सुकीर्ति-मान्	पुत्र-हीनः	हीनाङ्गः नीचरतः

ग्रहाणांदृष्टिः चतुर्थेचाष्टमे भौमस्तृतीये दशमे शनिः। नवपञ्चगुरोर्दृष्टिः संपूर्णो पूर्ण सप्तमे। इति।।

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां तन्वादि १२ भावस्थग्रहाणांफलं जातकोत्तमम्

श्रीः	तनुः १	धनं २	भ्रातृः ३	सुखं ४	पुत्रः ५	शत्रुः ६	स्त्रीः ७	मृत्युः ८	धर्मः ९	कर्मः १०	लाभः ११	व्ययः १२
सूर्यः	विधवा सक्रोधा	दरिद्रा दुःखार्ता	सुतधना-न्विता	दरिद्रा सपीडा	नष्टा-त्मजा	सुखयुक्ता धनाढ्या	सर्वसुखै-र्विमुक्ता	विधवा दुःखार्ता	धनधर्मा-न्विता	सुकर्म-रता	सुलाभा बहुपुत्राः	सरोगा विधवा
चंद्रः	अल्पा-युषी	बहुधन-पुत्रान्विता	बहुधन-पुत्रान्विता	सुभगार्थ-युक्ता	सुपुत्रा ससुखा	सरोगा विधवा	पतिप्रिया सुदेहा	रोगार्दिता कुलटा	सुखपुत्रा-न्विता	धनधर्म-युता	भव्या विधिज्ञा	हीनांगा व्ययाढ्या
भौमः	विधवा दुःखार्ता	वन्ध्या सरोगा	वन्ध्या सरोगा	दुःखार्ता विधवा	अपुत्रा कुसंगता	रोगादि-रहिता	विधवा कुलटा	विधर्मिणी रोगार्ता	विधर्मिणी दुःखिनी	कुकर्मरता कुपुत्रा	नृपादर्थ-लाभः	खला रुगार्ता
बुधः	सौभाग्या बुद्धिमती	धनाढ्या सती	धनाढ्या सती	सुखगृहा-न्विता	धीमती सुपुत्रा	गतायुषा सकोपा	विदग्धा पतिव्रता	कृतघ्ना भीतियुता	सभोगा सुधर्मिणी	सत्कर्मिणी धनयुता	सुलाभा पतिव्रता	कृशांगी सुपुत्रा
गुरुः	सती सुभगा	वित्तसौ-भाग्ययुक्ता	सहजा-न्विता	सौख्यार्थ-युक्ता	साध्वी सगुणा	बहापदा सत्यहन्त्री	सौभाग्य-कान्तियुता	सरोगा सुशीला	कृतज्ञा पुत्राढ्या	सधवा सुभगा	सुपुत्रा सव्यया	सरुजा सुव्यया
शुक्रः	ससुखा पतिव्रता	सधना मुदान्विता	धनाढ्या परहन्त्री	सत्सुखा कीर्तियुक्ता	सुखसुता-न्विता	विसुखा दरिद्रा	पतिप्रिया शास्त्ररता	विसुखा प्रसूता	धर्मपरा सुभगा	सुकर्मार्थ-युक्ता	पुत्रार्थ-लाभा	सुव्यया दुःखार्ता
शनिः	वन्ध्या दरिद्रा	निर्धना दुःखयुक्ता	सुभगा सुदक्षा	हृद्रोगार्ता-वन्ध्या	विपुत्रा विसुखा	सगुणा सुभगा	विधवा सरोगा	विधवा दुःखार्ता	वन्ध्या शोकार्ता	पापरता अधनी	सुलाभा विपुत्रा	रोगार्ता मूढा
राहुः	पुत्रघ्नी	दरिद्रा	सवित्ता	रोगार्ता	सुतार्थ-	निरोगार्थ-	सदुःखार्ता	क्लेशार्ता	वन्ध्या	कुकर्म-	निरोगी	खला
केतुः	दुःखार्ता	दुःखार्ता	रोगाढ्या	मातृघ्नी	रहिता	युक्ता	विधवा	विधवा	शोकार्ता	रता	सुभगा	सरोगा

ग्रहोंकीदृष्टि- मंगलचौथे, ८वें स्थानको, शनि ३रे, १०वेंको, बृहस्पति ५वें, ९वेंघरकोपूर्णदृष्टिसेदेखतेहैं।७वेंस्थानकोसभीग्रहपूर्णदृष्टिसेदेखतेहैं।

अथ वारपरत्वेन कालचक्रम्

पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान्य	दिशा
शनि	शुक्र	गुरु	बुध	भौम	चन्द्र	सूर्य	०	वार

अथ वारपरत्वेन पाशचक्रम्

पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान्य	दिशा
भौम	चन्द्र	सूर्य	०	शनि	शुक्र	गुरु	बुध	वार

अथ मेषादिद्वादशराशीनां स्वामिनः

मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	राशयः
मं	शु	बु	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	स्वामिनः

अथ होराचक्रमिदम्

मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	राशयः
५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	लग्नः
र	चं	र	चं	र	चं	र	चं	र	चं	र	चं	१५अंशः
चं	र	चं	र	चं	र	चं	र	चं	र	चं	र	१५अंशः
४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	लग्नः

अथ द्रेष्काणचक्रमिदम्

मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	राशयः
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	अंशा
मं	शु	बु	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	१० या.
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	अंशा
र	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	बु	चं	२० या.
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	अंशा
गु	श	श	गु	मं	शु	बु	चं	र	बु	शु	मं	३० या.

अथात्र नवमांशचक्रमिदम्

मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	अं	क
मं	श	शु	चं	मं	श	शु	चं	मं	श	शु	चं	३	२०
शु	श	मं	र	शु	श	मं	र	शु	श	मं	र	६	४०
बु	गु	गु	बु	बु	गु	गु	बु	बु	गु	गु	बु	१०	०
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१३	२०
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मं	र	शु	श	मं	र	शु	श	मं	र	शु	श	२६	४०
गु	बु	बु	गु	गु	बु	बु	गु	गु	बु	बु	गु	३०	०

अथात्र द्वादशांशचक्रमिदम्

मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	अं	क
मं	शु	बु	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	२	३०
शु	बु	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	५	०
बु	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	७	३०
चं	र	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	बु	१०	०
र	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	बु	चं	१२	३०
बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	बु	चं	र	१५	०
शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	बु	चं	र	बु	१७	३०
मं	गु	श	श	गु	मं	शु	बु	चं	र	बु	शु	२०	०
गु	श	श	गु	मं	शु	बु	चं	र	बु	शु	मं	२२	३०
श	श	गु	मं	शु	बु	चं	र	बु	शु	मं	गु	२५	०
श	गु	मं	शु	बु	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	२७	३०
गु	मं	शु	बु	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	श	३०	०

अथात्र रोगोत्पत्तिविनष्टयोगस्यात्रविचारः- तत्र आर्द्रा, आश्लेषा, ज्येष्ठा, शततारका, मघा, पूर्वा ३, विशाखा, धनिष्ठा, कृत्तिका एषु भेषु।। सू. मं. श. वारे ४।९।१२।६।१४ तिथिषु। त्रयाणाम् योगे रोगेसतिमृत्युः।। अथ सर्पदंशने फलम्।। मू. आश्ले. मू. म. वि. कृ. आर्द्रा एषु सर्पदंश दर्शने मृत्युरिति।।

अथ त्रिंशांशचक्रमिदम्

[illegible]

अथ सप्तमांशचक्रम्

[illegible]

अथ विंशोत्तरीमतेनवर्षग्रहाणांमुद्दादशाचक्रम्

सू	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	दशा
०	१	०	१	१	१	१	०	२	मास
१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०	दिन

अथोक्तदशानयनम्। गताब्देषु स्वीयजन्मर्क्षे संख्यादृगुणांसंयोज्य९ तष्टे क्रमान्मुद्दादशास्यातिति।

अथ वर्षयोगिनीमतेंनमुद्दादशाक्रमः

मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	द.ना.
१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	दिन

अथ वर्षयोगिनीमुद्दादशानयनं

-गताब्दे स्वीय जन्मर्क्षसंख्यांसंयोज्य अष्टतष्टे त्रियुक्ते शेषं वर्ष प्रवेशस्यादौ योगिनीदशास्यात्।

अथ		दिशा	पू	आ	द	नै	प	वा	ठई
दिगीशाः	स्वामी	सू	शु	मं	रा	श	चं	बु	गु

अथ नक्षत्रजशान्त्यात्रगोवालीचक्रम्

[illegible]

अथ सर्वघातचक्रम्

[illegible]

अथात्र साधारण्येन गोचरफलज्ञानायचक्रम्

सूर्यः	चन्द्रः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	श.रा.के.	ग्रहाः
३-६-१०-११	१-२-३-५-६ ७-९-१०-११	३-६-१०-११	३-६-१०-११	२-५-७-९-११	१-२-३-९-११	३-६-१०-११	शोभनाः
१-२-५-७-९	०	१-२-५-७-९	१-२-५-७-९	१-३-६-१०	५-६-७-१०	१-२-५-७-९	पूज्याः
४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	निद्याः

अथ शुभकार्ये गुरुबलम् - बटुकन्याजन्मराशेस्त्रिकोणाय द्विसप्तगः। श्रेष्ठो गुरुः -खषट्त्र्याद्ये पूजयान्यत्रनिन्दितः। परिहारः -स्वोच्चे स्वभे स्वमैत्रे वा स्वांशे वर्गोत्तमे गुरुः। रिःफाष्ट तुर्यगोपीष्टो नीचारिस्थः शुभोऽप्यसत्।।

अथ सर्वघातचक्रम्

रोगार्ते गमनेरणेनोर्मंगलेषु

राशयः	मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
सू.घा.	४	८	१२	५	९	१	६	१०	७	११	२	३
चं.घा.	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
भौ.घा.	५	९	१	६	१०	२	७	११	८	१२	३	४
बु.घा.	२	६	१०	३	७	११	४	८	५	९	१२	१
गु.घा.	६	१०	२	७	११	३	८	१२	९	१	४	५
शु.घा.	७	१०	३	८	१२	४	९	१	१०	२	५	६
श.घा.	३	७	११	४	८	१२	५	९	६	१०	१	२
रा.घा.	८	७	६	४	५	१०	१२	१	२	९	११	३
के.घा.	८	७	१०	१	११	५	६	४	२	३	१२	९
मा.घा.	का	मा	पौ	मा	फा	चै	वै	ज्ये	आ	श्रा	भा	आ
[illegible]	१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५
	६	१०	७	७	८	१०	९	६	८	९	८	१०
	११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	१४	१३	१५
[illegible]	सू	श	चं	बु	श	श	गु	शु	शु	मं	गु	गु
	म	ह	स्वा	अनु	मू	श्र	श	रे	भ	रो	आ	श्ले
	वि	शू	प	धृ	प्री	शुभ	शु	ब्र	वै	गं	व्या	व
	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
	बव	श	कौ	ना	बव	कौ	तै	ग	तै	श	किं	च
	[illegible]	८	३	१	१	१	४	१	१	४	३	४
	[illegible]	शु	बु	चं	सू	बु	शु	मं	गु	श	श	गु
	[illegible]	वा	स	क	पि	वा	स	क	पि	वा	स	क
	[illegible]	वै	शू	वि	क्ष	वै	शू	वि	क्ष	वै	शू	वि
	स्त्री	पु	स्त्री	पु	स्त्री	पु	स्त्री	पु	स्त्री	पु	स्त्री	पु स्त्री
	सौ	क्रू	सौ	क्रू	सौ	क्रू	सौ	क्रू	सौ	क्रू	सौ	क्रू सौ
	स्थि	द्वि	च	स्थि	द्वि	च	स्थि	द्वि	च	स्थि	द्वि	
	[illegible]	ह	पा	धूम्र	चि	कृ	कृ	पी	कृ	धूम्र	श्वे	
	[illegible]	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	
	[illegible]	७	९	४	३	६	२	१०	११	५	१२	

शुक्रः	श.रा.के.	ग्रहाः
-२-३-९-११	३-६-१०-११	शोभनाः
६-७-१०	१-२-५-७-९	पूज्याः
-८-१२	४-८-१२	निद्याः

-खषट्त्र्याक्ष पूजयान्यत्रनिन्दिता। ...रिस्थः शुभोऽप्यसत्॥

अथ योगिनीदशाऽन्तर्दशाज्ञानार्थ चक्रमिदम्

मा १२ चं	मा २४ सू	मा ३६ गु	मा ४८ मं	मा ६० बु	मा ७२ श	मा ८४ शु	मा ९६ के
मंगला १	पिंगला २	धान्या ३	भ्रामरी ४	भद्रिका ५	उल्का ६	सिद्धा ७	संकटा ८
मं ०।१०	पिं १।१०	धा ३।०	भ्रा ५।१०	भ ८।१०	उ १२।०	सि १६।१०	सं २१।१०
पिं ०।२०	धा २।०	भ्रा ४।०	भ ६।२०	उ १०।०	सि १४।०	सं १८।२०	मं २।२०
धा १।०	भ्रा २।२०	भ ५।०	उ ८।०	सि ११।२०	सं १६।०	मं २।१०	पिं ५।१०
भ्रा १।१०	भ ३।१०	उ ६।०	सि ९।१०	सं १३।१०	मं २।०	पिं ४।२०	धा ८।०
भ १।२०	उ ४।०	सि ७।०	सं १०।२०	मं १।२०	पिं ४।०	धा ७।०	भ्रा १०।२०
उ २।०	सि ४।२०	सं ८।०	मं १।१०	पिं ३।१०	धा ६।०	भ्रा ९।१०	भ १३।१०
सि २।१०	सं ५।१०	मं १।०	पिं २।२०	धा ५।०	भ्रा ८।०	भ ११।२०	उ १६।०
सं २।२०	मं ०।२०	पिं २।०	धा ४।०	भ्रा ६।२०	भ १०।०	उ १४।०	सि १८।२०
श्रवण आर्द्रा चित्रा	धनिष्ठा पुनर्वसु स्वाती	शतभिषा पुष्य विशाखा	अश्वि. ऽश्लेषा अनुराधा पूर्वाभाद्रपद	भरणी मघा ज्येष्ठा उत्तराभाद्रपद	कृत्तिका पूर्वाफाल्गुनी मूल रेवती	रोहिणी उत्तराफाल्गुनी पूर्वाषाढ़ा	मृगशिरा हस्त उत्तराषाढ़ा

अथ योगिनीदशानयनम् —दशभाजन्मभयाङ्क-त्रियुक्तो गजभाजितः। एकादिशेषतो ज्ञेया मङ्गला पूर्विका दशा। मङ्गला पिङ्गला धान्या भ्रामरी भद्रिका ततः। उल्का सिद्धा सङ्कटा च तासामेकोत्तराः समाः। चन्द्रः सूर्यो गुरुर्भौमो बुधो मन्दो भृगुस्तमः। स्वामिनो मङ्गलादीनां शम्भुना निर्मिता इमे। भयातनाडी गुणिता दशाब्दैर्भभोग-नाड्या विहृता फलं यत्। अब्दादिकं भुक्तमुशन्ति-धीरा भोग्यं दशाब्दान्तरितं दशायाः। अथ अन्तर्दशाफलम् —दशा दशाहता कार्या रसवर्ण-विभाजिता। अन्तर्दशाभवत्येवं विदशापि ततो बुधैः।

(१)-मङ्गलादशाफलम् —मङ्गला तनुभृतां सुमङ्गलामाधधानरूपमानवर्धिनी। कामिनी कनककान्तिवितदा वैरिवृन्ददलिनी सुतप्रदा।

(२)-पिङ्गलादशाफलम् —वातपित्तकफरोगकारिणी पिङ्गला, परममानहारिणी। व्यग्रताहितविवादकारिका जन्मिनामिहबलार्थहारिका।

(३)-धान्यादशाफलम् —धराधीशद्वारे जनयति महत्वं च नितरां कलानामाधिक्यं विजयमरिवादे तनुभृताम्। धनं धान्यं तरुणतरुणीभोगमतुलं दशावृद्धि मित्रैः सुखमलमलङ्कार निकरैः।

(४)-भ्रामरीदशाफलम् —गति दूरेऽवश्यं कलयति भवेन क्षितिभुजां रति दुर्दैवैरपि कलिविधानं अनिमताम्। अरातेरातङ्कं खलकृतकलङ्कं चपलतां दशेयं भ्रामर्या हरिपदसपर्याविमुखताम्।

(५)-भद्रिकादशाफलम् —अरातेरल्पत्वंरपतिसमत्वं अनिमतां गुणानामाधिक्यं द्रविणगणमुक्ताफलसुखम्। सदागर्जदन्तावलविमलकान्तासुखमलं, यज्ञो भद्रं भद्रा विरति समुद्रावधि भृशम्।

(६)-उल्कादशाफलम् —ज्वरगणयुतानां कलयति विवादं बलवती कलत्राङ्गे कष्टं तनयतनयाङ्गेऽपि सततम्। चलत्वं वित्तानामरिजनविरोधेन भविता। यदा चोल्काख्यापि [illegible] विषमदेशाधिवसतिम्।

(७)-सिद्धादशाफलम् —उदारत्वं सिद्धा धनयति महाभोगमनिशं तुरङ्गालीदन्तावलकलनकान्तासुतजनम्। सुखं पृथ्वीभर्तुः कनकरत्नांगारनिकरैः, कवित्वे पाण्डित्यं निषकुलमहत्वं तनुभृताम्।

(८)-सङ्कटादशाफलम् —प्रवासत्वं कष्टा कलयति नृपातङ्कमतुलं पशूनां कलत्रापत्यानामुदरभवरोगं परिजनैर्विवादं बन्धूनामपचयमरातेरुपचयम्। सन्तापज्वरमनलभीतिं तनुभृताम्॥ इति ॥

अथ शुक्लपक्षेवह्निवासचक्रम्

ति.	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श
१	भू	भू	स्व	पा	भू	भू	स्व
२	भू	स्व	पा	भू	भू	स्व	पा
३	स्व	पा	भू	भू	स्व	पा	भू
४	पा	भू	भू	स्व	पा	भू	भू
५	भू	भू	स्व	पा	भू	भू	स्व
६	भू	स्व	पा	भू	भू	स्व	पा
७	स्व	पा	भू	भू	स्व	पा	भू
८	पा	भू	भू	स्व	पा	भू	भू
९	भू	भू	स्व	पा	भू	भू	स्व
१०	भू	स्व	पा	भू	भू	स्व	पा
११	स्व	पा	भू	भू	स्व	पा	भू
१२	पा	भू	भू	स्व	पा	भू	भू
१३	भू	भू	स्व	पा	भू	भू	स्व
१४	भू	स्व	पा	भू	भू	स्व	पा
१५	स्व	पा	भू	भू	स्व	पा	भू

अथ कृष्णपक्षेवह्निवासचक्रम्

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	ति.
पा	भू	भू	स्व	पा	भू	भू	१
भू	भू	स्व	पा	भू	भू	स्व	२
भू	स्व	पा	भू	भू	स्व	पा	३
स्व	पा	भू	भू	स्व	पा	भू	४
पा	भू	भू	स्व	पा	भू	भू	५
भू	भू	स्व	पा	भू	भू	स्व	६
भू	स्व	पा	भू	भू	स्व	पा	७
स्व	पा	भू	भू	स्व	पा	भू	८
पा	भू	भू	स्व	पा	भू	भू	९
भू	भू	स्व	पा	भू	भू	स्व	१०
भू	स्व	पा	भू	भू	स्व	पा	११
स्व	पा	भू	भू	स्व	पा	भू	१२
पा	भू	भू	स्व	पा	भू	भू	१३
भू	भू	स्व	पा	भू	भू	स्व	१४
भू	स्व	पा	भू	भू	स्व	पा	३०

वह्निवास प्रकार —सैका तिथिर्वार युता कृताप्ता। शेषे गुणेऽभ्रे भुवि वह्निवासः। सौख्याय होमे शशियुग्म शेषे। प्राणार्थ नाशोदिवि भूतलश्च। वर्तमान तिथि में दिन संख्या जोड़ें, उसमें एक और मिलायें और कुल योग में ४ का भाग दें-शेष ० और ३ बचे तो अग्नि का वास पृथ्वी में है जो शुभ है। २ और १ शेष बचे तो अग्निवास पृथ्वी में नहीं है। इस दिन कर्म करने से प्राण तथा धननाश होता है।

वह्निवासे विशेषः—विवाहे व्रतबंधे च यजने मधुसूदने। दुर्गायां पुत्रजन्मादौ अग्निचक्रम् न दृश्यते।

अथ सहम साधनानि

सहम	दिन	रात
पुण्य	चं + सू + ल	गु - मं + ल
गुरु-विद्या	सू - चं + ल	चं - सू + ल
यश	पु.स. + ल	पु.स. - गु + ल
मित्र	पु.स. + शु	पु.स. - गु + शु
महात्म्य	मं - पु.स. + ल	पु.स. - मं + ल
आशा	श - शु + ल	शु - श + ल
१ सामर्थ्य	मं - लग्नेश + ल	लग्नेश - मं + ल
२ लग्नेश	मं.हो.श्री. - मं + ल	गु - मं + ल
भ्राता	गु. - श + ल	गु - श + ल
गौरव	गु. - चं + सू	गु - सू + चं
राज, पिता	श - सू + ल	सू - श + ल
माता	चं - शु + ल	शु - चं + ल
जीवन	श - गु + ल	गु - शु + ल
पुत्र	गु - चं + ल + १	गु - चं + ल + १
जल	चं - शु + ल	शु - चं + ल
कर्म	मं - बु + ल	बु - मं + ल
रोग	ल - चं + ल	ल - मं + ल
कन्दर्प, मन्मथ	चं - लग्नेश + ल	लग्नेश - चं + ल
कलह, क्षमा	गु. - मं + ल	मं - गु + ल
शास्त्र	गु - श + बु + १	श - गु + बु + १
बन्धु	बु - चं + ल	बु - चं + ल
बन्दक	चं - बु + ल	बु - चं + ल
मृत्यु	अष्टम् - चं + श	अष्टम् - चं + श

सहम	दिन	रात
चिन्ता	नवम् - नवमेश + ल	नवम् - नवमेश + ल
धन	द्वि - द्वितीयेश + ल	द्वि - द्वितीयेश + ल
[illegible]	शु - सू + ल	शु - सू + ल
परकर्म	चं - श + ल	श - चं + ल
वणिज्य	चं - बु + ल	मं - बु + ल
कार्यसिद्धि	श - सू + सूर्यराशि	श - चं + चं राशीश
विवाह	शु - श + ल	शु - श + ल
प्रसूति	गु - बु + ल	बु - गु + ल
सन्ताप	श - चं + पद्मभात्र	श - चं + ल
श्रद्धा	शु - मं + ल	शु - मं + ल
प्रीति, विद्या	विद्या - पुण्य + ल	विद्या - पुण्य + लग्न
बल, देह	देह - गुरु - पु.स. + ल	पु.स. - गु + ल
जाड्य	मं - शु + बु	श - मं + बु
व्यापार	मं - बु + ल	मं - बु + ल
पानीयपतन	श - चं + ल	चं - श + ल
शत्रु	मं - श + ल	श - मं + ल
शौर्य	पु. सहम - मं + ल	मं - पु.स. + ल
उपाय	श - गु + ल	गु - श + ल
दरिद्रता	पु.स. - बु + बु	बु - पु.स. + बु
गुरुता	सूर्य उच्च - सू + ल	चं उच्च - चं + ल
जलपथ	कर्क $^{1}/_{2}$ - श + ल	श - कर्क $^{1}/_{2}$ + ल
बन्धन	पु.स. - श + ल + १	श - पु.स. + ल + १
कन्या	शु - चं + ल	शु - चं + ल
अश्व	पु.स. - सू + एकादश	सू - पु.स. + एकादश

अथ वृक्षग्रहे [illegible] ४३ स्नानार्थमौषधमाह

दूर्वाङ्कुरो गौरसर्षप-
शिलाजित् सिद्धार्थं
सर्वौषधि दारुलोध्रैः।
स्नानं विदध्याद् ग्रहजे
रविन्दोः पीडाहर
राशिगते शुभे चेत्।
वस्त्रायुग्रे लिखेत्सम्यक्
रक्तरोगे [illegible]
[illegible] च ततो वस्त्र
[illegible]
सुवर्णं तिथिलं जलं
रतिलं ताम्रपात्रकं।
सदक्षिणं समस्तं च
श्रोत्रियाय निवेदयेत्।

शनि जपमन्त्रः

नीलाञ्जन समाभासं
रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छाया मार्तण्डसम्भूतं
तन्नमामि शनैश्चरम्॥

जन्मलग्नादरिष्टवर्षाणि

जन्म	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
लग्न	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
अरिष्ट वर्षाणि	४।११। १६।४४। ५८	१।२८। ३३।४४ ६१	४।१०। १४।३८। ५८	५।२५। ४०।४८। ६२	५।१३। २८।३६। ३८	४।१६। २३।३६। ४५	१५।३१। ३५।६२। ६४	११।२८। ३८।५२। ६२	२।१०।१८। ३१।३८। ४२।६० ८१	५।१३।२७। ३६।४६। ५७।६२ ९५	२।२८। ३३।३८। ६४ ९०	१।८। १३।३६। ४८ ८३
आयु	१००	९०	८६	१००	६५	१००	७३	१००				

अथ ग्रहाणांविंशोत्तरीमहादशान्तर्दशाविज्ञानार्थचक्रम्

सूर्यदशावर्ष ६ कृ.उ.फा.उ.षा.				चन्द्रदशावर्ष १० रोहिणी ह.श्रवण				भौमदशावर्ष ७ मृग.चि.धनिष्ठा				राहुदशावर्ष १८ आर्द्रा स्वाती शत.				गुरुदशावर्ष १६ पुन.वि.पू.भा.				शनिदशावर्ष १९ पुष्य अ.उ.भा.				बुधदशावर्ष १७ आश्ले.ज्ये.रे.				केतुदशावर्ष ७ मघा मूल अश्वि.				शुक्रदशावर्ष २० पू.फा.पूषा.भ.			
अन्तर्दशा				अन्तर्दशा				अन्तर्दशा				अन्तर्दशा				अन्तर्दशा				अन्तर्दशा				अन्तर्दशा				अन्तर्दशा				अन्तर्दशा			
ग्र	व	मा	दि	ग्र	व	मा	दि	ग्र	व	मा	दि	ग्र	व	मा	दि	ग्र	व	मा	दि	ग्र	व	मा	दि	ग्र	व	मा	दि	ग्र	व	मा	दि	ग्र	व	मा	दि
सू	०	३	१८	चं	०	१०	०	मं	०	४	२७	रा	२	८	१२	गु	२	१	१८	श	३	०	३	बु	२	४	२७	के	०	४	२७	शु	३	४	०
चं	०	६	०	मं	०	७	०	रा	१	०	१८	गु	२	४	२४	श	२	६	१२	बु	२	८	९	के	०	११	२७	शु	१	२	०	सू	१	०	०
मं	०	४	६	रा	१	६	०	गु	०	११	६	श	२	१०	६	बु	२	३	६	के	१	१	९	शु	२	१०	०	सू	०	४	६	चं	१	८	०
रा	०	१०	२४	गु	१	४	०	श	१	१	९	बु	२	६	१८	के	०	११	६	शु	३	२	०	सू	०	१०	६	चं	०	७	०	मं	१	२	०
गु	०	९	१८	श	१	७	०	बु	०	११	२७	के	१	०	१८	शु	२	८	०	सू	०	११	१२	चं	१	५	०	मं	०	४	२७	रा	३	०	०
श	०	११	१२	बु	१	५	०	के	०	४	२७	शु	३	०	०	सू	०	९	१८	चं	१	७	०	मं	०	११	२७	रा	१	०	१८	गु	२	८	०
बु	०	१०	६	के	०	७	०	शु	१	२	०	सू	०	१०	२४	चं	१	४	०	मं	१	१	९	रा	२	६	१८	गु	०	११	६	श	३	२	०
के	०	४	६	शु	१	८	०	सू	०	४	६	चं	१	६	०	मं	०	११	६	रा	२	१०	६	गु	२	३	६	श	१	१	९	बु	२	१०	०
शु	१	०	०	सू	०	६	०	चं	०	७	०	मं	१	०	१८	रा	२	४	२४	गु	२	६	१२	श	२	८	९	बु	०	११	२७	के	१	२	०

अथ शिववासफलचक्रमिदम्

ति.शुक्लपक्ष	ति.कृष्णपक्ष	शिववासम्	फलम्
१	७	श्मशाने	मृत्युः
२	१	गौरीसन्निधौ	शुभम्
३	२	सभायाम्	तापकारकम्
४	३	क्रीडायाम्	सन्तानहानिः
५	४	कैलाशे	सुखम्
६	५	वृषे	श्रीप्राप्तिः
७	६	भोजने	पीडाकारकम्
८	७	श्मशाने	मृत्युः
९	८/३०	गौरीसन्निधौ	शुभम्
१०	९	सभायाम्	तापकारकम्
११	१०	क्रीडायाम्	सन्तानहानिः
१२	११	कैलाशे	सुखम्
१३	१२	वृषे	श्रीप्राप्तिः
१४	१३	भोजने	पीडाकारकम्
१५	१४	श्मशाने	मृत्युः

अथ शिववासविचारः —तिथिं च द्विगुणीं कृत्वा पुनः पंचसमन्वितम्। मुनिभिस्तु हरेद्भागं शेषं च शिववासनम्।

वासज्ञानम् —एकेन वासः कैलाशे द्वितीये गौरिसन्निधौ। तृतीये वृषभारूढाः सभायांच चतुर्थके। पंचमे भोजने चैव क्रीडायां च रसात्मके। श्मशाने सप्तमे चैव शिववासः उदीरितः।

फलम् —कैलाशे लभते सौख्यं गौर्य्यां च सुखसम्पदौ वृषभेभीष्टसिद्धिःस्यात् सभायांतापकारकौ। भोजनम् च भवेत् पीडा क्रीडायां कष्टमेवच। श्मशाने मरणं ज्ञेयं फलमेव विचारयेत्।

शनि दानमन्त्रः —शनैश्चर प्रीतिकरं दानं पीडा निवारकम्। सर्वापत्ति विनाशाय द्विजाग्र्याय ददाम्यहम्।

ग्रामवासचक्रम् ग्रामभात्वासकर्तृभयावत्

मस्तके	७	धनमानलाभः	हृदये	७	सुखम् लाभः
पृष्ठे	७	हानिः-नैस्व्यम	पादे	७	पर्यटनम्

रविभाच्चुल्हीचक्रम्

पृष्ठे	६	श्रीलाभः
शीर्षे	४	मृत्युभयम्
नाभौ	८	सुखम्
गर्भे	५	विनाशः
हस्ते	२	सुभुक्तिः
पादे	२	कलत्रमृतिः

अथाक्षरांगुल्यारोपणचक्रमिदम्

श्री	सुखसौभाग्य प्राप्ति	क	धनक्षय रोगवृद्धि	द	धनलाभ सुखप्राप्ति
अ	सर्वकार्य सिद्धि	ख	राज्यमान लाभ	ध	धनलाभ पुत्रप्राप्ति
आ	शोकसंतापदुःख	ग	कार्यसिद्धि मित्रप्रीति	न	लाभ कलह
इ	अतिसुख रोगनाश	घ	कार्यसिद्धि मित्रलाभ	प	धनक्षय कष्ट
ई	द्रव्यलाभ कार्यसिद्धि	ङ	कार्यनाश क्लेश	फ	धनलाभ
उ	सन्तान वियोगदुःख	च	राज्यमान वृद्धि	ब	धननाश शोक
ऊ	स्थिरलाभ सफलता	छ	कार्यसिद्धि	भ	सुख पुत्रलाभ
ऋ	सुवर्णप्राप्तिः	ज	हानि कार्यनाश	म	कीर्तिनाश
ॠ	व्याधि मित्रवियोग	झ	पशुलाभ	य	धनलाभ प्रीति
ऌ	मित्रलाभ आनन्द	ञ	सन्तानविरोध हानि	र	विरोध हानि
ॡ	व्याधि कार्यहानि	ट	लाभ सिद्धि	ल	धननाश रोग
ए	सर्वसिद्धि सुखप्राप्ति	ठ	सर्वसिद्धि	व	धनलाभ रिपुभय
ऐ	बन्धुविरोध रोग	ड	शत्रुवृद्धि	श	[illegible]
ओ	दुःखशोक नाश	ढ	बन्धुवर्ग सन्ताप	ष	चिन्ता कार्यनाश
औ	कार्यनाश मित्रवियोग	ण	विद्याप्राप्ति लाभ	स	धनलाभ प्राप्ति
अं	दुःखशोक नाश	त	[illegible] लाभ	ह	धनप्राप्ति
अः	पशुभय भविष्य	थ	कार्यहानि रोग	क्ष	सर्वसिद्धि लाभ

वाराही संहिता द्वारा अनेक वस्तुओं की तेजी-मंदी देखने की रीति –(पहले प्रथम किस वस्तु की कौन सी राशि मानी जाय उसका विचार) मेषराशि –सुवर्ण, गेहूँ, जौ, मसूर, दाल, कम्बल, पशमीना, दुशाला इत्यादि स्वतन्त्र वस्तु, औषधि। वृषराशि –चावल, वस्त्र, गोधूम, यव, लोहित, बैल, पुष्प, सरसों, चाँदी। मिथुनराशि –बाजरा, कपास, रुई, कमलकन्द, ज्वार, मक्का, केक, कस्तूरी। कर्कराशि –कोदो, केला, जायफल, तमालपत्र, दालचीनी। सिंहराशि –छुहारा, गुड़, खाँड़, सिंह, मृगचर्म, तुष्य। कन्याराशि –तीसी, मटर, कुल्थी, मूँग, ईख, गेहूँ, सब अन्न दाना। तुलाराशि –उड़द, गेहूँ, लाल सरसों, जौ, राई, मटर, एरण्ड। वृश्चिकराशि –ईख, गुड़, चीनी, लोहा, ककड़ी, नमक, वल्लीफल, अन्न। धनुराशि –अन्न, गज, लवण, धनिया, मूली, वस्त्र, तिल, आयुध, धनुष-बाण। मकरराशि –गुड़, कपड़ा, रसपदार्थ, पारद कूट, जमीकन्द, सोना, हींग, कृष्णवल्ली, मदिरा। कुम्भराशि –जलजफल, पुष्प, विविध रस, पोस्ता, चित्र-विचित्र वस्तु। मीनराशि –मोती, हीरा, समुद्रदीप, मत्स्य, गज, सीपमणि। जिन वस्तुओं की तेजी-मंदी जाननी हो उनकी राशि देख लें–यदि उनकी राशि से बृहस्पति २।१०।१।११।७।१।५ बुध और शुक्र ये ग्रह २।१।११।१।५।९ इन भावों में हों तो वह वस्तु सस्ती होगी। सूर्य, शनि, मंगल, राहु, केतु, क्षीणचन्द्र यदि वस्तु की राशि से ३।६।१०।११ भावों में हों तो समर्घ जानना चाहिये। अन्य भावों में हो तो महर्घ जानना चाहिये। जिस वस्तु की राशि से छठवें सातवें हो तो वह वस्तु महँगी रहेगी। जिसमें शुभ ग्रह हो वह सस्ती होगी। इति॥

सम्वत् २०८२ में ग्रहों का नक्षत्र-राशिचार, उदयास्त, वक्री-मार्गी समय (३० मार्च सन् २०२५ से १९ मार्च सन् २०२६ तक)

● रविचार: ●
(संवत्सरारम्भे उभायां/मीने)

(सन् २०२५)

३१ मार्च	रेवत्यां	दिवा १/४६
१३ अप्रैल	मेषे/अश्विन्यां	दे.रा.३/७
२७ अप्रैल	भरण्यां	रा.६/५८
११ मई	कृत्तिकायां	दि.१/९
१४ मई	वृषे	दे.रा.१२/२
२५ मई	रोहिण्यां	दि.९/२३
८ जून	मृगे	दि.७/१६
१५ जून	मिथुने	प्रा.६/४१
२२ जून	आर्द्रायां	प्रा.६/१८
६ जुलाई	पुनर्वसौ	प्रा.५/५४
१६ जुलाई	कर्के	सा.५/३७
२० जुलाई	पुष्ये	प्रा.५/२८
२ अगस्त	आश्लेषायां	दे.रा.४/२२
१६ अगस्त	सिंहे/मघायां	दे.रा.२/३
३० अगस्त	पूर्वफल्गुन्यां	रा.१०/१
१३ सितंबर	उफायां	दि.३/५४
१६ सितंबर	कन्यायां	दे.रा.२/०
२७ सितंबर	हस्ते	प्रा.७/२४
१० अक्टूबर	चित्रायां	रा.८/२३
१७ अक्टूबर	तुलायां	दि.१/५६
२४ अक्टूबर	स्वात्यां	प्रा.६/५३
६ नवंबर	विशाखायां	दि.३/०
१६ नवंबर	वृश्चिके	दि.१/४२
१९ नवंबर	अनुराधायां	रा.९/२
२ दिसंबर	ज्येष्ठायां	दे.रा.१/१९
१५ दिसंबर	धनुषि/मूले	दे.रा.४/१८
२८ दिसंबर	पूर्वाषाढायां	दे.रा.६/३०

(सन् २०२६)

११ जनवरी	उत्तराषाढायां	दि.८/२८
१४ जनवरी	मकरे	दि.३/०
२४ जनवरी	श्रवणे	दि.१०/४५
६ फरवरी	धनिष्ठायां	दि.१/५४
१२ फरवरी	कुंभे	दे.रा.३/५७
१९ फरवरी	शतभिषायां	सा.६/२४
४ मार्च	पू.भा.यां	दे.रा.१२/४२
१४ मार्च	मीने	दे.रा.१२/४९
१८ मार्च	उ.भा.यां	दि.९/८

● भौमचार: ●
(संवत्सरारम्भे पुनर्वसौ/कर्के)

(सन् २०२५)

८ अप्रैल	पुष्ये	दे.रा.४/३६
१० मई	आश्लेषायां	दि.१/१
५ जून	सिंहे/मघायां	दि.२/२
२९ जून	पूफायां	दि.९/२५
२१ जुलाई	उफायां	रा.९/०
२७ जुलाई	कन्यायां	दि.८/१२
१२ अगस्त	हस्तेषु	दि.१०/१५
२ सितम्बर	चित्रायां	प्रा.५/५७
१२ सितम्बर	तुलायां	दि.१०/६
२२ सितम्बर	स्वात्यां	दि.१०/४९
११ अक्टूबर	विशाखायां	दे.रा.२/३८
२६ अक्टूबर	वृश्चिके	दि.१२/४५
३१ अक्टूबर	अनुराधायां	प्रा.६/४४
७ नवम्बर	**पश्चिमास्त:**	सायं ५/४२
१८ नवम्बर	ज्येष्ठायां	दे.रा.१२/१०
७ दिसम्बर	धनुषि/मूले	दि.८/७
२५ दिसम्बर	पूषायां	दिवा ७/४१

(सन् २०२६)

११ जनवरी	उषायां	दे.रा.१२/८
१६ जनवरी	मकरे	दि.९/१८
२९ जनवरी	श्रवणे	दि.१०/५२
१५ फरवरी	धनिष्ठायां	सा.५/१९
२४ फरवरी	कुम्भे	प्रा.७/२५
४ मार्च	शतभिषायां	रा.९/१

● बुधचार: ●
(संवत्सरारम्भे उभायां/मीने/वक्री/अस्त:)

(सन् २०२५)

३ अप्रैल	पूभायां	दि.२/४९
५ अप्रैल	**पूर्वोदय:**	दे.रा.४/४८
७ अप्रैल	मार्गी	दि.३/४४
११ अप्रैल	उभायां	रा.७/४
२७ अप्रैल	रेवत्यां	सा.६/४१
६ मई	मेषे/अश्वि.	दे.रा.१२/२८
१४ मई	भरण्यां	रा.शे.१/४७
१६ मई	**पूर्वास्त:**	दे.रा.४/५०
२१ मई	कृत्तिकायां	रा.१०/३०
२३ मई	वृषे	दि.१/१३
२७ मई	रोहिण्यां	दे.रा.४/४९
३ जून	मृगे	प्रा.५/४८
६ जून	मिथुने	दि.८/९
८ जून	**पश्चिमोदय:**	रा.७/१३
९ जून	आर्द्रायां	दि.१/५४
१६ जून	पुनर्वसौ	दि.४/३४
२२ जून	कर्के	रा.८/३३
२४ जून	पुष्ये	दे.रा.३/५६
७ जुलाई	आश्लेषायां	प्रा.५/२५
१८ जुलाई	वक्री	दि.४/४५
१९ जुलाई	**पश्चिमास्त:**	रा.७/१६
२९ जुलाई	पुष्ये	दि.२/१५
९ अगस्त	**पूर्वोदय:**	दे.रा.५/१
१० अगस्त	मार्गी	प्रा.६/८
२१ अगस्त	आश्लेषायां	दे.रा.४/४४
३० अगस्त	मघायां/सिंहे	सा.५/२६
३ सितं.	**पूर्वास्त:**	दे.रा.५/२०
६ सितं.	पूफायां	दि.४/५५
१३ सितं.	उफायां	दि.४/३४
१५ सितं	कन्यायां	दि.११/३९
२० सितं.	हस्ते	दे.रा.१/१८
२८ सितं.	चित्रायां	रा.१०/५५
२ अक्टू.	तुलायां	दे.रा.३/२२
५ अक्टू.	**पश्चिमोदय:**	सा.६/३
७ अक्टू.	स्वात्यां	दि.११/४०
१६ अक्टू.	विशाखायां	सा.५/६
२४ अक्टू.	वृश्चिके	दि.८/८
२६ अक्टू.	अनुराधायां	दे.रा.४/५०
९ नवम्बर	वक्री	रा.१०/२९
१२ नवम्बर	**पश्चिमास्त:**	सा.५/३७
२० नवम्बर	विशाखायां	दे.रा.३/१
२३ नवम्बर	तुलायां	दि.४/१०
२६ नवम्बर	**पूर्वोदय:**	दे.रा.५/५२
२९ नवम्बर	मार्गी	रा.९/१४
६ दिसं.	वृश्चिके	रा.१०/३१
९ दिसं.	अनुराधायां	दे.रा.३/५१
२० दिसं.	ज्येष्ठायां	प्रा.७/३०
२९ दिसं.	मूले/धनुषि	प्रा.७/०५

(सन् २०२६)

२ जनवरी	**पूर्वास्त:**	दे.रा.६/२२
६ जनवरी	पू.षायां	रा.१०/४८
१५ जनवरी	उषायां	दि.८/२१
१७ जनवरी	मकरे	दि.९/२९
२३ जनवरी	श्रवणे	दि.९/४२
३० जनवरी	धनिष्ठायां	दे.रा.३/११
३ फरवरी	कुम्भे	रा.१०/२
५ फर.	**पश्चिमोदय:**	सा.६/०९
७ फरवरी	शतभिषायां	दि.४/५४
१५ फग्वरी	पूभायां	रा.८/२५
२५ फरवरी	वक्री	सा.६/३८
१ मार्च	**पश्चिमास्त:**	सा.६/२३
१० मार्च	शतभिषायां	दि.९/४९
१६ मार्च	**पूर्वोदय:**	दे.रा.५/३७

● गुरुचार: ●
(संवत्सरारम्भे रोहिण्यां४च./वृषे)

(सन् २०२५)

१० अप्रैल	मृगे१च.	रा.११/३८
२८ अप्रैल	मृगे२च.	दे.रा.२/३४
१५ मई	मिथुने/मृगे३च.	दि.८/८
३० मई	मृगे४च.	दि.१/४६
१३ जून	**पश्चिमास्त:**	सा.७/६
१४ जून	आर्द्रायां१च.	दि.७/७
२८ जून	आर्द्रायां२च.	रा.७/५९
८ जुलाई	**पूर्वोदय:**	रा.शे.४/५१
१३ जुलाई	आर्द्रायां३च.	दि.११/६
२८ जुलाई	आर्द्रायां४च.	दि.११/४२
१३ अगस्त	पुनर्वसौ१च.	दि.७/३७
३० अगस्त	पुनर्वसौ२च.	दि.३/३७
१९ सितं.	पुनर्वसौ३च.	दे.रा.२/१९
२१ अक्टू.	कर्केपुनर्वसौ४च.	प्रा.६/२०
१२ नवम्बर	वक्री	दे.रा.१२/२२
४ दिसम्बर	मिथुने/पुन३च.	दि.१२/५१

(सन् २०२६)

५ जनवरी	पुनर्वसौ२च.	दे.रा.५/४५
२ फरवरी	पुनर्वसौ१च.	दि.३/४९
११ मार्च	मार्गी	दे.रा.१२/१३

● शुक्रचार: ●
(संवत्सरारम्भे उभायां/मीने/वक्री)

(सन् २०२५)

३१ मार्च	पूभायां	रा.९/४
१२ अप्रैल	मार्गी	रा.७/५५
२६ अप्रैल	उभायां	दि.१/१७
१६ मई	रेवत्यां	सा.६/५२
३१ मई	मेषे/अश्विन्यां	दि.४/४१
१३ जून	भरण्यां	दे.रा.१/४६
२६ जून	कृत्तिकायां	दि.४/३४
२९ जून	वृषे	सा.६/२०
८ जुलाई	रोहिण्यां	रा.८/१०
२० जुलाई	मृगे	दि.४/७
२६ जुलाई	मिथुने	दि.११/५१
१ अगस्त	आर्द्रायां	प्रा.६/२२
१२ अगस्त	पुनर्वसौ	दि.४/२
२० अगस्त	कर्के	दे.रा.१२/५०
२३ अगस्त	पुष्ये	रा.१०/१
३ सितं.	आश्लेषायां	दे.रा.१२/५०
१४ सितं.	सिंहे/मघायां	दे.रा.१२/५९
२५ सितं.	पूफायां	रा.१०/५०
६ अक्टू.	उफायां	सा.६/४४
९ अक्टू.	कन्यायां	दि.११/२७
१७ अक्टू.	हस्तेषु	दि.१/०
२७ अक्टू.	चित्रायां	दे.रा.५/५६
२ नवम्बर	तुलायां	दि.१/५९
७ नवम्बर	स्वात्यां	रा.९/४८
१८ नवम्बर	विशाखायां	दि.१२/५२
२६ नवम्बर	वृश्चिके	दि.११/४६
२८ नवम्बर	अनुराधायां	दे.रा.३/२१
९ दिसम्बर	ज्येष्ठायां	सा.५/२९
१२ दिसम्बर	**पूर्वास्त:**	दे.रा.६/२२
२० दिसम्बर	मूले/धनुषि	प्रा.७/२७
३० दिसम्बर	पू.षायां	रा.९/२५

(सन् २०२६)

१० जनवरी	उषायां	दि.११/३२
१२ जनवरी	मकरे	दे.रा.३/६
२० जनवरी	श्रवणे	दे.रा.१/५४
३१ जनवरी	**पश्चिमोदय:**	सा.५/५३
३१ जनवरी	धनिष्ठायां	दि.४/४२
५ फरवरी	कुम्भे	दे.रा.१२/१६
११ फरवरी	शतभि.	दि.८/०
२१ फरवरी	पूभायां	रा.११/५४
१ मार्च	मीने	दे.रा.१२/१८
४ मार्च	उभायां	दि.४/३२
१५ मार्च	रेवत्यां	दि.१०/१

● शनिचार: ●
(संवत्सरारम्भे पूभायां३च./कुम्भे/अस्त:)

(सन् २०२५)

१ अप्रैल	मीने/पूभायां४च.	दि.३/४९
६ अप्रैल	**पूर्वोदय:**	दे.रा.५/१५
१ मई	उभायां१च.	सा.६/१८
१४ जून	उभायां२च.	दि.१/३३
१२ जुलाई	वक्री	सा.६/२५
१० अगस्त	उभायां१च.	दि.७/५८
२८ सितं.	पूभायां४च.	रा.९/४४
२६ नवम्बर	मार्गी	रा.१०/४९

(सन् २०२६)

२२ जनवरी	उभायां१च.	दि.१/४
२४ फरवरी	उभायां२च.	दि.९/४२
१३ मार्च	**पश्चिमास्त:**	सा.६/२८

● राहुचार: ●
(संवत्सरारम्भे पूभायां ४ च./मीने)

(सन् २०२५)

९ मई	कुम्भे/पूभायां३च.	रा.९/१४
१२ जुलाई	पूभायां२च.	रा.८/२७
१४ सितं.	पूभायां१च.	रा.७/४०
१७ नवं.	शतभि.४च.	सा.६/५४

(सन् २०२६)

२० जनवरी	शतभि.३च.	सा.६/७

● केतुचार: ●
(संवत्सरारम्भे उफायां२ चरणे/कन्या)

(सन् २०२५)

९ मई	सिंहे/ठफायां१च.	रा.९/१४
१२जुलाई	पूफायां४च.	रा.८/२७
१४ सितं.	पूफायां३च.	रा.७/४०
१७नवं.	पूफायां२च.	सा.६/५४

(सन् २०२६)

२० जनवरी	पूफायां१च.	सा.६/७

—— ⌛ ——

भद्रावास चक्रम्

लोक:	स्वर्ग:	पाताल:	भूमि:
चन्द्र राशि:	मेष	कन्या	कुंभ
	वृष	तुला	मीन
	मिथुन	धनु	कर्क
	वृश्चिक	मकर	सिंह

भद्रावास

भद्रावास के संबंध में भी कई पाठकों के प्रश्न आते हैं अत: यहां उसका पूरा विवरण सांगोपांग दिया जा रहा है। भद्रा एक करण की संज्ञा है। इसे सामान्यत: सभी शुभ कार्यों में वर्जित किया जाता है। भद्रा का वास विभिन्न राशियों में विभिन्न स्थानों में होता है। संग्रह ग्रंथों में इसके बारे में भ्रामक जानकारी होने से इसका निराकरण यहां किया जा रहा है।

मुहूर्त चिंतामणि जो सर्वमान्य प्रामाणिक ग्रंथ है, उसके अनुसार

कुंभकर्कद्वये मर्त्ये
स्वर्गेऽब्जेऽजात् त्रयेऽलिगे।
स्त्रीधनर्जूक नक्रेऽधो
भद्रा तत्रैव तत्फलम्।

(मु.चिं.शुभाशुभ श्लोक ४५)

अर्थात् भद्रा का वास पृथ्वी में तब होता है जब चंद्रमा कुंभ, मीन, कर्क और सिंह राशि में रहता है। यहां भद्रा अशुभफलकारक होती है।

चंद्रमा की राशि यदि मेष, वृष, मिथुन, वृश्चिक हो तो भद्रा स्वर्गलोक में रहती है। स्वर्ग की भद्रा का फल पृथ्वी पर अनिष्टकारी नहीं होता।

चंद्रमा यदि कन्या, तुला, धनु, मकर राशियों का हो तो भद्रा पाताल में होती है। पाताल की भद्रा पृथ्वी पर हानिकारक नहीं होती।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि वैधृति, व्यतीपात, भद्रा, भौमवार व दूषित तारा मध्याह्न के बाद शुभ होती है।

।। अथ रव्यादिग्रहाणां जन्मभाद्गोचरफलवेधयोर्ज्ञानायचक्रम् ।।

श्री	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
१	स्थाननाश: पंथा	पुष्टि: अन्नलाभ:	भयं पीड़ाच	बंधन भयं	अरिष्ट भयं	सुखम् शत्रुनाश:	सर्वनाश: पीड़ाभयं	हानि: कष्टं	हानि: रोगभयं
२	हानि: भयं	धननाश: सुखं	धननाश: नेत्रार्ति:	धनं लाभ:	धनं लाभ:	सुखधन प्राप्ति:	शोकं धनहानि:	नैस्वं व्ययश्च	वैरं वित्तनाश:
३	सुखं श्रियाप्ति:	द्रव्याप्ति: सुखं	सुखं श्रीयाप्ति:	शत्रुत: भयं	भयं रोगाप्ति:	सुखं अर्थलाभ:	सुखं अर्थलाभ:	नैरुज्यं धनप्राप्ति:	सुखं लाभवृद्धि:
४	रोगभयं माननाश:	रोग मानअर्थसि.	कष्टं शत्रुभयं	धनं सुखप्राप्ति:	धनहानि: भयं	धनं प्राप्ति:	पीड़ाभयं शत्रुवृद्धि:	वैरं शोकंच	भीति: पीड़ाच
५	दैन्यं अर्थनाश:	सुखं कार्यनाश:	रोगभयं धननाश:	नैरुजं शोकश्च	लाभ: सुखंच	सुखं पुत्रलाभ:	धननाश: पुत्रनाश:	हानि: शोकश्च	शुचं अर्थनाश:
६	रिपुनाश: सुखं	वित्त लाभ:	सुखं अर्थलाभ:	अलाभ: स्थिति:	रोगं शोकश्च	शत्रुवृद्धि: पीड़ाच	सुखं वित्तलाभ:	सुखं लक्ष्मीप्राप्ति	सुखं वित्तप्राप्ति:
७	गमनं धनहानि:	द्रव्यप्राप्ति: सुखं	कार्श्य धननाश:	पीड़ाभयं विग्रह:	सुमान सुखंच	शोकं आर्तिभयं	दोषं पीड़ाभयं	हानि: कलह:	दुर्गति: पीड़ाच
८	रोगार्ति: भयं	क्लेशभयं अपमृत्यु:	भयं पापबुद्धि:	धन अन्नलाभ:	मृत्युभयं पीड़ाच	विपत्ति: धनहानि:	पीड़ाभयं शत्रुवृद्धि:	रोगभयं असुखं	पीड़ाभयं हानि:
९	कान्तिक्षय पापबुद्धि:	मान: नृपभयं	रोगभयं शुचम्	रोगभयं धननाश:	सुखं सुमान:	सुखं लाभ:	पापं धननाश:	पापकर्म बुद्धि:	पापं दैन्यं
१०	सौख्यं कार्यसिद्धि:	शुभं सुखं	सुखं शोकं	सुखं सुभोग:	अति दैन्यं	धर्मनाश: असुखं	वैमनस्य शुचं	वैरं सुखं	भयं शोकं
११	वित्ताप्ति: सुखं	अर्थ लाभ:	लाभ: सुखप्राप्ति:	शुभं धनप्राप्ति:	सौख्यं धनप्राप्ति:	दु:खं धनागम:	सुखं वित्तलाभ:	सुखं धनप्राप्ति:	सुयश: अर्थलाभ:
१२	द्रव्यनाश: पीड़ाभयं	रुजं धननाश:	रोगं शोकश्च	शोकं धननाश:	देहपीड़ा भयं	धनं आगम:	क्लेशं अनर्थ:	हानि: पीड़ा	पीड़ाभयं वैरं
शुभं	३।६ १० ११	७।६ १०।१ ३।११	३ ६ ११	२।४।६ ८।१० ११	२।५ ७।९ ११	१।२।३ ४।५।८ ९।११।१२	३।६।११	३।६।११	३।६।११
वेधं	९।५ १२।४ श. वर्जित	२।१२।४ ५।९।८ बु. वर्जित	५।९।१२	५।३।९ ८।२।१२ चं. वर्जित	३।४ ८ १०।१२	८।७।१ १०।९।५ ११।६।३	५।९ १२ सू. वर्जित	५।९।१२	५।९।१२

शुक्लपक्षे द्वितीयस्तु चन्द्रो वित्त सुखप्रद:। पञ्चमो वरवस्त्राप्ति: कुर्यात् माग्ये च पुण्यद:।। इति ।।

मार्तण्ड:–यादृशेन शशांकेन ग्रह: संचरते नृणां । तादृशं फलमाप्नोति शुभं वा यदिवाऽशुभम् ।।
मांडव्य:–गोचरपीडायामपिराशिर्बलिभिर्ग्रहैर्दृष्ट: । पीडां न करोति तथा क्रूरैरेव विपर्यास: ।।

...कलवेधयोर्ज्ञानायचक्रम् ।।

शुक्र	शनि	राहु	केतु
…सुखम् …नाशः	सर्वनाशः पीड़ाभयं	हानिः कष्टं	हानिः रोगभयं
…बन्धन …प्तिः	शोकं धनहानिः	नैस्वं व्ययश्च	वैरं वित्तनाशः
…खं …भः	सुखं अर्थलाभः	नैरुज्यं धनप्राप्तिः	सुखं लाभवृद्धिः
…	पीड़ाभयं शत्रुवृद्धिः	वैरं शोकंच	भीतिः पीड़ाच
…	धननाशः पुत्रनाशः	हानिः शोकश्च	शुचं अर्थनाशः
…	सुखं वित्तलाभः	सुखं लक्ष्मीप्राप्ति	सुखं वित्तप्राप्तिः
	दोषं पीड़ाभयं	हानिः कलहः	दुर्गतिः पीड़ाच
	पीड़ाभयं शत्रुवृद्धिः	रोगभयं असुखं	पीड़ाभयं हानिः
	पापं धननाशः	पापकर्म बुद्धिः	पापं दैन्यं
	वैमनस्य शुचं	वैरं सुखं	भयं शोकं
	सुखं …लाभः	सुखं धनप्राप्तिः	सुयशः अर्थलाभः
	क्लेशं …नर्थः	हानिः पीड़ा	पीड़ाभयं वैरं
	…।११	३।६।११	३।६।११
	…वर्जित	५।९।१२	५।९।१२

…ग्ये च पुण्यदः।। इति ।।

…ं वा यदिवाऽशुभम् ।।
…रिव विपर्यासः ।।

अथ प्रत्येकसंक्रान्तिषुस्नानार्थमौषधिबोधकचक्रमिदम् ।

१ मेष	२ वृष	३ मिथुन	४ कर्क	५ सिंह	६ कन्या	७ तुला	८ वृश्चिक	९ धनु	१० मकर	११ कुम्भ	१२ मीन
केशर	केशर	खस	छड़ीला	चन्दन	हरिद्रा	तगर	कंगुनी	मूंगा	कुष्ट	लायची	कर्पूर
गोरोचन	लायची	पद्मकाष्ठ	गोरोचन	तेजपात	सुगंधवाला	गोरोचन	फिटकिरी	पद्मकाष्ठ	सुगंधवाला	गठिवन	लायची
जटामासी	सरसो	कुष्ट	चन्दन	गोरोचन	कुष्ट	उशीर	तेजपात	मोती	खस	केशर	जटामासी
चन्दन	गोरोचन	गोरोचन	सुगन्धवाला	नागरमोथा	जटामासी	पद्मकाष्ठ	जटामासी	गोरोचन	गोरोचन	जावित्री	चन्दन
हरिद्रा	कर्पूर	गठिवन	नागरमोथा	जटामासी	गोरोचन	तेजपात	गोरोचन	तेजपात	तेजपात	गोरोचन	पद्मकाष्ठ
कर्पूर	गोमूत्र	केशर	हरिद्रा	दालचीनी	चन्दन	कुष्ट	नागरमोथा	जटामासी	पद्मकाष्ठ	०	सुगंधवाला
सुगन्धवाला	चीनी	अगर	कुष्ट	०	०	हरिद्रा	अगर	मुरा	हरिद्रा	०	नागरमोथा
मुरा	०	०	मुरा	०	०	सुगंधवाला	कुष्ट	कुष्ट	अतिबला	०	खस
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	दालचीनी

अथ पन्थाराहुचक्राद्यात्रायाम् शुभाऽशुभज्ञानम् ।

सूर्येधर्मगतेचन्द्रोधनेमोक्षेशुभप्रदः। सूर्ये धनगतेधर्ममोक्षमार्गेशुभः शशिः। कामेऽर्के मोक्षार्थसंस्थश्चन्द्रोजयप्रदः। मोक्षेर्केधर्मगश्चन्द्रः शुभोन्यत्र न शोभनः।। इति ।।

(यात्रा में सूर्य धर्मस्थ नक्षत्र में हो और चन्द्रमा अर्थ या मोक्ष में हो तो शुभ है। इसी प्रकार सूर्य अर्थ में और चन्द्रमा धर्म-मोक्ष में हो तो शुभ है। सूर्य काम में और चन्द्र मोक्ष, अर्थ, में हो तो शुभ है। सूर्य मोक्ष और चन्द्रमा धर्म नक्षत्र में हो तो शुभ है।)

पथिराहुचक्रम्

अश्विनी	पुष्य	आश्लेषा	विशाखा	अनुराधा	धनिष्ठा	शतभिषा	धर्मभानि
भरणी	पुनर्वसु	मघा	स्वाती	ज्येष्ठा	श्रवण	पू. भा.	अर्थभानि
कृतिका	आर्द्रा	पू.फा.	चित्रा	मूल	अभिजित्	उ.भा	कामभानि
रोहिणी	मृग	उ.फा.	हस्त	पू.षा.	उ.षा.	रेवती	मोक्षभानि

सविदिक् शूलज्ञानायचक्रम्

पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान्य	दिशः
चं. श.	चं. श.	गुरु	गुरु	सू. शु.	सू. शु.	मं. बु.	मं. बु.	वाराः

अथ नक्षत्रशूलचक्रम् / अथ प्रतिदिग्यात्रायांवाहनानि

पू.	द.	प.	उ.	दि. ४	पू.	द.	प.	उ.	दिशा
ज्ये.	पू.भा.	रोहिणी	उ.फा.	भानि.	गज.	रथ	अश्व	पालकी	वाहनानि

अथ समयशूलचक्रम्		अथात्रयात्रासमयविचारः।
पूर्वस्यां	प्रातःकाले	तत्रसर्वासु यात्रासु शुक्रास्तो निषिद्धः ।
दक्षिणे	मध्याह्नकाले	तथाजन्मेशेजन्मदशेशेऽस्तंगतेऽपिनगन्तव्यम् ।
पश्चिमे	संध्यायाम्	प्रथमातीर्थयात्रा गुरुशुक्रयोरस्तकाले वर्ज्या ।
उत्तरस्यां	अर्द्धरात्री	सिंहस्थो गुरुर्नीचगोपि वर्ज्यः ।

अथऽकुलगणचक्रम्

सद्भानि/	स्वा. भ. ऽश्ले. घ. रे. अनु. ह. पुन. उ. ३ रो.	
सद्वाराः	सू.चं. गु. श.	तिथयः १।३।५।७।९।११।१३।१५

एषु प्रोक्ततिथिवारर्क्षे समरे यायीजयः स्यात्। (इन तिथिवार नक्षत्रों में राजा युद्ध-यात्रा करे तो शत्रु पर विजय प्राप्त करे।)

अथ कुलाऽकुलगणचक्रम्				
सद्भानि /	मूल. आर्द्रा. अभिजित्. शतभिषा.			
तद्वारः बुधः	तिथयः	२	६	१०

एषु तिथिवारभेषु युद्धारम्भे द्वयोर्भूमीशयोः सन्धिः स्यात्। (इन तिथिवार नक्षत्रों में सन्धि या मिलाप हो।)

अथ कुलगणचक्रम्					
तस्य भानि	पूर्वा.३अश्वि.पुष्य.म.मृ.श्र.कृ.वि.ज्ये.चि.				
तस्य तिथयः	४	८	१२	१४	मङ्गल शुक्र वारौ

एषु प्रोक्ततिथिवारभेषु युद्धारम्भे स्थायीजयः स्यादिति। (इनमें यात्रा करने वाले की युद्ध में पराजय होती है। स्थायी की जय होती है।)

अथ स्त्रीपुरुषयोः घातचन्द्र ज्ञानाय चक्रम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशयः
१	८	७	९	४	३	६	२	१०	११	५	१२	स्त्री. चं. घा.
१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२	पु. चं. घा.

जन्मस्थग्रहस्यात्र मेलापक विचारः

तत्र वध्वालग्नादिन्दोर्वा १।४।७।८।१२ एषामन्यतमस्थाने भौमश्चेत् पतिहायोगः। परंत्वेवं पत्युर्नचेत्। वरस्याप्येवं चिन्त्यम्। यद्युभयप्रसुतौ-भौमतुल्यो भौमश्चेत्तर्हिशुभोद्वाहः। तत्र सप्तमाष्टमस्थ भौमस्यपरिहारः सप्तमाष्टमस्थभौम एव। अथैवमन्येषां पापानां च साम्यमुभयप्रसूतौ चेत्तर्हि शुभोद्वाहः। तत्र कन्यावरयोर्जन्मलग्नादिन्दोर्वा १।४।७।८।१२ एषां ते नैवक्रमेणापरपक्षेपिग्रहाश्चेत्तर्हिपरिहारो भवतीति पूर्वोक्तानुसारेण ग्रहमेलापकं सुविचार्य विवाहः कर्तव्यो नान्यथेतिशम् ।। इति ।।

अथ यात्रायाम् अशुभशकुनानि

वन्ध्यास्त्री, चर्म, तुष, अस्थि, सर्प, लवण, निर्धूमाग्नि, ईंधन, नपुंसक, विष्टा, तैल, उन्मत्त, चर्बी, औषधि, शत्रु, जटावान्, संन्यासी, तृण, व्याधिमान्, नग्न, तैलाभ्यंग, अङ्गभंग, जातिभ्रष्ट, क्षुधार्त, रुधिर, स्त्री-पुष्प, सरठ, छिक्का स्वगृहदाह, मार्जारयुद्ध, रक्तवस्त्र गुड़, तक्र, पंक, विधवा, कुब्जा, कुटुम्बकेलि, वस्त्रादेः पतन, महिषयुद्ध, कृष्णान्न, तूल, वमन, दक्षिणे गर्दभशब्द, अत्यंतक्रोधी, गर्भवती, मुंडा, आर्द्राम्बरदुष्टवाणी, अन्ध, वधिर, रजस्वलास्त्री, कुमारहीना, अतिरोगी, गोधादर्शन, जंहाकदर्शन, शूकरदर्शन, शशक-दर्शन, मर्कटशब्द, ऋक्षशब्द, एते प्रयाणसमये, दृष्टाः संतः नशुभाः। नद्युत्तारभयप्रवेशे युद्धे, नष्टार्थसंवीक्षणे, अशुभशकुनाः शोभनाः, नृपदर्शनवेलायां यात्रोदिताः शोभनाः।

यात्रायां शुभशकुनानि-ब्राह्मण २, अश्व, गज, फल, अन्न, दुग्ध, दधि, धेनु, सर्षप, कमल, विमलवस्त्र, वेश्या, वाद्य, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, आदर्श, ससुतस्त्री, सम्मुखछत्र, मधु, नीलकंठ, रज्वा, विनाबद्धपशु१, चंपकादिपुष्प, कन्या, कार्य-सिद्धिवाक्य, मृत्तिका, सजलपूर्णघट, घृत, इक्षु-दण्ड, रत्नमाणिक्यादि, शिरोवेष्टन, श्वेतवृषभ, मदिरा, कज्जल, धौताम्बर, गोरोचन, अरोदन-शव, पताका, मेष, रजक, वेदशब्द, मङ्गलवस्तु, गीतगानादि, भारद्वाजपक्षी, शिविका, अंकुश-हस्तिचालक, पश्चादजलघट, मङ्गलशब्द, दूर्वा, प्रयाण समये दृष्टाः सत्फलदाभवन्ति, कोकिला, पोतकी, पल्ली, सूकरी, रला, भैरवी, छुछुन्दरी, शृगाली, कपोत, खञ्जन, तित्तिर, हंसादयः वामे खरशब्दः।

शुभ-अशुभ शकुन में विशेष-प्रवेश में, नदी उतरने में, नष्ट वस्तु खोजने में, भय में, वामस्वर के चलने में, जुआ खेलने में, औषधि कर्म में, युद्ध में पूर्वोक्त शकुन उलटे होते हैं अर्थात् शुभ अशुभ हो जाते हैं और अशुभ शुभ हो जाते हैं।

वामाङ्गभागेस्थितशुभशकुनम्-वामाङ्गे कोकिला, पल्ली पोतकी सूकरी रला। पिङ्गला छुच्छुका श्रेष्ठाः शिवा पुरुषसंज्ञिताः।। **दक्षिणाङ्गभागेस्थितशुभ शकुनम्**-छिक्करः पिक्कको भासः श्रीकण्ठो वानरो रुरुः। स्त्री संज्ञकाः काकऋक्षश्वानः स्युर्दक्षिणाः शुभः। तथाच-प्रदक्षिणगता श्रेष्ठा यात्रायां मृगपक्षिणाः। ओजामृगा व्रजंत्येऽतिधन्यावामे खरस्वनः। एवञ्च-आद्येऽपशकुनेस्थित्वा। प्राणानेकादश व्रजेत्। द्वितीये षोडषप्राणांस्तृतीये न क्वचिद्व्रजेत्।

गृहारम्भमुहूर्त्तविचारः

भानि-उत्तरा-३ मृगशिरा पुष्य अनुराधा धनिष्ठा शतभिषा श्रवण चित्रा हस्त स्वाती रोहिणी रेवती पञ्चकं हित्वा द्वारशाखा स्थापने शुभानि। **मासाः**-वैशाख श्रावण मार्गशीर्ष फाल्गुन। **सूर्यः**-मेष कर्क सिंह वृश्चिक मकर कुम्भ स्थिते च श्रेष्ठः। **वाराः**-चन्द्र बुध बृहस्पति शुक्र शनयः। **तिथयः**-२।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ **कृष्णपक्षे १ शुभाः।** **लग्नानि**-२।३।५।६।८।९।११।१२ स्वामिशुभदृष्टे। **लग्नशुद्धिः**-लग्नात् १।४।७।१०।५।९ शुभाः।। पापाः ३।६।११ स्थाने। ८।१२ शुभपापरहितेषु शुक्ल-पक्षे गुरुशुक्राणामुदयेबाल्यवार्द्धक्येनीचराश्यादिस्थिति-रहितसमये। **त्याज्यः**-भद्रा कुयोगोष्टमचन्द्र चक्र-शुद्धिरहितं भंच।

एतेष्वेव नक्षत्रवारतिथिसमयेषु श्रवणर्क्षयुक्तेषु मठ-देवालयाद्यारम्भोऽपि शुभो। भौमवारसूर्यवाररिक्ता तिथि. अमावास्या चरलग्नेषु कदापि न गृहाद्यारम्भः कर्तव्यः।।

अथ गृहप्रवेशमुहूर्त्तस्य विचारः

मासाः-वैशाख ज्येष्ठ माघ फाल्गुन, जीर्णगृहे-श्रावण मार्गशीर्ष कार्तिकेमासे अपि नवेऽप्यग्न्यादिभयसत्वे।। **भानि**-उत्तरा-३ अनुराधा रोहिणी मृगशिरा चित्रा रेवती कुम्भचक्रशुद्धौ। **वाराः**-चन्द्र बुध बृहस्पति शुक्र शनयः। **तिथयः**-१।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३। **लग्नानि-शुभाः** २।५।८।११। **मध्याः** ३।६।९।१२। **लग्नशुद्धिः**-जन्मराशिलग्नाभ्यामुपचयराश्यंशयोः स्थिरराशौ लग्नात् १।२।३।५।७।९।१०।११ स्थानेषु शुभाः श्रेष्ठाः। पापाः ३।६।११ शुभाः। शुभपापरहिते ४।८ स्थाने वामार्केस्थिताविति।

अथ जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा मुहूर्त्तविचारः

समयः-उत्तरायण केचिन्मते मीनसंक्रान्ति, बृहस्पति शुक्र चन्द्र दृश्येबलान्विते च। **भानि**-मृगशिरा रेवती चित्रा अनुराधा हस्त अश्विनी पुष्य स्वाती पुनर्वसु श्रवण। **लग्नशुद्धिः**-लग्नात् केन्द्रकोणस्थानेषु शुभाः।। ३।६।११ पापाः शुभाः। पञ्चखेटोनलग्ने हेयम्।। पूर्वोक्तनक्षत्रेऽग्निशुद्धौवास्त्वर्चनं भूतबलिं गृहप्रवेशे कार्यमिति।

नक्षत्राणांस्वामिशुभाशुभादिविशेषसंज्ञा नष्टवस्तुज्ञानायसुलोचनादिसंज्ञा च।

नक्षत्राणि	स्वामिनः	शुभाशुभ	ज्ञातयः	संज्ञा	मुखम्*	घटी उपरि नेष्ट	यात्रादोहदम्	संज्ञा	दिशा	लाभाऽलाभ	नक्षत्र तारा	स्वरूपाणि
अश्विनी	अश्विनीकुमार	शुभ	वैश्यः	लघु क्षिप्र	तिर्यक्	५०	तिलतण्डुल	मन्द	द.	यत्नलाभ	३	अश्वमुखम्
भरणी	यमः	नाशक	चाण्डालः	क्रूर उग्र	अधः	२४	साक्षतमाषः	मध्य	प.	दूरेश्रवण	३	योनिस्वरूपम्
कृत्तिका	वह्नि	अशुभ	ब्राह्मणः	मिश्र साधा.	अधः	३०	माषः	सुलोचन	उ.	अलाभ	६	क्षुरिकाकृति
रोहिणी	ब्रह्मा	शुभ	शूद्रः	ध्रुव स्थिर	ऊर्ध्वः	४०	गव्यम्	अन्ध	पू.	शीघ्रलाभ	५	शकटवत्
मृगशिरा	चन्द्रः	शुभ	कृषकः	मृदु मैत्र	तिर्यक्	१४	गोघृतम्	मन्द	द.	यत्नलाभ	३	मृगास्यम्
आर्द्रा	शिवः	अशुभ	क्रूरजातिः	तीक्ष्ण दारुण	ऊर्ध्वः	२१	दुग्धम्	मध्य	प.	दूरेश्रवण	१	मणिसदृशम्
पुनर्वसु	अदितिः	शुभ	वैश्यः	चर चल	तिर्यक्	३०	हरिणमांसम्	सुलोचन	उ.	अलाभ	४	गृहसदृशम्
पुष्य	गुरुः	शुभ	क्षत्रियः	लघु क्षिप्र	ऊर्ध्वः	२०	मृगरक्तम्	अन्ध	पू.	शीघ्रलाभ	३	बाणाकृति
आश्लेषा	सर्पः	अशुभ	चाण्डालः	तीक्ष्ण दारुण	अधः	३२	पायसम्	मन्द	द.	यत्नलाभ	५	चक्राकारम्
मघा	पितरः	शोकद	शूद्रः	क्रूर उग्र	अधः	३०	चापमांसम्	मध्य	प.	दूरेश्रवण	५	गृहसदृशम्
पूर्वाफाल्गुनी	भगः	अशुभ	ब्राह्मणः	क्रूर उग्र	अधः	२०	मृगमांसम्	सुलोचन	उ.	अलाभ	२	मञ्चकाकृति
उत्तराफाल्गुनी	अर्यमा	शुभ	क्षत्रियः	ध्रुव स्थिर	ऊर्ध्वः	१८	शशकमांसम्	अन्ध	पू.	शीघ्रलाभ	२	खट्वाकारम्
हस्त	सूर्यः	शुभ	वैश्यः	लघु क्षिप्र	तिर्यक्	२१	साठी	मन्द	द.	यत्नलाभ	५	हस्ताकारम्
चित्रा	त्वष्टाः	शुभ	कृषकः	मृदु मैत्र	तिर्यक्	२०	प्रियंगुः	मध्य	प.	दूरेश्रवण	१	मौक्तिकवत्
स्वाती	वायुः	शुभ	क्रूरजातिः	चर चल	तिर्यक्	१४	अपूपम्	सुलोचन	उ.	अलाभ	१	प्रवालाकारम्
विशाखा	इन्द्राग्निः	अशुभ	चाण्डालः	मिश्र साधा.	अधः	१४	नानापक्षिमांस	अन्ध	पू.	शीघ्रलाभ	४	तोरणसमम्
अनुराधा	मित्रः	शुभ	शूद्रः	मृदु मैत्र	तिर्यक्	१०	सत्फलम्	मन्द	द.	यत्नलाभ	४	नालसदृशम्
ज्येष्ठा	इन्द्रः	अशुभ	कृषकः	तीक्ष्ण दारुण	तिर्यक्	१४	कूर्ममांसम्	मध्य	प.	दूरेश्रवण	३	कुण्डलाकृति
मूल	राक्षसः	क्षयः	क्रूरजातिः	तीक्ष्ण दारुण	अधः	५६	सारिकामांसम्	सुलोचन	उ.	अलाभ	११	सिंहपुच्छवत्
पूर्वाषाढ़ा	जलम्	धनहानि	ब्राह्मणः	क्रूर उग्र	अधः	२४	गोधिकामांसम्	अन्ध	पू.	शीघ्रलाभ	२	गजदन्तवत्
उत्तराषाढ़ा	विश्वेदेवा	शुभ	क्षत्रियः	ध्रुव स्थिर	ऊर्ध्वः	२०	शल्यमांसम्	मन्द	द.	यत्नलाभ	२	मञ्चकसदृशम्
श्रवण	विष्णु	वृद्धि	चाण्डालः	चर चल	ऊर्ध्वः	१०	कृसरान्नम्	सुलोचन	उ.	अलाभ	३	विमानसदृशम्
धनिष्ठा	वसवः	मध्य	कृषकः	चर चल	ऊर्ध्वः	१०	मुद्गमोदकः	अन्ध	पू.	शीघ्रलाभ	४	मृदङ्गाकारम्
शतभिषा	वरुणः	अशुभ	क्रूरजातिः	चर चल	ऊर्ध्वः	१८	यवपिष्टम्	मन्द	द.	यत्नलाभ	१००	वर्तुलम्
पूर्वाभाद्रपदा	अजपात	अशुभ	ब्राह्मणः	क्रूर उग्र	अधः	१६	मत्स्यान्नम्	मध्य	प.	दूरेश्रवण	२	मञ्चकाकारम्
उत्तराभाद्रपदा	अहिर्बुध्न्य	शुभ	क्षत्रियः	ध्रुव स्थिर	ऊर्ध्वः	२४	चित्रितान्नम्	सुलोचन	उ.	अलाभ	२	युग्मसदृशम्
रेवती	पूषा.	शुभ	शूद्रः	मृदु मैत्र	तिर्यक्	२०	दध्योदनम्	अन्ध	पू.	शीघ्रलाभ	३२	मर्दलाकारम्

* नक्षत्र मुख के सम्बन्ध में-तिर्यक् मुख नक्षत्रों में हाथी-घोड़ा-रथकर्म, तन्त्रविद्या, जलयान, यात्रादिक्, पालकी पर चढ़ना, यन्त्र बनाना शुभ है। ऊर्ध्व नक्षत्र में देवगृह बनवाना, गृहारम्भ, राजगद्दी, उत्साह के कार्य करना। अधोमुख में-तालाब, कूप, बावड़ी, गणितारम्भ शुभ है।

अथजन्माङ्गाद्बालकस्यमस्तकज्ञानमाह	अथजन्माङ्गाद्बालकस्यरोदनमाह
मेषेचापमृगेन्द्रयोर्यदिशिशुः प्राचींशिरोजायते। गोकन्यामकरेषु दक्षिण शिरोजातो भवेत्। मीनेवृश्चिककर्किणी यदि तदा कौबेरमूर्द्ध्ना भवेन्निश्चितम्।। कुम्भेयुग्मघटेतनौ यदि तदा पाश्चात्यमूर्द्ध्ना भवेदिति।	मेषत्रि १।३ पञ्चानन ५ चाप ९ लग्ने विमृश्य सर्वं बहुरोदितिस्म।। अल्पं घटे ११ स्त्री ६ वणिजे ७ परेषु २।४।८।१०।१२ रुदन्तितो ज्ञानबलस्यमत्वात्।। लग्नचन्द्रयोर्मध्ये योबली तस्मात् रोदनस्य ज्ञानं कार्यम्।

अथयात्रायांशुभाशुभनक्षत्रज्ञानायचक्रमिदम्

अश्वि. पुन. अनु. मृग. पुष्य रेवती हस्त श्रवण धनिष्ठा एषुशुभा
रो. उ.३ पू.३ ज्ये. मूल शत. एषुमेषुमध्या
म. कृ. आर्द्रा आस्ले. म. चि. स्वा. वि. जन्मनक्षत्र एतद्भेषुनिन्द्या

पू.३	कृ.	मघा	भ.	स्वा.	ज्ये.	वि.	आस्ले.	चि.	आवश्यके
१६	२१	११	७	१४	१४	१४	१४	६०	त्याज्यघटयः

अश्विनी, पुष्य, अनुराधा, हस्त नक्षत्र सभी दिशाओं की यात्रा में सर्वदा शुभ।

अथ प्रत्येकग्रहाणां रेखाष्टकवर्गसाधनाय सारिणीयम्

तत्रादौ रवेरष्टकवर्गाङ्काः ४८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	३	१	३	५	६	१	३
२	६	२	५	६	७	२	४
४	१०	४	६	९	१२	४	६
७	११	७	९	११	०	७	१०
८	०	८	१०	०	०	८	११
९	०	९	११	०	०	९	१२
१०	०	१०	१२	०	०	१०	०
११	०	११	०	०	०	११	०

चन्द्रस्याष्टकवर्गाङ्काः ४९

चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	सू.	ल.
१	२	१	१	३	३	३	३
३	३	३	४	४	५	६	६
६	५	४	७	५	६	७	१०
७	६	५	८	७	११	८	११
१०	९	७	१०	९	०	१०	०
११	१०	८	११	१०	०	११	०
०	११	१०	१२	११	०	०	०
०	०	११	०	०	०	०	०

भौमस्याष्टकवर्गाङ्काः ३९

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	सू.	चं.	ल.
१	३	६	६	१	३	३	१
२	५	१०	८	४	५	६	३
४	६	११	११	७	६	११	६
७	११	१२	१२	८	१०	०	१०
८	०	०	०	९	११	०	११
१०	०	०	०	१०	०	०	०
११	०	०	०	११	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०

बुधस्याष्टकवर्गाङ्काः ५४

बु.	गु.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	ल.
१	६	१	१	५	२	१	१
३	८	२	२	६	४	२	२
५	११	३	४	९	६	४	४
६	१२	४	७	११	८	७	६
९	०	५	८	१२	१०	८	८
१०	०	८	९	०	११	९	१०
११	०	९	१०	०	०	१०	११
१२	०	११	११	०	०	११	०
०	०	०	०	०	०	०	०

गुरोरष्टकवर्गाङ्काः ५६

गु.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	ल.
१	२	३	१	२	१	१	१
२	५	५	२	५	२	२	२
३	६	६	३	७	४	४	४
४	९	१२	४	९	७	५	५
७	१०	०	७	११	८	६	६
८	११	०	८	०	१०	९	७
१०	०	०	९	०	११	१०	९
११	०	०	१०	०	०	११	१०
०	०	०	११	०	०	०	११

शुक्रस्याष्टकवर्गाङ्काः ५२

शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	ल.
१	३	८	१	३	३	५	१
२	४	११	२	५	५	८	२
३	५	१२	३	६	६	९	३
४	८	०	४	९	९	१०	४
५	९	०	५	११	११	११	५
८	१०	०	८	१२	०	०	८
९	११	०	९	०	०	०	९
१०	०	०	११	०	०	०	११
११	०	०	१२	०	०	०	०

शनेरष्टकवर्गाङ्काः ३९

श.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	ल.
१	१	३	३	६	५	६	१
५	२	६	५	८	६	११	३
६	४	११	६	९	११	१२	४
११	७	०	१०	१०	१२	०	६
०	८	०	११	११	०	०	१०
०	१०	०	१२	१२	०	०	११
०	११	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०

लग्नस्याष्टकवर्गाङ्काः ४९

ल.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
३	३	३	१	१	१	१	१
६	४	६	३	२	२	२	३
१०	६	१०	६	४	४	३	४
११	१०	११	१०	६	५	४	६
०	११	०	११	८	६	५	१०
०	१२	०	०	१०	७	८	११
०	०	०	०	११	९	९	०
०	०	०	०	०	१०	११	०
०	०	०	०	०	११	०	०

अथ प्रत्येकरेखाफलमिदम्

रे.सं.	फलानि
१	क्लेशभीतिः
२	अर्थहानिः
३	प्रवासकष्टम्
४	समलाभः
५	शाश्वत्सुखम्
६	धनाप्तिः
७	परमानन्दप्राप्तिः
८	सर्वकार्यसिद्धिः

अथ यात्रायां दिनमानस्याष्टमांशेन रात्रौ रात्रिमानस्याष्टमांशेन च वेलाफलमिदम्

यात्रा में चौघड़िया मुहूर्त (दिनमान वा रात्रिमान में ८ का भाग देकर जो घड़ी पल आवे सो मुहूर्त जानना)

घ.	सू.दि.	सू.रा.	चं.दि.	चं.रा.	मं.दि.	मं.रा.	बु.दि.	बु.रा.	गु.दि.	गु.रा.	शु.दि.	शु.रा.	श.दि.	श.रा.
४	उद्वेग	चर	अमृत	काल	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	शुभ
४	चर	लाभ	काल	शुभ	उद्वेग	चर	अमृत	काल	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग
४	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	शुभ	उद्वेग	चर	अमृत	काल	रोग	उद्वेग
४	अमृत	काल	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	शुभ	उद्वेग	चर
४	काल	शुभ	उद्वेग	चर	अमृत	काल	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ
४	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	शुभ	उद्वेग	चर	अमृत	काल	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत
४	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	शुभ	उद्वेग	चर	अमृत	काल
४	उद्वेग	चर	अमृत	काल	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	शुभ

सम्वत् २०८२ सन् २०२५-२०२६ के प्रमुख त्यौहारों की सूची

सन् २०२५

चैत्रनवरात्र प्रारम्भ रविवार ३० मार्च
ईद सोमवार ३१ मार्च
दुर्गाष्टमी शनिवार ५ अप्रैल
रामनवमी रविवार ६ अप्रैल
महावीर जयन्ती गुरुवार १० अप्रैल
सतुवासंक्रान्ति सोमवार १४ अप्रैल
अम्वेडकरजयन्ती सोमवार १४ अप्रैल
गुड़फ्राइडे शुक्रवार १८ अप्रैल
अक्षय तृतीया वुधवार ३० अप्रैल
गंगा सप्तमी रविवार ४ मई
बुद्ध पूर्णिमा सोमवार १२ मई
वटसावित्री सोमवार २६ मई
गंगा दशहरा गुरुवार ५ जून
निर्जलाएकादशी शनिवार ७ जून
रथयात्रा शुक्रवार २७ जून
गुरुपूर्णिमा गुरुवार १० जुलाई
नागपंचमी मंगलवार २९ जुलाई
रक्षावन्धन शनिवार ९ अगस्त
वहुलागणेशचौथ मंगलवार १२ अगस्त
स्वतंत्रता दिवस शुक्रवार १५ अगस्त
जन्माष्टमी शनिवार १६ अगस्त
हरतालिका मंगलवार २६ अगस्त
वरदगणेशचतुर्थी बुधवार २७ अगस्त
ऋषिपंचमी गुरुवार २८ अगस्त
लोलार्क छठ शुक्रवार २९ अगस्त
लक्ष्मीकुण्डस्नानप्रा. रवि. ३१ अगस्त
अनन्तचतुर्दशी शनिवार ६ सितम्बर
महालयारम्भ रविवार ७ सितम्बर
खग्रासचन्द्रग्रहण रविवार ७ सितम्बर
जीवत्पुत्रिकाव्रत रविवार १४ सितम्बर
सर्वपित्री अमावा. रवि. २१ सितम्बर
देवीनवरात्रारम्भ सोमवार २२ सितम्बर
दुर्गाष्टमी मंगलवार ३० सितम्बर
दुर्गानवमी बुधवार १ अक्टूबर
विजयादशमी गुरुवार २ अक्टूबर
गांधी जयन्ती गुरुवार २ अक्टूबर
भरत मिलाप शुक्रवार ३ अक्टूबर
शरदपूर्णिमा/कोजा. सोमवार ६ अक्टू.
करवाचौथ शुक्रवार १० अक्टूबर
धनतेरस शनिवार १८ अक्टूबर
दीपावली सोमवार २० अक्टूबर
अन्नकूट बुधवार २२ अक्टूबर
भैयादूज गुरुवार २३ अक्टूबर
ड़ालाछठ सोमवार २७ अक्टूबर
डिठवनएकादशी शनिवार १ नवम्बर
गुरुनानकजयन्ती बुधवार ५ नवम्बर
कार्तिकीपू.-देवदिवाली बुध. ५ नव.
महाभैरवाष्टमी बुधवार १२ नवम्बर
क्रिसमस-बड़ादिन गुरुवार २५ दिसं.

सन् २०२६

संकष्टी (सकट) मंगलवार ६ जनवरी
मकरसंक्रान्तिस्नान बुधवार १४ जन.
मौनी अमावास्या रविवार १८ जनवरी
वसन्तपंचमी शुक्रवार २३ जनवरी
रथसप्तमी रविवार २५ जनवरी
गणतंत्र दिवस सोमवार २६ जनवरी
माघीपूर्णिमा/रैदासजयं. रवि. १ फर.
महाशिवरात्रि रविवार १५ फरवरी
रंगभरी एकादशी शुक्रवार २७ फरवरी
होलिकादहन सोमवार २ मार्च
ग्रस्तोदितचन्द्रग्रहण मंगलवार ३ मार्च
होली (रंग) मंगल/बुध ३/४ मार्च
चैत्रनवरात्र प्रारम्भ गुरुवार १९ मार्च

श्री पं० बलदेव मिश्रस्य
श्री बालकृष्ण ज्योतिषी
पि० पं० गणेश आपाजी ज्योतिषी

श्री भगवान उवाच-

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः।
कामः क्रोधस्तथा लोभः तस्मादेत्त्रयं त्यजेत्।
यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे-युगे।।

प्राचीनमते गोचरबलाभावेऽष्टवर्ग शुद्धिरेव।

तदुक्तम्। अष्टवर्ग विशुद्धेषु गुरुशीतांशु भानुषु। व्रतोद्वाहौ च कर्त्तव्यौ गोचरेण कदाचन। उपलक्षणमप्युक्तं तत्रैव। अष्टवर्गेण ये शुद्धास्तेशुद्धाः सर्वकर्मसु। सूक्ष्माष्टवर्ग संशुद्धिः स्थूलाशुद्धिस्तु गोचरे। इति।

सर्वेऽपि सुखिनः सन्तु सर्वेसन्तु निरामयाः। * इस पञ्चाङ्ग में दिये गये विषय * सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत्।।

गुप्त नवरात्री के सम्बन्ध में

पाठकों के अनेक प्रश्न आने पर हमने इस विषय पर शोध किया और पाया की गुप्त नवरात्री के सम्बन्ध में धर्मसिन्धु, निर्णयसिन्धु, कालमाधव, तिथिनिर्णय आदि ग्रन्थों में तो कहीं भी निर्णय या उल्लेख नही है पर शोध को आगे बढ़ाने पर गुप्त नवरात्री का निर्णय देवी भागवत में मिला।

गुप्त नवरात्री का प्रसार प्रचार और मान्यता पहले तो मध्यप्रदेश, राजस्थान आदि कुछ प्रान्तों में ही थी पर अब प्रचार माध्यम जैसे इन्टरनेट, टी.वी., रेड़ियो इत्यादि पर विशेष चर्चा होने से पूरे भारत वर्ष से इस सम्बन्ध में जिज्ञासा हो गयी है और अनेक प्रश्न आते हैं।

आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा और माघशुक्ल प्रदिपदा से ये दोनों गुप्त नवरात्री मनाने चाहियें। इन दोनों नवरात्रीयों को मनाने का व पारण करने का ठीक वही निर्णय है जो चैत्र की वासन्तीय नवरात्र का या आश्विन के शारदीय नवरात्र का होता है।

यहां यह वात ध्यान देने की है प्रथम तीन नवरात्रीयों में अन्तर तीन मास का है जैसे चैत्र का नवरात्र होने पर तीन मास वाद (आषाढ़ का गुप्त नवरात्र), इसके ठीक तीन मास वाद आश्विन का शारदीय नवरात्र परन्तु माघ शुक्ल प्रतिपदा का चौथा नवरात्र (जो गुप्त भी है) यह आश्विन से चार मास वाद माघ में लिया है। सम्भवतः ऐसा प्रतीत होता है कि आश्विन से तीसरे महिने पौष मास का त्याग खरमास होने से कर दिया गया है।

अतः अव चार नवरात्र इस प्रकार हुए

१) चैत्रशुक्लप्रतिपदा को वासन्तीय नवरात्र।
२) आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को (गुप्त नवरात्र)।
३) आश्विन शुक्ल प्रदिपदा को शारदीय नवरात्र।
४) माघ शुक्ल प्रतिपदा को (गुप्त नवरात्र)।

ध्यान दें- इन दोनों गुप्त नवरात्र की अधिष्ठात्री देवी भी माता दुर्गा के नवरूपों को ही स्वीकार करना चाहिये। इन नवरात्रों में किया जाने वाला अनुष्ठान पूजा और व्रत चैत्र व आश्विन नवरात्र के सामान ही होगा। ये सभी नवरात्र भगवती माता के श्रद्धालुओं के लिये समान रूप से महत्वपूर्ण हैं।

सम्भवतः हमारे इस प्रयास से हमारे पाठक गणों के प्रश्नों का उचित उत्तर मिल गया होगा। और हम आशा करते हैं की वे इन चारों नवरात्र को मना कर देवी की भक्ति करेंगे।

सम्वत् २०८२ की सभी सायन संक्रान्तियों का विवरण

१) दृश्यः सायनवृषेचाऽर्कः - वैशाख कृष्ण ६ शनौ -
ता.१९ अप्रैल २०२५-४८घटी १७ पल (रा.शे.१२/५२)।
२) दृश्यः सायनमिथुनेचाऽर्कः ज्येष्ठ कृष्ण ८ भौमे -
ता.२० मई २०२५-४६ घटी ४८ पल (रा.११/५६)।
३) दृश्यः सायनकर्केचाऽर्कः आषाढ़ कृष्ण ११ शनौ -
ता.२१ जून २०२५-६घटी ४४ पल (दिवा ७/५२)।
४) दृश्यः सायनसिंहेचाऽर्कः श्रावण कृष्ण १२ भौमे -
ता.२२ जुलाई २०२५-३३घटी ३६ पल (रात्रौ ६/४९)।
५) दृश्यः सायनकन्यायामऽर्कः भाद्रपद कृष्ण १४ शुक्रे-
ता.२२ अगस्त २०२५-५०घटी ५९ पल (रात्रि शेषे २/१)।
६) दृश्यः सायनतुलायामऽर्कः आश्विन शुक्ल १ सोमे-
ता.२२ सितम्बर २०२५-४४घटी ५४ पल (रात्रौ ११/५७)।
७) दृश्यः सायनवृश्चिकेष्वर्कः कार्तिक शुक्ल २ गुरौ-
ता.२३ अक्टूबर २०२५-८घटी २ पल (दिवा ९/१५)।
८) दृश्यः सायनधनुषिचाऽर्कः मार्गशीर्ष शुक्ल २ शनौ-
ता.२२ नवम्बर २०२५-१घटी २२ पल (प्रातः ६/५६)।
९) दृश्यः सायनमकरेचाऽर्कः पौष शुक्ल १ रवौ-
ता.२१ दिसम्बर २०२५-३३घटी ५८ पल (रात्रौ ८/२७)।
१०) दृश्यः सायनकुम्भेचाऽर्कः माघशुक्ल २ भौमे-
ता.२० जनवरी २०२६-०घटी १५ पल (प्रातः६/५३)।
११) दृश्यः सायनमीनेचाऽर्कः फाल्गुन शुक्ल १ बुधे-
ता.१८ फरवरी २०२६-३६घटी ० पल (रात्रौ ८/५६)।

कैसे पहचानें? "स्मार्त और वैष्णव सम्प्रदाय"

अनेक बार लोग प्रश्न पूछते हैं कि हम कौन सी एकादशी का व्रत करें? स्मार्त वाली या वैष्णव वाली ? वास्तव में उन्हें मालूम ही नहीं रहता कि वे स्मार्त हैं या वैष्णव हैं। जिन लोगों को स्वयं का संप्रदाय मालूम नहीं वे अपने को स्मार्त मानते हैं। सामान्य रूप से स्मार्त शिव के उपासक होते हैं, श्रुति-स्मृति को मानते हैं और वेद-पुराण, धर्मशास्त्र, गायत्री, पंचदेव के उपासक होते हैं।

वैसे ही सामान्य रूप से वैष्णव विष्णु के उपासक होते हैं। वैष्णव संप्रदाय का विस्तार श्री संप्रदाय (रामानुजाचार्य/विशिष्टाद्वैत), ब्रह्म संप्रदाय (मध्वाचार्य), रुद्र संप्रदाय (विष्णु स्वामी), सनकादि संप्रदाय (निंबार्काचार्य), शुद्धाद्वैत (वल्लभाचार्य), अचिन्त्य भेदाभेद (चैतन्य महाप्रभु), रामानंद आदि से हुआ। वैष्णव संप्रदाय वाले विशिष्ट आकार का तिलक भी मस्तक पर धारण करते हैं, ये लोग विधिपूर्वक दीक्षा लेकर कण्ठी और तुलसी की माला धारण करते हैं। वर्तमान में भारत भर में फैले गोपाल मंदिर, कृष्ण मंदिर, स्वामी नारायण मंदिर, श्रीनाथ जी, विठोबा-पांडुरंग आदि के विष्णु अवतारों के मंदिरों के अनुयायी वैष्णव संप्रदाय के अंतर्गत आते हैं। कंठी-माला धारण करने की इनकी अपनी-अपनी विशिष्ट परंपरा होती है।

रजिस्टर्ड अन्डर सेक्शन १८ और १९ सन् १८६७ के कानून २५ के अनुसार। ❑ मुद्रक-ज्योतिष प्रकाश प्रेस, ३४५, मेलखा, तरना, वाराणसी। (मो०-९१३५५००१७२)